श्री जैन विद्याविजय प्रींशींग प्रेसमा शा. चुनीलाल अमथाभाइए छाप्यु-अमटावाद.

李本学李学李 本本中来回来来回来 泰本

## प्रस्तावना.

आ छत्रीश बोछना थोकडानुं पुस्तक विकानेर (राजपुताना) निवासी श्रेष्टी अगरचंदजी भेरुदानजी तरफथी सर्वे सत्पात्रने-सज्जनने भेट आपवा माटे छपाची प्रगट करवामां आन्धुं छे.

धर्मज्ञाननो फेलावो करवो ए महापुण्यतुं काम छे. श्रमणभगवृंत श्रीमहावीरपश्चए कह्युं छे के-"पढमंनाणं तवो दया." ज्ञाननो प्रसार करी अज्ञानरुपी अधकारनो नाज्ञ करवो ए काम मायावी जगतना जीवो माटे अति जरुरतं छे. अधर्म अने धर्मनो भेद ज्ञानथी मालप पडे छे.

赤の米本の米

安荣泰学老

धर्म ए अमूल्य चीज छे, तेतुं खरुं खरुप समजवुं मुक्केल छे. मतुष्यना शुष्क मीवनमां धर्म ए शीतळ चैतन्य छे. आत्मानी अनेक निराशाओगां धर्मज आधानो संचार करे छे. मृत्यु पछी पण जीवनने अव-छंवन आपनार वस्तु धर्मज छे, धर्मनुं वळ अमत्यक्ष छे पण तथी तेनो अस्वीकार करी शकायज नहि. जगतमां

ने ने प्रजा बनी छे ते सर्वे धर्मना नोसथीन बनी छे. हालमां धर्मनो अर्थ संक्रचितदृष्टिथी करवामां आवे छे ते ठीक नथी. वादिववादथी धर्मेनुं शान्तिप्रचारक मूळ खरूप नष्ट करी तेने विरोधवर्धक रूप आपदुं योग्य नथी

एना यथोचित उपयोगथी मनुष्यनुं कल्याणज याय छे. जे हानि याय छे तेतो धर्माधताथी थाय छे, धर्मथी यती नथी. माटे वादिववाद के विरोधवर्धक के धर्मीधता प्रदर्शक खंडनमंडन जेवुं लखाण प्रगट करवातुं पसंद निह कर-तां छत्रीश बोलना योकडा जेवुं सर्वने पिय यह पडे तेवुं आ पुस्तक शेटश्री मोसुफे पगट करवानुं योग्य धार्यु जणाय छे.

जुदा जुदा सूत्रमां के स्थळमां जुदा जुदा वोलतुं छुटुं छुटुं ज्ञान मळी शके खरुं पण ते शोधवामां पुन्कळ

वलत जाय अने तेम छतां पण जोइए तेटली विगत एकठी यह शके नहि तेथी आ प्रमाणे छत्रीश बोलनो संग्रह

एंक स्थळे एकटो करी प्रगट करवानुं काम उचितज थयुं छे. आजना जीवन कलह (strugal of existence) ना समयमां वधां सूत्रो वांचवा जनसमूहने निरांत होती नथी तेमने आ एक टेकाणे २६ वोछनो थयेलो संप्रह. वहु उपयोगी थुनो.

आ छत्रीय वोलमां घणी उपयोगी वावतो समाववामां आवी छे. द्रव्ये ने मावे, स्वार्थे ने परमार्थे, धर्म-ने व्यवहारे बधी रीते आ बोलोना अभ्यासथी लाभ थाय तेंबुं छे, माटे जे जे भाइओने आ पुस्तक प्राप्त याय तेणे तेनो सारो उपयोग करवो एटली विनंती छे.

धर्मना फरमान प्रमाणे सर्वे प्रकारनी जतना राखी आ पुस्तक वांचवानुं छे.

ज्ञाननो प्रसार करवी ए महा पुण्यतुं काम छे एम कांइ जैन सूत्रोज कहे छे एम नथी. श्रीमद्भगवद-मीतामां पण कहां छे के "नहि ज्ञानेन संदर्ग, पवित्रमिह विद्यते."

अज्ञान एज अधकार-एज माया के अविद्या छे तेनो नाश करी आवी वातो समजावनारां पुस्तको उपयोगी शामाटे न गणाय ?

आमांनी केटलीक वातो समजवी अथवा अनुभववी मुक्केल छे. जेमके आत्मा एक छे. " धर्मस्य सत्त्वं निहितं गुहायाम् " तथापि जो एवी वातो समजाय ने वर्तनमां मुकाय तो वेळासरं वेडो पार-भव छेदन थइ जाय. मनुष्यनी परीक्षा श्रुत, शील, गुण ने कर्मवडे थाय छे अने आ ३६ वोळना संग्रहमांथी ए चारे वातो प्राप्त थाय तेम छे.

दयाधर्मनी द्रद्धिने माटे आवां पुस्तको उपयोगी छे. अर्थात् हिंसाए जगतने केटछं वधुं जुकशान कर्यु

छै ते जणाववानी जरूर नथी. शान्ति अने अहिंसाने मसारनारां ने द्रह करनारां पुस्तकोने उपदेशनी आ जगतने वहु जरुर छे. क्युं छे के:---त्यर्जेद्धं भैं देयाहीनं, विद्याहीनं गृंहं त्यजेत् । त्यजेत्क्रोधग्रुखी भायीं, निस्तेहान्वांघवांस्त्यजेत् ॥ (दया विनानो धर्म, ज्ञान विनानो गुरु, क्रोधमुखी भार्या अने स्नेह विनाना बांधवो तजवा.) आ पुस्तक सौने उपयोगी याओ एवी महेच्छासहित आवां पुस्तको विना मुख्ये वहेंचवानी इच्छा धरा-वनार शेठश्रीनो आभार!मानी प्रस्तावना पूर्ण करवामां आवे छे. राः रा. पोपटलाल केवलचंद शाहे शास्त्र विरुद्ध कंइ न छपाइ जाय ते जोवानी वनती कालजी राखी ंबने तेटली सहायता आपी छे, ए मारे अहिं खास जणाववं जोइए. खी. शेवजी व्यगरचंदजी जेरुदानजी विकानखासी तरफथी ली. वालाभाइ लगनलाल शाह जैन दुकसेलर हे. कीकाभटनी पोल-स्प्रमदावाद. ॥ स्वकुलप्रकाश ॥ धर्मचंदजी तत्युत्र प्रतापचंद अगरचंद भेरुदान हजारीमल चिरंजीव जेठमल पानमल लहरचंद उदेकरण जुगराज गैनपाल शेठीया श्रीकल्याणमस्तु ॥ पुस्तक मिललेका ठिकाणा-ग्रंथसंग्रहकर्ताके पास. व्यगरचंदजी प्रेरोदानजी शेठीया. मरोडीयोंकी गर्वाड-वीकानेर-राजपुताना (मारवाड). कलंकता—नं. १०८ पुराणाचीणावजार (वडावजार).

आ पुस्तकमां घणाज विस्तारथी वार्तारपे अर्थ अने भावार्थ छखवामां आत्यो है. प्रसंगे प्रसंगे वैराग्य जपर अतिम्रुक्तकुमारनी, अढारनात्रानी, दृद्धावस्थाना दुःख जपर धनासार्थवाहनी विगेरे मोटी मोटी ११ कथा- ओ आवी हे तथी आ पुस्तक वैराग्यदशाने जागृत करनारा स्त्री पुरुषोने घणुंज जपयोगी यह पढ्युं हे आ पुस्तकनी ढुंक मुद्दतमां चोथी आदृत्ति यह छे तेज तेना जपयोगीपणानी विशेष खात्री छे. आ पुस्तकनी किंमत एक रुपीओ चार आना राखी छे. जोइए तेमणे नीचेना शीरनामेथी मंगावना. ट्याछखर्च वी. पी. साथे त्रण अना.

いつ学・後後が子・木の子・木の子・木を子・木の子・木の子・木を子

जैन सूत्रो

विपाकसूत्र भाषान्तर-प्रथम स्कंध-दुःखविपाक जिसमें कर्मोकें फळ दिखानेवाले दश अध्ययनोंका स-

ज्याशकद्शांग सूत्र-खंड २ जो भाषान्तर. जिसमें धर्मकी ज्यासना करनेवाला दश्च श्रावकोका इति-हास दिया गया है. ०-८-०

ज्याशकदशांग सूत्र-लंड ३ जो भाषान्तर. जिसमें श्री निरयावलिका कल्पवडंसियः, पुष्कीआ, पुष्प-चूला और विन्हिदशा नामक जपदेशी जैनशास्त्रका सार लिखा गया है. ०-८-०

्शाः, बालाजाङ् बगनलालः

ठे. कीकाभटनी पोळ.-अमदावाद.

	<b>-*</b> ⊕*	·—	
बोख्र.	पत्र.	बोख.	पत्र
प्रथम बोख.	8	दशमो बोख.	६७
दूजो बोख.	- হ	<b>इ</b> ग्यारमो बोख.	ប៊ុ
तीजो बोख.	ย	बारमो बोख.	បម
चोयो बोख.	<i>\$</i> 8	तेरमो बोख.	ሮሀ
पांचमो बोख-	३ए	चवदह बोख.	१००
<b>ब</b> ठी बोख.	· ક્ષ્ય	पनरे बोख.	१०९
सातमो बोख.	<b>ए</b> श	सोखे बोख.	११०
<b>ट्या</b> ठमा बोख.	५७	सतरह बोख.	११३
नवमो बोल.	६३	श्रहारे बोल.	११५

बोल.	पत्र.	बोख.	पत्र.
जगणीसमो बोख.	११७	श्रद्धावीसमो बोख.	<b>\$</b> ጸ\$
वीसमी बोख.	१२०	लगणतीसमा बोखः	<b>१</b> ४४
एकवीसमो बोख.	१२२	त्रीसमो बोंख.	१४५
बाइसमो बोख.	१वध	एकत्रीसमो बोख.	१५१
तेवीसंमो बोख.	१२७	बतीसमो बोख.	<b>કૃ</b> ષ્ણ
चोवीसमो बोखः	१र्था	तेतीसमो बोख.	१६१
पचीसमो बोख.	१३३	चोतीसमो बोखं.	१६३
जवीसमो बोख.	253	पेंतीसमो बोख.	१६[
सतावीसमी बोख.	880	<b>उ</b> तीसमी बोख.	१६ए

पत्र.	<b>ग्र</b> घ.	खशह्य.	पंक्ति.	पत्र.	शुद्ध.	ट्यशुद्ध. प	क्ति.
Ę	सिष्टामें	सिद्धानें	Ū	१३	संसारसजै	संसाररूखे	វភ
ξ	<b>ट्य</b> धोपरो	<b>ट्याघो</b> परो	१७	१३	<b>ग्रह्मीरी</b>	गृहस्थरी	१३
६	<b>ट्य</b> णेखणीक	<b>खन्नेषणीक</b>	<b>२</b> १		संख्या कपजै	संख्याता ऊप्जै	3
9	केवद्धीरूपा	केवली प्ररूप्या	\$3	१६	क णिय आहारे प	i कुणियखाहारेणं	\$3
ប	समिकत शंका	समिकतपर शं	का १२	89	विनय करंत	विनय करतां	र१
נט ַ	सेवे करें हे	सेवा-करें हे	Ų	१७	तीजोगायापति	रे छाणंदगाद्यापति	. 8
ע	बिदा न जोंवें	बिद्य न जोवें	१२		बकुद्धबाह्यणरे	बहुख बाह्यपारे	3
Įυ	राग स्नह	राग स्नेह	83	१ए	धूजा सरीषा	धजा सरीवा	ξ
	दीनुंही	दोनुंही े	થ્	१ए	नही देवें	देवे	१३
११	तीर्धकरदवे	तीर्धकरदेव	્ય		प्रमुखररा	प्रमुखरा	१३

\*\*\* एहवी कथा २० एही कथा तरुणवयमें ३१ कुरणीवयमें 3 १० एही कथा एहवी कथा ३१ जगवंतरो D जगवंतरी ٥٤. \*\*\*\* २० जीव कया जीव कीया ३१ षोयया पोयया P १६ 光空华光子学来次本 <u>ब्यवहारीयो</u> १५ व्यववहारीयो ३१ जीपावेनही जीपार्वे १४ ५३ ३१ संख योमा रुंष थोमा सुन्नमांहिट्यसुन १६ १५ मनमांही खशुज १६ १६ यसुजमांहिसुन यशुनमांहि य-कांकरा समान ३२ काक समान १६ ३४ परीसहन परीसह १३ গ্রুদ १७ निमित्तजाव निमित्तजार्वे ३६ श्रदिनाणाज **अदिनादाणा**जं १२ 8 १७ मार्गने मार्गमें समिकत संबर ३६ समिकत सबर ११ १३ महापिनवाये १0 महापिनवाथे १३ ६ ३७ सासदान सास्वादन १ नरकावसो नरकावासो \*\*\* 68 ३९ खासथा यासता Ū ३० सर्ब सर्प ३७ मिथ्यात्वनुं मिथ्यात्वीनुं १३ ٤Ū

华 光、华 本、华 朱 元、宋 华 · 本京本 本京本 本京本 本京本 समिकतपामेंनहीश्व ३७ समिकतमें नही २० ४० करतुठ करतुत २० बेवाते बेठाते २१ ४० जलस्यी **ज**खरा ४१ वीटसीठो विटिजसीतो ११ ३७ ध्याय धाय बमबरी पार्बे शुद्धे ४१ जमजरीयापीजे ş शए शुष्ठ 9 धश मैपारा मैएारा **अनुपेपणाशु**दे -g ३ए यनुग्रहणाशुद्ध 9 **क**पजें **अनुनासणाशु**द्धे 0 **ধং ক্র**পর্ন լս ३ए अनुजावशुद्ध ३ए तिवारे श्रचित्त तिएकरी सचित्त वेकखपाणी լ ४१ कलपाणी 本本心学本心学本心学本 ४२ व्यर्कपूखरो वायरो वायरो १० **अक्तु**खरो Я वधोतरी ३ए वध्योतरी २१ नावसुं २६ ४१ नावासुं ४० दानां छंतराय व्यारोपणा १४ Ų दानछंतराय ध३ छारापणा पमिलेहणारी धर पमिलेहरारी ४० खानाखंतराय १६ **लाज्ञ अंतराय** Ų. निर्ग्रथगुरु ४० निर्प्रथ ४० कदाग्रही Ū कदाग्रह

जूवो ५५ जूगे ११ १६ वटाय ४० वदाय पंचेंडियपणो ४० पंचें जिपपणो ए६ सो १४ \*\*\*\* १३ सातसो ४० खबिरतेरी श्रविरतरी ३४६ १५ १९ ए६ ३६ \*\*\*\* ए सो ए६ शए सो \$9 श्यनि हंत १३ ४ए छनिहांत्रं ए६ शए सो ए सो नचावं ५१ नमावें ११ ए० ४५० । you २० परसंसा Ę **५**२ परसंसार **५**0 जीवसंहरे आधों देखें जीवप्रदेशसंहरे १२ ५२ खाघोदेखे Ų 学 सुप्रदर्शन **५**० सुप्रदर्शन **ख्यणफरसीया** ٤Ū ५५ **ऋ**णपारसीया १० पालें ते ग्यानी१ए **५** पार्ले ग्यानी ५४ धर्म मीखें धर्मी मीटें १ए पांकुचियां **५**ए पामिविया **५५ तीन मकार** १३ तीन प्रकार 3 घट जावें ५५ घर जानें १२ \*\*\* 83 ६० आव खाउ मुंठवावें १३ पाणीसूक् ५५ मुठपावें ٤Ū प्राणसूक्

६० कीमीना इंमा खं	म सूका	१३	७७ जीवने	जीवते	ل
सूर्म			<b></b>	करेखुं	१२
६० धूंहरी सुका हि	रे <b>मू</b> क्ष	<b>የ</b> ዘ	<b>७</b> २ रूझ्में	रोहिमें	śΑ
६० गर्लोय प्रमुख- खः	यण सूक्ष जी	वो-	८२ पमावयुं	पमावेसुं	કૃષ્
ना इंमा सूक्ष	के घर	δA	<b>एश् पुरुषरो</b>	पुरषरा	शुए
६४ वेइने	पेइने	ξ	<b>७</b> २ सेवे	सर्बे	२०
६४ षिण	पिएा	<b>ቆ</b> ክ	<b>ण्य शोके</b>	शोकं	र१
<b>७० वृद्धीतरी</b>	बघोतरी	Ŋ	<b>७</b> २ नाषाए	नीवारा	श्र
७० छांबो नष्टी	छांत्रोधी	ধ	<b>00 ञ्</b> तकारी	चूत	१०
<b>9१ करणनें</b>	करणनें छ	ाया ७	<b>७७ छादामें</b>	ख्याटामें	ξ
9१ छासया	ट्यासता	ė?	<b>७</b> ए करतें इतोर्थ	करलें 'इत्यर्थ	१३
७४ वाजित्रत्र	वाजित्र	<b>??</b>	ण्ए बोखाता	बोलंना	१२

本本学来京本本文本本·本本本文本本本本本本本本本本本本本本本本本本本本本本本本本本本本							零金
*	ए॰ किसीकीनी	किसिकी	3	<b>ए</b> ७ पमना पमाना	पढना पढाना	8	7.4
*	ए॰ घरना	धरना	9	ए७ नश्वर	विनीश्वर 🕡	રધ	300
*	ए॰ सवनका	सेवनका	१४	१०१ १६ बोख	१४ बोख	२१	19
***************************************	एश त्याग	त्यार्गे	१३	१०३ प्रवार्थक	प्रिवाजक	१ए	3
*	एश स्याग	त्यागें	ર્ય	१०५ प्रमार्थ	प्रश्नार्थ	ע	
**	ए३ सोचें	सोवें	થ્ય	१०५ प्रस्का	प्रश्नका	<b>88</b>	1600 1600
*	ए४ जुलसना	हुखसना	१०	१०५ रहस्य	रहस्य	१४	
	ए धुनी	सानी	<b>ર</b> ્	१०६ वढवारोरी	वेढवीरोटी	হ	٤
*	ए ५ पायकारी	पापकारी	२१	१०६ नामजाम	तामजाम	<b>२</b> १	
XX	ए६ छात्मकब्प	<b>च्यात्मतु</b> ब्य	३	१०९ गटाऊं	<b>लगा</b> ऊं	१३	}
<b>₹</b>	ए६ पूजन	पूंजनी	१०	११२ संवेख	संपेख	<b>११</b>	
***	ए६ खामायिक	कालसामायि	क१५	११२ वना	विना	१२	7.5 4 / O. 1.5 / O. 1.6 / O. 1.6

चेखा १३२ वेखा २३ ११ए कुसागर कुश्वागर ११३ निंद है निंदाहै १५ धनुषरी y Ų १३२ २५ धनुषरी 水学 ११७ तृसा Ę १३२ २० धनुष ं १० धनुषरी y तुशा १३४ कृस १५ १२० तृसा 8U तुश्रा कुश \*\*\* **ज**जीव A १२३ य्यान १३७ श्राजीव RF ग्यान १३ए ख्राजीव **लं**जीव A १२४ तृणकास ŞŪ तृणफास पीऐंकी १३ए पीणकी १२ १२६ ब्रह्म १३ प्रश्न १३ए पगरणि १५ पगरखी संग्या ą १२७ संग 本の本本の本本の本本の本本の本 १५ पानहि १३ए वाहनि १२९ दीष्ट **प्र**ष्टी ş १३ए विराधक १।२ विराधक श३ २० वावमीका १२७ बाचमीका १५ १३ए पांचमो १ वृत्ति पांचमो वृत्तावृत्ति २२ नव पदवी २० १२७ नव 李紫泰 १३ए यसंबरीपहिला यसंबरीपहिला ११७ जस ভ্রম

本大学·米巴米·米巴米·茨。米·米巴米·米巴米·米巴米·米巴米·米 Ų प्रश्न शिर तम शशश्राधारश मो १४० शशपाश मो मुकमीके ३३ पुर १४० साथेजावे १**।१**।४ साथेजावे १।**१।४** ए १४ए पक्रमीके 李朱朱安朱安东京 李安本 निकाले १४ए निकाजे १२ सइंदिया १४० ११ सइंदिया Ū गुरुके पुठे मुंह 2ξ १४ए गुरुके मुंह १४२ युता धुता सुननेका १५० सुगनेका Z १४२ जसीतना नसीतना वनमें १५० वमें नहीिमगणो **\$**3, १४२ नहि गणो सर्पको Ę १५० सर्वको खीरमधु Ū १४३ वीरमधु खा पीके १५ हाजतरोंकें १५० खापाके १५५ हाजतजोरें २१ कर्मसं वमोंकी ड्रश १५० कर्मसें होय १ सो कोम १४ १४५ २ सो कोम ર્ય १५० वमीकी βŞ ५१ खाल १४५ ५२ खाष १५१ वीनी विनय चांबमा माधे बांध Ų १४६ चाबमा धूप રૂપ્ प्रश्नरूपी १५३ प्राप्तरूपी गेइखा १४६ गहला

१५४	पुत्र नदीजे	पुंठ न दीजे	१६	१५७	प्रसव्याकरण	प्रश्नव्याकरण	A
१५५	गुरुने वंद्णा	गुरुक्क वंदणा दे-		१५ए	प्रम्	प्रश्न	ប
	देइने वांदे	<b>ों</b> के	१६	१६२	सरस १ गुरुकुं	सरस २ छाप लावें	•
१५६	पढे समाधि पूढे	पहिलें सातासमा	•		देवे	निरस <sup>२</sup> गुरुकुं देवे	ប
	वांदे	वि पू <b>डे</b> पडे वांदे		१६५	चैद सुदि	चैत सुदि	8
१५६	३१	गुरुकं जना गर्ल	)	१६५	वदि वीज	विद एकम	१
	•	वांदे	१०	१६५	तारो ज्ञरे	तारो दुटे	६
१५६		<b>इ</b> षीरहित	થ્ય	१६५	मृत्यु राखी है	मृत्यु राखीहै	१०
१५७	मातापितानी	<b>घीर्यवान</b>	8	१६५	सूवी		ર્ય
	सेवा			१६६	चेबृन	वे <b>द्य</b> न	श्
१५७	गुरुनी सेंवा	यशवान्	<b>?</b>	१६६		पाटा	३
१५५		संतोषवंत	٠\$	१६६	बोरी स्नान	बोटी स्नान	33

宋本帝子子中本帝子教士教士中国中北京中央中 मोटी स्नान १६६ मोरी स्नान १२ संग्या १९० सन्या **बा**टो १६६ खारो १५० छेदना १६ वेदना 9 सरोतो १६७ सरोटो լ १७० समुद्धात 9 समुद्धात १६७ ठाकमी ताकमी ११ १० १५० चाचक **त्राजक** १७ जेंदे **ਰं**गरा १५० नेदे १२ १६७ करवारा १९ १६७ मंमले १७० नेदे १२ जेद मंमलेवे १३ 9्६ ¢ पाटी जामखी १९ १६७ पारी १७० जामग्री १० १७१ सवी वस्ते सही वस्ते १६ए रक्कलं कलद्वि २० 法のおおのか १७० कर्मठेदना कर्मवेदना ज्यामे मील ११ १७१ जघाने दीख निम रगी १५ वेदता वंधका १७२ निम द्गी १७० वेदता वंधका १७० वेदना वेदका वेदत्ता वेदका

朱色米 **0**9 लेनाइजाइकंने लेताइकंने मेघकुमार 老子本 老子 大小子 ११ए मृगापुत्र を安全を १२५ खढारे खांगुले च खांगुले एए यनग्रनिष् आसग्रव तिए h १३० छाध्ययनुकीसाखुः मे जन्तराध्ययन १२७ चामर 88 चरम सागरेंमं सोसागर सूत्रकी ६ ट्याध्ययन ११७ मागर P १३० दोयसें त्रपन दशमा कालीकमे दोयसें व श्र 条が発 १३४ धर्मास्त **धर्मास्तिकायके** बालमणी वननागिर ११४ बलमण शस्त्रादिकसें प्रदेश 23 तथा घात करो मेरे १३४ छाधर्मास्ति **ट्य**धर्मा स्तिकायके 秦李泰泰李泰安 प्रवायमणी प्रमादके ११४ प्रवासमणी प्रदेश **P**\$ 泰家 वश संकटपविकटप श्राकाशास्तिलोका-१३४ श्राकाशास्ति करी मरे काशके प्रदेश 29 秦零 **अं**तोसलमर्ण **अ**घोयरे ११४ खंगोजमर्ण 09 ख्रद्योपरे ०१

CANTO 赤谷名宗 本学を会 **9**१ विवगारिहे वि- विवेगारिहे श्रकटप-१४३ ৰান্তব্ৰচি वीजञ्जि गयरो त्यांग कः नीय वस्तुरो त्याग **६**भ १६७ समिकतमिहत संस्कारयुक्त १०० १५ बोल सिन्हां प्रत्येक बुन्ह सिन्हा ते केमें १ नहीहे करकं हराजादि ११ १ ए पारिणामिक प्रयोग स्वयंबुद्ध सिष्ठा ते १२४ तृणकाम त्रणकाम कपिलादिक १६ श्रशृहि शुह पत्रमां. **अशुद्ध** গুড় ? शुद्र ? অগ্রহ

## ॥ अथ छत्तीसबोलसंग्रह लिख्यते ॥ १ प्रथम बोल. \*\*\* एगेष्ट्राया कहेतां एक खात्मा सुबुध्दिरूप हे. 本文学·米回华·米回华·米· एगेश्रणाया कहेतां एक व्यनात्मा जनरूप हे. एगेदंने कहेतां एक दंन जिए करी कर्मबंध है. एगे खदंमे कहेतां एक खदंम कर्मबंध नहि.

एगेलए कहेतां एक श्राकाश.

एगेखोए कहेतां एक खोक च खन्यमय. एगे खारे। पर केवल खाकाश है. 

*	i		**	
**	8	एगेपुएये कहेनां एक पुण्य सुलहेतु.	T **	<u>.</u>
*	8	एगेंपीवें कहेतां एक पाप इःखहेतु.	१०	5
*	8	एगेधम्मे कहेतां एक धर्म वस्तु स्वजाव.	१० 🛱	5
*	8	एगेळाधम्मे कहेतां एक ठावर्म स्ववर्मसें जिन्न.	\$\$    \$	\$2.54 \$2.54
<b>*</b>	\$,	एगेट्यासवे कहेतां एक घ्याश्रव जिएसें कर्म्मांध हो .	<b>१</b> २ ।	Į.
*	8	एगेसंवरे कहेतां एक संवर कर्मोका बंबकु रोके.	33	*
*	₹,	एगावेयणा कहेतां एक वेदना कर्मीका जोगवणा.	૧ું ∖ું	¥
*	8	एगानिजारा कहेतां कर्मोका द्वय.	<b>૧</b> ૫    ક	太子·李子·朱京子·
*	8	एगे जीवे कहेतां एकजीव चैतन्य गुणधारी.	१६ 📗	*
*	8	एंगे श्रजीवे कहेतां एक श्रजीव जनरूप.	\$9 \\	來
*	8	एगे नाणे कहेतां एक ज्ञान.	<b>₹</b> Ū    1	¥
*	8	एगे दंसणे कहेतां एक दर्शन.	វ <b>េ</b> ៣	*
李林·朱京朱宗·朱京朱宗·朱宗·朱宗·朱宗·朱宗·朱宗·朱宗·朱宗·朱宗·朱宗·朱宗·朱宗·朱宗·朱	, <b>3</b>	एगेचरित कहेतां एक चारित्र क्रियारूप.	<b>ર</b> ૦	李华李
çş			11.5	Ť

१	एगेपएसे कहेतां एक प्रदेश.		<b>ચ</b> શ્
8	एगेप्पमाणे कहेतां एक प्रमाण.	1	<b>१</b> २
8	एगेवंघे कहेतां एक वंध.		श्र
3	एगेमोक कहेतां एक मोदा निवृत्ति.		হয়
18	एगेसिके कहेतां एक सिक्त.	State Charles	<b>શ્</b> ય
8	एगेसमए कहेतां एक समय कालजेदः	(s(-s)	. श्र
, 8	एगेसहे कहेतां एक शब्द.	Library )	- হত
8	एगेरूवे कहेतां एक रूप.	(1110)	২0
-8	एगेगंघे कहेतां एक गंध.	MADNIT	<b>র</b> ঢ়ি
-8	एगेरसे कहेतां एक रस		₹,
8	एगेफासे कहेतां एक फर्श.		્રફ્ર'ર
, §			३१
.3	एगेवट्टे कहेतां एक वत्ते गोख. एगेतंस कहेतां एक खंबा.		इइ

学の学者の学 एगेचलरसे कहेता एक चोखुणा. 李米安本等 李安本 एगेपरिमंनले कहेतां एक लम् त्राकार. एगेमणे कहेतां एक मन. एगेवए कहेतां एक वचन. ₹9 एगेकाए कहेतां एक काया. ३ए १ धर्म छोर कर्म किस प्रकारसे होय सो कहते हैं, धर्म तो खात्मजावें शुद्ध छ-पयोगें होवे छर कर्म छाशुद्ध खपयोगें तथा शुजाशुज जावें होता है, जैसी करणी यानें किया तैसा कर्म हुवे छर धर्म तो छाकियारूप है, जैसा शुद्ध, खपयोगकी वृद्धि होवे वैसा धर्म पिण रुद्धिवान् होता है. 淾

হ্য	थ दूजो बोख. <sup>२</sup>	
-	- CONTROL - CONT	_
१ सर्व ध्वव्य दोय प्रकारे जाणवा.	, जीवज्ञ्य १, छाजीवज्ञ्य २.	8
२ वळी संसारीजीव दोय प्रकारे ज	ाणवा. सूपम १, बादर २.	হ
२ सर्व जीव दोय प्रकारें. त्रस १, १		3
श सर्व जीव दोय प्रकारं. पर्याप्ता १	१. ज्यापयोघा २.	A
१ सर्व जीव दोय प्रकारं. प्रवसिधि		ય
श्र सर्व जीव दोय प्रकारं. एक तो		६
२ सर्व जीव दोय प्रकारं. शरीरसरि	हेत १. शरीररहित २.	9
१ सर्व जीव दोय प्रकारें. इंडीसि	हेत १. इंड्रीरहित २.	G
१ सर्व जीव दोय प्रकारें. वेदसहित	त १. वेदरहित २.	Г
१ सर्व जीव दोय प्रकार, कषायस	हित १. कपायरहित २.	४०
१ सर्व जीव दोय प्रकारें. कायास	हित १. कायारहित २.	88

*			3	
*	श	सर्व जीव दोय प्रकारें. संजोगी जोगसहित १, ख्यजोगी जोगरहित २.	<b>१</b> २	3
*		सर्व जीव दाय प्रकारें. सखेशी खेश्याससहित १, खेश्यारहित २.	१३ है	75 C. J.
*		सर्व जीव दोय प्रकारें. खाहारिक १, खनाहारिक २.	- T   1	•
		सर्व जीव दोय प्रकारें. जासक बोखनेवाखा १, ख्रजासक नहि बोखनेवाखा २.	₹ <b>१</b>	ا ا
*	श्	सर्व जीव दोयं प्रकारें. सागार व्यागारसहित १, व्यन्।गार व्यागारसहित १.	3 T II	*
¥.	श्	सर्व जीव दोय प्रकारं, संसारसमावनगा संसारमें रहणेवाले १, व्यसंसारसमाव-		٠ •
<b>*</b>		न्नगा संसारमें निह रहेनेवाला <sup>२</sup> .	\$3    §	*
<b>*</b> .	१	सर्व जीव दोय प्रकारें. सकर्मी कमेसहित १, व्यक्तमी कमेरहित २.	१७ ∥ु	
*	१	कर्म दोय प्रकाररा. व्यापुनागकर्म कर्मरस १, प्रदेशकर्म कर्मदल २.	· _ II	X
<b>X</b>	र	जीव दोय प्रकाररी वेदना जोगवे. ख्राज्युपगमकी १, जपक्रमकी २.	२० 📗	Ť
*	१	सर्व जीवने जन्माद दोय अकाररो जन्मादिक १, मोहजन्माद १.		Ι,
*		प्रतिमा दोय प्रकाररो. जडप्रतिमा १, महाजडप्रतिमा २.	२२	**
是宋·朱宣朱·朱·朱·朱·朱·朱·朱·朱·朱·朱·朱·朱·朱·朱·朱·朱·朱·朱·	१	वली प्रतिमारा दोय जेद, षुड्डीयामोयप्रतिमा १, महिल्लयामोयप्रतिमा १.	२३	本条

वली प्रतिमारा दोय प्रेद. जनमञ्जप्रतिमा १. वज्रमञ्जप्रतिमा २. 米米米米 व्ली प्रतिमारा दोय जेद. षुड्डागर्सवतोजङ १, महासर्वतोजङ २. २ दोय प्रकाररा जीव इःख जोगवे. सरीरीइःख १, मानसीक इःख २. सरीरीक्० सरीरने विषे १६ रोग वेदना छाय ऊपजै १, मानसीक० मनमें चिन्ता सोच 秦秦秦秦秦秦秦秦秦 फिकर सदा रहै २. २ दोय प्रकाररी गति करें तिका कहै है ऋजुगति जीव सरीर होमकरि १ समयमांहि पर्ज़वें जायतिका ऋजुगित १ वक्रगित जीको जीव परजव जातो छुखो पर्ने ३ समय रस्तमें खागै पूर्व जीका गति वांची हुनै तिहां जाय तिका वकगति २. १९ १ दोय प्रकाररी श्रेणि बांचे तिका कहै है. समोहिया क॰ बंदूकनी गोखीनी पर प्रदेश एकठा नीक्खें १, द्यसमोहिया क॰ जीव ६ महिना पहिछी प्रदेशांरी श्रेणी बांघे १० र सर्व जीव दोय प्रकाररो घ्याकालो बांबे. नोपक्रमी क॰ घ्याकालो बांघें जितरो पूरो जोगवें विण उपत्रम निह लागे. १ सोपकमी क॰ व्याक्तलो घणो बांधीयो हुवे ते-हर्ने जपक्रम खागीने घोना कालमांहि पूरो करे र

\*\*\*\*

\*\*\* २ दोय प्रकाररी कणोदरी. इञ्चकणोदरी १, प्रावकणोदरी २. २ इब्यन्न होदरीरा दोय जेद. जपगरणकाणोदरी क० वस्त्र पात्र काणो निरदोष गर्वे १, जात पाणी जणोदरी जात पाणी जणो जोगर्वे २. जावजणोदरी तिका खप्पकोहे खप्पसद्दे खप्पजंजे खप्पकखहे. ४ 李本本本等

****		॥ श्रथ तीजो बोख खिख्यते ॥	**
<b>3</b>		and the second s	*0*
	3	सर्व जीव तीन प्रकारें. स्त्रीवेद १, पुरुषवेद २, नपुंसकवेद ३.	*
3	3	सर्व जीव तीन प्रकारें. संजती १, द्यसंयती २, संजतासंयती ३.	***************************************
	3	सर्व जीव तीन प्रकारें. विरती १, छाविरती २, विरताविरती ३.	\*
********	3	सर्व जीव तीन प्रकारें. पचकाणी १. व्यपचकाणी २, पचकाणापचकाणी ३,	<b>  </b>
- 11 1		सर्व जीव तीन प्रकार संवरी १, व्यसंवरी २, संवरासंवरी ३.	*
	ą	तीनदिष्टि. समदृष्टि १, मिथ्यादृष्टि २, समामिथ्यादृष्टि ३.	*
*     *		सर्व जीव तीन प्रकारं. सूक्त १, बादर २, नो सूक्त नो बादर ३. सूक्त ते सर्वखोक	<b>₩</b>
	,	मांही जरीया है, मारीया मेरें नही १ बाहादर ते लोकरा एक देशमांहि रहे हे मा-	1
		रीया मरें २, नोसूक् नोबाहादर तें वाटें वहुता जीव.	*
**************************************	3	सर्व जीव तीन प्रकारें. त्रस १, घावर २, नोत्रस नोयावर ३. त्रस ते हाखै चाखै १,	*
*		थावर ते हा <b>खें नही २, नोत्रस नो</b> थावर ते सिद्ध जाणवा २.	<b>  </b>
<b>\$</b>		Alter a Kim a Secretary and a second a second and a second a second and a second a second and a second and a second and a	*
11 X	11		

३ सर्व जीव तीन प्रकारें पर्याप्ता च्यार पर्याय पूरी करें १, ख्रपर्याप्ता पर्याय ख्रकरीयें मरें २, नोपर्याप्ता नो अपर्याप्ता जीव ब्राटें वहता ३. ३ सर्व जीव तीन प्रकारें जवसिद्धिया ते मोक् जावें १, व्यजवसिद्धिया ते कदी पण मोक नही जाँव २, नोजविसिद्धिया नोट्यनविसिद्धिया सिद्धारां जीव ३. ३ सर्व जीव तीन प्रकारें. सिद्धराजीव १, संसारीजीव २, वाटबहुताजीव ३. ३ तीन प्रकारें केवलीयें लोक बनाव्यो, जंचोलोक १, नीचोलोक २, तिरहोलोक ३. १२ ३ तीन प्रवारी दिशि उंचीदिशि १, नीचीदिशि २, तिरजीदिशि ३. ३ ज्वनपतिनी परषदा तीन प्रकारें. तुंबा ते मां हिसी परषदा १ वार ब्रुखावी आवें १, त्रिम्या ते विचली परषदा वगर बोलावी आवें २, मीढरा ते बाहिरली परषदा बो-लावी अणबोलावी पिण आवें ३. ३ व्यंतरांरी परिषदा तीन प्रकारें. ईसा १, तुमीया २, मीढरा ३. ३ तीन प्रकाररी वनस्पति. प्रत्येक १, सूक् २, साधारण ३. ३ वनस्पति जोव तोन प्रकाररा. संख्याता १, व्यसंख्याता २, व्यनंता ३.

李子子子子子子子子子子子子子子子子子子 तीन प्रकारना व्यजीवना संस्थान. वट १, तंस २, चोरंस ३. श्रावकरा मनोर्थः किंवारें हुं छारंज परिग्रह् बोमशुं १, किंवारें हुं श्रावकरा वत नि-रतिचार पालशुं २, किंवारें हुं छपबिम संलेषणा करी समाधिमरण छाराधशुं ३, १ए तीन मनोर्ध साधुना. प्रथम मनोर्ध साधु इम मनमांहि चिंतवे किंवोरे हुं थोमो त-था घणो सूत्र जणुं एकलविहारीपणुं पनिवजुं १, बीजें मनोर्थः इम चिंतवे किंवारे हुं बाराशिषुरी पिनमा छादरुं २, त्रीजे मनोर्थः पादोपगमन संयारो करुं एहवी चिं-तवणा करें, एहवो ध्यान धरुं ३. र तीन समकितरी सरदहणा, अस्हिंत सिद्धामें देव करी जाणै १, साधुनें गुरु, करी जाएं २, क्तमा दयामयी धर्म करी जाएें ३. ३ तीन समकितरा दृष्टांत. किंनर देवतारा गीत राग धरीने चित्र राखें तिम जपदेश सांजलें सांजलवारें विषे एकाम चित्त राखें १, बीजें जूखेंरो जीव अन्नरी अ-जिलाष करें तिम समिकत पालवानें विषे राजिलाषा करें २, तीजें रोगीनें जिष्ध करी समाधि जपजावें तिम ब्याचार्यरो सेवा पर्यूपासना करी चित्त प्रफुख करीसमाधि

李子子子子子子子子子子子子子子 खपजार्वे ३. र तीन प्रकारनी समिक ननी रहाा. पृहिलें बोलें जाइ बाइयांनें मिथ्यात्वीनें श्वनमतीने श्वापरो धर्म दिखारें तहनें उत्तर देश्नें निषेधें तो समिकतरी रिष्या हुवें १, बीजें बोर्ले उत्तर नही देवार्ये तो अणबोब्यो रहै पिण मिखती नही मारे तो समिकती हुवें २, तीजें व्यणबोट्यो नही रहे तो व्यथों परो जावें तो समिकतरी रिष्या हुवें ३. १३ र तीन प्रकारं जीव घ्यटप घ्यधरो घ्या छलो बाघें जाण बूज त्रसजीवनी हिंसा करें १ दू जें जांणवूज जूठ बोटें २, तीजें जाणवूज साधु चारित्रयनें श्रसुफतों श्राधाकभी श्रणेखणीक खन्न पाणी देवें ३. र तीन बोले जीव मोटो व्या उसो बांधे. त्रस जीवरी हिंसा न करें १, जूनो वचन नही बोले २, साधु चारित्रीयने सुफतो छन्न पाणी देवें २. ए तीन बोल सेवें तिके जीव मोटो खाजलो बाधे. र तीन प्रकारें जीव श्रशुज दीर्घ श्राज्यों पामे त्रसजीवरी हिंसा करें ?, जूठो बोलें २, साधुचारित्रीयनुं श्रमुफतो श्राधाकमीं श्रने क्णीक श्रन्न पाणी वस्र पात्र देवें

本の本本の本

李崇华亲华 茶茶 हीं निंदे बेसीनें देवें ३, ए तीन बोले जीव छाशुज दीर्घ मोटो छाजलो पामें ध-णा रोग इःख दारिक्व व्यशाता घणो पामे. र तीन प्रकारें जीव शुज दीर्घ छायुषो पांम. जीवनी हिंसा न करें १, जूठ नही बोलें २, साधु चास्त्रियनुं सुफतो निखाप एपणीक मननें गमतो पीतिकारीयो छात्र पाणी वस्त्र पात्र सतकारने देवें, छादरसन्मान देवें, साधनी सेवा करें घणें १ प्रकारें ए तीन बोल सेवें तिकें जीव शुन दीर्घ छाजलो घणी सासतीसाता सुलरो मोटो छाजलो पामें ३. ३ तीन प्रकाररी जली गतिः मनुष्यगति १, देवतारी गति २, सिद्धगति ३. 李朱子子 李本子 ३ तीन ग्रंमीगतिः नरकगति १, तिर्यचगति २, श्रशुप्त मनुष्यगति ३. ३ तीन खेरया ग्रंमी. ऋषा १, नीख २, कापोतखेरया ३. ३ तीन खेरया जली. तेजुलेस्या १, पद्मलेस्या २, शुक्कलेस्या ३. र तीन उसीगणा माता पितासुं बेटा बेटी उसीगण न थावें. तिके बेटा तथा बेटी मा-तापितानुं शतपाक सहस्रपाक तेलें करीनें हाथसें मर्दन करें तिको मर्दन हामने

एयाइ हीणी हैं, तिवारें वाणोतर दोहसुं पाहो जपगार करें, तोपिण जसरावण नही थावें, केवलीप्ररूपीया धर्ममें प्रवत्तावें तिवारें जसरावण थावे शेठसुं वाणोतर ३. ३१ तीन गारव. इहिगारव कहेतां रिटिशे गारव पाना पुस्तक सिष्य साषा जंमोपगरण जेहनो छाहंकार करे ते इहिगारव १, बीजो रसगारव छाहार सरस मिलें तेहनो श्रिनमान करें एहवा सरस श्राहार श्रमनें मिले हे बीजानें मिलें नही ते रसगाख. २, तीजो सातागाख ते सुखसातारो गख ते श्रिजमान करें श्रमनें सुखशाता है इसी दूजा केहनें नहीं ते सातागाख ३. ३ तीन शब्य. मायाशब्य १, नियाणाशब्य २, मिथ्यातदर्शणशब्य ३. ३ तीन विराधना ते ग्यान ख्यकालने विषे प्राणें, ग्यानरो विनय न करें, ग्यानवंतनी श्रासातना करें, ग्यान जणतां गुणता श्राखस मोमें श्रमण्या खेवें जिएरें पासें ज्ञा-न जणीयो हुवे तेहनो जपगार मेटें तिणारा व्यवगुणवाद वोहें ते नाणिवराधना १, बीजी दर्शनविराधना. समिकत शंका कंपा त्यावें, समिकतीसुं देष करें, मिध्यात्वीनी परसंसा करें, साधुसुं हेष करें, तेहनी निंदा करें, ते दर्शणिवराधक सिके नही ते दर्श-

निवराधना २, तीजी चारित्रविराधना ते चारित्रविराधना जत्तरग्रणनुं दोष लगावें सरीररी सुश्रूषा करें ते चारित्रविराधना ३. ३ तीन खाराधेना. ग्यानखाराधना १, दर्शणखाराधना २, चारित्रखाराधना ३. तीन प्रकारें तिर्येच पुरुष. जलचर १, घलचर २, खेचर ३. तीन प्रकारनी तिर्येचणी. जलचरणी १, थलचरणी २, खेचरणी ३. तीन प्रकाररा मनुप पुरुप. कर्मजीमी १, ट्यक्मजीमी १, ट्यंतरहीपक ३. तीन प्रकाररी मनुपरीस्त्री. कर्मजीमनी १, व्यक्मजीमनी २, व्यंतरहीपनी ३. कर्मजीममें तीन कर्म. श्रास शस्त्रसं १, मसी लिखकर २, कसी खेतीकर ३. तीन पद तीर्धिकरदेव गणधरोनें छापें. हेय ते ठांमवा योग्य १, क्षेय ते जाणवायोग्य २, जपादेय ते आदरवा योग्य ३. ए तीन पदने अनुसारे गणधरदेव ११ अंग रचें. ४२ ३ तीन पद श्रिवर जगवंतानें तीर्श्वकरजी कहै. जपन्नेवा, जपजता है १, विगमेवा, वि-\*\*\* णसता है २, धुवेवा, श्रिरपणे ३. श्रिवरत्रगवंत वार जपांग रचे. ३ तीन खह. पद्म १, महापद्म २, तिगि छिड्ह ३. AA

तीन खुह. केशरी दह १, पुंमरीक दह २, महापुंमरीक खह २. ए ६ खह उकुछ 泰米泰米泰米泰 गिरि पर्वतं जपर जाणवा. \*\*\*\*\*\* ३ तीन देवी. हिरि १, श्री २, धिति ३. तीन देवी. कित्ति १, बुद्धि २, खबी ३. ए ६ देवी इहांरी जाएवी. मोटी रिष्टिरी धं-条类 णीयाणी हे एक पब्योपमरो छालखो जवनपत्यांरी देवी हे छासंख्याता देवता सेवे करें हैं. हवांइ इहांने विषे हवांइ देव्यारां जवन है तिके जवन छाधे कौंसरा चव-मा, कोसरा खांबा, देशकरों कोसरा वली जंबा, खाठा निर्मखा, घटारीया मठारीया तीन १ बारणा वे चवर्देसयचालीस एक जवनरा थांजा वे रत्नारा थांजा वे. ३ तीन प्रकारें वाचणी नही देवें. व्यवनीतनें नही देवें १, रसखोद्धपीनें नही देवें कीयो कोघ खमावें नहीं तेहनें वांचना नही देवें ३. AL ३ तीन प्रकारे वाचना देवें. पंमितनें देवें १, सरखिचत्तरा धणीनें देवें २, गुरुगुरुणीरा बिद्या न जोवें तेहनें वाचणी देवें ३. तीन प्रकारं देवता मनुष्यलोकमां त्रावे. पूर्वस्रोहे देवता छावे १, तपस्वीरी महिमा क-

रवा देवता द्यावें २, तीर्थकरजीरा पांचक व्याणक मांहि देवता द्यावें ३. र तीने प्रकारें देवता छावें. तीर्धिकरजीरे जन्म उपरें छावें १, तीर्धिकरजीरी दिकारें म-होड़व जपेर आवें २, तीर्धकरजीरे निर्वाण महोड़व जपेरे आवें २. र तीन प्रकारे देवता आवें नहीं. अठेंरी रागस्नह बूटो ठें १, उठेंरी रागस्नेह खागो डें बत्तीसबद्ध बत्तीस छाद्वरनें छाकोरं नाटक पमे हें २, मनुष्यखोकरी छुर्गेघ वासना ज्जबल रही वे तिए कारणें देवता मनुष्यलोकमां नही व्यानें ३. र तीन प्रकारें देवता छावतो जाणीजें. देवता छावें तिवारें छांख टमकारें नहीं मनवं-बित कार्य पूर्वे ?, बीजें फूलारी माला कुमलावें नही खावतारी बांह पमे नही <sup>२</sup>, तीजें धरतीसुं च्यार खंगुली पग जंचा रहे तिण कारण देवता खाया जांणीजें. एर र तीन प्रकारें देवता सोचैं. मातापितानें चोछो छाश्रव सेवता देखीनें सोचैं १, छाया गर्नरा इःख देखीने सोचैं २, मलमुत्रमांहि जपजणो पमसी तिण कारणे सोचैं. ५४ ३ देवता देवलोकथका तीन बोलरी बांजा करें. १ आर्यक्रेत्ररी १, मनुषजन्मरी २, सुक्र-खमें जपजवारी ३.

र तीन बोर्ले देवताने ६ महिना पहिली ब्याजवारी वबर पमें रत्नारामबा माणवक थं-प जांखा देखें १, वीजें फूलांरी माला जांखी देखें २, तीजें तेजोलेक्या जांखी देखें ५६ र तीन प्रकाररा देवतारा विमान. वटविमाण ते वृत गोख सगखारे चिहुंही दिसे कोट जाणवा सर्व वाटला विमानरे एक २ बारणो १, बीजे त्र्यंस विमानरे तीन बारणा जाणवा २, चलरंस विमाणरे च्चार बारणा वेदिका चिहु दिसे जाणवी ३. र तीन प्रकारे देवता साचे घणो विनय वैयावच कीया नही हुवे तिवारे सोचें १ घणी दिका नही पाली हुवे तो सोचैं २, घणा सूत्र नही ख्रवगाह्या हुव तो सोचैं. ५० र तीन प्रकार देवता नहीं साचे. घणी वेयावच करी हुवे तो नहीं साचे १, घणी दि-का पाली हुवे तो नही सोचैं २, घणा सूत्र ट्यवगाह्या हुवे तो नही सोचैं ३. र तीन प्रकाररा थिवर. वयथिवर साठ वरसरी व्यवस्था ते वयथिवर है, सूत्रथिवर ते ठाणांग समवायांग सूत्रना र्था धेवैं ते सूत्रिधवर २, प्रवृज्याधिवर तवीस वरस दि-का लीधांने हुवा होय ते प्रवृज्याधिवर ३. ३ तीन करण. मनकरण १, वचनकरण २, कायाकरण ३.

京学 李子子 李子子 张子子 张子子 张田子 朱田子 朱田子 तीनदंम. मनदंम १, वचनदंम २, कायदंम ३. ३ तीनगुप्ति. मनगुप्ति १, वचनगुप्ति २, कायगुप्ति ३. \*\*\*\*\*\*\* र तीनकरण. सारंज कहेतां पाप मनमें चिंतवें १, समारंजकरण कहेतां वचन कहीनें पाप करावें २, ब्यारंजकरण कहेतां बकायरो हणवो पोताने हाथे करीने करें २. ६४ ३ तीनकरण. करण १, करावण २, ट्यनुमोदना ३. ३ तीनमिध्यात. कुगुरु १, कुदेव २, कुधर्म ३. तीनसमिकत. सुगुरु १, सुदेव २, सुधर्म ३. ३ तीनरतन. ग्यानरतन १, दर्शणरतन २, चारित्ररतन ३. 李李本本李宗 ३ तीनपरिग्रह. कर्मपरिग्रह ते खाठ कर्म १, सरीरपरिग्रह ते सरीरनी ममता करे २, जं-मजपगरण परिग्रह जंमजपगरणरी ममता करे ३. ३ तीनपरिग्रह. सचित्त परिग्रह सिष्य सालारो १, व्यचित्तपरिग्रह जंमजपगरणरो मिश्रपित्रह शिष्य साषा सचित्त जंमजपगरणते श्रचित्त दीनुंही ममता मूर्जी करे. ५० ३ तीनपुरुष. जघन्य १, मध्यमपुरुष २, जत्कृष्टपुरुष ३.

३ जघन्यपुरुष तीन प्रकारना. दारुगा ते दासना काम करे १, घृतका ते जामो खेइने 张子子·朱色子·朱色子·朱克子·朱色子·朱色子·朱色子·朱色子 कर्म कार्य करावे २, जायल्लया जागदे खाधदे काम करावे ३. मध्यमपुरुष तीन प्रकारना. जग्रङ्खना १, जोगङ्खना २, राजन्यङ्खना ३. ३ जल्हृष्टपुरुष तीन प्रकारना. कामपुरुष ते चक्रवर्त्ता १, जोगपुरुष ते वासुदेव २, धर्मी पुरुष ते तीर्धकरदवे ३. ३ तीन प्रकाररी क्रिया. सैते समिकत १, वैते विस्त २, कैते क्रिया ३. ३ तीन प्रकारे विद्या वधे. घोते घोषेसुं १, पूर्त पूर्वासुं २, चिन्न ते चिंतारेसुं ३. **३** तीन सामायक. श्रावकरी सूत्र सामायक ते निर्मखो ग्यान प्राणे १, समकित सामा यक ते निर्मखो समिकत शंका कंखारिहत पाले २, देशविस्त सामायक ते विस्त प-चकाण निर्मेखा चोला व्यतिचाररहित पाले ते तीजी समाधि जाणवी ३. र तीन जागरका. बुधजागरका ते तीर्धंकरजीनी १, श्रबुधजागरका ते सामानीक सा-धुनी २, सद्युजागरका ते श्रावकनी ३. ३ तीन प्रकाररा पुद्रख पंजगसा ते जीव पुद्रख ग्रहै ग्रहणो कपमो खाहार पाणी शरीर

घर इत्यादिक स्थादि देश्ने बीजाही पुद्रखजीवरे प्रजोजन जोगमे ग्रहे ते पुद्रख प-जगसा कहीजे १, वीससा ते वादल जाणवा २, मिसा ते जीव पूर्वे ग्रहणा कपना श्रारीर इत्यादिक पुद्गल ग्रही २ ने मेह्या ते पुद्रलिमसा कहीजै ३. ३ तीन प्रकारे सिद्धारी संचलना जाएवी धु १, वे २, जलात ३. धु ते सिद्ध चले न-ही १, वे ते सिद्धांरी वय पढ़ाटे नही २, जत्पात ते जिए समय ग्यानरो जपयोग हुवै तिण समय दर्शरो जपयोग नही, जिण समय दर्शरो जपयोग हुवै तिण समय ग्यानरो जपयोग नही ३. तीन श्ररिहंत. श्रवधिग्यानी श्ररिहंत १, मनपर्यवग्यानी श्ररिहंत २, केवलज्ञानी श्रारहंत ३. ΠŞ ३ तीन जिन. व्यवधिग्यानी जिन १, मनपर्यवग्यानी जिन २, केवलग्यानी जिन ३.७२ तीन केवली. व्यवधिग्यानीकेवली. व्यवधि ते मर्यादाए निर्मलो देखे १, मनपर्यवग्या-नी ते निर्मेखा सन्नीपंचे दिना मनना जाव जाए। २, केवखग्यानी केवख सर्व खोक श्रखोकना जाव जाएो ३.

李本本学

\*\*\*

र तीन इंड ग्यानेंड ते केवलग्यानी १, दर्शणेंड ते कायक समिकती १, चारित्रेंड ते यथाख्यात चारित्री ३. र तीन इंद्य. श्रासुरकुमारना इंद्र चमरेंद्र बलेंद्र १, मनुषलोकना इंद्र चक्रवर्ती १, देवताना इंद्र शकेंद्र ३. र तीन प्रकारे देशयकी योमीसी धरती धूजै. मोटा पर्वत पाहाम पमे योमीसी धूजै १, बीजे जबनपति वाणव्यंतर देवता बेहुं फंफ करे तिवारे छोमीसी धरती धूजै र, तीजें प्रवनपति वाणव्यंतर बेहु पेखा श्रष्ट्ने तीर्श्वकरांने वंदना करणने जावे ति-वारे, तिवारे देशश्रकी धरती धूजे ३. 水水 ३ तीन प्रकारे सर्वथ्यकी धरती धूजै. घणो दिथरो पाणी हेठलो जबलै तेह्थकी सर्व-था धरती धूजे १, ज्योतिषी विमानिक जेला हुयने फुफ करे तिवारे सर्वथकी धरती धूजै २, तीजै, ज्योतिषी विमानिक बेहुं जेला हुयने तीर्थिकरांने वंदना करण जाय तिंवारे सर्वेष्ठकी धरती धूजै ३. \*\*\* **U3** ३ तीन जोगं. मनजोग १, वचनजोग २, कायजोग ३. सर्व ब्रवांइ दिसांरो पुद्रख वस्तु

खेवै ते जोंग. ३ तीन प्रजोग. मनप्रजोग १, वचनप्रजोग २, कायप्रजोग २. सर्व व्वांई दिसांना ប្រ इंखं प्रवर्तीवे ते. ३ तीन लखंण मिथ्यात्वीना जाणवा. ऊणायस्यिए जगवंतरे जाष्यायकी ऊणो परूपे १, ख्राइस्यिए जगवंतरे जाष्याथी ख्राधिको परूपे २, वहस्यिए जगवंतरे जाष्याथी रीतं परुपे इसी परुपणा करे तेह्यी ट्यनंत संसार सजै ३. ३ तीन प्रकाररा मिथ्यात. खौिककमिथ्यात ते खोकनी क्रिया करे संसारना कार्य विवाह सगाइ देव पितर गोगो खेतरपाल मानै पूजै ते लोकिकमिथ्यात १, संसयमिथ्यात ते देव गुरु धर्मना गुण न जाणे २, कुप्रावचनिक मिथ्यात ते ख्रन्यमित जोगी संन्या-सी तापसनी प्रशंसा करे परिचय करे र र तीन पल. धूर्मपल ते साधु साधवी १, श्राधमीपल ते चतुर्विध संघ टालीने बीजा जीव ख्रांघमेपलमांहि जाणवा २, मिश्रपल श्रावक श्राविका जाणवा २. ३ तीनं ज्योतिषीरी परखदा. तुंबा १, तुमिया २, पेचा ३.

तीन विमानिकरी परिषदा. समीया ते मांहिखी परिषदा बोखावी खावें ?, चुंना ते विचली विनाबोलावी त्यावे २, जाया ते बाहिरली बोलावी विनाबोलावी त्यावेर ए ४ र जगवंतरी तीन परिषदा. जाणीया ते समफावा समर्थ १, खजाणीया ते पिणसमजा-वा समर्थ २, ड्वेंहा ते समजावा समर्थ नही ३. र तीन प्रकारनी एपणा. गवेषणा ते निरदोष ब्यन्न पाणी देखीने विकाणे जाजनदा-तारना जाव जाणीने गवेषे १, श्रहणएषणा व्यन्न पाणी सर्व वस्तु घणे काखरी श्रोन में कालरी जीवरहित जीवसहित देखोंने पत्ने निरदोष जाणीने खेंवे २, परिजोग ए-मणा जोगवतोष्ठको व्यजयणा करे नही सरावे नही विसरावे नही प्रकाशकारी जा-जनमांहि दोषण टालीने जोगवे ३. तीन प्रकारे जाव विजसग्ग छाठ कर्म ढांमे १, चल्रगीत संसार ढांमे २, ज्यार षाय ढांमे ३. र तीन प्रकारे साधुने पात्रा. तुंबेरो १, काउरो १, माटीरो ३. ए ए साधु तीन बोख सेवे तेहने माथे प्रायित छावे. साधुरी चोरी करे १, प्रह्मीरी चोरी

100 : 100 : 46 # 44 + 40 + 460 H + 46 14 + 46 करे २, हथवाइ करे ३. ३ तीन बंध. कसिएाबंध १, त्र्यकसिएाबंध २, त्र्यनेक द्रव्यबंध ३. र तीन बंध. सचितबंध. हाथी घोमा दोपद चोपद जेहना समूह ते सचित्त १, श्रमित्त बंध सोनो रूपो घर हाट हवेली तेहनो समूह ते श्रमित्तबंध २, मिश्रबंध ते प्रहणा गांठातो श्रमित्त मनुष्य तथा हाथी घोमा सचित्त श्रत्यादिक सचित्त श्रमित्तरो जेल ते मिश्रबंध ३. र तीन पूर्वी पूर्वानुपूर्वी. ते पहिलेसे लेइने अनुक्रमे गणे ते पूर्वानुपूर्वी १, पगनुपूर्वी ते वेहमें वेहमें वेहमें पहिले तां र गणे ते पगनुपूर्वी २, अनानुपूर्वी ते पहिले बेहमें दोनुं टालीने विचला सर्व ष्यनानुपूर्वी जाणवा ३. ३ तीन पूर्वी तीनप्रदेशी खंधयी लेइने ष्यनंतप्रदेशीखंध तांघ्र गिणे ते ष्यनुपूर्वी कहीजें १ ख्यानानुपूर्वी ते घ्रप्रदेशीलंध २, ख्रवत्तवए ते प्रमाण २. ३ तीन वेदना. सीतवेदना १, जसनवेदना २, मिश्रवेदना ३. ३ तीन प्रकारे जीव जपजें. नारकी तेरेंदंमक देवतारा तीन दंमक विकलेंद्रीरा १०१

तिर्यच एवं १० दंमकें तीन प्रकारें जीव कपजें कयसंचया एकें समयमें संख्या कप-李子子子子子 जैं १. श्रकयसंचया ते एके समयमें श्रसंख्याता जपजें २, श्रवसवए ते एकें समयमें एकहीज ऊपजें २. गर्जज मनुष्यमांहि २ प्रकोरं ऊपजें. कयसंचया १ व्यवत्तसवया १ च्यारशावर श्रासन्नी मनुष्यमांहि श्राकयसंचया जीव उपजें. वनस्पतिमांहि एकें स-मयमांहि य्यनंता ऊपजें. ३ तीन योनि. शीतयोनि १, जसनयोनि २, मिश्रयोनि ३. नारकी देवतारी शीत जसन योनि, गर्जेज मनुष्यरी तिर्यचरी मिश्रयोनि. च्यार श्रावर तीन विकलेंड्री श्रासंनीम-नुष्य तिर्यचरी तीन प्रकाररी योनि. ३ तीन प्रकाररी योनि. सचित्त १, श्राचित्त २, मिश्र ३. नारकी देवतारी श्राचित्तयोनि बाकी सर्व दंमकै तीन योनि सचित्त ट्यचित्त मिश्रयोनि. Po\$ ३ तीन प्रकाररी योनि. नारकी देवता पांच श्रावरांरी संबुमायोनि तिका ढांकी १, तीन विकलेंडी ख्रसंनी मनुष तिर्यचनी वियमायोनि २, गर्जन मनुष्य तिर्यचरी तीन यो-नि संबुमा ते ढांकी वियम ते उघामी, संबुमवियम ते कांइक ढांकी, कांइक उघा-

मी ते मिश्रयोनि. । तीन प्रकाररी योनि. जत्तमपुरुष मातानी कडुवें सरीखी १, चक्रवर्त्तिरी श्रीदेवीरी शं-खरें आवर्त्त सरीखी योनि, तिण्यें जीव जपजें पिण हर जाय १, बीजां सघलांरी मातारी योनि वांसरी पताका सरीखी योनि ३. ३ तीन काल. अतीतकाल १, वर्त्तमानकाल २, आगामिकाल ३. ३ तीन काल. शून्यकाल १, ट्याशून्यकाल २, मिश्रकाल ३. इ तीन प्रकाररी दिख्या. एहलोकरें प्रतिबंधसुं नीकलें १, परलोकरे प्रतिबंधसुं नीकलें २, दोहांही खोकरें प्रतिबंधसुं नीकखें ३. ३ तीन प्रकार्री दिष्या. पूर्वें प्रतिबंधसुं नीकलें १, मार्गरे प्रतिबंधसुं नीकलें २, पूर्वें सजनादिकरें तथा मार्गरे बेहुं प्रतिबंधसुं नीकलें ३. ३ तीन प्रकाररी दिष्या. तुयावस्या १, पुयावस्या २, बुस्यावस्या २. तीन प्रकाररी दिष्या. जवायपवज्जा १, श्राषायपवज्जा २, संघायपवज्जा २,

## ॥ यय चोया वोल लिख्यते ॥

大学来の本本の米

京本 大學 本京本 本京本 本京本

४ च्यार श्रांतिकया. श्रव्यकर्म श्रव्यवेदना श्रव्यनिद्धारा संयमबहुले संवरबहुले श्रादी-सर जरतेसरजी जांणवा १, च्यार श्रंतिकया. कर्म घणा वेदना घणी निद्धारा घणी संयम श्रव्य संवर श्रव्य गजसुलमालजी जांणवा २, च्यार श्रंतिकया कर्म घणा वे-दना घणी निद्धारा घणी संयम पिण घणो संवर पिण घणो सनत्कुमारचक्रवर्तिरी परे ३, च्यार श्रंतिकया श्रव्य कर्म श्रव्य वेदना श्रव्य निद्धारा श्रव्य संयम श्रव्य संवर मरुदेवीमातारीपरे जांणवा ४. 本《学·朱〇宋·朱〇朱·朱〇朱

परे ३, च्यार छांतिकया छाट्य कर्म छाट्य वेदना छाट्य निक्कारा छाट्य संयम छाट्य संवर मरुदेवीमातारीपरें जांणवा ४.

४ च्यार कुंज. मधुरो घनो मधुरो ढांकणो १ मधुरो घनो ने विषरो ढांकणो २, विषरो घनो ने मधुरो ढांकणो ३, विपरो घनो ने विषरो ढांकणो ४. ए कुंजनें दृष्टांते च्यार पुरुषरी जाति छे ते कहे छे. एक पुरुष मनमें निर्मला छाने मुख्यकी मीठो मधुरो जाखें १, एक पुरुष हियें निपाप निर्मला छानें मुखें कमवो कठोर जाखें २, एक पुरुष हियें कठोर मुख्यकी मीठो मधुरो जाखें ३, एक पुरुष हियें पिण कमवो कठोर

大学·米宫学·米宫学·米含学·米宫学·米宫学·米克学·米克 मुखयकी पिण कमवो कठोर नालें ध. ध च्यार जातिना फूल. एक फूल रूप संपन्न हे पिए। गंध संपन्ने नही, रोहीमारो फूल. १, एक फूल गंध संपन्ने हें पिए रूप संपन्ने नहीं, पोहणीरो फूल २, एक फूल गंध संपन्ने पिण हैं रूप संपन्ने पिण है चंपो मोगरो गुलाबरो फूल इ, एक फूल गंध सं-पन्ने पिए नही, रूप संपन्ने पिए। नहि, त्याकमा धतुरारा फूल ४ इए। दृष्टांते च्यार पुरुष जाणवा. एक पुरुष रूप संपन्ने हे पिए सीख संपन्न नथी बहादत्त चक्रवर्त्तिवत्, एक पुरुष सीख संपन्ने ने पण रूप संपन्ने नही हरिकेशी आणगाखत, एक पुरुष रूप संपन्ने:पिण हे सीख संपन्ने पिण हे ब्यादीश्वर जरतेश्वरवत, एक सीख संपन्ने पिए। नही रूप संपन्ने पिए। नही कालक श्रूरीक कसाइवत. ४ च्यार विश्रामना दृष्टांत. जारवाही घणो बोज लांघे छीयो है एक कांघेथी छेइ बीजें खांघे खेवे तिवारं थोमोसो विश्राम पामं १, वीजें विश्रामें नागकुमार तथा जक्कुमार रे देहरे जतारे ते बीजो विश्राम २, तीजें विश्रामें खोहमी तथा वमीनीतरे काजें जतारें ते तीजो विश्राम ३, चोधें विश्रामें घरे आय जतारें ते ध.

ध जारवाहीनो दृष्टांत श्रावक खपरें जाणवो. बकायरो खारंज समारंज ते जार जाणवो 本本 श्यने जाखादी समान श्रावक ते पहिलें विश्राम समिकतसहित बारे वत श्रंगीकार करे तिवारे मिथ्यात श्रविरतरूपीयो दशगुणो जार जतरे श्रने इग्यार माहै सेरो जार रहै १, बीजो विश्राम संवर सामायिक करे तिवारें सर्व आरंज्यकी निवरतें ते बीजो विश्राम २, तीजो विश्राम श्रावक महिनामाही व पोसा करें सर्व खारंजधकी निवरतें ते तीजो विश्राम ३, चोथे विश्रामें सर्व पाप आखोइ निंदी निशस्य थइने जात पा-णीरा पचकाण करीनें जावजीव संधारों करें ते चोधो विश्राम ४. ध न्यार गति. नरकगित १, तिर्थचगित २, मनुपगित २, देवगित ४. च्यार प्रकारें धर्म. खंती १, मुत्ती २, ख्रजवे ३, मद्दवे ४. च्यार दर्शण. चक्कदर्शण १, व्यचक्कदर्शण १, व्यवधिदर्शण ३, केवलदर्शण ४. 泰米泰 च्यार् शूरवीर पुरुष. क्षमाशूरा व्यस्हिंतजी १, तपःशूराः व्यणगारजी २, दानेशूरा वै-श्रमणदेवता ३, संत्रामश्रूरा वासुदेवजी ४. ध च्यार प्रकारें नारकीरो घ्याजलो बांधे. महा घ्यारंत्रिया ए घर हाट हवेलीरा

्र करे तीव परिणामें राति दिवस हर्षसहित आरंजमांहि पवर्ते १, महापिनगहियाए ग्रें परित्रह मिलियों ने तिणरी ममता मूर्ज घणी ने छाने छानेरी वांना करे पराया धन सुलसाहबी देखीनें चिंतवें ए माहरे हुवे तो जली एहवी छान्तेरी वांना करें ३, किणिय छाहारेणं, मांसरो मुदरो छाहार करे ३, पंचिदिय वहेणं, जांणबूफनें ति-राख्यपराघ पंचें कियजीवरो वध करे ध. ध च्यार प्रकारें तिर्यंचरो त्यायुषो बांधे. माञ्रह्मयाए, कपटाञ्च केखवे मुंदेसुं मीठो हृदयमां ही कपट केलवे १, निवममाइल्लयाए, मित्रसुं घणी मित्राइ करीने मित्रनें वंचें मुंह मीठो पूंठे व्यवग्रणवाद बोले २, व्यलीयवयणे केलवणी करीने झूठ बोले कून तों कूममाणे खोटो तोख खोटो माप खेवणरा जुदा ने देवणरा जुदा है. ए च्यार बोले जीव तिर्यचमांहि जाय ऊपजै. ध च्यार प्रकारें जीव मनुषरो छायुषो बांघे. पगइनिह्याएं खनावें नोल निक्त हुवें कुरलाइ नही १, पगइविनीयाए खनावेंहीज विनीत हुवे २, साणुकोसियाए छानुकं पा घणी हुवे २, छाम उरयाए मजरनावरहित हुवे ४. ए च्यार बोल सेवें जिको मनु

ष्यमांही कपजैं. ▼ ★①宋 ★①宋 ★②宋 ★②宋 ★①宋 ★①宋 ★①宋 ★ ध च्यार प्रकारें देवतारो छाजिलो बांधे. सरागसंजमे रागसहित संयम पादो वस्र पंम जपगरण शिष्य शाला जपरें राग धेरं १, संयमासंयमे क्युंहिक संयम क्युंहिक श्यसंयम श्वविरत ते श्वसंयम विरत ते संयम तिको श्रावकनो धर्म २, श्वकाम निः क्कारा सदाइ जूल तिरषा सहे रीसरें वस सहें ३. बाटातपुर्खी श्रुग्यान तपस्या करे ४ ए च्यार बोख सेवें तिकें देवतारी गतिमांही जाय छपजें. च्यार विकथा. राज्यविकथा १, देशविकथा २, स्त्रीविकथा ३, न्नातविकथा ४. १ए जगवंतरी बारे परिषदाना चतुर्विधसंघ. साध १, साधवी २, श्रावक३, श्राविकाध. २० च्यार जातिना देवता. प्रवनपति १, वाणव्यंतर २, ज्योतिषी २, विमानीक ४. च्यार जांतिरी देवी. जवनपतिरी देवी १, वाणव्यंतररी देवी १, ज्योतीषीरी देवी विमानीकरी देवी ध. 米の米米の米 <sup>ध</sup> च्यार कर्मबंधरा प्रकार. प्रकृतिबंध ते कर्मना स्वजाव १, स्थितिबंध ते जेटली स्थिति ना कर्म बांधे तेरलोहीज काल कर्मबंध जोगवे २, ट्यनुजागबंध ते रस शुज

जोगववो ३, प्रदेशबंध ते दलनिकाचितबंध व्यसंख्याते प्रदेशें करी विना जोगव्यां न बूटें. १३ ४ च्यार कषाय. क्रोध १, मान २, माया ३, खोज ४. ४ च्यार **आहार. असण १, पाणि २, खादिम ३, सादिम ४.** <sup>ध</sup> च्यार पुरुष क्रगीनें खग्या श्रादिश्वर जरतजीवत् १, क्रगीने श्राथम्या बह्यदत्तचक-वर्त्तिवत् २, श्राधमीनें कुरुया हरकेशी श्राणगास्वत् ३, श्राधमीनें श्राधम्या कालक-शूर कसाइवत् ध. ४ च्यार प्रकाररी बुद्धि. उपत्तीया उत्पातरी बुद्धि ते आपणहीश्री उत्पर्जे १, विणीया ते विनय करंत बुद्धि क्रपजे २, किम्मिया ते काम करतां सुबुद्धि क्रपजे २, परिणा-मिया ते वय परिणमतां बुद्धि ऊपजें ध. ध च्यार जातिना क्रियाणा. गिणीमंच गणिय सोपारी प्रमुख १, धरिमंच धर्मीयें तो ब्यो विकें २, मेकंच गर्जे मिणी वेचें कपमादिक ३, परिग्रिङ्गंच पारिष्योंये वेचें जुंहारा-दिक जाणवा ४. २0 ४ च्यार मेरूपर्वतज्ञपरे वन. प्रज्ञसाखवन १, नंदनवन २, सोमनसवन२, पंमगवन४.१ए

महावीरस्वामीजीरा च्यार पारणा. पहिलो विजयबाह्मणरे घरे पारणो १, बीजो सामें गाथापतिरें घरे पारणो २, तीजो गाथापतिरें घरे पारणो २, चोथो बकुलबाह्मणेरें घरे पारणो ४. ए च्यार राजग्रही चोमासेंमांहि पारणा जांणवा. च्यार श्रावक. माता पिता समान श्रावक १, मंत्री समान श्रावक २, बंधव समान श्रावक २, सोक समान श्रावक १. च्यार जातिरा वली श्रावक. छादर्श सरीला श्रावक १, धूजा सरीला श्रावक १, लः यररा खुंटा सरिला श्रावक ३, लोहरें कां टें सरीला श्रावक ४. च्यार जातिरा खाचार्य. चोलं मजीठ सरीला खाचार्य खाप पोते वैराग रंग राता है श्ववरानें पिए। वैरागरूप रंग चढावें १, परवाला सरीला श्वाचार्य श्वाप वैराग रंग करी राता है अवरांनुं वैराग रंग चढावै नही २, चूनें सरीखा आचार्य आप् वैराग करीने 李华兴华春 ढीला है ख्यवरांने वैराग रंग चढावें ३, लमी सरीला ख्याचार्य ख्यापही वैराग रंगे बु-ला श्रवरांने पिण वैराग रंग चढावणनें बूखा. <sup>४</sup> च्यार वस्तु व्यमोलक जाणवी. सात धातुमांही तो लोह व्यमोलक १, पथरमांही जु-

\*\*\*\*\*

हार त्यमोलक २, वस्तरे मांही द्यौमयुगल कपासरो नोपनो वस्त्र त्यमोलक ३, काष्ट-मांही बावनोचंदन ख्रमोखक <sup>ध</sup>. ४ च्यार करंमीया. राजारें करंमीयें समान तीर्धिकरदेव १, शेठरें करंमीये समान गणधर देव २, वेक्योरं करंमीये समान छान्यदर्शणी ३, चंमाखेरं करंमीये समान फोरामसी करणवाखा ध. ४ च्यार चंनाल. पशुमांही गधो चंनाल १, पंलीमांही काग चंनाल २, साधुमांही धी चंनाल ३, लोकिकमें नंगी चंनाल ४. ४ च्यार कषाय घणी किण २ में. नारकीमांहि तो क्रोध घणो १, मनुषमांही मान घ-णो २, तिर्यचमांही माया घणी ३, देवतामांही खोज घणो <sup>४</sup>. ४ च्यार खजीर्ण. तपस्यारो खजीर्ण कोध १, प्रणीयेरो खजीर्ण खहंकार १, कार्यरो ख्यजीर्ण विकथा ३, खोकमें खनरो खनीर्ण वमन <sup>४</sup>. च्यार विरख. सालरोरुख छाने सालरो परिवार छादिनाष्ट जरतचकवर्त्तिवत् १,साख-रोठंख एरंमरो परिवार गर्गाचार्य शिष्यवत् २, एरंमरो रुंख साखरो परिवार श्रंगारमर्दन 米仓米米仓米米(水 शिष्य श्राचार्यवत् ३, एरंमरो संब एरंम परिवार कालकशूरकसाई परिवास्वत् ध. ३ए ४ च्यार मेह. एक मेह गाजें पिण वरसे नही १, एक मेह वरसें पिण गाजें नही १, एक मेह गाजें पिण वरसें पिण ३, एक मेह नही गाजें नही वरसें ४. इए। दृष्टांते च्यार पुरुष. एकेक पुरुष पोमावें पिए। दान देवे नही १, एकेक इण दृष्टांत च्यार पुरुष. एकेक पुरुष पोमार्वे पिण दान देवे नही १, एकेक पुरुष दान देवें पिण पोमार्वे नही २, एकेक पुरुष दान पिण देवे पोमावे पिण २, एकेक \*\*\* पुरुष नही दान देवें नही पोमावें ४. ध च्यार मेह. एकेक मेह कालें वरसें पिएा ध्यकाले वरसे नही १, एकेक मेह ध्यकाले वरसे कालें वरसे नही २, एकेक मेह कालेंही वरसे ट्यकालेंही वरसे ३, एकेक मेह \*\*\* काटों वरसे नही व्यकाले पिण वरसे नही ध. \*\*\*\* इण दृष्टांते च्यार पुरुष ते किसा. एकेक पुरुष चाहीजतो दान देवे पिण व्यणचाहीजतो नहीं देवे १, एकेक पुरुष व्यणचाहीजतों देवे पिण चाहीजतों नहीं देवें २, एकेक 本学本 पुरुष चाहीजतो पिण देवें व्यणचाहीजतो पिण देवे ३, एकेक पुरुष नही चाहीजतो देवें नही श्रणचाहीजतो नहीं देवें ४.

च्यार मेह. देनें वरसें छादेनें नही वरसें १, छादेनें वरसे देनें नही वरसें २, देनें पिए वरसें छादेनें पिए वरसें २, देनें वरसें नही छादेनें पिए वरसे नही ४. ४४ ४ इए दृष्टांते च्यार पुरुष जाएवा. एकेक पुरुष सुपात्रने दान देवें पिए कुपात्रने नही देवें १, एकेक पुरुष कुपात्रने देवें पिण सुपात्रने नही देवें २, एकेक पुरुष सुपात्रने पिण देवें कुपात्रने पिण देवें ३, एकेक पुरुष नही सुपात्रने देवें नही कुपात्रने देवे. ४५ ४ च्यार जातिरा मेह. पुष्करावर्त्तमेह. एकवार वर्षे तिको दशहजार वर्षे तांष्ट्र नीपजें पहिले खारे वरततां एह मेह वरसें १, परजन्यमेह. एकवार वरस्यां थकां हजारवरस तांइ नीपजें बीजे छारे वरततां वरसें २, फामनामामेह. एकवार वुठांथकां दस वरस तांइ नीपजें तीजे चोथे त्यारे वस्तां वस्सें ३, जीमनामामेह. वार २ वस्सें तो नीपजें पांचमे खारे वरसें ४. ध मेह जपर दृष्टांत. संजतीराजा गई प्रह्वीऋषीश्वररी वाणी एकवार सांप्रद्वीनें राज्य पद् बोमीने दीका लीधी १, प्रदेशीराजा केशीकुमाररी वाणी एकवार सांजलीनें सम-कितसिहत बारे वत खंगीकार करी समज्या २, श्रेणिक महाराजा खनाथी ऋषीश्व-

स्री एकवार वाणी सांजलीनें समिकत खंगिकार करें ३, हिवें पांचमे खारेरा जीव सुणें सांजलें तिरां तिणांरां दृढता परिणाम रहै अने सुणें सांजलें नही तिवारे धीठा परिणाम पिनतां वार लागें नही चोथा श्रीममेह समान जाणवा. ४ च्यार ख्राहार परिववनाना जांगा. एक जायगा फासुक् तस थावर जीव करीनें रहित जाएँ लोक आर्वे जांवें देखें हें १, एक फासुक जायगा दूरथकी देखें हें परलोक आवें जावें नही २, एक जायगा फासुक तस आवर जीवरहित परं खोक आवें जावें हैं द्रायकी नहीं देखें ३, एक जायगा फासुक तस यावर जीवरहित लोक नही खावें नहीं जावें दूरश्रकी देखें पिण नहीं ध. तीन जायगाए श्राहार परिठववों नहीं चो-थ्री जायगाये परितववों. 米の本本の本本の本 ध च्यार जातिरां रूंख. एक रुंख उंचो ने फल नीचा दाख खर्जूररा बीजोरांरा ?. एक फल जंचा ने रंख नीचा नालेखा २, एक फल पिए जंचा ने रंख पिए जंचा ताम प्रमुखरा ३, एक फल पिण नीचा रंख पिण नीचा रींगणी प्रमुखररा ४. ४ इण दृष्टांते च्यार पुरुष. एकेक पुरुष जातीरा जंचा पण करणीरा नीचा ब्रह्मदत्तच-

क्रवर्त्तिवत् १, एकेक पुरुष करणीरा उंचा परं जातीरा नीचा हरकेशी व्यणगारवत् २, एकेक पुरुष जातिए पिण जंचा ने करणीए पिण जंचा छादीश्वरचक्रवर्त्तिवत ३, एकेक पुरुष जातिए पिण नीचा कुलकरणीए पिण नीचा कालकशूर कसाइवत् ४. ५० ध जगवंत च्यार प्रकाररी कथा कहें. जुलेवणी ते प्रष्न न्यारा करें तेहनुं स्वमतना जा-ण परमतना जाण दोनुं मतना विशेष नाव जाणीने कहें, तिणसुं निर्मल जाणपणो पेलाने आवें १, विलेवणी कथा. समिकत मिष्ट वचने थापें अने मिध्यात उथापें विशेषे समकितने थापें परपाखंमीना मत ज्यापें एही कथा कहें २, निर्वेगणी कथा पांच इंड्री विशेष यकी वश्यनाव वर्ते कामनोग यकी विरक्तनाव हुवें संसार यकी ज-देगंत्राव पामें एही कथा कहें ३, संवेगणी कथा. वैरागनाव पमार्ने जीव कया कर्म प्रोगवें हें कर्मथकी मुकावाना जाव तप संजमना फल कहें एही वैरागणीकथा<sup>ध</sup>.५१ ४ च्यार बल. एकेक २ नुं तपस्यारो वल हें घ्याहाररो वल नहीं १, एकेक २ नुं घ्या-हाररो बल हें पिए। तपस्यारो बल नही २, एकेक २ नुं श्राहाररो पिए। बल हें तप-पिण बल हें ३, एकेक २ जं ब्याहाररो बल पिण नहीं तपस्यारो पिण बल नहीं ४. ए३

च्यार गोला. रत्नरे गोला सरीखा निश्रंथ स्नातक १, वज्ररे गोला सरीखा गणधरदेव २, सोनारा गोला समान श्राजा जपयोगयुक्त साधु ३, रुपेरा गोला समान सामा-न्य साधु <sup>ध</sup>. च्यार गोला. मांलणरो गोलो तावमे नांली यांही गर्ले तिम कोइने वचन कथन कहें धर्म बोमी देवें १, जतु ते खाख तेहनो गोलो तावमे मेलीयें तो परघलें नही श्रमिरे पसवामे मेलीयें तो परघलें तिम कोइक पुरुष वचन कथन कहेंसुं धर्म बोमे नहीं पिण गाल राल बोहत देणेंसुं धर्म बोमी देवें २, दारु ते कावरों गोलो तावमे में लीयें सुं परघटों नही व्यसिरे पतवामे मेलीयें सुं परघटों नही परं व्यसिमें घाट्यां थकां बलें तिम वचनरो गालरो परिसह दीयां धर्म नही जोने परं माखा कृटवारे परि-सहयकी धर्म बोम देवें ३, माटीरो गोलो तावने मेह्यां विण वाको हुवें छात्रिमें व-सवाने मेह्यां पिए। विशेष पाको व्यक्तिमें घाट्या तो विशेषतर पाको तिम केइक पु-रुपमें माखा कूटवारा परिसह देवें पिए। धर्मध्यकी चूकें नही धर्मने विषे दृढ परिएाम राखें श्वरणक कामदेवनी परे ध.

李子子子子子子子子子子子子子子子子子子子子子子子子子

**৪ च्यार बुद्धि. तीर्ध्वकरजीरी बुद्धि समुद्ध सरीखी १, गणधरांरी बुद्धि सरवर सरीखी २,** व्यां उत्तमसाधरी बुद्धि कूवें सरीखी ३, सामान्य साधरी बुद्धि पसखी सरीखी. ५५ ४ च्यार श्राचार्य. शिष्यने सूत्र जणावें पिण श्रर्थ नहीं जणावें १, एक श्राचार्य श्रर्थ जणावें पिण सूत्र नही जणावें २, एक सूत्र पिण जणावें ठार्थ पिण जणावें ३, एक सूत्र पिए। नहीं जणावें खर्ध पिए। नहीं जणावें. ४ च्यार खाचार्य. एक खाचार्य विहार करें खाने परिषदाने समफावें नही १, एक विहार करें परिषदा समकावें २, एक विहार न करें परिषदा समकावें २, एक विहार न करें परिषदा पिए। नही समकावें ध. च्यार पुरुष. एकेक पुरुषने धर्म बह्वज हें पिए। धर्म जपरे दृढता नही १, एकेकने धर्म जपरे हदता हैं पिए। धर्मवल्लज नही २, एकेकने धर्म जपरे हदता हैं धर्मवल्लज पिए। हैं ३, एकेकने धर्म ऊपरे दृढता पिण नही धर्मवल्लज पिण नही ध. ४ च्यार पुरुष. एक पुरुष गुण करें पण अजिमान आहंकार न करें १, एक अजिमान **छाहंकार** करें पिए पराया गुए न करें २, एक छात्रिमान छाहंकार करें छाने पराया

गुण पिण करें ३, एक श्रिनान श्रहंकार न करें पराया गुण पिण न करें ४. ५ए ध च्यार पुरुष. एक पुरुष बोटों साचो पिए। संयम द्या करीने रहित १, एक संयमवंत हें परं फह बोटें २, एक बोटें साचो छने संयमवंत हैं ३, एक संयमवंत पिण नही साचो पिए। बोटों नही ४. ४ च्यार वस्त्र. एक वस्त्र सहेजें जजल निर्मलो पाणीसुं घोषां पिण जज्जल निर्मलो हुवें १, एक वस्त्र पहिली मेलो हुवें पर्ने पाणीसुं घोयां जज्जलो हुवें २, एक पहिल्ला वस्त्र मेलो पर्ने घोयांसुं पिण मेलो ३, एक वस्त्र पहिली पिण मेलो पर्ने पिण मेलो हुवें ४. ४ च्यार पुरुष. एक पुरुष बाहिर फूटरा नाया घोया पिए। मांही मेला गुए। करीने ही-'णा १, एक पुरुष बाहिर मेखा कुरूप पिण मांही निर्मखा २, एक पुरुष बाहिर मेखा मांही पिण मेला ३, एक पुरुष बाहिर पिण निर्मेला मांही पिण निर्मेला ४. <sup>ध</sup> च्यार फल. एक रुंख सूद्धा परं फल वांका १ एकरा फल सूद्धा ट्याने रुंख वांका १, एकरा फल पिण सूद्धा रंख पिण सूद्धा ३, एकरा फलही वांका रंखही पिण वाका.६३

本学的本来回来·朱承 ४ इण दृष्टांते च्यार पुरुष. एक पुरुष दीसता तो सरख सूझा दीसे पण मनमांही कु-टीख १, एक पुरुष शरीरे करीने वांको क्रूबमो ट्याने मांही जाव निर्मखा २, एक पु-'रुष शरीरे सूद्धा मनमांही पिण सरख सूद्धा ३, एक षुरुष शरीरे पिण वांका क्रवमा मनमांही पिण कुटील कूमा ध. ४ च्यार फल. एक आंबरो फल इन्हें सेवतां २ हाथे आवें बारे वरसांताइ सेवें ते पामें १, एक सेवें घणो अने फल अब्प मोलरो ते तामरो फल २, एक सेवीजें योनो ने फल घणा देवें ते वेलरा फल ३, एक सेवेंही योनो ने फल पिण योना 张李本本本本本 काले ते श्राक धतुराना फल ध. ४ इए दृष्टांते च्यार पुरुष. एक पुरुष नगवंतरो मार्ग सेवें घणो तथा गुरांरी सेवा पिण घणी तथी मुक्तिरूप फल पामें केहनी परे गौतमस्वामीनी परे १, कोइ एक मार्ग सेवें घणी छाने फल थोमो केहनी परे कूलवालक साधनी परे २, एक पुरुष सेवें जिन-मार्ग थोमो ने फल घृणो ते छार्जुनमाली परदेशीराजानी परे ३, एक पुरुष जगवंतरो मार्ग सेवं योमो योमीही फल पामें ध.

宋安本张安本张安本朱安本朱安本朱安本 张安本 张安本

च्यार प्रकाररा पुत्र. एक पुत्र पिताथकी व्यधिको ते व्यादिश्वरजीनी परें ते पिता प्र-खा नानिराजा कुलगुरु हुवा तेह आदिश्वरजी तीर्थिकर हुवो ते आदिश्वरजी पिता-थकी श्रिधिका हुवा १, एक पुरुष पिता तो श्रिधिका श्राने पुत्र हीणा ते प्रस्तेश्वरजी चकवर्त्ति हुवा तेंहना पुत्र खादित्ययशाराजा ते जरतेश्वरजीसुं हीना राजरिष्टिशुं १, एक पुत्र पिता छाने पुत्र दोनुंही बराबर ते छादित्ययशाने पाटे महायशा पुत्रनी परे ते पितापुत्र राजरिष्टिसुं वराबर जाणवा ३, एक पुत्र कुलने विषे छांगार समान ते कंमरीकनी परे जाएवो ध. इए। दृष्टांते च्यार प्रकाररा शिष्य. एक गुरुष्टकी शिष्य छाधिका सिंहगिरीने वेरस्वा-मीनी परे १, एक गुरुथकी शिष्य हीणा ते नाज्वाहु खाने थूलनाजनी परे जाणवा २, एक गुरु शिष्य बराबर प्रजवस्वामी सिद्यंजवनी पेर २, एक शिष्य गुरुने कलंक खगावें कूखवाखक जदाईरो मारणहारनी परे जाणवो ध. धा ध च्यार ज्यातिरा घुण. एक लकममें जपरली त्वचा थोमीसी खावें १, एक घुण लकम जपरली जाल सार्वे २, एक घुण काष्ट सार्वे ३, एक घुण काष्टमांहिली गिरीसार-

मीजी खावें ४. ध च्यार जातिनी गोचरी. एक गोचरी काष्टरी त्वचा समान सवादरिहत छाहार प्रहण करें तिको खावणो निरस व्यने तपस्या सार कर्म घणा तोनें १, एक गोचरी ग्राखस-मान तेलेपरहित श्राहार जोगर्वे ते तपस्या काष्ट समान जाणवी श्रने श्राहार ते ब वमै समान जाएावो २ एक काष्ट समान गोचरी ते धार विगय खावे ते तप अवमै समान जाएावो ३, एक सीर समान गोचरी ते पांच विगय खावें जोगवें ते तप पतलें उवमै समान जाएवो ४. ध च्यार प्रकारनो विषय. देवता देवीसुं जोग जोगवें १, एक देवता तिर्यचणीसुं ष्यणीसुं जोग जोगवें २, एक तिर्यच मनुष्य देवीसुं जोग जोगवें २, एक मनुष ति-र्येच मनुष्यणी तिर्यचणीसुं जोग जोगवें ध. ४ च्यार प्रकारें कोध उपजें. एक ख्रात्मा उपरे क्रोध कुपजें १, एक परख्रात्मा उपर क्रोध जपजें २, एक छात्मा परछात्मा बेहु जपरे क्रोध जपजें २, एक विना कार्य मन परिणामनाहकसुं क्रोध ऊपजें ४.

च्यार प्रकारे कोध ऊपजें. खेत्र निमित्ते कोध ऊपजें १, वस्त्र निमित्ते कोध ऊपजें २, शरीर निमित्ते क्रोध कपजें ३, जपगरणरे निमित्ते क्रोध कपजें ४. ४ च्यार प्रकाररो कोध. त्याजोग कोध कोधरा फल जाणीने कोध करें १, त्यनाजोग क्रोध क्रोधरा फल न जाएं याने क्रोध करें २, जपसम क्रोध ते जदय विना जदय श्राणीने कोध करें २, श्राणपसमकोध कोध उदयनाव श्रायांको कोध करें ४. ध च्यार जाषा जिनकहपी साधु बोटों. याचनारे वासते जाषा बोटों १, पूछवारे प्रापा बोर्ले <sup>२</sup>, श्राग्या श्रर्थे बोर्ले ३, श्रागले पूर्वीयेसुं बोर्ले ४. ४ च्यार पिनमा. समाधिपिनमा समतानाव राखें १, जपधानपिनमा तपस्या करें १, वि-वेकपिनमा शरीर त्याग करें ३, विजसग्गपिनमा काजस्सग्ग करें ४. ४ च्यार जातिरा ब्याचार्य. एक ब्याचार्य वियावच करें नही करावें पिए। नही १, एक करावें पिए। करें नही २, एक करें नही करावें पिए। नही ३, एक करें पिए। करावें पिण ४. \*\*\* ध च्यार जातिरा हस्ती. नञ्जातिरो हस्ती कब्याणकारी तिको किसे गुणे करी जाणी

जें; धीर्यवंत संग्राममें जाजें नही जतावलो चालें व्यगामी शरीर जंचो पढामी शरीर निम्न निम्नतर सर्वे छांग उपांग शोनतो जाणवो कांइक छांख्यां पीछी। मधु समान जाएावी पुंज लांबो धरती लागतो सर्दऋतुने विषे मचें मद चढें दंतुले करीने परजी-वने हणें इस गुणे नद्रजातिनो हायी जाणीजें १, मंदजातिरो हायी किसें खक्णो करी जाणीजें धीर्यवंत चालें जतावलो पीली व्यांख्यां पुत्र व्यगामी जामो पुंठसें प तखो नख केस चांबमी जामी वसंतऋतुने विषे मचें मद चढे सुंढसुं संग्राम करे पर-जीवने होंग इसे गुणे करीने मंदहायीनी जाति जाणवी २, मृगजाति हाथी पतला नख केस चांबमी पिए। बहुत पातली बिहकए। घणो संश्रामसुं जागे हेमवंतऋतुने विषे मचें मद चढें सर्व शरीरसुं परजीवने हणें इसे खक्णो मृगजाति हाथी जाणवो ३, संकीर्णहायीरी जाति योमों २ इएां तीनांही हायीयांरी जातिरा ग्रेण खीयां रहें सर्व कालने विषे मर्चे मद चढें सर्व शरीर करीने परजीवने हणें इसे गुणे करी कीर्ण हाथी जाति जाणवो ४. इण दृष्टांते च्यार जातिरा मनुष्य. एक जञ्जातिरा पुरुष दीसता शोजनीक

京本本的本本的本本的本本的本本的本本的本本的本本的 मन पिण कब्याणकारी धीर्यवंत १, एक मंदजाति पुरुष कार्य करणें ढीख घणी म-नमें मेरे घणो पापसुं पिण मेरे खोकिकसें पिण मेरे २, एक म्रगजाति पुरुष मनमें \*\* मरें पापसुं पिए। मरें खोकिकसुं पिए। मरें ३, एक संकीर्णजाति पुरुष तीनांइ पुरुषां-रो थोनो ई गुण लीयां रहें ध. 90 च्यार दिस. पूर्व १, पश्चिम २, दक्तिण ३, जत्तर ४. [jo च्यार कोण. ईशानकूण १, वायवकूण २, श्रामकूण २, नैऋतकूण ४. च्यार पुरुष. एक पराया गुण करें छापरो छपमान करें १, एक छापरो करें पराया गुण करें २, एक पराया गुण न करें आपरो अपमान करें ३, एक परा-या गुण पिण न करें आपरा अपमान पिण न करें ४. · [2 ४ च्यार जातिरा रोग. दीसतो छ्रष्ट परं वेदना नथी मेद जातिरो रोग १, एक दीसतो तो इष्ट नही परं वेदना घणी कंठमाखादिकरो रोग २, एक दीसतोही इष्ट वेदना पिए। घए। पेटरी सूख माधेरी सूख ३, एक दीसतो ही इष्ट नही बेदना पिए। थोमी , <u>n</u>3 ्सून्य प्रसम रोग ध.

本米①米米①米**米** ध च्यार व्यवहारीया. एक छादर सन्मान घणो देवें परं दाम देवें नही १, एक व्यव-वहारीयो दाम देवें परं खादर सन्मान नही देवें २, एक व्यवहारीयो खादर सन्मान पिण देवें दाम पिण देवें ३, एक व्यवहारीयो आदर सन्मान पिण नही देवें जखटो लमें धकाधूम करें दाम पिण नही देवें ध. च्यार प्रकाररो धर्म दान १, शीख २, तप २, जाव ४. च्यार प्रकाररी दिका. एकतो सिंहपणे वत खादेर सिंहपरे वत पाटें खादीश्वरजी प्रस्तेश्वरजीरी परे १, एक सिंहपणे व्रत खेवें परं स्याखपणे व्रत ढांमें कुंमरीकनी परे २, एक स्यालपणे व्रत लेवें परं सिंहनी परे पालें खंगारमर्दन खाचार्यना शिष्यनी परे ३, एक स्याखनी परे व्रत खेवें स्याखनी परेहीज व्रत पाखें काखकाचार्यना कु-शिष्यनी परे जाएवा ध. ४ च्यार जातिरा पुरुष. हें ने हें तिके श्रावक १, हे ने नही तिका वेक्या २, निह ने हे तिके साधुजी ३, नहीं ने नहीं तिके पापरा करणहारा दरिखी नरा ४. ४ च्यार जातिरा पुरुष शुजमांही शुज तिके व्यवहारीया १, मनमांही श्रशुज तिके स-

वदागर २ ट्यशुनमांही शुन तिका व्यवहारीयारी वेटी ३, ट्यशुनमांहि शुन पापकरणहारा दरिन्ती नरा ध. UU च्यार प्रकाररा स्नेह. सुंठकमेतृणां तुरक तुरतां ताख खागें नही तिम सनेह तुरतां ताख खागें नही १, विदलकरें वांसरी ब्रह्मानरी चटाइ कांइक तुटतां ताख खागें तिम सनेह तुरतां पिण कांइक ताख खागें २, चम्मकेन चांमनानी चटाइ तुरतां विशेष ताल लागें र, कंमलकमे कांग्लारी चटाइ दुटतां विशेष २ ताल लागें तिम सनेह पिण दुरतां विशेष २ ताख खागें तोमांया इः खुसुं तुरं ४. ध च्यार जातिरा पुरुष, एक आपरो जिग्रण देखें परं पारका जिग्रण नहीं देखें १, एक पारकाहीज उंगुण देखें याने यापरा उंगुण नही देखें २, एक पारका उंगुण पि-ण देखें व्यापरा पिण जिग्रण देखें ३, एक व्यापरा जिग्रण पिण नही देखें पारका जंगुण पिण नही देखें ४. <sup>ध</sup> च्यार जातिरा पुरुष. एक छापरो पाप जदीरे छाने छागले कने कोइ जदीरावें न-ही १, एक आगले कने जदीरांवें अने आप पाप कोइ जदीरे नही २, एक आप-

रोही पाप जदीरे अने आगले कने पाप जदीरावें ३, एक आपरोही पाप जदीरे 类类 नहीं अने आगला कने पिण पाप जदीरावें नहीं थे. ४ च्यार जातिरा पुरुष. एक छापरो पाप निर्ज्जारे छाने. छागला कने पाप निर्ज्जारावें नही प्रत्येक बुद्धियांनी परे १ एक द्यागला कने पाप निर्जारोवें परं त्यापणा निर्जारे नही ख्राजन्यनी परे २, एक खापराह पिए। पाप निर्क्तरे खने खागला कने पिए। निर्जारावें तिके सामान्यसाधुजी ३, एक छापही छापणो पाप निर्जारे नही छानेरां-नो पाप पिण निर्जारांवें नही तिके मिथ्यामित जाणवा ४. 秦安安本安本安安秦 <sup>४</sup> च्यार सुलसञ्चा पहिलो सुलसिञ्चा मुरादेवीमाता १, बीजी सुलसञ्चा व्यादीश्वरजी प्रस्तेश्वरंजी २, तीजी सुलसंघा सनत्क्रमार चक्रवर्ति ३, चोष्टी सुलसंघा माखजी ४. च्यार केवलज्ञानीरा नाम. जपन्नणाण दंसणधरे १, छाही २, जिन २, केवली४.ए४ <sup>ध</sup> च्यार प्रकारे देवतारी गतिरो श्रायो जांणीजें. खदार चित्त १, सुस्वरकंठ २, रागी ३, देवगुरांरो रागी ४.

京本大田本大田本大田本大田本大田本大田本大田本大田本大田本大田 京本大田本大田本大田本大田本大田本大田本大田本大田本大田本大田本大田本大田本 ४ च्यार प्रकारे तिर्येच गतिरो छायो जाणीजें. जुलंठ घणो १, छसंतोषी २, मायावी ३, मूर्बरी सेवा करें चूल ब्यालस्य घणो ४. ४ च्यार प्रकारे मनुष्यरी गतिरो ब्यायो जाणीजें वनीत १ निर्लोजी २, दयाधर्म जपरे हि तंत्राव राखें ३, परनेसु मन सुहामणो खागें ४. च्यार प्रकारसं नारकीरी गतिरो छायो जाणीजें कोधी १, पंमिताईरहित २, कषाई ३, कलकली जूत ४. ध च्यार तरेखुं जवनपतिमें जांवें. क्रोध करें १, क्रोधीखुं प्रतिबंध करें २, निमित्तजांवें ३, इहलोकरे छार्थे तपस्या करे ध. ४ च्यार बोल सेवणवालो छाजोगीयां देवतामें जावें छाहंकार करें १, छावगुणवाद बो-हों २, मोरामसी करें २, हस्त कर्म करें ४. ध च्यार बोल सेवणवाली नाटकीयां देवतामें जावें. ट्यमार्गरी देशना देवें १, जेद पामें २, वार्रवार नियाणो करें ३ छाणतृपतिसुं जोग जोगवें ४. ४ च्यार बोलरो सेवणवालो कलिमेषीचूहमा देवतामें जावें. तीर्श्वकरजीरा व्यवग्रणवाद

बोर्ले १, केवलीपरूपित धर्मरो व्यवगुणवाद बोर्ले २, धर्माचार्यना व्यवगुणवाद बोर्ले २, चतुर्विध संघना व्यवगुणवाद बोट्धें <sup>ध</sup>ः ध च्यार प्रकारे देवता मनुष्यलोकमां आवें नही. देवता संबंधी कामजोगमें तलालीन हैं १, छनेरा राग सनेह बूटा हैं छनें नाटक पर्ने हैं जघन्य दस दिन मिश्रम ह महिना जल्हेष्टा दशहजार वरस तांइ काल नाटकमें जायें जितरें पिछला सज्जना-कारो खाल्लो पूरण हुवें ते प्रणी नही खावें २, च्यारसें तथा पांचसें जोजन खरें इर्गंध काउं ते प्रणी नही आवें २, च्यारसें जोजन इर्गंध पहिले बीजें आरें आ श्री जाएवो मनुष्य थोमा मलमूत्र थोमो ते प्राणी च्यारसें जोजन गंध काउलें बा-की च्यार छोरें वर्त्ततां जरत ऐरावतने विषे मनुष्य घणा मलमूत्र पिण घणो ते जन 300 णी पांचसें जोजन लगें ड्रगीय काउलें ते प्रणी देवता नही खावें ४. ४ च्यार प्रकारे देवता मनुष्यलोकमां खावें. खाचार्य जपाध्याय खापरा जपगारीनुं वं-दना नमस्कार रिक्टि दिखालवाने आवें १, तपस्यारी महिमा करणने आवें २, ति-र्धिकरजीरे पांच कब्याणक महिमाने आवें ३, सज्जनादिकने सनेह रागे बंध्यो मि-

त्रने सनेहे बंध्यो तथा वचने बंध्यो छावे थ.

श्वि च्यार प्रकारे लोकमें ज्योत हुवें. चोसठ इंद्यलोकमें जेला हुवें तीर्धिकरजीरे जन्म मिहमा जणी छावें तिवारे तिरहे लोकमें ज्योत हुवें १, तीर्धिकरजीरे केवल मिहमा जणी छावें तिवारे तिरहे लोकमें ज्योत हुवें १, तीर्धिकरजीरे केवल मिहमा जणी छावें तिवारे तिरहे लोकमें ज्योत हुवे १, तीर्धिकरजीरे निर्वाण मिहमा जणी छावें तिवारे तिरहे लोकमें ज्योत हुवे १, तीर्धिकरजीरे निर्वाण मिहमा जणी छावें तिवारे तिरहे लोकमें ज्योत हुवे १.

श्वार प्रकारे धर्म नही पामे. छाइंकारी धर्म नही पामे १, क्रोधी धर्म नही पामे १, रेवें से से नही पामे १, प्रमादी धर्म नही पामे १.

श्वार विलाये साधु साधवी सिद्धांत नही गुणे. सूर्य ज्ञावी वेलाये १ सूर्य छाडमा ती वेलाये १, मध्यान्ह वेलाये १, छाईरात्री वेलाये १.

श्वार प्रकारे सिद्धांत जणतां गुणतां वेयावच करतां विघातकारी हुवे १, पिहले इंद्य महोहव १, बीजे नाग महोहव १, तीजो सूत्महोहव ३, चोछो जद्ममहोहव. १०० क्री च्यार महापुनम. च्यार महापिनवाछे साधु साधवी सिद्धांत जणे गुणे नही. छासो 

ज ऊतरती पुन्म काति वदि पिन्वा १, काति सुदी पुन्नम मिगशर वदि पिनवा २, चैत्रसुदि पुन्नम वैशाखवदि पिन्वा ३, श्रासाम सुदि पुन्नम श्रावण वदि पिनवा. ११० र्ध च्यार पेतालीसलाख जोजनरा ते कहे हे. जरुनामा विमान पहिले देवलोके १, सी-मंतनामा नरकावसो पहिली नरके २, मनुष्यदोत्र ३, सिन्धशिला ४. र्ध च्यार लखा लाख जोजन प्रमाणे. पहिलोहिबै लाख योजनरो अपहिलाण नरका-वासो सातमी नरके १, लाख योजनरो पालकविमान पहिले देवलोके २, लाख यो-जनरो जंबुद्दीप तिरहा लोकमे रे, लाख योजनरो सर्वार्थिसिष्ठ विमान जर्दलोकमे जांणवो ४. ध च्यार प्रकारे लोकरो मध्यविचाल कहे हो. जंचे लोकरो मध्य पांचमे देवलोक हे १, नीचे खोकरो मध्य चोछी नरकने विचे हे २, तिरहे खोकरो मध्य मेरुपर्वतना रुच कप्रदेशाष्ट्रक ३, सर्व खोकनो मध्य पहेखी नारकी तांइ ४. ध च्यार प्रकारना फल संसारमे कहीजे. एक फलमांही कवलोकोमल ट्यने बाहिर क-रमो ते नाखेरादिक १, एक फख बाहिर कवलो कोमल द्यने मांही करमो ते बोरा-

दिक २, एक फल मांही कवलो कोमल ट्यने बाहिर पिण कवलो कोमल जायफल डादादिक र, एक फल मांही पिए। करमो बाहिर पिए। करमो पूराफलादिक । ११४ ध इसे दृष्टांते न्यार जातिरा पुरुष जाणवा. एकेक पुरुष जपरसुं वचन कठोर बोले परं मनमांही प्रणाम घणा नरम जाणवा १, एकेक उपरे मीठा बोखा व्याचारवंत गुण वंत दीसें परं मनमांही प्रणाम घणा कठिन २, एकेक पुरुष उपर पिण मीठा बोला श्चाचाखंत श्चने मनमांही पिण घणा गुणवंत ३, एकेक पुरुष उपरही कठोर मन मांही पिण कठोर कठिण जाणवा ध. ध च्यार जातिरा विष. विब्रुरो विष छाधें जरत प्रमाणें हे १, देमकेंरो विष छाखे जरत प्रमाणे हे २, सापरो विष जंबुद्दीप प्रमाणे हें ३ मनुषरो विष छाढाइद्दीप प्रमाणे हें. ११६ ध च्यार बोलें नारकीजीव मनुष्यलोकमां छाय शके नही. परमाधर्मीयारी मार करीने श्याय शके नही १, दश जातीरी खेत्र वेदना करीने श्याय शके नही २, श्याशातावे-दनी घणी तेहसुं आय॰ ३, आजलो घणोसुनोगवणो तेहसुं आय॰ ४. ध च्यार प्रकारे नारकीमांही खंधारो हो. नारकीरो खंधारो १, नारकीरे जीवारो खंधारो

२, नरकावासारो श्रंधारो ३, श्रश्चात्र श्रंधारो ४. ११० ४ च्यार प्रकारे चांनणो मनुष्यलोकमं. चंद्रमारो चांनणो १, सूर्यरो चांनणो २, श्रांशरो चांनणो ३, मणिरत्नरो चांनणो ४. ध च्यार प्रकारे देवलोकमें चांनणो. देवलोकरी स्त्रमीनो चांनणो १, देवतारो चांनणो २, विमानरो चांनणो २, त्र्यानरणरो चांनणो ४. ४ च्यार जाणपणारा प्रमाण. त्यागम प्रमाण सिद्धांतथकी जाणें, जिम नरक देवतारा न्नाव धर्मास्तिकायादिक जाणें १, त्र्यनुमान प्रमाण त्र्यनुमान करीने बुद्धियकी जाणे. धूवे करीने श्रमि, वादले करी वर्षा, इत्यादिक श्रनुमान करीने जाएँ। २, जपमा प्रमा-ण जपमाध्यकी वस्तुने जाणें; जिम गाय सिरखो रोफ हें ३, ए जपमा प्रमाण ३, प्रत्यक प्रमाण ते नजरे दिठी वस्तु ध. ४ च्यार जपमा. जती वस्तुने ब्याजती जपमा १, ब्याजती वस्तुने जती जपमा २, ब्याज ती वस्तुने ष्ठाउती जंपमा २, उती वस्तुने उती जंपमा ४. ११२ ४ च्यार प्रकारे जीवांने कमीरो संयोग. इन्य संयोग ते जिके इन्यांसुं जीव कर्म बांधे

宋本本本的本本的本本本本本本本的中共四年十六日本 तिकेहीज डव्यासुं जोगवे १, खेत्र संयोग ते जिके खेत्रसुं जीव कर्म बांघे तिकेहिज खेत्रसुं जोगवें २, कालसंयोग ते जिके काले जीव कर्म बांधें तिकेहीज काले जोगवें ३, जावसंयोग ते जिके प्रणामे जीव कर्म बांधे तिकेहीज प्रणामसुं कर्म जोगवें. १२३ <sup>४</sup> च्यार प्रकाररी निर्ज्जरा. महा वेदना घ्यटपनिर्ज्जरा सातमी नरकरा नेरच्यान जाणवी १, घ्यहप वेदना महा निर्क्तरा सामान्य साधुजी जाणवा २, महा वेदना महा नि-र्जीरा पिनमाधारी साधजी जाएवा ३, थ्राटप वेदना ख्राटप निर्जीरा पांच ख्रानुत्तरिव-मानरा देवता जाएवा ध. ४ सामायिकरा च्यार द्याचाना दरवाजा. जपकर्म १, निक्षेप २, द्यानुगम ३, नय. १२५ च्यार प्रकारे मित जग्गह १, ईहा २, ख्रवाय ३, धारणा ४. <sup>ध</sup> च्यार प्रकारे ख्यविष्यान उत्पर्जे १, प्रगवंते कह्या इसा परीसह जीते तो ख्यविष-ग्यान ऊपजें १, बारे कुखांरी गोचरी निस्पृह्पणो करें तो ख्रविष्यान ऊपजें २, च्यार विकया वरजें तो खबि॰ ३, पाउलीरात्रे धर्मजागरिका करे तो खबि॰ ४. १९७ <sup>ध</sup> च्यार प्रकारे ख्यविष्यान नही जपजें. प्रगवंत कह्या तिकै परीसह नही जीतें तो

व्यवधिग्यान नही जपने १, बाराकुलारो गोचरी निस्पृह्पणे न करे तो व्यवधिग्यान नही जपजें २, च्यार विकथा नहीं वरजें तिएाने ख्रवधिग्यान नहीं जपजें ३, धर्म-जागरिका रात्रे नहीं करें तो ख्रवधिग्यान नहीं जपजें ४. ध च्यार प्रकारे व्यवधिग्यान क्रपनो पिए। परो जावे. कुंधुंवारी श्रेएया देखीने जाय १, धन देखीने जाय २, मनुष्यलोक बाहिरला सर्व देखीने जाय ३, इंड इंड्राणीरे पंग **खागंतों देखीने जाय ४.** १५ए ४. च्यारं निकेषा पहिलो नाम निकेषो ते नाम धेरं १, घापना निकेषो ते मूर्त थापें ४, इव्यनिदोपों ते जाएपणों नहीं तथा जीवरहितं शरीर पड़्यों है ते इव्य-निदोपो २, जांव निदोपो ते जाणपणासहित जपयोगसहित ते जावनिदोपो ४. १२० ४ च्यार प्रकाररा सूत्र. नामसूत्र १, थापनासूत्र ३, ध्व्यसूत्र ३, जावसूत्र ४. ध च्यार बोख जीपतां घणा दोहीखा हे. वतमांही शीखवत पाखवों दोहिखो १, श्राह कर्मामांही मोहनी कर्म जीपतां दोहिलो २, पांचे इंडियामांही रसेंडिय जीपतां दो हिलों ३, तीनुं योगांमांही मनरो योग जीपतां दोहिलो ४. १३२

च्यार बोल पावणा दोहिला. पांच ज्ञानमांही केवलग्यान पामवो दोहिलो हैं १, 秦林 李子李子子,秦本子子,张子子子, खेरुया **उ**मांही शुक्रखेरुया पामवी दोहिखी हैं १ च्यार ध्यानमांही धर्मध्यान शुक्रध्या-न पामवां दोहिला हैं ३, जरयोवनमांही शील पामीने पालतां दोहिलो ४. ४ च्यार बोख करवा महा दोहिला डर्लज. कुरणीवयमें शील पालवो १, जता जोग गंभीने दिक्ता लेवण दोहिली २, मोटां पुरुषांनुं क्तमा करणी दोहिली २, कृपणने दान देवणों दोहिलो ध. ४३४ ४ च्यार विकाणे कषायरो वासो है. कोधरो वासो खखाटमांही १, मानरो वासो गरदन मांही २, मायारो वासो हीयामांही ३, खोजरो वासो सर्वे खंगमांही ४. च्यार वात त्र्यकलदारीकी. जागतां तो चोर नासे १, दामा करतां कलह नासे २, **जद्यम** करतां दश्जि नासे ३, जगवंतरो वाणी सुणतां पाप नासे ४. 8 च्यार वस्तु साधु डांमे. टोलो डांमे १, शरीर डांमे २, **ज**पगरण डांमे ३, पात पाणी \*\*\*\*\*\* ग्रंमे ४. १३उ ४ च्यार प्रकारे प्रतिबंध. ध्वयथकी प्रतिबंध शिष्य शाखा वस्र्पात्ररो प्रतिबंध १, खेत्र-

थकी प्रतिबंध थानक ग्राम नगरनो प्रतिबंध २, कालथकी प्रतिबंध समयाविल मूहू-१३0 त्तीदिकनो प्रतिबंध २. जावश्यकी कषायरो तथा रागद्वेषरो प्रतिबंध ४. ४ च्यार प्रकाररा प्रतिबंध छांम्या पंखीनो प्रतिबंध १, खोयया हस्तिनो प्रतिबंध २, ख-घाया धानकरो प्रतिबंध ३, पघाया जंमजपगरणनो प्रतिबंध ४. च्यार प्रकाररा जीव ते कहे हे. एक सुल डःल जाणें छाने वेदें ते च्यार गतिरा जी-व जाणवा १, एक जाणें पिण वेदें नही ते सिद्ध १, एक वेदें पिण जाणें नहीं ते श्यसन्नी ३, एक जाणें पिण नहीं वेदें पिण नहीं ते श्रजीव ख्व्य. च्यार प्रकाररा पुरुष. ञ्याप परिसह जीपें पिए। ञ्यागलेने जीपावें नही १, एक त्या-गलानुं परिसह जीपावें परं छाप परिसह जीपे नही २, एक छापही परिसह जीपे श्रमे श्रमेराने पिए। जीपांवें नही ३, एक श्रापही परिसह नही जीपे श्रमेराने पिए। परिसह नही जीपांवें ४. पहिले जागे खादीश्वरजी जरतेश्वरजी १, बीजे जागे जिन कब्पी २, तीजे जागे कुंमरीक ३, चोथे जागे कालकसूरिक कसाई ४. एकेक पुरुषरा एहवा स्वरूप. एक आपरे कर्मरो अंत कीयो अने आगखेरे कर्मरो

李本学学 साध जाणवा ध.

पिए। ख्रांत करें तिके ख्रादीश्वरजी जरतेश्वरजी १, एक ख्रापरे कर्मरो छांत करें श्यनेराने कर्मरो श्रंत नहीं करें तिके पिनमाधारी २, एक श्रागखेरे कर्मनो श्रंत करें श्चने श्चापरो कर्मरो श्चंत न करें तिको पिनवाई सम्यग्दृष्टि ३, एक श्चापरे कर्मरो छांत पिए। न थावें छाने पेखां रे कर्मरो पिए। छांत न थावें तिके पांचमे खाराना <sup>ध</sup> च्यार प्रकाररा याचार्य. एक मांहिला परिसह सहे यने वाहिरला परिसह सहे ते देशयकी त्याराधक ने सर्वयकी पिएा त्याराधक १, एक मांहिला परिसह जीपे त्यने बाहिरखा परिसह जीपे नहीं ते देशयकी विराधक छाने सर्वयकी आराधक १ एक बाहिरला परिसह जीपे त्राने मांहिला परिसह जीपे नहीं ते देशक्रकी त्राराधक त्राने सर्वथ्रकी विराधक ३, एक मांहीला परिसह जीपे नही ट्यने बाहिरला परिसह पिए। जीपे नही ते देशश्रकी पिए। विराधक उपने सर्वश्रकी पिए। विराधक जाएवा ४.१४३। <sup>ध</sup> च्यार चपल थानक. चपल चपलईसुं बेसें १, गति चपल ते चपलाईसुं चालें २, नाषा चपल ते चपलाईसुं बोलें ३, जाव चपल ते एक सूत्र जणवो मांने एक सूत्र जणतो

होमे ते जाव चपल ४. ध च्यार वस्तु थोमी, एक रत्नरा श्यागर थोमा १, एक सत्पुरुष थोमा १, एक वासित संख थोना ३, एक सूत्र धर्मज्जपदेशकवाला थोना ४. <sup>४</sup> च्यार प्रकाररा काल. चरकाल १, निमित्तकाल २, मरणकाल २, व्यासमय १४६ च्यार प्रकाररा पुरुष थोना. परइःखीय इःखी थोना १, परजपुगारी जन थोना १, ग्रणप्राहीजन थोंमा ३, निर्धनसुं नेह रालेसुं थोमा ४. **ER\$** ४ च्यार दिशे पुरुष. पूर्वदिशि जोगी घणा १, पश्चिमदिशि सोगी घणा २, **उत्तर**िश योगी घणा रे, दक्षिणदिशि रोगी घणा ४. १४७ ४ च्यार प्रकाररा काम. देवतारे शृंगारकाम १, मनुष्यारे करुणा काम २, तिर्थेचरे गंडा काम ३, नारकीरे बिहामणा काम ४. ध च्यार जातिना श्राहार. नारकीमें लीरां समान श्राहार १, जोजर समान श्राहार १, शीत समान श्राहार ३, पालें समान श्राहार ४. <sup>ध</sup> च्यार प्रकाररा तियुँचरा छाहार. काक समान खाहार १, बाख समान खाहार

मास समान ब्याहार ३, चांनाखरे मांस समान ब्याहार ४. ्देवतारे च्यार प्रकाररो खाहार. जलोवर्ण १, जलोगंघ, जलोरस३, जलोफर्राध. १५२ च्यार प्रकारे डःख ऊपजें. मनुष्यसुं १, तिर्यचसुं २, देवतासुं ३, खात्मासुं ४. १५३ 学茶茶茶茶 च्यार प्रकारे इः ल देवें. हास्यरे कारणे इःल देवें १, हेपरे कारणे इःल देवे २, खा-हारके कारणे इःख देवें ३, पुत्रादिकरे स्नेहरे कारणे इःख देवें ४. च्यार प्रकारे देवता इःख देवें. हास्यरे कारणे देवता इःख देवें १, देषरे कारणे देवता इःख देवें २, परीष्यारे कारणे देवता इःख देवे ३, त्रयरे कारणे देवता इ० ४. १५५ च्यार प्रकारे मनुष्य तिर्यचने आपोआप श्रकी इःख उपजें. पहिले बोले मननें विषे श्रमो श्रमाताश्रमी इःष कपजें १, बीजे बोले कंचो नीचो लाममांही पग पनीयां थकी इः स उपनें २, तीने बोटो घणे काटो जात पाणी मिट्यांथकी इःस उपनें २, चोछो बोले फोमो फुणगल आपरे हाथ पगसुं तोमें तो इःख ऊपजें ४. ४ च्यार प्रकारे छाहरनी इहा जपनें. पहिले बोलें कोठो जणो रहे ते प्रणी छाहा-रनी इहा उत्पनें १, बीने बोले हुधा लाग्यां आहारनी इहा उत्पनें २, तीने बोले

वात ब्याहाररी सुणता ब्याहारनी इहा कपजें ३, चोशे बोखे वारंवार वात ब्याहाररी \* सुणतां श्राहारनी इहा कपजे ध. ४ च्यार प्रकारे जीवने प्रय क्रपजें. घणो कायर हुवे तो प्रय क्रपजें १, मोहरे जदय-सं त्रय जपजें २, त्रयरी वात सुणतां धकां त्रय, जपजें २, चोधे वार २ वात सु-णतां नय जपनें ४. ४ च्यार प्रकारे मैथुनरी इहा ऊपजें. लोही मांसरो जमाब हुवे तिणने मैथुनरी इहा ऊपजें १, मोहनी कर्म घणो हुवे तहने मैथुन्री इहा ऊपजें २, मैथुनरी वात सुण-तां मैथनरी इहा ऊपजें ३, राग रंग सुणतां मैथुनरी इहा ऊपजें ४. ध च्यार प्रकारे परिग्रह संज्ञा कपजें. घणे धनने में खवें धनरे प्रसंगे संज्ञा कपजें १, परिग्रहना मोहे करीने संज्ञा ऊपजें २, परिग्रहरी वात सुएतां संज्ञा ऊपजें २, वार २ परित्रही वात सुणतां संज्ञा ऊपजें ४. ४ च्यार जातिरा गलणा. धरतीरो गलणो इर्यासुमति १, मनरो गलणो शुनध्यान २, वचनरो गलणो निर वद्यनाषा ३, संसाररो गलणो काठो कपमो ४.

\*\*\*\*\*

\*\*\*\*\*\*\*

\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\* ४ च्यार जातिरा खाचार्य. खाप नणें खने खनेरानें नणावें १, एक खाप नणें खने-राने नही जणावें २, छाप नही जणें छनेराने जणावें २, एक छापही नही श्यनेराने पिण जणावें नही ४. ४ च्यार प्रकाररा साधु एक आपरो जरणपोषण करें खनरारो जरणपोषण नही करें तिको जिनकटपी साधु १, एक छापरो जरणपोषण नही करें छने छनेरारो पोषण करें तिके परजपगारी साधु २, एक आपरो जरणपोषण पिण करें अने अ-नेरानो पिण प्ररणपोपण करें तिके सामानिक साधु २, एक व्यापरो पिण प्ररणपो-学者本の学 षण नहीं करें यानेरारो पिण जरणपोषण न करें तिके दरिन्ती साध ४. <sup>४</sup> च्यार प्रकारनी इलश्वा. उंची नीची जायगा सूतां इःल ऊपजें तिका इञ्य इःल शखा हैं, जाव इःखशखा संयमने विषे दोषण लगावें जगवंतरी वाणीरे उपरे संका कंखा आणें, मनरा उंचा नीचा प्रणाम राखें ए पहिली इःखशचा १, बीजी इःख॰ 泰华泰 श्चापरा लाधा जपरे संतोष न करें पराई श्चाशा वांजा करें २, तीजी मनुष्य देवतारे जोगनी वांजा करें ३, चोथी नावण घोवण मेखनुं परीसहन नही सही शके<sup>ध</sup>. १६४

\*\*\* 朱子 朱原朱朱原朱朱原朱子东 च्यार जनने दिक्ता न देवें. रोगीने दिक्ता न देवें १, विगयने विषे खोछपी घणो हुवें तेहने दिक्ता न देवें २, क्रोधीने दिक्ता न देवें ३, मायावीने दिक्ता न देवें. १६५ ध च्यार परेवमी आर्याने राखणी कब्पे. एकतो दोय हाथ प्रमाणे तिका थानकमें उदि १, दोय हाथ्र प्रमाणे बाहिर जूमि जातां मांहिलेंकानी बिसोमो राखें २, एक तीन हाय प्रमाणे गोचरी जाती जेंदे र, एक च्यार हाय प्रमाणे साधुरे समवसरणे ती जेंदें ४. ४ च्यार खदाणे करीने देवता आयो जाणीजें. आवतो आंख टमकारें नही १, ग्रांह परे नही २, फुलांरी माला कमलावें नही ३, धरतीसुं च्यार खंगुल पग जंचा रहे. १६७ 大人 大人 大人 大人 ध च्यार प्रकाररा वाजंत्र. तंतवाजित्र तिको तातथी वाजें १, वितंतवाजित्र तिको विना वाजें २, घणवाजिंत्र कांकसीया प्रमुख ३, फूखिखाजिंत्र ढोख प्रमुख ४. च्यार प्रकाररी कथा. स्त्रीकथा १, प्रक्तकथा २, देशकथा २, राज्यकथा ४. स्रीविकथा च्यार प्रकारे. स्रीजातिनी कथा कहें १, स्रीरे रूपरी कथा कहें २, स्रीरे ग्रहणारी कथा कहें ३, स्त्रीरे वस्त्रारी कथा कहें ४.

大学·米西米·米西米·米西米·米西米·米西米·米西米·米西米·米西米·米西米 ४ देशविकथा च्यार प्रकाररी. देशना नाना प्रकाररा जोजननी कथा कहें १, देशना विकल्प विचार सोनो रूपो धननी कथा कहें २, देश उंदका ते देशनी रीतगीत ना-दनो करणो तेहनी कथा कहें ३, देशना पहेरवेशनी कथा कहें ४. प्रत्तकथा च्यार प्रकाररी. प्रत्तस्सज्वायका प्रोजन जपजावारी विधि कहें १, प्रत्तस्स निवायका जोजन पचावारी विधि कहें <sup>२</sup>, जत्तरस आरंजका जातरे आरंजकी कथा कहें ३. प्रत्तस्स परिजोगावा जोजन जीमवारी विधिनी कथा कहें ४. ४ राज्यनी विकथा च्यार प्रकाररी. राजारे नगरमांही पेसवानी रीतनी कथा कहें १ रा-जारे नगरमांही थी नीकखवानी रीतनी कथा कहें २, रथ हाथी घोमा सिणगारवानी रींतनी कथा कहें ३, राजाना कोठार जंनारनी कथा कहें ४. ४ च्यार धर्म. दानके प्रजावसे धन्नो और शासीजङ स्थसंस्य सक्तीका जोग्य जोगव दे-वलोकमें प्राप्त होवें यावत सिष्टिपद पामेगें एसे जाएा सुपात्रकुं दान देवें १, शिल-का प्रजावसे सुदर्शन्शेवकु शुखीका सिंहासण हुवा उर कलावतीका कट्या नया उत्पन्न हुवा एसे जाणकर शुद्ध शीख पालणा २, तपके प्रजावसे धन्नो

हृदप्रहारी हरिकेशी मुनि इर ढंढणऋषी प्रमुख कर्म इत्य करी मोक्तपद पाया एसे जाण कर तपस्या करणी रे, जावनाक प्रजावसे प्रसन्नचंदराजिष छ्लायचीकुमार क-पिल्लमुनि खंदकमुनिका शिष्य जरतचक्रवर्त्ति इर मरुदेवीमाता प्रमुख मोक्त पदवी पामी एसा जाणकर शुद्ध मन जावना जावणी ४.

४ बंधतत्त्वना च्यार जेद. कर्मनो स्वजाव ते प्रकृतिबंध १, कर्मनो कालमान ते स्थित-बंध २, कर्मनो रस बांधवो ते खानुजागबंध २, कर्मना संचय दलरूप तेहनो बांधवो ते प्रदेशबंध ४.

本心学本①学**本**学

*	॥ हवे पांचमो बोख खिख्यते ॥	
**************************************	<ul> <li>५ ज्व्य पांच. धर्मास्तिकाय तिको चलण लक्षण १, व्यथर्मास्तिकाय तिको थिर ख-</li> </ul>	***************************************
*	नाव <sup>२</sup> , त्याकारा ते विकारा खदाण ३, जीव तिको चेतना खदाण <sup>४</sup> , पुद्रखास्ति <sup>,</sup> कायद्वव्य तिको पखटवारूप ए पांच द्वव्य द्यस्तिकाय द्वव्य जाणवा ४.	4  0  2
*	५ पांच प्रकारे शरीर. जदारिक शरीर समजावें पिमजावें विखरजावें तिको जदारिकश-	     
**	रीर १, वैकियशरीर नाना विधि कियाकारी २, छ्याहारिकशरीर खब्धिरूप २, तेजस- शरीर तेजरूप ४, कार्मणशरीर कर्मरूप ५.	7
*	्र पांच ज्ञान. सर्व वस्तुरो जाणपणो ते ग्यान. मतिग्यान १, श्रुतग्यान २, श्र्ववि	76475
***	ज्ञान ३, मनपर्यवग्यान ४, केवलग्यान ५.	1
*	१ पांच व्याप्तवत. थूलालं पाणाञ्चायालं वेरमणं १, थूलालं मुसावायालं वेरमणं १, थूलालं खुलालं खुलालं वेरमणं ३, थूलालं महुणालं वेरमणं ४, थूलालंपरिग्गहालं	y. (4.79)
***	वेरमणं ८.	٥

४ पांच सुमति. र्घासुमति १ नाषासुमति २, एषणासुमति ३, श्रायाणनंनमत्तनिवेल-णा सुमति ४, जचारपाश्रवणलेखजलसंघाणपरिठावणिया सुमति ५. ४ पांच आचार. ज्ञान आचार १, दर्शण आचार २, चारित्र आचार ३, तप आचार ध, वीर्य खाचार ५. थ पांच गति. नरकगति १, तिर्यचगति २, देवगति ३, मनुष्यगति ४, सिद्धगति ४. ७ ए पांच प्रमादे जीव मुक्ते, खाठ मदनो करवो १, विषयरो सेवणो २, कषाय मोहनीये मुज़्वो ३, नंदारो करवो ४, विकथा च्याररो करवो ४. ए पांच मिथ्यात आश्रव. मिथ्यात आश्रव १, प्रमाद आश्रव २, कवाय आश्रव ३, छ। 李本本本本本 विरति खाश्रव ४, खशुजयोग खाश्रव ५. ५ पांच संवर. समकितसवर १, विरतिसंवर २, व्यप्रमादसंवर ३, व्यक्षायसंवर ४, शुज-योगसंवर ५. ए पांच वर्ण. कालो १, नीलो २, पीलो ३, लाल ४, घवलो ५. थ पांच रस. तीलो १, कम्बो २, कसायखी ३, खाटो ४, मीठो थ.

४ पाच इंद्यिय. श्रोत्र १, चक्क २, ब्राण ३. रस ४, स्पर्श ५. 安全会会 ४ पांच किया. काञ्या १, व्यधिकरणीया २, पावसिया ३, पेरितावणीया ४, पाणाइ-वाश्या क्रिया ५. ५ पांच किया. आरंजिया १, पारिग्गहिया २, मायावित्तया ३, अपचकाणीया ४, मि थ्यादंसणवत्तिया ५. थ पांच समिकत. सासदानसमिकत १, जपशमसमिकत १, खयज्रपशमसमिकत ३, वे-दकसमिकत ४, दायिकसमिकत ५. **₩**\*\*0\$\*\*\*0\$\*\*\* ५ पांच समकितरा खदाणा सम १, संवेग २, निर्वेद २, श्रानुकंपा ४, श्रासथा ५. थ पांच समकितरा **अतिचार. समकित उपरे शंका आ**णें ?, अनेरा धर्मरी वांजा करें २, फलपते संदेह आणे २, परदर्शिणीरा धर्मरी वांजा करें ४, परदर्शणीसुं संस्तव प रिचय करें. थ पांच समकितरा दृषणा. पहिलां मिथ्यात्वीने बोलावें १, वारंवार सामूहो जोवें २, मि-थ्यात्वनुं पोचावण जावें ३, विना प्रयोजन श्रानके जावें ४, विना प्रयोजन वारंवार Ø

थानक जाव ५. ५ पांच समिकतरा खूषणा धर्मने विषे चतुराइ राखें १, जिनशासन्ते दीपावे २, जला साधुरी सेवा करें ३, धर्मथकी मिगतांने थिर करें ४, साधु साधर्मीरी वेयावच करें.२० थ पांचना व्यवगुणवाद बोखतांथकां जीव इर्खजबोधपणो पामे कदेइ निर्मख समिकत मे नही ज्यार गतिमां ही रुखें पिए। पांचमी गति पामें नही. पहिले अरिहंतना अ वगुणवाद बोटों ?, बीजे खरिहंत प्ररूपित धर्मना ख्रवगुणवाद बोटों २, तीजे ख्राचा-र्य जपाध्यायरा व्यवग्रणवाद बोटों ३, चोटो चतुर्विध संघरा व्यवर्णवाद बोटों ध, पां चुमे मोटा देवतारा व्यवग्रणवाद करें व्यने परपूंठे सर्वनी निंदा चावत करें ए बोल सेवतां जीव धर्म नही पामें ए. ए प्राण पांचानाहीज गुण श्राम करें तो सुखनबोधि हुवें. ए पांच शरीरने विषे जीव नीकुखवाना दरवाजा जाणवा पगांथी जीव नीकखें तो नर-के जाय १, पींमी श्रकी नीकलें तो तिर्यचगितमां जाय २, नाजिकानीसुं जीव नीक-क्षें तो मनुष्यमांही जाय ३, मस्तक मुलमांही नीकक्षें तो देवतामें जाय ४, सर्वीग

**长子子** 光白米-光(- 光\* 光(+米 光+米 光+米 光 स्फर्शीने नीकलें ते जीव मुक्ति जाय ५. ए पांच प्रकारे देवा. जन्य इन्यदेव ते इण जवमांही देवतारी ब्याक्त बांध्यो ने ब्यने इए। प्रवरो खाकुलो प्रोगवें हे ते प्रव्य इव्यदेव कहीजें १ बीजें नरदेव ते चक्रव-र्ति २, तीजे धर्मदेव ते साधु २, देवाधिदेव ते तीर्थिकर ४, पांचमे जावदेव ते देवतारे जनमांही वे वाते देवता ए. पांच नरकावासा सातमी नारकीरा जाणवा. पहिल्लो काल १, बीजो तीजो रोख ३, बोथो महारोख ४, पांचमो खपइढाण ५. ए पाँच प्रकाररो ज्योतिषीदेवतारो ज्योत. पहिले चंद्यमारो १, बीजो सूर्यरो १, तीजो ब्रहरो ३, चोथ्रो नक्त्ररो ४, पांचमो तारारो ५. ए पांचुंही चर मनुष्य खोकमें हिरेखा तिर्द्धां क्षेत्रका स्थिर जाणवा. ए सम्यग्दृष्टि जगवंतरे समोसर्णे आवें तिवारे पांच अजिगम साचवें. पहिले इच्ये दूरे मेहलें १, बीजे छाचित्त इच्य पासे राखें २, तीजे खीलए बिगर एकपटा कं-पमानी मुले जयणा करें ३, हाथ दोनु जोमे ४, एक दृष्टि सन्मुलो जीने थ.

ए प्रेष वाना श्राखगा मेहलने तीन प्रकाररी सेवा करें मनरी वचनरी कायारी. उत्र १ चामर, मुकुट ३, पान ४, फूलांरी माला ५, ए पांच दूरा मेहलने जगवंतने वांदना करें. ए पांच जणारी साधुजी व्यागन्या खेवें. पहिखी इंद्यनी व्याग्या खेवें दिसा मात्रो प रिववाने कार्जे १, बीजी राजानी आग्या खेर्वे नगरमें पेठणरी विरीया २, तीजे स-द्यातररी आग्या लेवें यानकरी ३, चोयी सामान्य गृहस्थनी आग्या लेवें सर्व वस्तु नी ४, पांचमी साधर्मीनी श्राग्या होवें जपगरणादिकरी ५. ५ पौच प्रकाररी ध्याय. श्रंकध्याय ते खोलेमांही बेसाणें १, मंमणध्याय ते प्रहणा पट-कुल वस्त्र पहिरावें २, मद्यनध्याय ते स्नानादिक करावें २, सीरध्याय ते चूंघावें किलामणध्याय ते खेलणा लेइने खिलामें रमामें ५. ए पांच ष्टावरकायरा नाम. पहिलो इंदीष्टावरकाय १, बीजो बंजीष्टावरकाय २, तीजो सपीयावरकाय ३, चोयो सोमीयावरकाय ४, पांचमो पीयावची व्यावरकाय ५. ३१ थ पांच प्रकाररा व्यवहार जाणवा. श्रागम व्यवहार १, सूत्र व्यवहार २, श्राग्या व्यव-

未完全未完全未完全未成本来。 本本本本本 हार ३, धारणा व्यवहार ४, जीत व्यवहार ५. ४ पांच प्रकारे जागें. पहिले सुखे जागें १, इःखे जागें २, तीजे सुपनो दीठासें जागें र, चोथो निद्याने क्ये जागें ४, पांचमे कुधा वेदनी खाग्यां जागें ४. ए पांच प्रकाररा पनिकमणा. पापरो निंदवो ते पनिकमणो. पहिलो मिथ्यातरो पनिक-मणो १, द्यविरतरो पिनकमणो २, कषायरो पिनकमणो ३, प्रमादरो पिनकमणो ४, श्चशुत्रयोगरो पनिकमणो ५. ५ पांच प्रकाररा पचलाणा. सर्दहणाशुद्ध १, विनयशुद्ध २, ब्यनुग्रहणाशुद्ध ३, ब्यनुना-वशुद्ध ४, जावशुद्ध ५. ए पांच प्रकारे श्राचित्त वायरो ऊपजें तिए। करी सचित्त वायरो हणीजें. पहिले सुं पग मेहछें तिवारे ख्रिचित्त वायरो जुमें तिवारे ख्रिचित्त वायरो हणीजें १, बीजे खोहाररी धमणसुं ख्रवित्त वायरो **उ**ठें तिणसुं सचित्त वायरो हणीजे २, तीजोसुंह-मारीबाफसुं श्रिचित्त वायरो लोठें तिवारे सचित्त वायरो हणीजे रे, चोथो बुगमो नि चोवतां श्रवित्त वायरो उठें तिवारे सचित्त वायरो हणीजे ४, पांचमो पंसेसुं श्रवित्त

本文学·朱色学·朱色学·朱色学·朱色学·朱色学·朱色学·朱色学·朱色学

वायरो जठें तिण्युं सचित्त वायरो हणीजे ५. ए पांच प्रकार जीव धर्म नही पामें. ब्यहंकारी धर्म नही पामें १, कोधी धर्म नही पामें २, रोगी धर्म नही पामें २, प्रमादी धर्म नही पामें ४, खालस धर्म नही पामें ५. ३९ ए पांच ख्राचार्य. वाचना ख्राचार्य वाचना देवें १, पवयणी ख्राचार्य प्रवर्ज्या दिका देवें २, उपठाण त्याचार्य महात्रत देवें २, उपदेश त्याचार्य उपदेश सुणावें ४, धर्माचा-र्य धर्मनो मार्ग बतोवं ५. ५ पांच बोटों धर्मरी परिका. धर्मरी जलपित कठें सत्य वचन बोटों जठें १, धर्मरी थाप-ना कठें क्या करें जठें २, धर्मरी वध्योतरी कठें तपस्या करें दान देवें जठें २, धर्मरी पुष्टाइ कठें जपसर्ग जपने चढता परिणाम राखें जठें ४, धर्मरो विनाश कठें क्रोध मान माया लोज ज्यापे जठें ५. ५ पांच बोलांरी पांचमे खारे खासता है. जातीसार्णग्यानरी खासता १, खाविग्यानरी श्रासता २, चतुर्विधसंघरी श्रासंता :३, इग्यारा श्रंगरी बारा 'र्जपांगरी श्रासंता पांचमी विमाणीक देवता द्भवणरी त्यासता ए.

米子子 米田子 米田子 米子子 大学 大学 大田子 米田子 米田子 ए पांच प्रकारे देवतारी सना. जववायसना ज्ञपजणरी १, व्यलंकारसना प्रहणागांठा 朱子子 朱田子 朱田子 朱子子 朱子子 朱子子 朱田子 朱田子 पहिरवानी २, श्राजिषेकसञा श्राजिषेक राज्यनो करें ३, विवसायसञा पुस्तक वांचवा-नी है, सुधर्मासना तिहां दरवार करें जठें माणवक स्तंन हैं तठें नगवंतरी दाढां रहे तिण कारणें चोद्यो आश्रव न सेवें ए. ए पांच खंतराय दानां खंतराय दान देवें नही १, लाजाखंतराय खंव्यजावे लाज पाम सकें नही २, जोग छातराय जोगवी सकें नही २, उपजोग छातराय जोग उदय श्याय सके नही ४, वीर्य श्रांतराय द्रव्यनावे वीर्य पामें नही ५. ४ पांच प्रकारे मिथ्यात. अजित्रह मिथ्यात ग्रह्मो कदात्रही नही जोमें खोह वाणीयानी परे १, व्यणव्यनित्रही मिथ्यात हरजीकेरो त्रहियो मिथ्यात सेवें १, व्यनिनिवेसकिम-थ्यात छापतो पोते पाको मिथ्यात्वी छाने छानेराने हेतयुक्ते करीने मिथ्यातमांहिपा-खें जिनमार्गथकी मिगावें ३, खनाजोग मिथ्यात विना **उ**पयोग मिथ्यातं सेवें ४, संसय मिथ्यात संदेह घणो रहें ५. ए पांच प्रकाररा मिथ्यात्व. खोकिकमिथ्यात्व गोगो खेतरपाख इहखोकरे नामने

李 张子子 安 本年 安 本年 李 本田本本田本本田本 मानें पुजें संसारना सर्वकार्य करें तिको खोकिक मिथ्यात १, खोकोत्तर मिथ्यात्व ते देवगुरुना गुण नही व्यने देवगुरु करीनें जाणें हिंसा फुठमांहि धर्म जाणें सर्दहे तिको खोकोत्तर मिथ्याल २, कुपावचनीक मिथ्याल ते योगी सन्यासी इत्यादिक क्र-तीर्थीरो मार्ग सेवें तिको कुपावचनीकमिथ्यात्व ३, जणायस्य मिथ्यात्व प्रगवंतरी प्र-रूपणासं छणो प्ररूपें ४, ब्यतिरिक्तमिष्यात्व जगवंतरी प्ररूपणासं व्यविको प्ररूपें. ४४ <sup>ए</sup> पांच प्रकाररो मिथ्यात्व. विपरीत मिथ्यात्व जगवंतरो मार्ग विपरीत हीणो कहें १, छा कियमिथ्यात्व तिको किया कर तुठ मानें नही सर्व वस्तुनी नास्ति मानें २, ब्यनाण मिथ्यात्व ते सर्व जाव जलट्यी जाणे ३, ऋविनयमिथ्यात्व गुणवंतरा गुण नही करें ४, यसातना मिथ्यात ग्यान दर्शन चारित्ररी खासातना करें ५. ५ पांच जणा वांदवा योग्य नही. आपरे ग्रांदे चाखें तिणाने १, संयमने विषे दोष ख-गावें तिएाने २, गृहस्थासुं परिचय करें तिएाने ३, संयमनें पसवामे मेहल दीयो ति-णने ४, माठोत्र्याचार सेवें तिणने ५, ए पांचेही वंदवा नमस्कार करवायोग्य नही. ४६ ५ पांच कारणे जमजरी पहिले विहार करें. जयरे कारणे करें १, इर्जक इःकाल पमे

赤条条条

तो॰ २, राजरो मोकलो जय हुवें तो॰ २ पाणी आया नगरी वीटसीलो, पहिलीसुंही विहार करें ४, अनार्थ पुरुष परीसह देवतो देखीने पहिली विहार करें ४. ५९ ५ पांच प्रकारे नमन्रीया पीने विहार करें तो न्नगवंतरी खाज्ञा खतिक्रमे नही. पहि-खो ग्यान प्रणवाने खर्थे ?, बीजो दर्शनने खर्थे २, तीजो चारित्रने खर्थे २, चोथे श्राचार्यनी वेयावचने खर्थे ४, पांचमें ख्राचार्य कालकीधो जाणीने समुदायरी सार-संपाल करणने वासते विहार क्रें ५. पांच प्रकारे जीवना परिणाम. मैंपारा पुतला सरीला परिणाम हुवें ते मरीने नरकगितमें जिपजें १, बीजे काले घोवण सरीला परिणाम हुवें ते मरीने तिर्यचगितमें जिपजें २, तीजे कल पाणीसहित सरीला परिणाम हुवें ते मरीने मनुष्य हुवें २, चोथे चोवाणी सरीला परिणाम हुवें ते मरीने देवलोकमें जपजें ४, पांचमे निर्मल पाणीरा धारा सरीला परिणाम हुवें ते मरीने मुक्तिमें जाय ५. ५ पांच इंडीरा नाम. श्रनमनी कान १, चरचरी छांख २, खेचरी नाक ३, गोचरी जी-न्न. ४ व्यगोचरी काया ५.

李大学 朱代学 朱代学 朱代学 朱代学 朱代学 इंडीरा खर्थ. सोतेंड्री कान गीत गान राग सुणवाने सावधान १, चक्रइंडी १ हप देखवाने वासते सावधान २, घाणें जी नाक ते प्रखा २ गंध सं-विषे सावधान ३, रसेंड्री जीज ते जला २ रस जोगवारे विषे छाने बोलवाने विषे सावधान ४, स्पूर्शइंडी काया ते खरखरा संहाला जोग जोगवाने सावधान ५१ इंडीना त्याकार. बाहिरला त्यनेक प्रकाररा जाणवा त्यने त्यंतरंग मांहिला ए पांच हैं. सोतंइडीनो ब्याकार कमल फूलरो १, चक्कडंडीरो ब्याकार चंडमारो २, वाणइंडीरों खाकार खति मुक्तक वनस्पतिरा फूल सरीखों र, रसइंड्यीरो ब्रुरपद्धारो ४, स्पर्श्इंदीरो त्याकार नाना प्रकाररो ५. ५ पांच इंद्यीनी व्यवगाहना. श्रोतइंद्यीनी व्यवगाहना व्यांगुलीने व्यसंख्यातमें १, वाणेंडी रसेंडी स्पर्शइंदी इणां तीनानी व्यवगाहना नव व्यांगुखीरी जाणवी.५३ ५ पांच इंद्रीनी विषय जाणवी. श्रोतइंद्रीनी विषय बारें जोजन प्रसेरं १, चकुइंद्रीनी वि-षय लाख जोजन तांइ पसरे २, बाणइंड्री रसइंड्री स्पर्शइंड्री इणां तीनांरी विषय नव २ जोर्जन तांइ पसेरं ५४.

५ पांच जातिरा रजोहरण. जनरो रजोहरण १, जंटरी जननो रजोहरण १, मुंजरो रं-जोहरण ३, तृणांरो रजोहरण ४, वृहकलरो रजोहरण ५. ५ पांच प्रकाररा वस्त्र. पहिलो जनरो वस्त्र १, पाटरो वस्त्र २, कपासरो वस्त्र ३, सिणरो वस्र ४, श्रर्कफूलरो वस्र ५. ५ पांच राकेंद्ररा नाम. राकेंद्र १, वज्रपाणी २, सतकतु ३, मघवान, ४ पाकशाशन. ५७ ५ पांच बोलरे सेवणवालासुं खाहार पाणी ठोमतां जगवंतरी खाग्या खतिक्रमे नही. र्थ्यकार्य करें खालोवें नही १, प्रायित लेवें नही १, प्रायित लेक्ने धरीने राखें ३, प्रायं जित पूरों वहें नहीं है, गुरांधीकी जपरांठों वहें ५. ५ पांच कारणे एकलो साधु एकली साधवी जेला रहें तो जगवंतरी आङ्का अतिकर्म नही. इर्जकाल पनीयांसुं मार्गमांहि खटवी हें पेले नगर जावतां एक दोय रातिरा घेटा रहें तो जगवंतरी खाग्या खितकमे नही १, नगरमांही खानक नही मीटें तो पेखा रहें जगवंतरी **आग्या श्रातिक्रमें नहीं रे, विहार करतां सूर्य आ**श्रम गयो हुवें तो नागजदाकुमाररे देहरामांही रहें तो जगवंतरी आग्या अतिक्रमे नही ३, साधु

साधवी विहार करतां चोरे हेरो कीयो हुवें जंनखपगरण खोसी खेवें जिए कारणे जेला रहे तो जगवंतरी धाग्या खतिकमे नही ४, धानार्यपुरुष परिसह देवें तो सीख राखवाने कारणे जेखा रहे तो जगवंतरी आग्या खतिक्रमे नही ५. ५ पांच कारणे साधु साधवीरी सार संजाल करें तो जगवंतरी आग्या अतिक्रमे नही. श्यतंत हर्ष करी संयमथकी मन बाहिर प्रवर्तावे तेहनी सारसंजाल करीने थिर करे १, श्रातं रोगे करीने पिमीत वें तेहनी सारसंजाल करीने थीर करें २, वाइ करीने परवस हैं तो सारसंजाल करीने थिर करें ३, चोथे जक्तरा परवशपणामांही पनी है तेहनी सारसंजाल करें ४, मोहरे वसे पुत्र संयम लीघो हुवें पुत्रादिकनी तथा पुत्र मातारी सारसंजाल करें तो जगवंतरी आग्या अतिक्रमे नहीं ५. ें पांच कारणसुं साधु साधवीसुं संघटो करें तो जगवंतरी श्राग्या श्रतिक्रमे नहो. पहि-खे पंसी हाथी पांसमें तथा सुंदमां घाखी खेइ जावतां जाखने राखें तो जगवंतरी श्राग्या श्रातिक्रमे नही १, बीजे खाममें पमतां गिरतांने राखें तो जग० २, तीजे ना-वासुं कतरतां पाणीमें रूबतां फालीने राखें तो जग० ३, चोथे जवल आवती हुवें

李条本条本 本本学·朱京本学·朱文学、本本学·朱文学·朱文学 तो जालीने राखें तो जग० ४, पांचमे संघारो की हों चकरी छायने पमती छकी ने जालें तो जगवंतरी खाग्या खतिक्रमे नही ५. ५ पांच कारणे टोलो समुदाय बोमें. प्रायबितीया जाणीने टोलो समुदायने बोमें १, बी जे ज़क्रे वस तथा वार्रे वस टोलो समुदाय होमें २, तीजे श्ववनीतने सूत्र प्रणावें नहीं तिणसें टोखों समुदायने डोमें ३, मोहरे वस मन ठाम रहे नहीं तिण कारणे टोलो समुदायने ठोमें ४, श्रनेरा टोला समुदायमें साधुजन सीदावें हैं जिणानें सा-हाद्य देवा जाय तिके कारणे टोलो समुदाय होने ५. ५ पांच खाचार्यना खतिशय. पहिले थानकमांही खावीने हाथ पग पुंजे १, थानक मांही मूत्र स्थंनिल करें २, तीजे वियावच इहा हुवें तो न करें २, चोथे थानकमां-ही एकांतध्यान ध्यावें बेसें ४, पांचमे यानक बाहिर एकांत बेसे ध्यान ध्यावें ५. ६३ ५ पांच प्रकाररा प्रायित. गुरुपास ते तीस दिनारी प्रायित देवें १, खचुमास ते स-त्तावीस दिनारो प्रायित देवें २, गुरुवोमास ते तीस दिनारो महीनो गणीने च्यार मासरो प्रायित देवें ३, लघु चोमास ते सत्तावीस दिनारो महिनो गणीने

मासरो प्रायमित देवें ४. आरोपणा ते फरीने पांच महावत उचरावें ५. प पांच प्रकाररी छारोपणा. पठिवया ते घणा प्रायित माधे छाया है १, बीजी ह विया ते घणा मांहिलो पहिलो प्रायित वहें ते ठिवया २, तीजी किसणा जेखा \*\*\* प्रायित गुरु देवें तेटला सर्व संपूर्ण छालंभित वहें २, चोछी छाकसिणा ते गुरुदेवें प्रायित दीधों हे तीको सर्व लंभित करीने प्रायित पूरो पामें ४, पांचमी हमाहमा ते तुरतरो दंम तुरतही प्रायित ५. ५ पांच प्रकाररा विणीमग. रांक दीन दयामणा वचन कहीने खेवें ते विणीमग. पहि-लो श्रातिष्ठीविणीमग ते जीमणवेलाये आवें १, बीजो कृपणविणीमग ते घन सार्वे खरचें नही २, माहणविणीमग ब्राह्मण ३, श्वानविणीमग ते जिकारी कुतरारी परे छ ना टीवें ४, पांचमो समणविणीमग ते साधुना गुणरहित जाणवा ५. ५ पांच प्रकाररा समण. पहिलो समण साधुरा गुण होण १, बीजो समण ते शाक्या-दिक योगी २, सम्णतापस ३, समणसन्यासी ४, समणगोशाखकमित ५. ए पांच पिछेहरारी वेदका जाणवी. पिछेडी गोमारे उपरे हाय राखीने पिछेहए। न

光本本学 करें १, बीजी गोमारे नीचे हाथ राखीने पिमलेहण न करें २, तीजे गोमारे पाखती हाथ राखीने पिमलेहण न करें ३, चोथे गोमारे विचे हाथ राखीने पिमलेहण न करें ४ पांचमी एक हाथ गोनांरे विचाले अने एक हाथ गोनां जपरे इसनी तरे पिनखेहणा करें ५. ए पांच जातिरा महा एक महा पाणीरे सामुहो चालें १, बीजो महा पाणीरे जपराठो चालें २, तीसरो महा पाणीरे पास्तती चालें ३, चोथ्रो महा मध्य विचाले चालें ४, पांचमो मह सर्व पाणीमें चालें ५. ५ इण दृष्टांत साधु पांच मुकारे गोचरी करें. पहिली सामुही गोचरी करें १, बीजी था-नकथी ट्यपूठी गोचरी करें २, तीजी बेहमै २ गोच्री करें ३, चोथी मध्य विचालरी गोचरी करें ४, पांचमी ब्यनुक्रमे सघलांही घरांरी गोचरी करें ५. ए पांच प्रकाररा मूर्ल. पहिलों आपही वात करें अने आपही हमें ते मूर्ल १, बीजो मार्गमांही लावतो चार्खे ते मूर्ल २, तीजो कियो जपगार गिणें नही ते मूर्ल २, चो-थों गई वस्तुरों शोच करें ते ४, पांचमों दोय जणा वात करतांतीजो जावे ते ५. 9१

प पांच गुणा धणीने जणवो श्रावं. विनीत हुवं ते जणें १, ज्यमवंत जणें २, निर्मल बुद्धिरो धणी जणें २, जपयोगवंत जणें ४, श्राजीविका हुवे तो जणें ५. 9२ पांच प्रकार गुरुने श्राने जणनेवालाने जेला चाहीजें. श्रानक सबरो हुवें तिवारे जणें १, पुस्तक हुवें तो जणें २, श्रावसर देखीने जणें जणावें २, गुरु चेलामांही राग हुवें तो जणें जणावें ४, ए पांच बोल हुवें तिवारे जुणाणो ख्रावें. थ पांच प्रकार स्त्री पुरुष विना सेव्याही गर्ज घरें. पहिले छंमीतरे वस्त्र आघो करीने वीर्यसु खरमी घरती जपरां वसे पुरुष बेठो हुवें तथा घरती आसन वस्त्र जपरे तीन पोहरतां इ बेसें नहीं अने बेसें तो गर्जनी जत्पत्ति स्त्री बेठी हुवें जठें पुरुष एक घमी तां इ बेसें नहीं अने बेसें तो शील इं दोष लागें १, बीजे वीर्य खरमीया वस्त्र पिहरे 

张子·米田米·米田米·米西米·米田米·米田米·米田米·米田米·米田米

५ पांच प्रकार स्त्री पुरुषने सेवतां गर्ज न घरें. पहिले वय लोटी हैं वरस १२ तथा १३ 光学光春光多 में हैं तो नामिनी गर्न न घेरे १, बीजे वय व्यतिकांत गई ५५ वरस जपरे व्याव्यां हें तो गर्ज न धरें २, तीजे जन्म वांफणी हैं तो गर्ज न धरें २, चोथे रोगणी हैं ते गर्ज न धरें ४, पांचमे मन वगर सेवतां गर्ज न धरें ४. पांच कारणे स्त्री पुरुषतुं सेवताथकी गर्ज नही घरें. कदेही ऋतु श्रावें नही तो गर्ज न घरें १, बीजे कदेही ऋतु समयरी श्रासद्याइ जावें नही तो गर्ज नही घरें २, तीजे योनी वायरा करी जरी हैं ते जाणी गर्ज न घरें ३, चोथे योनी विणस गृष्ट हैं ते \* जणी गुर्ज न धरें ४ पांचमे पुरुषरे खंगसुं जोग जोगवतां वीर्य बाहिर नखोवें ते ज 光本京安東 णी गर्न न धेरं ५. ५ पांच प्रकारे स्त्री पुरुषसुं सेवना करती श्रकी पिए गर्ज नहीं घरें. पहिले सदा पुरुष सेवे 条本条条 र्वे पिण हर्षवान्यकी वेक्यानी परे १, बीजे छागनि जोरावर वें तिणसें योनीमें वीर्य-ना पुद्रख ग्या के विदंस जाय ते जणी गर्ज नहीं धेरे ते श्रीदेवीरी परे २, तीजे घ-李李 णी पित्तनी देह हैं ते जाणी गर्ज नहीं धरें २, चोथे देवता तथा मनुष्यक्ररणकरीने

张·朱安子·朱安子·朱安子 कूल बांध मेहली हैं ते जाणी गर्ज नहीं धेरं ध, पांचमे पुत्र पुत्री होयवारी जदय-जाव नही तिका गर्ज नही घेरं ए. प निराविकारा पांच वर्ग. पिहलो निरयाविका १, बीजो किपया २, तीजो कप्पव-मंसिया १, चोय्रो पुष्फचृलिया ४, पांचमो विद्वदशा ४.

## ॥ श्रय बढो बोल लिख्यते ॥ षटज्ञ्य. पहिलो धर्मास्तिकाय १, बीजो ख्रधर्मास्तिकाय २, तीजो ख्राकाशास्तिकाय ३, चोथो काल ४, जीवास्तिकाय ५, पुद्रलास्तिकाय ६. ६ व प्रकाररो ध्यवधिग्यान. पहिले जिको ध्यवधिग्यान जिके गाम नगरमें क्रपजें जि-उंध्ज देखें पिए। उए। गामसुं निकलीयां नही देखें फेर उएाहीज गाम आवें ति-वारे देखे १, बीजे जिठे ख्रवधिग्यान ऊपजे तिहां देखे छाने जिहां जावे तिहां पिण देले २, तीजो ख्रवधिग्यान ऊपजतो खांगुलीने ख्रसंख्यातमे जाग ऊपजे तिवारे पंजे देखतां २ व्यसंख्याता दीप समुद्ध देखे ३, चे। वो ही जो पर्म फांखो देखे पहिन्ती

\*\*\*

\*\*

असंख्याता दीप समुद्ध देले पजे हीणो १ पमतां १ आंगुद्धीने असंख्यातमे जागे देले ४, पांचमे आलो द्यांक देले पजे पाजो पमे पजे सर्व आणदीजा होय जावे ४, उठो ख्रविषयान उपजीयां परे पार्शे पने नहीं लोक तो खालो देले खने खलो-कमां एक ख्राकाशनो प्रदेश देखे तो पिण पालो न पने लोकमांही ख्रविषयानसुं

श्रमंख्याता श्राकाश प्रदेश दीना तिए प्रमाणे श्राताकमांही श्रमंख्यात गुणा श्रा खोक श्राकाशना संम्वा देखे तिको परम श्रावधिग्यान कहीजे तिएासु पीने केवल-李安安 李本李 李子子 ग्यान क्रपजे परं पाजो पमे नही ६. ६ व्यजयणासे पिनछेहणा करतां च दिशिना जीव हणीजे. पूर्वथी १, दिशायी पश्चिमथी ३, उत्तरथी ४, उंचीदिशिथी ४, नीचीदिशिथी ६. ६ उ प्रकारे जयणासुं पिनलेहणा करतां उकाय जीवनी ख्याराधना करे. एहीज पूर्वादि ब दिशि जाएवी. ६ व प्रकारे साधुजी खाहार खेवे. पहिले क्षुधा वेदनीने कारणे खाहार खेवे १, वेयावचने कारणे खाहार खेवे २, तीजे इर्या सोजवारे वासते खाहार खेवे २, चांथे संयम निरवाहने खर्थे छाहार खेवे ४, पांचमे पोतारा प्राण उखता हुवे तो खाहार हों थे, उठ पाउली रात्रीरी धर्मजागरणा नहीं हुने तिके कारणे खाहार होने ६. ५ ६ ज कारणे खाहार डोने. पहिलों रोग खानीने उत्तपनों हुने तो खाहार डोने १, बीजे जपसर्ग ऊपने आहार बोमे २, तीजे ब्रह्मचर्यथी परिणाम मीगता जाणीने आहार

बोमे ३, चोथे प्राणी जीवरी दया वास्ते खाहार बोमे ४, पांचमे तपस्यारे वास्ते खा हार बोमे ४, जावजीव खानशण करे ते प्राणी खाहार बोमे ६. 米の米米の米 ६ च काय. पृष्टिवीकाय १, ख्रापकाय २, तेजकाय २, वाजकाय ४, वनस्पतिकाय ४, त्रसकाय ६. ६ व पृथिवीरा नाम. सन्ना १, सुद्धा २, वाह्यया ३, मणशीला ४, शर्करा ५, खरपुढवी.ए ६ न पर्याय. ख्राहारपर्याप्ति १, श्रारीरपर्याप्ति २, इंडियपर्याप्ति ३, श्वासोश्वासपर्याप्ति ४, जाषापर्याप्ति ५, मनपर्याप्ति ६. ६ ब लेक्या. कृष्णलेक्या १, नीललेक्या २, कापोतलेक्या ३, तेजोलेक्या ४, पद्मलेक्या **५, शुक्रलेक्या ६.** ६ च संघेषा. वज्रऋषजनाराचसंघयण १, ऋषजनाराचसंघयण २, नाराचसंघयण २, ट्य-र्द्धनाराचसंघयण ४, कीखिकासंघयण ४, सेवठासंघयणं ६. 李泰 ६ च जावरा नाम. जदयजाव १, जपशमजाव २, कायक ३, क्योपशम ४, प्रणामिक **५, सन्निपा**तिक ६,

६ जीव चोवीसांदंनकां छ प्रकारे ब्याजुलो कर्म बांधे. पहिलो जातिनाम १, बीजो गति नाम २, तीजो स्थितिनाम ३, चोथो श्रनुत्रागनाम ४, पाचमो लगाहणानाम ५, त-क्वे प्रदेशनाम ६. इ व बोल साधने श्रहेतकारी हुवें मुक्तिनो घात करें. पहिलो परूज्यानो मद करें १, बीजो सूत्रनो मद करें २, तपस्यारो मद करें ३, शिष्य शाखा पुस्तकरे लाजरो मद करें ४, घणी परपदा पूजारो मद करें ५, ख्यादरसन्मान सत्काररो मद करें ६. ६ व प्रकारना मनुष्य. कर्मे चूमि १, श्रकमे चूमि २, वपन्नश्चंतरहीप, एहीज तीन समु-र्हिम, एहीज तीन गर्जज दे. ६ व प्रकाररा जंबुद्वीपमे खेत्र. हेमवय १, एरएयवय २, हरिवास ३, रम्यगवास ४, देव-कुरु ५, जत्तरकुरु ६. ६ व लेत्रामें मनुष्य जपजें. जंबुद्दीप १, पूर्वधातकी २, पश्चिमधातकी ३, पूर्वपुष्कराध ४, पश्चिम पुष्कराध ४, श्चंतरहिप ६. ६ ब राजाये मिखनाथजी पासे दीका ग्रही. प्रतिबुद्धराजा इषागदेशनो १, रूपीराजा

の米米の米

\*\*\*

कुणालर्दशनो २, चंडग्रायराजा खंगदेशनो २, संबराजा काशीदेशरो ४, खदीनश-大学·朱色朱子(李子)朱子(李子)朱子(李子)朱子(宋子)朱子(宋子)朱子(宋子)朱子(宋子)朱子(宋子)朱子(宋子)朱子(宋子)朱子(宋子)朱子(宋子)朱子(宋子)朱子(宋子)朱子(宋子)朱子(宋子) भ्रुराजा कुंजरदेशनो ५, जितश्रभ्रराजा पंचाखदेशनो ६. ६ उ मत. प्रथम जैनमें देव अस्हित निर्प्रेय १, बौधमतमें देवबुव गुरु पावनी २, शि वमतमें देवरुद्ध गुरुयोगी ३, देवमतमें देवधर्म गुरुवैरागी ४, न्यायमतमें देवजगत्कर्ता गुरु सन्यासी ५, मीमांसकमतये देव व्यक्तल दरवेस गुरु ६. ६ न रिष्टिवंत मनुष्य. तीर्थिकर १, केवसी २, चक्रवर्ति ३, वासुदेव ४, बसदेव ४, विक ख्रात्माना घणी साधु ख्रतिशयवंत ६. ६ व बोल करवानी शक्ति नहीं. जीवनो याजीव करणरी सगति नही १, याजीवरो जीव क्रणरी सगति नही २, परमाणु पुद्रख छेदी नेदी शके नहीं २, एकण सम-यमां दोय जाषा बोल राके नही ४, छापरा कीचा कर्म छापही जोगवे परं बीसरो वदाय शके नही ५, लोकरी चीज ते श्रालोकमांही जाय शके नही ६. ६ व बोल पामवां उर्लज. मनुष्यपणो पामवो दोहिलो १, आर्यकुल पामत्रो दोहिलो २, पंचें जिपपणो पामवो दोहिलो ३, सिद्धांत सुणवो दोहिलो ४, सर्घा व्यावणी दोहिली ५, तपस्या संजम जपरे बल वीर्य फोरवणो दोहिलो ६. ६ व विकाणे किया लागें. मिथ्यात्वीने चोवीस किया लागें इर्यावहीटली १, समदृष्टि-ने तेवीस किया लागें २ कियाटली मिथ्यात्वरी इरियावही २, श्रावकने बावीस कि-या खागें तीनटली दोय तो पूर्वलीहीज तीजी श्रविरतेरी ३, प्रमादवंत साधने किया खार्गे ४ टखी तीन तो जवेदीज चोथी प्राणातीपातकी टखी ४ व्यप्रमादवंत साधने २ किया लागें बीजी सर्वहीटली एक मायावित्तया बीजी संपराध्या ७, बीत-राग संयमवंतने १ किया लागें बीजी सर्वटली एक इरियाविहया लागें ६. ६ व समिकतरा त्यागार. राजारे किहणासुं त्यासंयतीने मानें तो समिकतने दौषण खागें न्ही १, सज्जनादिकरे कहणासुं माने २, हठ करके मनावें तो माने २, देवता मनावें तो माने ४, मातापितारे कहणसुं माने ४, काल इर्जिंदा पमीयो हुवें वृत्ति आजीविका निमित्ते मार्ने ६. ६ ज समिकतरी जतना. पिहले छान्य तीर्धरा गुणप्राम न करें १, बीजे छान्य तीर्धने वांदे पुजें नही २, तीजे छान्य तीर्धशुं विना बोलाये बोलें नही ३, चोछे वारंवार

李安永

李本本

\*\*

MK I	ı	1	*
*		आलापसंलाप करें नही थ, पांचमे अन्यतीर्धने धर्म निमित्ते अत्र पाणी न देवें ए,	***
**	]	बद्धे श्रन्यतीर्थने धर्मनी बुद्धिशं वस्त्र पात्र न देवें ६.	l I
	६	ज समिकतरी जावना. पहिलो धर्मनो कारण समिकत १, बीजो धर्मनो ज्पार्जवो ते	*
***		समकित २. तीसरो धर्मना दधरो जाजन ते समकित ३, चोष्टे धर्मनगरनो दखाजो	*
*		समिकत ४, धर्मरूप मंदिररो छाधार ते समिकत ५, उद्धे देशविरती सर्वविरतीरूप	※《《《》
*	1	विस्तीनो द्यागर ते समिकत ६.	
*	દ્	ज समिकतरी स्थापना. जीवादिक नव पदार्थ चिंतवें १, कर्मथ्री जीवरी ज्रपत्ति ने	***
3	Ì.	विनाश २, शुप्त <b>अशुप्रकर्मनो कर्ता ३, आपना की</b> धा कर्म ते आपही पोक्ता <sup>४</sup> ,	*
		विना जोगवीया नहीं बूटे ५, कर्मथी मुकाय ने मोक्त जांवें ६.	1 7 1
<b>2</b>	६	ਰ कषाय. सकषायी १, कोह्रकषायी २, मानकषायी ३, मायाकषायी ੪, खोजकषायी	***
*		१ <b>ट्यकषायी ६.</b>	*
*************************************	६	ब संस्थान छाजीवरा. पश्मिंमख १, वट्ट २, त्रंस ३, चोरस ४, छायतन ५, छानि-	72.4.5.K
*	ļ	हांत्रं ६,	*
*		۹,	췣

६ व जपकम. नामजपकम १, स्थापनाजपकम २, ५ व्यजपकम २, काखनपत्रम ५, जावनपत्रम ६. ६ च श्राहपाबहुत्व. सर्वशुं थोमा जीव १. पुद्रख श्रानंतगुणा २, काल श्रानंतगुणो २, सर्व द्रव्य विषे साहिया ४, ब्याठकर्मरा पर्यावा ब्यनंतग्रणा ५, केवलगुणरा पर्यवा श्चनंतग्रणा ६. ६ व प्रकाररा इए संसारमें हुड़ जीव. तें हु १, वायु १, बेरेंड़ी ३, तेरिंड़ी ४, चोरिं-डी ५, तिर्यचपंचेंडी ६. ६ न ऋतु. पावसऋतु खासाम श्रावण १, वर्षाऋतु जाडव खासोजरो १, शरदऋतु कार्तिक मृगसररो र, हेमंतऋतु पोष ने माघरो ४, वसंतऋतु फागुण चैत्ररो ५, श्री-ष्मऋतु वैशाख जेठरो ६. ६ श्रवग्रह मितरा च जेद. खिपसमोग्गहिए ते शीघ जतावलो ग्रहें १, बहु हिए ते घणा सूत्रनो प्रहण करें २, बहुविहिगगहिए ते घणे जेदे संबद्ध प्रहें २, धु-वोगगहिए ते निश्चलपणे प्रहें ४, ख्रणिस्सियोग्गहे ते ख्रनिश्रायमतिसुं प्रहें ४, ख्र-

\*\*\*

संदिद्योग्गहिए ते संदेहरी रीत विगर प्रहण करें ६. 各京本京本京本 इमहीज विचाखाना सचेतनाना एहीज उ पेद जाएवा. एहीज निश्वय करवाना व नेद जाएावा. 杂类 धारणाना उ जेद ते कहें हैं. खिप्पसमोग्गहिए शीवपणे धारें १, बहुविधे करीने धारे १, पुराणी वस्तुने धारे २, इधर वस्तुने धारें ४, खनिश्रायसुं धारें ४, संदेहरहित-पणेसुं धारं ६. ६ व पिलमंथ ते विपरीत फल पामें. कुचेष्टा कुतुहल करे ते संयुपरो पिलमंथ १, छा-खिक एठ कहें ते संयमनो पिलमंध्य २, आघो पाछो दिष्टि देखें ते इर्यासुमतिरो प 李本 安子子子 李本 खिमंथ ३, तणतणाट गोचरीने विषे करं तो एषणासुमतिनो पिलमंथ ४, इहारो निरोध न करें तो निर्लोजीपणानो पिलमंध ५, तप करीने नियाणो करें तो मोखनो पिलमंद्य ६. ६ व प्रकारे करणवालाने कहणवालाने सरिखो प्रायिकत आवें. प्राणातिपात सेवें नही श्यने सेवणवालों कहें तेहने १, मृशवाद बोलें नही श्रमे बोलवावालो कहें तेहने २,

श्रदत्तादान क्षेवें नही श्रने क्षेवणहार कहें तेहने रे, मैथुन सेवें नही श्रने सेवण-हार कहें तेहने ४, दास नही श्रने दास सरीखा वचन कहें तेहने ५, नपुंसक नही ने नपुंसक सरीखा वचन कहें तेहने ६. न प्रकारे साधु फुन नहीं बोलें. झुन न बोलें १, किएकाहि जेगुए न करें २, किएही खिष्टता न करें २, कनोर वचन न कहें **५, कलंक न देवें** ६. ६ व प्रकार समिकत वांने छाने मिथ्यात्व छादरं. छरिहंतांरा छावगुणवाद बोटें तिवारे समिकतने ग्रांमीने मिथ्यात पामें १, छरिहंत प्रस्पीया धर्मना छवगुणवाद बोलें तो समिकत ढांमीने मिथ्यात पामें २, खाचार्य जपाध्यायना खनगुणवाद समिकत ढांमीने मिथ्यात पामें ३, चतुर्विध संघना व्यवग्रणवाद बोलें ते समिकत ग्रांमीने मिथ्यात पामें ४, जक्तरे वर्शायी समिकत ग्रांमीने मिथ्यात पामें ५, मोहरे व-श जन्मादपणो पामें समिकत जानीने मिथ्यात पोमें ६. ६ व प्रकार वाद करें. श्रागलानुं पांची वालवाने वाद करें १, श्रागलारी वात

\*\*\*\*

\*\*\*\*

等未举条

पीठें वाद करें २, तीजे त्यागलाने मनगमता वचन बोलीने वाद करें ३, त्यागलाने वैरीपणे करीने वाद करावें ४, त्यागलारे मांही पेसीने वाद करें ४, व्यागलेसुं जेली थक्ने चरचा करें ६. ६ च प्रकाररो प्रमाद. मदप्रमाद १, कषायप्रमाद २, निंदाप्रमाद ३, विकथाप्रमाद ४, जू-वोप्रमाद ५, याजयणा प्रमादे करीने पिनखेहणा करें याने जयणासुं न करें ते 李本华 李本本 माद पिन खेहणा प्रमाद जाणवो ६. ६ व प्रकार पिनेखेहण करतां जीव जन्म मरण वधारे. १ जतावखी घणी करें १, व्यण पिन छो । जो में १,पिन छो । अपपिन छो । जो ने विकास को ने निर्देश । जो ने निर्देश । जो ने निर्देश । जो ने निर्देश । जो निर्द ध, पिन्छोहणा कराने वस्त्र चीवर विषेर राखें ५, वेदिकारहित पिनछोहणा करें६. ४५ ६ च प्रकारे पिनछोहणा करतो जीव जन्म मरण टाछे घटावें. पिनछोहणा करतो शरीर वस्र नमावें नही १, पिनलेह्या व्यापपिनलेह्या नेला न करें २, जंची जातसें लगावें नही ३, नीचो घरतीसुं खगोंवं नही तिरतो नींतसुं वस्र खगावें नही मर्यादासहित पिन छे हैं। उस्ति प्रकारनी कुपिन छोहणा कही ते न करें हैं, नव खालोमा नव

पखें मा करें ५, प्राणी जीवने देखें दयारे निमित्ते पिमें छेहणा करें ६. ६ व प्रकारे इंड्रोनी रति अरति. श्रोत्रेंड्री सुणवाने टार्टी रागहेष करें १, चक्क इंड्री दे-खवाने विषे राग हेष करें २, घाणेंड्री नाक वासनारे खर्य राग हेष करें २, रसेंड्री रस जोगववारे खर्खे राग देष करें ४, स्पर्शेष्ट्री स्पर्शने खर्थे राग देष करें ४, नोइं-ज्ञी ते मनने खार्थ राग हेष करें ६. ६ प्रथम नरकगतिमेंसें ष्याकर मनुष्य हुया होय तिसके बहुखता ब खक्ण सो खि॰ कालो कुरूप १, क्वेशी होय २, रोगी होय ३, स्थित प्रयवान होय ४, स्थंगमेंसें इ-र्गध खावें ५, कोधी होय ६. ६ तिर्यचगितसे स्थाकर मनुष्य हुत्या होय तिसके उ लक्षण, लोनी होय १, कपटी होय २, जूठा होय २, छति जूला होय ४, मूर्ल होय ४, मूर्लमें प्रीति होय ६. ६ म्नुष्यगतिमेंसें आकर मनुष्य हुआ होय तिसके व खंकणा सरख होय १, सुनागी होय २,मीठाबोखनेवाखा होय ३,दाता होय४, चतुर होय ५, चतुरसे प्रीति होय ६. ५० ६ देवगतिसे स्थाकर मनुष्य हुस्या होय तिसके खदाणा. सत्यवादी दृढधर्मी होय १, दे-

\*\*\*\*\*\*\*

वगुरुका जक्त होय २, धनवान होय २, रूपवान होय ४, पंमित होय ४, पंमितसें 本学生の本本で本本 मीति होय ६. ६ च कायारी ख्राहिंसारा च कारण. जीतव्य १, पर संसार २, मान २, पूजा ४, मरण मुकाण ५, जुःलमीटण अर्थे ६. ६ व बोल नट धरा नकारो कर पौरा लक्कण. आंख्या मीच ले १, आघो देखें २, जंचो देखें वा नीची छिष्ट घालें ३, जमोन कुतरणै लग जाय ४, इसरेशुं वात करण लग जाय ५, मुन पकम हों ६ काल विलंब करें ॥ गाथा ॥ जिन्मे खांधालोयणं नंची परंमुह्वयणं । मोनकालविलंबो नाकारे विहो हो ।। १।। ६ च श्रारा श्रवसर्पिणीकालका. सुलमासुलम १, सुलमा २, सुलमाङ्खमा २, ङुषमा-सुलम ४, ज्लम ४, ज्लमाज्लम ६. ६ व व्यारा जत्सिपिणीकालरा. इलमाइलम १, इलम २, इलमासुलम २, सुलमाइ-लम ४, सुलम ५, सुलमासुलम ६. ६ न पापरा बोख. ए६ जन्य जीव इर्णे जितरो एक सरोवर सोष्येमें पाप १, १०१ स-

ं रीवर सोष्यांरों पाप इतरो एक दावानखमें पाप २, १०० दावानखरो पाप इतरो एक कुवाणिज्यमें पाप (साजी साबु लोह गुली) ३, १४४ कुवाणिज्य कियांरो इतरो एक कूनो आलंदियांरो पाप ध, १५१ कूना आलंदियांरो इतरो एक पारकी स्त्री सें-च्यांरी पाप ५, एएएए पारकी स्त्री जोगवे इतरो एक रात्रिजोजनमें पाप ६. ५६ ६ ज कारणसे जकायारी हिंसा करें. जिवणके टार्थे १, प्रशंसा टार्थे २, मान टार्थे ३, पूंजा श्रर्थे ४, जन्म तथा मरण बुनाने के श्रर्थे ५, इःख मिटाने के श्रर्थे ६. ६ खेरयाका प्रणाम . कृष्णखेरया हिंसाकरणकी इज्ञा होय १, नीखखेरयासें चोरीकी इंडा होय २, कापोतलेक्यासें मैयुनकी इडा होय ३, तेजुलेक्यासें तपस्या करणेकी इंडा होय ४, पद्म लेक्यांसे दान देशोकी इंडा होय ५, शुक्र लेक्यांसे मोद्दकी ६. ५०

## ॥ श्रय सातमो बोल लिख्यते ॥

光本本法

9 सातं त्रय. इहलोक त्रय. ते जातिसुं जातिने त्रय क्रंपजें. मनुष्यसुं मनुष्य मरें, दे-वतासं देवता मेरं, तीर्यचथी तिर्यच मेरं, नारकीथी नारकी मेरं, छाप छापरी जाति-शुं मेरें ते इहलोकप्रय १, परलोकप्रय. परजातिसुं प्रय क्रपजें. देवांसुं मनुष्यने प्रय कपजें ख्रयवा तिर्यवसुं मनुष्यने जय कपजें ख्रयवा परेलोकना इंख सुणीने जय कंपजें ते परलोकनय र, छादान नय ते परिग्रहछी नय कपजें ते धन राखवा नि-मित्ते चोरादिकनो जय ऊपमें ते व्यादानजय ३, व्यकस्मात् जय. व्यजाण गोली तोपनी शब्द सुणीने जय कपनें ते अकस्मात् जय ४, आजीविकाजय ४, मरणज-य ते आउंखानो नय ६, अपजसनय ते अजस अकीर्तिरो नय ७. 9 सात प्रकारे नारकी. जनुष्यजव बोमीने नीचो जाय ते नारकी तिएारा सात धम्मा १, वंसा २, शैला ३, रिला ४, खंजणा ४, मघा ६, मघवई ७.

नारकीना सात गोत्र. रत्नप्रजा १, सकरप्रजा २, वाह्यप्रजा ३, पङ्कप्रजा ४,

秦兴 光豆米 米豆米 朱玉米 米豆米 朱 朱 朱 ए, तमप्रना ६, तमतमप्रना **७.** . 9 सात महावीरजीना कब्याणक. चवण ते दशमा देवलोकसुं चव्या १, संहरण ते दे· वानंदानी कूलसुं हरिणगमेषी देवें संहरण की धी २, ऊपजवो ते त्रिसलानी कूलें ह-रिणागमेषीय संक्रमाञ्या ३, जन्म थयो ४, दिद्गाक स्थाणक ५, केवल्रज्ञानक स्थाणक 9 सात समुद्धात. वेदनी १, कषाय २, मरणांत २, वैकिय ४, तेजस ५, श्राहास्कि केवली ७. छ सात विनय. ज्ञानविनय १, दर्शनविनय २, चारित्रविनय ३, मनविनय ४, वचनवि-नय ८, कायविनय ६, लोकोपचार विनय ७. मात नय जाणणहारना मनरा विचाररूप नय. पहिलो नैगमनय हजारां गमे व्यर्थ एक पदार्थरा मानें ते किसी तरें, खात्मा ते पिण सामायक, समिकत ते पिण सामा-युक, सुमित ते विण सामायक, इत्यादिक व्यनेक व्यर्थ करने मार्ने सामायकने; ते नैगमनय १, बीजो ऋजुसूत्रनय २, तीजो संग्रहनय २, चोथो व्यवहारनय <sup>१</sup>, पांचमो

李条本 शब्दनय ५, वद्यो समनिरूढनय ६, सातमो एवं पूतनय ७. <sup>9</sup> सात स्थानार्य निन्हव महावीरजीना जाणवा. पहिलो तो जमाली ते घणा लागें तिवारे कार्य निपजे पिए कार्य मांड्यो करवों ते कर्यो नही कहीजें इसी मति 本学李本本 हुइ ते पहिलो निन्हव १, बीजो तिष्यग्रप्त सर्जाव प्रदेश नेहलो एकप्रेदशी जीव मार्ने पिण द्यसंख्यातप्रदेशी जीव नहीं मानें ते बीजो निन्हव २, तोजो व्यापाममित ते तीन राशि मानें जीवराशि १, अजीवराशि २, नोजीव नोअजीवराशि ३ ते तीजो निन्हव ३, ष्यासमंत मनमांहि संत्रम रहें ते कुण जाणें कोइ साधु कोइ देवता ते चोथो निन्हव ४, पांचमो गांगव दोय क्रिया माने एक समय दोय क्रिया करें इर्स मती ते पांचमो निन्हव ५, उठो गुहिल ते जीव कमीरो बंध माने आवंध नही मानै पिण **ष्ट्रणपारमीया कर्मरो बंध मार्ने ते उ**ठो निन्हव ६, सातमो निन्हव माहिख खिण २ प्रतें जीव नवा २ मार्ने सायत २ मांही नवो जीव मार्ने ए सातमो ७. सातेही कुशिष्य. जमाली १, मगुनामा २, व्यवंती ३, त्रिराशी ४, गांगिल ५, गुहील ६, माहिख ७.

▼·朱京学·朱京学·朱京学·朱宗学·朱宗学

表外 美国第一美国第一美国第一美国第一大学等一 प्रसात प्रकारे सुल. पहिलो सुल जिनधर्मधारी १, बीजे सुल जातिनो जारी ३, तीजे सुल रोग नहीं मीखें रे, चोथे सुल धर्म मीखें ४, पांचमें सुलवासो शुज ठाम ४, छ-ठे सुल निर्मेख परिणाम ६, सर्वेयकी रहें सुल पुण्य वनो नही न्यापे इःल ७. १० <sup>छ</sup> सात प्रकारे उद्मस्य जाणीजें. पहिले प्राणातिपात लागें १, बीजे मृषावाद लागें २, तीजे श्रदत्तादान लागें ३, चोथे शब्द रूप गंध रस स्पर्श श्रास्वादें ४, पांचमे पूजा सत्कार वांजे ५, जठें व्यसावद्य प्ररूपें परं सावद्य लागें ६, सातमे जिसो प्ररूपें तिसो पालें नही जाहाबायी ताहा कारिया न जबइ ७. मात प्रकार साधजीनी जापा. थोमो बोलें १, मीठो मधरो बोलें २, विचारीने बोलें ३, कार्य पनीयां बोलें ४, निरवद्य वाणी बोलें ४, मायारहित बोलें ६, सूत्र सिद्धांतरे

श्रवुसारे बोद्धं ७. <sup>9</sup> सात प्रकार सूत्र सुणवारा. व्यणबोख्यो सुणे १, हुंकारो देवे २, ईहें ३, वांबे ४, पूबें ऐ, प्रमाण करें ६, निश्चल करीने धारे ७. १३ ७ सर्व जीव सात प्रकारे. एकेंडी १, बेरिंडी २, तेरिंडी ३, चौरिंडी ४, पंचेंडी ४, स-

इंदिया ६, ऋणिंदिया ७. <sup>9</sup> दंम सात प्रकारना. हकार १, मकार २, धिकार ३, वचने करी निर्जिनें ४, रोकी रा खें <sup>ए</sup>, काराग्रहमांही राखें ६, कान नाक कापे ७. ष्ठ सात प्रकारे धनने जय. राजानो जय १, चोरनो जय १, कुटुंबरो जय ३, जय ४, पाणीरो जय ४, नासण जागमरो जय ६, विनाहारो जय ७. सात पदवी. श्राचार्यरी पदवी १, जपाध्यायरी पदवी १, श्रिवीररी पदवी ३, धर्मश्रकी मिगताने थिर करें ते थिवर तेहना तीन मकार जाणना ३, प्रवर्तीरी पदवी ते धर्म-ने विषे प्रवर्तावे सर्व संघामामांही वमो जाएवो ४, गएीरीपदवी ते संघामानो नायक ए, गणधरपदवी ते बारा छंग रचें ६, गणावहोद ७. र्घ सात प्रकाररी गोचरी. द्वीरगोचरी श्रम्भित दोषरहित निर्मख श्रम्भ पाणी सूफतो देवें १, श्रमृतगोचरी ते विना जाचीयें विना मागीयें श्रचित्त वस्तु श्रावें २, मधुकरगोच-री जमरानी परे खापरी खात्माने तृप्ति करें पराये जीवने पीमा जपजावें नही ३, रु. खगोचरी बीहावीने क्षेवें <sup>४</sup>, श्रजगरगोचरी ते एक घर जपर पार्ने ५ गजगोचरी ते

थोमो १ खेवें-६, गद्धागोचरी एकठोहि खेवें परं पूठखो विचार नही देखें ७. 9 सात कथा. स्त्रीकथा १, जत्तकथा २, देशकथा २, राजकथा ४, ग्यानजेदरी **५, समकितरी कथा ६, चारित्र जेदरी कथा 9.** 9 साते प्रकारे सोपक्रमी आजलो घेंट. घणो आजलो बांध्यो हैं पिण घट जाचें. धास-को लायने मेरें १, तरवार कटारी फांसीसुं मेरें २, मंत्रने जोगे खागलो सुंठ ठावें त-था माकिनी साकिनीरे मंत्रथकी मेरं ३, छाहाररे छाजीर्णसुं मेरं ४, शूखादिक वेद-ना कपजें मेरं ५, शर्प विद्व इत्यादिक स्पर्श लागें मेरे ६, खापणा श्वासोश्वास रो कीने मेरं 9. 9 सात इःख. पहिलो इःख घर व्यांगण जाम १, बीजे इःख पामोसी. चाम १, तीजे इःल घर आंगण कूवो ३, चोथे इःल बेटो जूवो ४, पांचमे इःल माथे रिण थ, बढ़ो इःख कुमारी धिय बेटीतणो ६, सातमो इःख पंनितंतणो नही संग, पर वस्ते संसारनो रंग ७. 9 सात कुव्यसन. पहिलो जूठो १, बीजो चोरी २, तीजो मांस ३, चोथी सुरा ४, पांच-

秦安 光田学 光田学 光田学 光田学 光田学 光子 光子 光子 मो वेश्यारो ५, बढो छाहेमारो ६, सातमो पारकी स्त्रारो ७. 9 सात प्रकारे उघामो इसम काल जाणीजें. चाहीजतो नही वरसें १, व्यणचाहीजतो वरसें २, व्यसाधुरी महिमा पूजा हुवें ३, साधुरी महिमा पूजा न हुवें ४, मोटां वि-काणे मिथ्यात घणो बल घणो तथा मावीतने गुरु गुरुणीने बोरु तथा शिष्य शि-ष्यणी मानें नही ५, बढें मनरो इःख मनरी चिंता फिकर मिटे नही ६, वचनरो इ-ल व्यसुहामणा इःलकारी वचन घणा सुणीजें ७, इसे खक्रणे पाचमो इलम समय जाणीजें 9. 9 सात प्रकारे उघामो सुखमकाख जाएवो. चाहीजतो वरसें १, अएचाहीजतो नही वरसें ४, साधु पूजीजें ३, यासाधु नही पूजीजें ४, मोटे ठिकाणे समिकत पावें मावी-तांसु तथा गुरु गुरुणीसुं बोरं तथा शिष्य शिष्यणी जपराठा नही चालें विनय करें थ, मनरो सुल ते मनने विषे घणी सुलशाता देवें ६, सुहामणो वचन बोलें ७. २४ उ कोइ समष्टिष्ट जीव राग देवकररिहत दया धर्म करके सिहत एक उपवास करके छाष्ट पोहरको पोसो करें तीएरे काइ फल होवें ? २९ सो छामब ५० करोम ५० लाख 99 पहुंचोम श्राजेरा नारकीनो श्रा**उ**खो तुर्टे देवतानो श्रुप श्राज्यों बांधे १, पोसेसहित पोरसी करें तो ३६ करोम १२ लाख १२ हजार पह्योपम काजेरो नास्कीनो ब्याजसो तुटे २, कोष्ट ब्याधा महुरतको संवर करें तो ४६ करोम १ए लाख ६१ हजार १ए सो पख्योपम श्राजेरो नरकनो तुरें ३, कोइ एक सामाइक करें ए इकरोम ४ए खाख १५ हजार १ए सो ह्योपम फाजेरो नरकनो ह्याजखो तुटे <sup>ध</sup>, कोइ घनी <sup>२</sup> ना पचकाण करें तो रोम ५३ हजार २४०० पटयोपम झांजेरो नरकनो ब्याजसो तुटे ५, कोइ एक कारमंत्रको ध्यान करें तो १ए लाख ६३ हजार १६३ पट्योपम श्राजेरो नारकीनो श्राज्यो तुटे ६, कोइ एक श्रानपूर्वी गुणे तो जघन्य ६० सागरोपम श्राजेरो जत्क्र-ष्टो पांचसो सागरोपम शाजेरो नारकीनो खाजलो तोमे देवतानो शुज खाजलो बांबे प्रसस्तकाय विनयका सात जेद. जयणांसुं जजो रहें १, जेपणासुं चालें २, जेपणाः सुं बेसें ३, जेयणासुं सोवें ४, जेयणांसुं जलंघे ४, जयणांसुं वार २ जलंघे ६, खो शरीर जयणासुं प्रवर्तावे <sup>9</sup>.

\*\*\*

\*\*\*

\*(\*)\*

सर्वार्थिसिक्विमानके चंड्वा के १५३ मोतीयांके सात घेरा. तिण मध्ये एक विचमें मोती ६४ मणको १, उसकै चोफेर ४ मोती ३१।३१ मणका २, उसके चोफेर ए मो-ती १६।१६ मणका ३, जसके चोफेर १६ मोती छ। मणका ४, जसके चोफेर ३२ 本学 मोती धाध मणका ५, जसके चोफेर ६४ मोती शर्श मणका ६, जसके चोफेर १२० मोती शश् मणका 9, एवं सर्व मिली १ए३ मोती ए३१ मणका श्रया 9. 9 सात स्वर. खर्ज १, ऋषत २, गंधार ३, मिश्रम ४, पंचम ४, घेड्वत ६, निषाद. २९ व सात टाजन्य. पालकबाह्मण ५०० साधु घाणीमें पिट्या ते १, पालक कृष्णाजी पुत्र घोमे निमित्त श्रीनेमिनाथजीके दर्शणकुँ गया ते २, कालकसूरकसाइ ३, कपिलादा सी ४, संगमदेवता श्रीमहावीरजीकुं जपसर्ग दीया ते ५, इंगालमदेनाचार्य ६ सारपट्ट जदाईराजानो मारणहार ७. धनमें सातोकासीर. १ पृथ्वी, २ छामि, ३ पाणी, ४ देवता, ५ कुटुंब, राजा.

## ॥ अथ आठमो बोल लिख्यते ॥ U श्राठ मद, जातिमद १, कुलमद २, बलमद ३, रूपमद ४, तपमद ४, लाजमद ६, सूत्रमद ७, इश्वर ( तक्कराष्ट्र ) मद ए. ण खाठ पृथिवी. सात तो नरकपृथिवी, खाठमी ईसीपनारापृथिवी. ण ष्याठ कर्म. ज्ञानावरणी १, दर्शनावरणी २, मोहनीकर्म ३, वेदनीकर्म ४, नामकर्म <sup>ए</sup>, गोत्रकर्म ६, खायुकर्म ७, खंतरायकर्म ए. ण त्याठ स्पर्श. जब्ण १, शीतल २, बूलो ३, चीकणो ४, लखरो ५, सुहालो ६, खवो ७, नारी ए. ण आठ ग्यान. मतिग्यान १, श्रुतिग्यान २, श्रवधिग्यान ३, मनःपर्यवग्यान <sup>४</sup>, केवल

米田米 米米 ग्यान ५, मतिश्चग्यान ६, श्रुतिश्चग्यान ७, विजंगञ्चग्यान ७. **या**ठ थात्मा. द्रन्यव्यात्मा १, कषायव्यात्मा २, जोगव्यात्मा ३, **उ**पयोग**या**त्मा ग्यानश्चात्मा ४, दर्शनश्चात्मा ६, चारित्रश्चात्मा ७, वीर्यात्मा ७.

ण श्राठ श्राचार्यनी संपदा. श्राचारसंपदा १, श्रारीरसंपदा २, सूत्रसंपदा ३, वयणसंपदा \*\*\* \*\*\* <sup>ध</sup>, वाचनासंपदा ८, मतिसंपदा ६, संग्रहसंपदा ७, पारिणामिकसंपदा ७. 米の米米の米 大学・大学 ण श्राठ मंगलीक. श्रीवत्स १, मह्रयुग्म २, दर्पण २, चूंगार ४, पूर्णकलश ५, साङी-यो ६, नंदावर्त्त ७, न्नासण ए. एं केवली समुद्धात किसे कारणे करें वेदनीकर्म कर्म तो घणो छने छाजलो कर्म छो-मो पिण वेदनीने त्र्यने ब्यानखा कर्मने बेहुंना पुद्रखदख सारीखा क्रवा त्रणी समु-秦大学 朱色华 朱色华 秦大学 द्धात करें शरीरमांहीयी जीवप्रदेश काढीने लोकमांही विषे, रहें ते केवली समुद्धात करतां ए समय खागें ते कहें हें. पहिखे समय दंमाकार करें ते सातमी नरकरे नी-चले लोकाकाशपदेशसुं लेइने सिष्ठशिला तांइ एक सारखो दंमरो आकार करें १, बीजे समय कमाम करें दोनुं दिसे कपाट करें २, तीजे समय मथाणो करें फेरणाने त्याकारे चिहुंही दिसे जीवपदेश पुद्रखकर्म वर्गणारा विषे रहें २, चोथे सम्य सर्व लोकाकाश प्रदेश पूरें ४, पांचमे समय लोकाकाश प्रमाण जीव संहरे ५, बढें समय मथाणों संहरे ६, सातमें समय किमान संहरे ७, ब्याठमें संमय दंन संहरे ७, पहि-

जोगसुं प्रवर्त राधार मो समय कार्मण जोगसुं प्रवर्त्त पांच समयमांही खाहार श्चने तीने समय श्वाहार नहीं खेंबें ते तीन समय कार्मणजोगना जाणवा. श्राठ प्रकारना दर्शन. चकुद्रीन १. श्रवकुद्रीन २, श्रवधिद्रीन २, केवखद्रीन ४ मिथ्यातद्शैन ७, समामिथ्यानद्शीन ६, सुप्रदर्शन ७, समिकतद्शीन ७. ए छाठ बोल सीलामणा दान दया पालें ते दानेसरी १, धर्मरों छाचार पालें ग्यानी २, पापसें मेरं ते पंमित ३, पांच इंडी दमे ते शूरवीर ४, कुलक्षण जोमें ते चतुर ए, सत्यवचन बोटों ते सिंह ६, परत्यगार करें ते धनेसरी ७, निधनसं नेह करें .व्यखंनित ए. U दयाधर्मने व्याठ जपमा. पहिलें बीहताने सरणानो व्याधार तिम जन्यजीवनें दया· नो श्राधार १, बीजे चडपदने खुंटानुं श्राधार तिम जन्यजीवने दयानो श्राधार २, तीजे पंखीने आकाशनो आधार तिम जन्यजीवने दयानो आधार २, चोये तरसीया ने पाणीनो आधार तिम जन्यजीवने दयानो आधार ४, पांचमे जूलाने अनरो आ-

लो समय खाठमो समय जदारिक जोगसुं प्रवर्ते शक्षा मो समय जदारिक

धार तिम जन्यजीवने दयानो आधार ५, उठे रोगीने जिषधीनो आधार तिम जन्य जीवने दयानो आधार ६, सातमे जुल्याने साधरो आधार तिम जन्यजीवने दयानो श्राधार 9 श्राठमे उबताने पाटीयानो श्राधार तिम जन्यजीवने दयानो श्राधार. ११ ए श्राठ प्रकाररी लोकरी स्थिति. श्राकाश प्रतिष्ठित वायु १, वाज प्रतिष्ठित जदही २, जदही प्रतिष्ठित पृथिवी ३, पृथिवी प्रतिष्ठित त्रस थावर प्राणिनः ४, श्राजीव जीव प्रतिष्ठित ए, जीव कर्भ प्रतिष्ठित ६, द्याजीव जीव संग्रहीत ७, जीवकर्म संग्रहीतए. १३ ण श्राठ प्रकारना जीव. पुढवी काञ्या १, श्राजकाञ्या २, तेजकाञ्या ३, वाजकाञ्च या ४, वणस्सइकाञ्चा ५, त्रसकाञ्चा ६, सकाञ्चा ७, त्राकाञ्चा ७. ण आठ प्रकारना जीव. मनुष्य १, मनुषिणी २, तिर्यंच ३, तिर्यंचणी ४, देवता ए, दे-वांगना ६, नेरङ्या ७, सिद्ध ७. ए स्राठ बोलरे सेवणहारने पारंचिया प्रायित स्रोवं कुलमें नेद पामें १, गणमें नेद पार्ने २, हिंसा जीवांनी चिंतवं ३, बिड गवेषी ४, ज्योतिष निमित्त जाखें ५, दिढि पारुचिया ६, पमायपारुचिया ७, व्यनमञ्ज पानिविया ए.

ण श्राठे बोखे जीव धर्म नही पामें. घणो हसें तिको धर्म नही पामें १, इंड्री नोइंड्री दमें नही तिको धर्म नही पामें २, मर्ममोसो बोखें तिको धर्म नही पामें ३, श्रावक- रा व्रत पचकाण निर्मखा पाखें नही तिको जीव धर्म नही पामें ४, साधुरा व्रत पचकाण निर्मखा पाखें नही तिको जीव धर्म नही पामें ४, रसरो खाखची हुवें

ए एकलो साधु तथा साधवी रहें तेहना घाठ ध्वगुण जाणना. पहिलें कोधी हुवें ते एकलो रहें १, बीजे ध्वहंकारी हुवें ते एकलो रहें २, तीजे कपटी हुवें ते एकलो रहें २, चोथे लोजी हुवें ते एकलो रहें ४, पांचमे पापमें रक्त हुवें ते एकलो रहें ४, बेठ कतुहली हुवें ते एकलो रहें ६, सातमे धूर्त हुवें ते एकलो रहें ७, ध्याउमे माठे ध्याचारनो धणी हुवें ते एकलो रहें ए.

तिको जीव धर्म नही पामें ६, क्रोधी हुवें तिको जीव धर्म नही पामें ७, जूठा बोट्डो

हवें तिको जीव धर्म नही पामें ए.

大学·米里米·米里米·米里米·米里米·米里米

\*\*\*

श्राचारनो धणी हुवें ते एकलो रहें ए. श्राच गुणारो धणी हुवें तिको साधु एकलो रहें. पहिले संयमने विषे दृढ रहें ते एकलो रहें १, बीजे घणा सूत्ररो जाण हुवें तिको एकलो रहें २, जघन्य तो दश

पूर्व प्रणीयो हुवें जल्रष्टा चवंदे पूर्व प्रणीयो हुवें तिको एकलो रहें तीजे ग्यानरो विनय करें तिको रहें ३, चोथे च्यार् ग्यानरो धणी हुवें तिको एकलो रहें ४, पांचमे बलवंत हुवें तिको एकलो रहें ५, बढें कलेशरहित हुवें ते तिको एकलो रहें ६, सा-तमें संतोषी हुवें तिको एकलो रहें ७, ब्याउमे धैर्यवंत हुवें तिको एकलो रहें छ. १ए u आठ ग्यान्याचाररा नेद. श्रवसर देखीने जाएं १, विनयसहित जाएं २, जाणावण-वालाने घणो सन्मान देवें ३, जणावणवालाने गोपवे निह ४, जणीया पर्वे तप वहें ४, सूत्र नणें ६, द्यर्थ नणें ७, सूत्र तथा दोनुंही विनयसहित नणें ए. १० छाठ दर्शनाचाररा नेद. जिनवाणी जपरे राङ्का नही खाणे १, खन्रा धर्मरी वांग (安永安本本本本本本 न करें २, फलपते संदेह नही आणें ३, अनेरारो मत देखीने मुरकावे नही ४, गु-णवंतरा गुण दीपावें ४, धर्मश्रकी मिगताने श्रिर करें ६, सर्व जीवने हितकारी हुवें 9, सिद्धांतरी प्रक्तिकें प्रपावना करें ए. U चारित्र श्राचारना श्राज जेद. पांच तो सुमित श्रने तीन गुप्ति U, त्याठ सूक्ष ते कहें हें. खेहसूका १, फूलसूक्ष २, पाणीसूक्ष ३, कीमीना **इं**मा

४, फूलणसूक्ष ४, बीजसूक्ष ६, धूंहरीसूक्ष ७, गलोश्र प्रमुखना ईमा सूक्ष ७. u आठ वनस्पति जपजाववानी लाण हैं. अग्गबीया १, मूखंबीया २, खंधबीया २, पो-स्वीया <sup>ध</sup>, बीयरुहा <sup>ध</sup>, संमूबिया ६, तणख्या ७, बणस्सं इकाञ्या ७. U आठ त्रसजीव जपजणरी लाणा. अंमया इंमायकी जपजें ते पंली १, कोथछीसुं ज-पजें ते हाथीया प्रमुख २, जराज्या ते जरसुं जपजें ते गज प्रमुख २, रसजा ते र-ससुं जपजें ते चित्रत रसना जीव ४, संस्वेदजा ते परसेवासुं नीपजें जुं मांकुण प्र-मुल ५, संमूर्जिमा त समूर्जिम छापुण्यी सरद गरमीसुं उपजें ६, उज्ञिया. धरती फोमीने जपजें ते पतंगादिक 9 जववाष्ट्रया ते नारकीना जीव कुंनीमें जपजें देवता शय्याने विषे जपजें ए.

ण त्यांते प्रकारे पाप करें ते त्यर्थदंनमें जाणवा ते कहें तें. त्यातमा त्यर्थे पाप करें १, न्याति गोतीरे त्यर्थे पाप करें २, घर हाटने त्यर्थे पाप करें २, कुटुंब परिवारने त्यर्थे पाप करें ४, मंत्रादिक साधवारे त्यर्थे पाप करें ४, जूतने त्यर्थे पाप करें ६, जदारे व्यर्थे पाप करें ६, जदारे व्यर्थे पाप करें ६, नागरी पूजा त्यर्थे पाप करें ए.

本学·李本金米

ए आठ अनंता. अन्वयामंता १, सिष्ठअनंता १, वनस्पतिरा जीव अनंता ३, जब 李荣 जीव यानंता ४, पिनवाइ जीव यानंता परित्रमण संसारमांही करें याने यानादि मि थ्यात्वी पिए। संसारं जव जीव घणा हैं ४, कालक्ष्वयं खनंतो हैं ५, पुद्रसक्य खन 不安全的子子的子子会会不会的 नंता हैं ६, केवलङ्गानरा पर्यायवा छानंता हैं ७, केवलदर्शनना पर्यावा छानंता हैं. २९ u खात छांघा जाणवा. जन्मछांघ १, जराछांघ २, रात्रिछांघ २, दिनछांघ ४, क्रोघछां-ध ५, मानखंध ६, मायाखंध ७, खोजखंध <sup>६</sup>०. ए आठारे विषे उद्यमरो करवो ते जलो हैं. आगला पापकर्म खपावानें अर्थे उद्यम करें १, नवा पापकर्म नही जपार्जें एहवो जद्यम करें २, त्यागलो सूत्र प्रणीयो तेह-ने चिताखारो जद्यम करें ३, नवा सूत्र प्रणाववाने खर्थ जद्यम करें ४, नवा शिष्य साला करवाने अर्थे जद्यम करें ५, बढे आगला शिष्य साला जणावाने अर्थे ज-द्यम करें ६, चतुर्विध संघनो कलह मेटवाने खर्थे जद्यम करें ७, तप संयमने विषे वीर्य फोरवाने अर्थे जद्यम करें ए. u चोरंज्ञीना आरंज कीयां आठ प्रकाररो पाप खागें. फरसेंज्ञिरा इःखनो संयोग मेली

यो १, फरसेंडीरा सुखनो वियोग मेळीयो २, रसेंडीरा सुखरो वियोग पामीयो ३, रसें-न्त्रीना इः खरो संयोग मेलीयो ६, चक्क इंडीना सुखनो वियोग मेलीयो ७, चक्क इंडी-ना इःखनो संयोग मेखीयो ए. त्र्याठ वोल जाणवा योग है. पहिले नही जाणे नहीं, खादरे नहीं पालें ते लोकि-कमिथ्यात १, बीजे जाणे नही ख्रादरे नही पालें हैं तिके जोगी सन्यासी २, तीजे जाणे नही आदरे हें परं पार्टें नही तिको नदमावधारी ३, चोथे जाणे नहीं आदरे हैं पार्के हैं तिको खापएपें जत्कृष्टपणो मार्ने खगीतार्थ पुरुष ४, पाचमे जाणें है आदरे नही पालें पिण नही तिके अविस्ते समिकती ५, उठे जाणे हें आदरे नही पालें ने तिके श्रेणिक प्रमुख ६, सातमे जाणे ने आदरे ने पालें नहीं तिके पास-चादिक ७, त्याठमे जाणे वें त्यादरें वें पाले तिके जगवंतनी त्याग्या पाले वे ते साध साधवी जाएवा ए. u कोध जेसो फहेर नही १, मान जैसो वैरी नही २, माया जैसो जय नही ३, खोज जैसो इःख नही ४, संतोष जैसो सुख नही ४, पचम्काण जैसो हेतु नही ६, दया

表学来回学来回学来原本来可学来回学来回学来 जैसो श्रमृत नही ७. साच जैसो सरणो नही ७. u श्राठ बोल. ज्ञानरो ज्यम १, ज्ञानरो चोलणा पत्रोलणा २, संवर करी श्रावता करमाने रोकें ६, तपस्या करी जुना कमीने खपावें ४, निरधन जपरी नेह राखे ५, नया दीक्षितने ज्ञान सीखावें ६, मारगीजाइमें क्षेत्रा पड्यो धको मिटावें ७, घरमा बाख रोगी तपसीरी वेयावच करें ए. ण स्थात कर्मारा दृष्टांत. ज्ञानावरणीकर्म तेलीकाबलदके पाटानो दृष्टांत १,दर्शनावरणी कर्म. राजारा पोलीयारो दृष्टांत २, वेदनीकर्म, सहतिलपटी तरवारकी धाराको दृष्टांत ३, मोहनीकर्म. मत्तवाखा गहलारो दृष्टांत ४, ब्याक्यलाकर्म. लोमामें पगरो दृष्टांत ए, नामकर्म. चीतेरारो दृष्टांत ६, गोत्रकर्म कुंजारका जांमाको दृष्टांत ७, श्रांतरायकर्म राजारा जंमारीको दृष्टांत ए. u आठ गहिला. स्त्री पासे बेसें तद गहिलो १, वालकने खेलावतो गहिलो २, बाल-कसुं मित्राइ ते गहिलो ३, जांग दारु पीवे ते गहिलो ४, सिरपाव पहिरे ते गहि-. खो ५, छारिसामांहि मुख जोक्तां गहिखो ६, विवाहमांहि खुगाइ गाखियां गावे ते

赤华 U आठ बोल प्रस्तावीक. पांपसुं मरे सो पैमित १, दया पालें सो दानेश्वरी २, कुलंडिए। ठोंमें सो चतुर ३, धर्म करे सो ग्यानी ४, इंध्नि दमे सो सूरा 'ए, परजपकार करे सो पूरा ६, सत्य वचन बोटों सो सिंह ७, निर्धनसुं नेह करें सो धनवंत ७. 本本 ए आज महा पापी. आपघाती महापापी १. विश्वासघाती महा पापी २, गुणखोपीम-हा पापी ३, गुरूष्ट्रोही महा पापी ४, कुमीसाखी महा पापी ४, खोटी सलाह देवे ते 表次 महा॰ ६, बार १ पच्छाण जांगे त महा॰ ७, हिंसामें वर्म छापें ते महा॰ ७. ४० U बोल त्यां सिलामणाका. जगवंतरो जाप जपीजें १, दया पालीजें १, संस बोलीजें ३, मील पालीजें ४, संतोष रालीजें ४, कमा कीजें ६, परने दगो न 安全安全中央公本中的大学·大学 9, गुरुके खंकुसमें रहीजें 0.

## ॥ श्रथ नवमो बोल लिख्यते ॥

ए नब तत्त्व. जीवतत्त्व १, व्यजीवतत्त्व २, पुएयतत्त्व ३, पापतत्त्व ४, व्याश्रवतत्त्व ४, सं-वरतत्त्व ६, निर्जरातत्त्व ७, वंधतत्त्व ७, मोद्दातत्त्व ए.

ए नव पुन्यजेद. श्रन्नपुने १, पाणपुने २, खेणपुने २, सयणपुने ४, वह्नपुने ५, मन्नपु-ने ६, वचनपुने ७, कायपुने ७, नमस्कारपुने ए.

ए नव ब्रह्मचर्यनी वामी. स्त्री पशु पिंमगसहित थानक न जोगवें, जो जोगवे तो मुंसा बिलाइको दृष्टांत १, स्त्री कथा करें नहीं, करें तो नींबुको दृष्टांत २, स्त्रीके श्रासण जिए पर बेसें नहीं, जो बेसें तो पेठने श्राटा काचरीको दृष्टांत २, स्त्रीना श्रंगोपांग निरखे नहीं, जो निरखें तो सूर्यको दृष्टांत ४, स्त्री पुरुष विषयादि करता होय तिसके जीत ट्राटीने श्रांतरे नहीं रहें, जो रहें तो मोर गाजरो दृष्टांत ५, पूर्वला कामजोग चितारे नहीं, जो चितारे तो बुढीयाकी ठाठको दृष्टांत ६, रस प्रणीत श्राहार करें नहीं, जो करें तो सन्निपात रोगकुं दृष्ट मिसरीको दृष्टांत ६, मर्यादाथी श्रिषको श्राहार कर

大学大学 金子子 大学 大学 大学 大学大学 大学大学

\*\*\*

李华泰学泰

नही, जो करें तो बोदिकोधादीनो दृष्टांत ए, शरीरकी विजूषा करें नही, जो करें तो रांक हाथे रत्नरो दृष्टांत ए. ए नव निधानं. नैसर्प निधान १, पंमक निधान १, पिंगख निधान ३, महापद्म निधान <sup>ध</sup>, सर्वरत्न निधान <sup>ध</sup>, कालनिधान <sup>६</sup>, महाकाल निधान <sup>छ</sup>, शंख निधान <sup>छ</sup>, मा-एवक निधान ए. एक १ निधान नव जोजन चोहो, बारे जोजनरो खांबो, ब्याठ जोजनरो, जंचो वेञ्ने श्राकारे, निधानमांही सर्वही वस्तु पामीजें. ए नव नियाणा. राजगृहीनगरीने विषे श्री महावीरस्वामी समवसर्या; श्रेणिकमहाराजा वंदना करणने मोटे मंनाणे जाईने श्री वीतरागने वांद्या; तिवारे साधु साधवीये श्रे-णिकमहाराजने दीठा, देखीने नियाणा कीया; चेखणाराणीने पिण दीठी, देखीने सा-धु साघवीये नियाणा कीया, तिवारे महावीरस्वामीये साधु साधवीने बोलावीने नव नियाणा प्ररूप्या. नियाणा करणवालाने कडुबा कर्मरा फल लागें तेहना नाम. पहिले पुरुषने देखीने पुरुष नियाणो करें १, बीजे स्त्री पुरुषनो नियाणो करें १, ती-जे पुरुष स्त्रीनो नियाणो करें ३, चोश्रे स्त्री स्त्रीनो नियाणो करें ४, च्यार

\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*

केवली प्ररूपित धर्मरो एक छात्तर पिण सुणवो पांचमो देवतानो नियाणो करे देवता आपरी देवी जोगवें पारकी देवी जोगवें वैकि-य करीने जोगवे इसो नियाणो करे ते जीव जन्मांतरे केवली प्ररूपित पिण सरदहे नही ए पांच नियाणावालो ट्यागे जन्मांतरे छर्लप्रबोधि होवें काल संसार मांहि रुखे ५, उठे देवनवरे विपे आपणी वैकिय देवी जोगवे पिण पारकी नहीं जोगवुं इसो नियाणों करे ते केवजी प्ररूपित धर्म जन्मांतरे सांजले पिण श्चनेरा धर्मरी रुचि होवें जिन धर्मरी रुचि होवें नही ६, सातमें देवताना जबने विषे आपणी देवी जोगवुं पिण पारकी तथा वैकिय नहीं जोगवुं इसे नियाणे वाली 本本色本本色本本 जन्मांतरे धर्म सांजलें सर्दहे ए दर्शण श्रावक होवें पिण पचलाण जदय श्रावे ही 9, खाठमो श्रावकरो नियाणो करे तिको श्रावकरा वत पाखे पचलाण करे चोला पाले पिण संयम उदय खावें नही ए, नवमे साधुपणारो नियाणो करे ते जाणे हुं दिखड़ी तुड़ कुलने विषे जपज़ं जिम संजमनी खंतराय नहीं परे इसो नियाणा वालो संयम निर्मलो पाले पिण जणही जवे मोदा न जावें. नियाणो तो

秦华东回安东回安东京 李东安东安东安东 परजवनी खाशा वांजा वालो करे तिणे पापकारी फल जोगवे. इसा फल नियाणारा सुणीने साधु साधवी आखोइ नंदीने निशस्य थया ए ए नव वासुदेव इए। चोवीसी मांहि यया तेहना नाम. त्रिपृष्ट १, हिपृष्ट १, स्वयंद्ध ३, पुरुषोत्तम ४. पुरुषसेन ४, पुंमरीक ६, दत्त ७, नारायण ७, श्रीक्रश्न ए. ए नव प्रतिवासुदेव. व्यश्वप्रीव १, तारक २, मेरक २, मधुकेंटल ४, निसंज ४, बलजङ ६, प्रह्लाद ७, रावण ७, जरासिंघ ए. ए नव बलदेव नाम. স্থাৰল बलदेव १, बिजय बलदेव २, সাজ্ৰ बलदेव ३, सुप्ताज्ञ ब-खदेव ४, सुनंद बखदेव ४, श्रानंद बखदेव ६, नंदन बखदेव <sup>9</sup>, पद्म बखदेव ७, • राम वलदेव ए. ए आवती चोवीसीने विषे नव वासुदेव नाम. नंदसेन १, नंदमित्र २, दीर्घबाहु ३, महा बाहु ४, ख्राजाबल ४, महाबल ६, बलजन् ७, विपृष्ट ७, त्रिपृष्ट ए. ए नव बलदेव नाम. जय १, विजय २, जड ३, सुप्रज ४, सुदर्शण ४, खाणंद ६, नंदन ७, राम ७, संकर्षण ए.

ए नव प्रतिवासुदेव नाम. वाखक १, खोहजंग २, वज्रजंग २, केशरी ४, ऋपराजित ५, प्रह्लाद ६, जीमसेन ७, महाजीमसेन ७, सुप्रीव ए. ए नव बखदेव पितारा नाम एहीज वासुदेव पिता नाम जाएावा. प्रजापित राजा ?, विजय राजा २, त्रष्ट्राजा २, श्रिमिसिंह राजा ४, सेवंत राजा ५, महासेन राजा ६. नंदसेन राजा ७, दसरथ राजा ७, वसुदेव राजा ए. ए नव वासुदेवरी मातारा नाम. पोमावती १, मृगावती २. पोहावती ३, सिंहाराणी ४, कुंतीराणी ८, खक्कीराणी ६, सेषवती राणी ७, केकेझ राणी ए, देवकी राणी ए. १३ ए नव बखदेवरी मातारा नाम. जडा १, सुजड़ा २, सुप्रजा ३, सुदर्शणा ४, विजया थ, विजयंता ६, जयंता ७, ऋपराजिता ए, कौशव्या बीजो नाम रोहिणी ए. ए नव खोकांतिक देवता तिकेखोकरे खांते रहै तथा संसाररो खांते की वो एक जबरे ष्ट्यांतरे मोक्तमे जासी ते लोकांतिक देवता पांचमे देवलोकमें कृष्णराजीने विषे रिष्ट रत्नमयी ए विमान जाएवा ते ए सागरने खाजले लोकांतिक देवता जाएवा. १५ ए नव किया काञ्याकंत किया १, इतरीएठाण किया २, श्रिजिकंठ किया ३. . श्रण-

जिकंत किया <sup>४</sup>, वज्ज किया <sup>५</sup>, महावज्ज किया ६, सावज्ज किया ७, महासावज्ज किया ७, ऋपसावज्ज किया ए. ए नव रस नाम. वीर रस १, शृंगार रस २, ख्रद्धत रस ३, रुद्ध रस ४, बिजत्स रस थ, जयानक रस ६. हास्य रस ७, करुणा रस **७, शांति रस** ए. ए नवे जीवे तीर्श्वकरगोत्र बांध्यो महावीरजीने वारे. श्रेणिकराजा घणा जीवांने धर्मरो साहाज्य देष्ट्रने तीर्थिकरगोत्र बांध्यो १, सुपार्श्वजी महावीरजीनो काको २, जदाइरा-米米米里米里米米里米米米米米 जा २, पोटल व्यनगार ४, इधजगश्रावक ४, संख्रश्रावक ६, सत्यकीजी ७, रेवती-श्राविका ए, सुलसा श्राविका तीर्थिकरगोत्र बांध्यो ए. ए नव पापना शास्त्र. जत्पातशास्त्र १, निमित्तशास्त्र २, मंत्रशास्त्र ३, मानंगशास्त्र ४, वै-चकशास्त्र ५, कलाशास्त्र ६, त्याजरण शास्त्र ते घर हाट हवेलीना मुहूर्तनो देवो ७, স্থানহাাদ্ধ ঢ, मिथ्यात प्रावचनহাাদ্ধ ए. ए नव कोटी छाशुद्ध छाहार साधु नही छोवें. हणें नही हणावें नही हणताने छानु-मादे नही, हणवो ते सिनत्तरो छिन्त छिन विना करें ते हणवो कहीजें रे, पर्चे न- 张·朱代子·朱代子·朱代子·朱代子·朱代子·朱代子·朱代子·朱代子 ही पचावें नही पचताने खारुमोदे नहीं, ख्रिशिश खारंप्रसुं पचाववों ते पचन कहीं जें ६, मोल खाणी वस्तु लेवें नहीं लेवरावे नहीं लेताने खारुमोदें नहीं ए नव कोटी शुद्ध खाहार खेवें ए. ए नव प्रकारे मनपर्यवग्यानरो क्रपजवो. मनुष्यने १, गर्जजने २, कर्मसूमीने ३, संख्या ता वर्ष द्याक्तलावंतने ४, पर्याप्ताने ४, सम्यग्दृष्टिने ६, संजतीने ७, व्यप्रमादीने ७, ऋष्टिवंतने ए. ए नव विधिपस्त्रिह. धन १, धान्य २, रूपो ३, सोनो ४, खेत्र ४, वास्तु ते ढांकी जमीन ६, द्रपद ७, चोपद ७, कुविधातु ए. ए नव प्रकारनो ऊदारिक संबंधीयो बहाचर्य. मनसुं सेवें नही १, सेवावे नही २, सेव-ताने अनुमोदे नही ३, वचनसुं सेवें नही ४, सेवावें नही १, सेवताने अनुमोदे नही ६, कायासुं सेवं नही ७, सेवावें नही ए, सेवताने त्र्यनुमोदे नही ए. ए नव प्रकारे वैक्रिय संबंधियो ब्रह्मचर्य. नवेश जेद जिदारिकशरीरनी परे जाएवा. ए नव प्रत्यनीक. ख्राचार्यनो प्रत्यनीक १, खपाध्यायनो प्रत्यनीक १, श्रिवीरनो

१२

नीक ३, कुलनो प्रत्यनीक ४, गणनो प्रत्यनीक ४, संघनो प्रत्यनीक ६, ग्यानरो प्र-त्यनीक ७, दर्शणरो प्रत्यनीक ७, चारित्रनो प्रत्यनीक ए. ए नव प्रकारे रोग ऊपजें. घणो खावें तो रोग ऊपजें १, अजीर्ण ऊपरे खावें तो त-था घणो बैठें तो रोग ऊपजें २, घणो सूवें तो रोग ऊपजें ३, घणो जागें तो रोग कपजें ४, घणी वमीनीति वाधा रोके तो रोग कपजें ४, बोटीनीतिनी घणी वाधा रोंके तो रोग ऊपजें ६, घणो चालें तो रोग ऊपजें ७, व्यणगमते व्यासणे वेसें तो रोग ऊपजें 0, बार १ विषय सेवें तो रोग ऊपजें ए. ए नव पदवी मोटी जाणवी. तीर्थिकररी १, चक्रवर्तीरी २, वासुदेवरी ३, वख्रदेवरी ४, के-वलीरी ५, साधुरी ६, श्रावकरी ७, सम्यकदृष्टिरी ७, मंनलीक जोरावर राजारीए. १७ ए नव नारद नाम. जीम १, व्याक्तलो ए<sup>ए</sup> लाल वर्षरो ए० धनुषरी व्यवगाहना १, म-हाजीम नारदरो डाक्तलो ७२ लाल वर्ष ७० धनुपरी ड्यवगाहना २, रूडनारद ६० लाल वर्ष ञाकलो अवगाहना ६० धनुपरी ३, महारूपनारद श्राक्तलो ३० लाल वर्ष व्यवगाहना ५० धनुप ४, कालनारद व्याक्तलो १० लाख वर्ष व्यवगाहना

本来·米里米米多米米多米米多米米多米米米 धनुष ४, महाकालनारद खाकालो ६४ हजार वर्ष ख्यवगाहना २४ धंनुंषरी ६, चतु-मेंबनारद खांके को ३२ हजार वर्ष खबगाहना ४० धनुषरी ७, नयरमुखनारद खा-ज्या १२ हजार वर्ष व्यवगाहना १६ धनुष ए, जनतमुखनारद व्याज्या १००० व-र्षनो द्यवगाहंना ए धनुषरी ए. ए बोल. १ कालरो जाएा, २ बलरो जाएा, ३ खेदरो जाएा, ४ जातरा मातरारी जाएी (संजमस्पी जातरारे वास्ते खाहार परमाण जांणे), ५ खंबसररो जांणे, ६ विनयरो जाण, ७ स्वमतरो जाण, ७ परमतरो जाण, ए अनिमतरो जाण. ए बोल. १ मेरुपर्वतसुं मोटो व्यनयदान, १ स्वयं नूरमणसमुद्रसुं मोटो सत्यवचन, १ मीसरी सुं मीठो धर्म, ध चंडमासुं निर्मखी तपस्या, ए पवनसु वत्तो मन, ६ छात्रिसुं मोटी मोइनी, 9 तखारसुं तीलों कमवो वचन, ए धनसुं मोटों संतोष, ए देवलोकसुं मोटो मोक्तं. ए वोंख. रजपुतने कोध घणो १ क्तत्रीने मान घणुं २, गणिकाने क्रणिक माया घणी ३, बाह्मणने खोज घणो ४, मित्रने राग तथा हेतु घणो ४, शोंक्यने देष घणो ६,

जुवारीने शोक घणो ७, चोरनी माताने चिंता घणी ए, कायरने जय घणो ए. ३१ 李子子子子子子 ए मोद्यतत्त्वना नव नेद. मुत्तिपद बतो वें ते सत्पद प्ररूपणा ?, सिद्धना जीव व्यनंता हें ते इव्य प्रमाण ३, लोकने छासंख्यातमें जागें एक सिद्ध तथा सर्वसिद्ध हैं ते देने त्रप्रमाण ३, फ़ुसणा अधिकी वें घणां सिष्ठआश्री आदि तही अनंता वें ५, सिष्ठ मुक्ति हुंति संसारमांही नावे ते जणी आंतरो नथी ६, सर्व जीवने अनंतमे सिंह हैं ते जाग 9, ज्ञान दर्शन द्वायकजावे हैं जीव पारिणामिकजावें हैं ते 0, श्रहपबहुत्व नपुंसकसिष्ठ श्रोमा ? ते नपुंसक हुंती स्त्रीसिष्ठ श्रसंख्यात गुणा श्र-धिका २, स्त्रीसिद्धसं पुरुषसिद्ध असंख्यात गुणे अधिका ३, ए.

李素

## ॥ श्रथ दशमो बोख खिल्यते ॥

१० दश जीवरा परिणाम. गति परिणाम १, इंद्धिय परिणाम २, कषाय परिणाम ३, खेश्या परिणाम <sup>ध</sup>, जोग परिणाम <sup>थ</sup>, जपयोग परिणाम ६, ग्यान परिणाम ७, द शीण परिणाम ए, चारित्र परिणाम ए, वेद परिणाम १०. दश ख्रजीवरा परिणाम. गतिपरिणाम १, बंधणपरिणाम २, संस्थानपरिणाम ३, वर्ष परिणाम ४, गंध परिणाम ४, रस परिणाम ६, स्पर्श परिणाम ७, ब्यागुरु लघु परि-णाम ए, शब्द परिणाम ए, जेद परिणाम १०. १० दश् बोख नारकीने विषे माठा हुवें. माठो र्शब्द १, माठो रूप २, माठो गंध ३, माठो रस ४, माठो स्पर्श ४, माठी गति ६, माठी बुद्धि ७, माठी जठाएकर्म ए माठो बल ए, माठो वीर्य १०.

宋·宋·朱①宋·朱①宋·朱①宋·朱(w)宋

\*\*\*\*

१० एहीज दश बोल देवताने जला हुवं. १० दश संज्ञा. श्राहारसंज्ञा १, जयसंज्ञा २, मैश्चनसंज्ञा २, पश्चिहसंज्ञा ४, कोधसंज्ञा

学文学来学术学学学学学学 ४, मानसंज्ञा ६, मायासंज्ञा ७, खोजसंज्ञा ७ लघसंज्ञा ७, खोकसंज्ञा १०. 秦 学 帝 李 朱 ② 李 条 १० दश बोख उद्मस्य न जाएँ। याने केवली जाएँ। तथा च्यार ज्ञानरो घणी पिण न जाएं न देंलें छाने केवली तो जाएें पिए देखें पिए। धर्मास्तिकाय १, छाधमीस्ति-काय २, श्राकाशास्तिकाय ३, श्रश्रारी जीव ४, परमाणुपुद्गल ५, वालकाय ६, गंधरा पुद्रल ७, शब्दरा पुद्रल ७, जन्य हैं किंवा अजन्य हैं इसो न जाएें ए. केवली थास्ये किंवा न थास्ये एहवो पिण न जाणे १०. १० दश समाधि. श्रुतें ज्य समाधि १, चक्क इं ज्य समाधि २, घा ऐं जिय समाधि ३, र-सेंजिय समाधि ४, स्पर्शइंजिय समाधि ४, इयी समाधि ६, जावासमाधि ७, एव-णा समाधि ए, श्रायाणजंममत्ता निलेवणा समाधि ए, जन्नारपासवणलेखजखप-张子子心水子心水 रिववणीया समाधि १०. १० ए दशहि श्रसमाधि जाणवी. 光の半米の光 १० दश जातरी नारकीक्षेत्रमें वेदना. छानंतीजूल १, छानंतीतृषा २, छानंतीसीत २, छानंतीला विगरमी ४, छानंतोरोग ७, छानंतीसीग ६, छानंतीजय ७, छानंतीदाघ ७, छानंतीला-

ज ए, श्रमंतो प्रवशपणो १०. दश चित्त समाधि. जिनधर्म करवानी रुची ऊपजें १, जातिस्मरणज्ञानसुं रुचि ऊ पुजें २, मोटो सुपनो देखें जणही जावें मोक जावें तिणासुं रुचि जपजें २, देवदर्शण देखें ४, ख्रविषयान कपजें ४, ख्रविदर्शन कपजें ६, मनपर्यवग्यान कपजें ६, केवलग्यान कपजें ए, केवलदर्शन कपजें ए, केवल मरणे मेरें ते चित्तसमाधि हैं १० दश प्रकारना दान. ट्यानुकंपा दान ते दूबला इःखीयाने दान देवें १, संग्रह दान ते जेलो करीने दान देवे २, जय दान ते मररो मारीयो दान देवे ३, करुणा दान ते सोगरो दान देवे ४, खजा दान ते खाजरो मारीयो दान देवे ४, गाख दान ते अ-हंकाररो मारीयो चारण जाटने दान देवे ६, धर्म दान ते साधु सुपात्रने दान देवे ७, व्यथम दान ते दान दीधांसुं व्यथम उपजे ए, काही दान ते किहां १ रहीने दान देवे ए, कथक दान ते हांती पोली लेवे यने देवे १०. १० दश प्रकाररो मिथ्यात. जीवरो छाजीव जाणे ते मिथ्यात १, छाजीवरो जीव जाणे ते मिथ्यात २, धर्मरो छाधमें जाणे ते मिथ्यात ३, छाधमेरो धर्म जाणे ते मिथ्यात ४,

साधुने व्यसाधु जाणे ते मिथ्यात ५, व्यसाधुने साधु जाणे ते मिथ्यात ६, सूत्रने जत्सूत्र जाणे ते मिथ्यात ७, जत्सूत्रने सूत्र जाणे ते मिथ्यात ए. मार्गने जन्मार्ग जाणे ते मिथ्यात ए, जन्मार्गने मार्ग जाणे ते मिथ्यात १०. 来华华华 १० दश नक्तत्र वहतां सूत्र प्रणे तो ग्यानरी वृद्धीतरी होवे. मृगशिर नक्तत्र १, ब्यार्झ्स नंदात्र २, पुष्य नदात्र २, पूर्वाजाध्यपद नदात्र ४, पूर्वाषाढा नज्ञत्र ४, पूर्वाफाल्युनी नेक्त्र ६, मूल नक्त्र ७, द्यश्लेषा नक्त्र ७, हस्त नक्त्र ए, चित्रा नक्त्र. १० दश सुपना शूलपाणिजलरे मंदिर मांहि तेरमी चोमासी कीथी एक रात्री मांहि घमीरी निष्ठा व्यावी तिए। मध्ये १० सुपना दीठा ते कहे हे. पहिले सुपने पिशानि तथा द्वत तथा राद्यस जोरावर जीवतो दीठो तेहनी चोटी पकमी नीचो नांसीयो तेहनो फेल जगन्नायस्वामी मोहरूपीयो कर्म मूलसे खपामीयो १, बीजे सुपने श्लित पांस कोयल दीठा तेहनो फल श्री जगन्नायस्वामी शुक्क ध्यानरा चार पाया खंगीर् कार करीने त्रिचरीया 2, तीजे सुपने चित्र विचित्र पांखरी कोयल दीठी तेहनो फल श्री जंगन्नाध्यस्वामी स्वसमय परसमयना जाद प्ररूपसी. स्वसमय जिनमत, परसमय

李本本本本本本本本本本本本本本本本本本 पालंममत ३, चोथे सुपने श्वेत गोकुल गायोंरी टोली दीठी तेहनी फल श्री जगन्ना-थ्यस्वामी माधु साधवी श्रावक श्राविका चतुर्विध संघ तीर्थ प्रवर्तावसी ध, पांचमे सुपने दो माला दीठी तेंह्नो फल नाना रतन श्रावकरो धर्म मोटा रतन साधुरो धर्मप्ररूपसी ए, उठे सुपने पद्मसरोवर कमखरे फूले करी **डायो दी**ठो तेहनो फल जीवाजीवादि-कना सर्व पदार्थरो जाव प्ररूपसी ६, सातमे सुपने खवण समुद्ध त्यापरी छुजाये करी तिरीं दीं तेहनो फल संसार समुद्धने तिरसी है, आठमे सुपने 李泰安泰李泰李 दिनकर सूर्य सहस्र किरण देदीप्यमान जगतो दीठो. तेहनो फल निर्वाघात विषे श्यंतरो पर्ने नही, निरावर्ण ते पाहाम पर्वत कूट चूलका श्यामा श्यावें नही, कसिण ते पूरो देखें, पिमपुन्ने ते संपूर्ण देखें पिण जा नही देखें, लोकालोक प्रकाशक केवलग्यान केवलदर्शन जपजसी ए, नवमें सुपनें मनुष्यलोक श्रापरें श्रांको नथी वीटीयो दीठो तेहरो फल जगनायस्वामीरो यश तीनलोकमें व्या पसी ए, दशमें सुपने मेरुगिरे पर्वतरी चूलिका उपर सिंहासन ते उपरे पोर्ते विरा-जीया तेहनो फल श्री जगन्नाथस्वामी दादशांगी सूत्र खाख्यातसी प्ररूपसी खापरो

जसकीर्त्ति आपरें काने सुणसी १०. \*\*\*\*\*\*\* १० दश बोख छानंते काखे हुंमानामा छावसार्पिणीने विषे हुवा तेहना नाम. तीर्थिकरने च्यार मावीत हुवें नहीं ट्यने च्यार मावीत हुवा १, केवलीनी वाणी निष्फली जावें नहीं छने महावीरजीने केवलग्यान ऊपना प्रथम देशना दीधी तिका खाली गई तिर्यंच देवता मिलीया पिएा कोई विरती खालमी लेवावालो मिलीयो नही तिवारे 十 \*\* \* 二次 \*\* ② \*\* \*\* \*\* केवलीनी वाणी निष्फल गई २, केवलीने परिसह हुवें नही खने गोशालें जगवंत महावीरने तेजोलेक्या मेहली तिणसें प्रगवंत महावीरने व महीना तांक्र लोही वाण रह्यों २, चंडमा सूर्य एकण मंनले विमाने बेसी नगवेत, महावीरने वंदना करणने इण रीतसुं इंड वंदना करणने जावें नही छाने ए गया ते छानेरो जाणवो ४, चम-रेंड सुधर्म सामुहो कोपीने नही जावें छाने ए चमरेंड गयो ५, स्त्री तीर्छ प्रवर्त्तावे नहीं छाने मल्लीकुमरी तीर्ध प्रवर्तायों जगणीशमा तीर्थिकर जाणवा ६, वासुदेव संखे संखे मिलें नही त्यने कृष्णवासुदेव द्रीपदीने लेण गया तिवारे किपल वासुदेवने सं-से संसे मिखीया 9, एकण समय १०० जुत्कृष्ट जुगाहणाना धणी सिद्ध नही थावें

★★★<br/>
(本本)<br/>
本本<br/>
(本本)<br/>
一本<br/>
一本<br/> श्रमे श्रमके १०० सिंह श्रमा ७, जुगलीयो मरीने नरके नही जावें श्रमे इए। चोन वीसीमें गयो ए छाउरो ए, संयती बेठा छासंयतीनी पूजा नही छावें छाने जगवंत बेठा श्रकां गोसालानी पूजा श्रइ ए श्रहेरो श्रयो १०. १० चोष्टा खारामध्ये दश बोलनी खासथा. तीर्धकरनी खासता १, गणधररी खासता ६, चवदे पूर्वधारीरी आसता २, केवली प्ररूपित धर्मनी आसता ४, अवधिरयानीरी आ सता ५, ख्रवधिदर्शणरी ख्रासता ६, मनपर्यवग्यानरी ख्रासता ७, केवलग्यानरी ख्रा-सता ए, केवलद्शिणरी व्यासता ए, मोद्दा जावणरी व्यासता १०. १० बोधे ह्यारे दश बोल जला. जलो शब्द १, जलो रूप २, जलो गुंध ३, जलो रस ४, जलो स्पर्श ४, जली बुद्धि ६, जली गति ७, जलो जलापकर्म ए, बलवीर्य ए, 李华本学条 पुरुषाकार पराक्रम १०. १० दश पच्काण. श्रणागए ते श्रागामी कालनो पचकाण करें, श्रष्टकंते काल वरत्यां प्चकाण २, कोन्सिहियं कोटिसहित पचकाण करें २, नियंवंचेव ते निश्चे करी तप करें ४, सागारं ते आगारसहित तप करें ५, आणागारं आगाररहित तप करें ६, प-

RESIN TOWN TOWN THE SAN THE SAN THE SAN

श्रानरोए ते रोगरे कारण दोषण लगावे ४, श्रावर ते आपदा पमीया दोष लगावे. संकिए ते संकारो घाछीयो दोषण छागावे ६, पदोसा ते देवरो मारीयो दोषण छागा-वे ७, सहसागारं ते व्यकस्मात जोगे दोषण खगावे ७, जय ते जयरो घाट्यो दोषण लगावे ए, वीमसा ते शिष्य शाखा राखणने दोष लगावे १०. १० दश प्रकारे आखोवतो धको दोपण खगावे. आकंपिता गुरुने कंपावे तथा पोते कां-पतो कांपतो आखोवे १, अनुमानीता जनमान बांधीने आखोवे २. जं दिठंते दीठो २, श्रालोवे २, उन्नं ते जाने २ श्रालोवे ४, सद्दालखं ते जतावलो २ श्रालोवे ४, सुहमं ते नाहना दोष आखोवे ६, बाहरं ते मोटो दोषण आखीवे ७, बहुजणं ते घणांकने खालावे ए. खवत्तवंते प्रायितारा खंजाणं कने खालावे ए, तस्स वीते

सीनो तप करें ए, खड़ा पचकाण ते पोरसी खर्ड पोरसी तप करें १०.

李华(中华) म्माणकर्म कवंद्ध तप करें 9, निरवसेसं ते सरव तप करें 0, संकेतिकं ते गंउसी मुंदर १० दश प्रकारे दोषण लगावे. दर्प ते कंदर्प विषयनी लीयो दोषण लगावे १, पम्माय ते प्रमादनो मारीयो दोषण खगावे १, ट्याणाजीए ते विना उपयोग दोषण खगावे ३,

श्राप सरीलो प्रायितीयो हुई जिए कने आखोवे १०. १० दश गुणारो धणी होवे जिको आखोवे. जाति संपन्ने, जाति संपन्ने जातिवंत हो इ तिको खालोवे १, कुल संपन्ने कुलवंत होइ तिको खालोवे २, विणय संपन्ने विनय-वंत होवे तिको खालोवे ३, नाण संपन्नं ग्यानवंत होवे तिको खालोवे ४, दंसण संपन्ने दर्शण सम्यक्तवंत होवे तिको ब्याखोवे ५, चारित्त संपन्ने चारित्रवंत तिको श्रालोवे ६, खंती क्तिमावंत होवे तिको श्रालोवे ७, दंती इंडीयांको दमणहार होवे तिको खालावे ए, खमायी मायारहित होवे तिको खालावे ए, खपहाणुतावी खा-खोया पढे पिछतावे नही १०. १० दश प्रकाररो प्रायित खालोवणारिहे. दूषण सेवीया ते गुरा खागे खावीने कहे इ-तनै पश्चातापेहीज दूषण जतरे १, पिनकपणारिहे दूषण खागो होवे तेहनो मिछामि इकमं देवे २, तज्जयारिहे दूषण सेवे तेहनुं गुरु कर्ने आखोवे अने मिहामि इकमं पिण देवे ३, विवगारिहे विगयरो त्याग करे ४, विजसम्मारिहे कायोत्सर्गा करे ५, वेदायरिहे कोइक दिनरी दिका वेदे ६, मुखायरिहे पंच महावत मूखथी उचरे ७,

大学 朱色华 朱色华 朱代 光学术学 तवायरिहें तपस्या करे ए, व्यापवद्यारिहे तपस्या करीने फेर पंच महावत उचरे ए, पारचारिहे गृहस्थि दिंग करी मांमले बाहिर नीकलीने तपस्या करी फेर दिक्का लेइने मांनले बेसे १०. १० त्रस दशक. त्रसनाम १, बाहादरनाम २, पर्याप्तनाम ३, प्रत्येकनाम ४, श्रिरनाम ४, शुननाम ६, सौजाग्यनाम ७, सुश्वरनाम ७, ख्यादीयनाम ७, जसोकीत्तिनाम. यावर दशक. सूक्तनाम १, यावरनाम २, खपर्यासनाम २, सावारणनाम ४, ख्रिथर 李 नाम ५, ज्ञनगञ्रसुननाम ६, दोनागनाम ७, ज्ञःस्वरनाम ७, श्रानादीयनाम ए, श्र यशोकीर्त्ति नाम १०. 未次本 १० दश महावीरजीना श्रावक. श्रानंद १, कामदेव २, चुल्लणीपिया ६, सुरादेव ४, चुल्ल-李华泰华各 शतक ५, कुंमकोखीयो ६, सकमाखपुत्र ७, महाशतक ७, नंदिनीपिया ७, साखिह-杰 पिया १०. १० दश विकाणे दश वाना पाइजें. कोध घणो दोय स्त्रीना प्रत्तिरने गृह मध्ये १, मान 泰泰 घणो रजपूतरे २, माया घणी जेलधारीने ३, कपट घणो वेख्याने ४, खोज घणो बा-83

ह्मणने ५, शोच घणो जुवारीने ६, सोग घणो चोररी मातारे ७, साच घणो सम्यग्र दृष्टिने ए निद्धा घणी धर्मथानके ए, संतोष घणो साधुने १०. १० दश प्रकारे मुंन. श्रीत्रें क्षिय मुंन १, चक्करिंदीय मुंन २, घाणेंद्रि मुंन ३, रसइंद्री मुंन ध, स्पर्शइंद्री सुंम ५, कोव सुंम ६, मान सुंम ७, माया सुंम ७, खोज सुंम ए, शिर मुंम १०. १० दश बल. श्रोत्रेंद्रियबल १, चक्करिंद्रीयबल २, घाणेंद्रियबल २, रसेंद्रिबल ४, स्पर्शदंदी, बल ५, नाण बल ६, दर्शण बल ७, चारित्र बल ७, तप बल ७, वीर्य बल ६०. १० दश चीज प्रधान. त्यनुत्तर नाणे १, त्यनुत्तर दंसणे २, त्यनुत्तर, चास्ति २, त्यनुत्तर, तवे ४, अनुत्तर वीरीये ४, अनुत्तर अगुरुद्धहुए ६, अनुत्तरा खंतीए ७, अनुत्तरा दं-त्तीए ए, ब्यनुत्तरे सचे ए, ब्यनुत्तरे सुहुमे १०. १० दश प्रकारे बुद्धि वथे. दीर्घ प्राजलों निर्मल बुद्धीया तेहनी बुद्धि वधे १, वीनीत पुरुषरी बुद्धि बधें २, जद्यमवंतरी बुद्धि वधें ३, इंडियनो-इंडियरा मानना दमण-हाररी बुद्धि वधें ४, सूत्र जपरा खंतरंग राग हुवे तहनी बुद्धि वधें ५, सखरा कार्य-

मांहि सावधान थावे तेहनी बुद्धि वधे ६, शंकारिहत हुवे तेहनी बुद्धि वधे ७, गुरुनी प्रशंसा करे तेहनी बुद्धि वधे ७, बालजावथी मुकावे तेहनी बुद्धि वधे ए, धर्मने जपरे दिढ रहे तेहनी बुद्धि वधे ए. १० दश सुल. घरमे ऋदि १, देह नीरोग २, दीर्घ छाजलो ३, काम घणो ४, जोगसुल ५, श्रब्प तृसना ६, संतोष घणो ७, श्रनुत्तर विमानना सुल ए, साधुना सुल ए, सिद्धना सुख १०. १० कल्पवृद्ध दश वाना युगलीयांने देवें. छाठ जूमीया रतनम् घर देवें १, छामि देदी-प्यमान देवें २, स्त्री पुरुषरा आजरण सर्व रत्नना जमीत देवें २, एकसो आठ जा-तिना पकान चोशठ जातिरी तरकारी मनोगम एहवा जोजन देवें ४, सर्व रतना जमीया जाजन देवें ५, बहु मोला वस्त्र देवें ६, शरीरना बलवीर्थ कान्ति ज्योति वर्धे एहवो मद देवें ७, च्यार जातिरा वाजित्र देवें; तंतवाजित्रत्र ते तांतसें वाजें, वीणा प्र-मुल वितंत वाजित्र ते विना तांत वाजें, ढोख मार्दख प्रमुल घणवायंत्र ते कांसीया ताल प्रमुख, जुबिखायंत्र ते पोलावट वाजें पपड शारंगी वांसली प्रमुख ए, सुगंव

फूल देवें ए, देदीप्यमान दीवांरी ज्योति देवें १०. १० देश कारणे दिद्या क्षेवें. आपरे जांदे दिद्या क्षेवें १, रीसने वसे दिद्या क्षेवें २, बुढापे दिदा होवें ३, रोग ऊपने दिका होवें खनाथीरी परे ४, जातिसारणग्यान ऊपने दिदा क्षेवें मगापुत्रनी परे ५, तृष्णा वाह्यो नीकक्षें कपिलरिषीनी परे ६, गुरुजपदे-शयी नीकलें खादीश्वरजीना एँ वें बेटानी परे ७, देवता कहें खारो खानुलो थो-मो वें तिवारे दिका खेवें ए, मोहरा घाखीयो दिका खेवें चृगुपुरोहितनीपरे ए, कोइ माने नही तिवारे दिक्ता छोवें पोटीखा तथा तेतखीपुत्र प्रधाननी परे १०. दश प्रकाररी रुचि. निसर्गा रुचि पेहिला मिथ्यात्वी हैं पिण कोमल परिणामी हैं स-रख स्वराविक हैं शुप्त पावना प्रावतां जातिस्मरणग्यान क्रपजें पहें ख्राफेड् सम्य-क्त पामें तिका निसर्गरुचि १, जपदेश रुचि प्रथम जाएपएो नही पढें गुरुने जप-देशरे सुणवें करी जाणें ते जपदेशरुचि २, त्याग्यारुचि गुरुनी त्याग्या त्याराधतां सग देष पातला पर्ने सिह जें सम्यक्त पामें ३, सूत्ररुचि सूत्र छार्थ जाएतां सम्यक्त पामें ४, बीजरुचि एक पदसुं श्वनेक पद श्वावें जिम पाणीरो बिंड तेलमांहे पमीयो

नाना रंग दिसे तिम एक पदसुं यानेक पद यावें ते बीजहिन ए, याजिगमहिन इ-ग्यारे छंग बार जपांगनो बिचार करें ६, विस्ताररुचि एक पदना छानेक विस्तार करें सर्व पदार्थनी सातना करीने विस्तार करतो सम्यक्त पामें ७, संद्येपरुचि मिथ्याती न-ही खने जिनवचन पिएा विशेष जाएों नहीं ते संदेपरुचि ए, कियारुचि नवमी कि-या करतुत करतां सम्यक्त पामें ए, धर्मरुचि षट प्रव्यना जाव जाएतो जिनवचन सर्दहतो सम्यक्त पामें ते धर्मरुचि १०. १० दश विधि समाचारी. श्रावसही स्थानकसें नीकलतां कहें १, निसहिया थानकमांही पेठतां कहें २, आपुन्नणा ते एकवारही पूजने कार्य करें ३, पिनपुन्नणा वारंवार पू-बीने कार्य करें <sup>ध</sup>, बंदना श्रागन्या लेइने कार्य करें <sup>ध</sup>, इहाकारी ते गुरुनी इहाये कार्य करें ६, मिथ्याकारी तेन वधु कार्य कीधे मिल्लामि इकम देवें ७, तहकारी ते गुरुवचन सुणीने तहित्त करें 🛭 , त्याञ्चढाणं ते गुरुनी सेवा पूजा करें ए, जवसंपया ते गुरुने समीपे रहें १० १० दश प्रकाररा स्थिवर. श्रामिथवर १, नगरिथवर २, देशिथवर ३, कुलिथिवर ४,

थिवरं ५, गणिथिवर ६, संधिथिवर ७, वयिथिवर ७, सूत्रिथिवर ७, प्रवृज्यािथिवर. [३९ १० दश धर्म. ग्रामधर्म १, नगरधर्म २, देशधर्म २, खासंकीयधर्म ४, पालंमधर्म ५, कुलंध-में ६, गणधर्म ७, ग्यानधर्म ७, दंसणधर्म ७, चारित्रधर्म १०. १० दश जणांसुं वाद नही कीजें. राजासें १, धनवंतसें ३, बलवंतसें ३, पक्तपूराने धणी-सें ४, कोधीसें ४, नीचसें ६, तपस्वीसें, कूनाबोलासें, मातापितासें, गुरुसुरुणीसें. ३ए १० दश प्रकाररा शस्त्र. श्रमिरो शस्त्र १, पाणीरो शस्त्र २, बुणरो शस्त्र ३, खटाईरो शस्त्र ४, चीगटरो शस्त्रं ४, खाररो शस्त्र ६, मनरो शस्त्र ७, वचनरो शस्त्र **ए, कायारो** शस्त्र ए, श्रविरतिरो शस्त्र १०, दश प्रकाररा जीव. एकेंड्री पढम समय १, छापढम समय २, बेइंड्रि पढम समय २, श्चपढम समय ४, तेरिंड्यी पढम समय ४, श्चपढम समय ६, चौरिंड्यी पढम समय ७, र्थ्यपदम समय ७, पेंचें जि पढम समय ७, अपढम समय १०. ं १० दश कारणे मोदा जावें. त्रसकायसें मोदा १, मनुष्यरी गतिसें मोदा २, सन्नीपंचेंद्रीसें मोद्दा र, यथाल्यात संयम द्वायक सम्यक्तसं मोद्दा ४, प्रव्यसिष्टियंसं मोद्दा ४, व्य-

宋·朱田宋·朱田宋·朱田宋·朱田宋·朱田宋·朱田宋·朱田宋·朱田宋·朱田宗

नाहारिक सुं मोद्द ६, केवल ग्यानसें मोद्द ७, केवल दर्श सुं मोद्द ७, दायक सम्यक्तसें मोदा ए, केवल मरणसें मोदा १०. १० दश प्रकारे आगे जबने विषे सातावेदनीय शुज कर्म बांधे. सम्यक्त शुद्ध मन ते साता ग्रुप कर्म बांधे १, मन वचन कायाना जोग रंधे तो सातावेदनीय ग्रुपकर्म बांधे २, इंडिय नोइंडिय दमें तो सातावेदनीय शुजकर्म बांधे २, दामा करें तो सा-तावेदनीय शुजकर्म बांधे ४, धर्मध्यान शुक्कध्यान ध्यावें तो सातावेदनीय शुजकर्म बां धे ५, वेयावच करें तो सातावेदनीय शुज्जकर्म बांधे ६, वेरागजाव आणें तो सातावे-दनीय शुजकर्म बांधे ७, दान शीख तप जावना जावें तो सातावेदनीय शुजकर्म बां-धे ए, सिद्धांत सांजले तो सातावेदनीय शुजकर्म बांधे ए, समजाव प्रवर्ते तो साता वेदनीय शुजकर्म बांधे १०. १० दंश प्रकारे कट्याणकारी कर्म बांधें. तपस्या करीने नियाणो न करे तो कट्याणरो कारण हुवे तामली तापसनी परे १, समकित सहित करणी करे तो कव्याणरो का-

रण हुवे श्रेणिकराजानी परें २, योग तीने थिर राखे तो कब्याणरो कारण हुवे रह-

नेमि राजीमतीरी परे ३, कमा करतां कब्याणरो कारण हुवे गजसुकुमाखनी परें ४, पंचेंद्रि वश करे तो कब्याणरो कारण हुवे धना व्यणगारनी परें ४, पोतानो गंदो रोके तो कब्याणरो कारण हुवे सेखक राजधिनी परें ६, मायारहित संयम पाखे तो कब्याणरो कारण हुवे गौतमस्वामीनी पेरं 9, कोइ हेवी धर्मसुं परिणाम िनगावे परं मिगें नहीं तो कब्याणरो कारण हुवे. केहनी पेरं ट्यरणक श्रावकनी पेरं 0, सूत्ररी प्रजावना करे तो कब्याणरो कारण हुवे केशीकुमाररी परें ए, व्रत पचलाण चोलो पाले तो कब्याणरो कारण हुवे. केहनी परं वरनागनतुवानी परं १०. १० दश बोल पामणा दोहिला है. मनुष्यरो जन्म पामणो इर्लज १, व्यार्थ दोत्र पाम-णो इर्बन २, पंचें ड्यिपणो पामणो इर्बन ३, जत्तम कुल पामणो इर्बन ४, पं-चेंजिय निर्मली पामणी इर्लेज ५, नीरोग शरीर पामणो इर्लेज ६, सतगुरुनी जो-गवाइ पामणी डर्खन ७, सिद्धांतनो सुणवो पामणो डर्खन ७, सरघापरतीति पावणी इर्द्धन ए, तप संयम जपरं बल वीर्यनों फोखो पामणो इर्लिन १०. पुन्यवंत प्राणी होवे तिको दश बोल पामे. घणो परिग्रह होवे तिहां छपजे १, घणा

本条本 मित्र होवे तिहां जपजे २, सासु ससरा साजन घणा होवे तिहां जपजे २, जंचगोत्र होंवे तिहां जपजे ४, गोरो वर्ण होंवे तिहां जपजे ४, नीरोग शरीर होंवे तिहा ज-पजे ६, निर्मल बुद्धि होवे तिहां जपजे ७, विनीत होवे तिहां जपजे ए, बलवंत 茶茶茶茶 होवे ए, यशवंत होवे १०. १० दश प्रकाररी व्यापपूर्वी. नामाणुपूर्वी १, स्थापनाणुपूर्वी २, द्वव्याणुपूर्वी ३, दोत्रानुपूर्वी ४, कालानुपूर्वी ४, जवाणुपूर्वी ६, जिकत्तणाणुपूर्वी ७, णाणाणुपूर्वी ७, संगणाणु \*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\* पूर्वी ए, समवायाणपूर्वी १०. साधुनी सेवा कीषां दश बोखरी प्राप्ति होवे. सूत्र सांजुखे १, ग्यान खावे २, विनय श्रावें ३, पचलाण श्रावें ४, संयम श्रावें ४, नवा कर्म श्रावता रोके ६, तपस्या करे 9, बोदा कर्म पूर्व बांध्या ते करे ए, पापिकियारिहत हुवे ए, सिद्धिगृति पामे १०. ४ए १० गोतमस्वामी पूर्जीयो हे जगवान तुमे कह्यो खवणसमुद्ध तिरतां सोहिखो परं संसार समुद्र तिरतां दोहिलो ते किसे कारण, हे गोतम सांजल लवणसमुद्रमें पाणी घणो संसाररूप समुद्रमें मोहरूप पाणी घणों ने ते नाणी तीर सके नही ?, खबण समुद्रमें

छाठ कर्मरूपीया मोटा पर्वत है ६, खबण समुद्रमें नान्हा मोटा कखशा है संसार समुद्रमें घाठारह पापथानक तथा १५० कर्म प्रकृतिरूपीया कलाशा हे ते जाए। तिर सकें नही 9, खवण समुद्रमें मठ कठ नक श्राह मगर घणा है तिम संसार समुद्रमें क्किटंब पंरिवार रूपीया मंज कज घणा ते जाणी तिर सके नही ए, खबण समुद्रमें सीप संख संघोटीया घणा है तिम संसार समुख्यें कुगुरु कुदेव कुशास्त्ररूपीया सीप संख संघोटीया घणा हैं ते जणी तीर शकें नहीं ए, खबणसमुद्रमें उप प्रवाह जारी हैं तिम संसार समुद्रमें कर्म कषायनो कदाग्रह जारी हैं ते जाएी तिर शकें नही १०. तिण कारणे खवणसमुद्र तिरतां दोहिखो कदाचित देवनारे साहाय्य करी तथा रत्ना

पाणीरा कह्वोद्ध घणा है, संसाररूप समुद्रमें खेहरूपीया कह्वोद्ध घणा २, द्ववण समुद्रमें वायरो घणो है तं प्रणी तिर सकें नही ३, द्ववण समुद्धमें कादो घणो है संसार समुद्रमें रागद्देषरूपीयो कादो

घणा है ४, खबण समुद्रमें किरामा घणा है संसार समुद्रमें पाखंन मतरूप किरामा घणा है ते जणी तिर सके नही ४, खबण समुद्रमें मोटा पर्वत है संसार समुद्रमें

بردی بردی

\*\*·\*\*\*

\*\*\*

京本帝(B本帝(B本帝) रे चांनणे करी तिरे तिम संसार समुद्ध पिण सद्धरुप्तें सहार्थें करीने तथा सिद्धांतरी। वाणी सुणेंबें करीने तथा ग्यान दर्शेण चारित्ररूपीये चांनेणे करीने तिरे हें. १० दश प्रकाररी लोकरी स्थिति हैं. जीव क्रपजें तथा खें एहीज लोकरी मर्याद १, सदा काल जीव पापकर्म बांधे ते लोकमें बांघे ते लोकनी मर्याद भ, जीव सदा का-ख मोहने वसें वर्तें हैं ते खोकनी मर्याद ३, तीनेही कानें जीवरो अजीव नही हुवें ते खोकरी मर्याद ध, त्रस जीवरो यावर नही हुवें ख्यने यावर जीवरा त्रस जीव हुवें ते खोकरी मर्याद ५, खोकनो छाखोक नहीं हुवें छाने छाखोकनो खोक न हुवें ६, खोकमें छाखोक नहीं छावें छाने छावें छाने छाखोकमें खोक नहीं छावे ते खोकनी मर्यादा 本本本本本本本本 9, जिहां खोक तिहां जीवने खोकनी मर्याद 0, जीवखोकने विषे गति खागित करें ते लोकनी मर्याद ए, जीवनो खने पुद्रलनो परिणाम लोकने खंते जाय ने ब्रुलो पमें घ्यलोकमें जाय न शकें ते लोकनी मर्याद १०. १० दश प्रकारना शब्द हैं. कंकण ते घंटानों १, टंकण ते फाखररो २, द्वलो ते किमाम्-नो २, जिन्न ते बचबचीया दहीनो ४, जज्जर ते खोखरा ढोखरो ५, दीर्घ खांबो ते || गाजवानो ६, रहसें नान्हों शब्द ते वीणारो ७, व्यरुसे ते शंखनों शब्द ७, कोमख ते सक्स कंठसें गावें ए, खंखिणे ते घूघरांरो फमकार घोमानो हणहणाटो १०. ५१ दश प्रकारे कोध ऊपजें. मनोगम वस्तु लेवणी हैं ते जाणी कोध ऊपजें १, स्थम-नोगमवस्त ले लीधी ते जणी कोध ऊपजें २, छमनोगम वस्तु लेवती विरियां को-घ ऊपजें ३, मनोगम श्रमनोगम माहरी खे खीबी ते जाणी क्रोंघ ऊपजें ४, मनो-गम वस्त हिवणां लेवें हें ते जणी कोष जपजें ५, व्यमनोगम वस्तु हिवणां लेवें हें ते जाए। क्रोध कापजें ६, मनोगम व्यमनोगम वस्तु हिवणां छोवें हे ते जाए। क्रो-ध जपजें 9, मनोगम वस्तु चोरसी ते जणी क्रोध जपजें 0, श्रमनोगम वस्तु चो-रसी ते जाणी क्रोध॰ ए, मनोगम व्यमनोगम वस्तु चोरसी ते जाणी क्रोध॰ १०. ५१ १० दश प्रकारे मान ऊपजें. जातिमान १, कुछरो मान १, बछरो मान ३, रूपरो मान ४, तपरो मान ४, ढांजरो मान ६, सूत्ररो मान ७, ठकुराइरो मान ७, देवता पासे ट्यावें तेइनो मान ए, लक्षीरो मान १०. दश कारणे कलेश ऊपजें. थानकरे निमित्ते कलेश ऊपजें १, उपगरणरे निमित्ते

平表学 表示 李本宗宗子宗宗子宗宗子宗宗 कलेश जपनें २, शरीर निमित्ते कलेश जपनें २, जात पाणी निमत्तें कलेश जप-जें ४, ग्यानरे यथीं कलेश ऊपजें ५, दर्शणरे यथीं कलेश ऊपजें ६, चारित्रने थर्थ कलेश ऊपनें ७, मननो कलेश ऊपनें ए, वचननो कलेश ऊपनें ए, यानो कलेश ऊपजें १०. १० दश बोख संयमने घातकारी हुवें. उदगमणा उवग्वाए १, उपायणा उवग्वाए १, एष-णाजवग्घाए ३, परिचारणजवग्घाए ४, परिहरणजवग्घाए ४, णाणजवग्घाए ६, द-र्शणाखनग्घाए ७. चारित्ताखनग्घाए ए, व्यप्रचित्ताखनग्घाए ए, संरक्षणाखनग्घाए. १० दश गुणे करीने श्रावक जाणीजें. नवतत्त्व पदार्थ निर्मखां जाणे. १, धर्म करतां दे वतांरो साहाख नही वां हे १, धर्म मुं देवदाणव को मानुंको भी चलांवं तो चालें नही २, जगवंतना वचन ऊपर शङ्का कंखा नही आणे ४, जगवंतना वचन एहीज अर्थ एहीज परमार्थ एहीज श्रात्मानो सज्जन, शेप संसारना कार्य सर्व श्रानर्थ जाणें ए, ,हामने हामानी मज्जा जीवने जीवना प्रदेश ते धर्ममें रंगा है ६, मास १ मध्ये ह पोषघोपवास करें 9, जिम फिटकर रत्न निर्मखो तिम ज्यांरो हीयो निर्मखो है तथा १४

本学·李子安本来

未来完全未完全

घरना बारणा उघामा हैं साधु साधवीरी सदाही दानरी जावना जावें हैं ए, श्रावक जी श्वप्रतीतिकारीये घरमांही न जावें राजाना श्वंतेवरमांही न जावें श्वने जावें तो श्राप्रतीति उत्पर्जे ए, श्रावकजी श्रमणनिर्धेथने खन्न पाणी वस्रपात्र पीठ फल्रग स-द्या संस्तारक जेषवजेषध सूफतो निर्दोप प्रतिखाजतां विचेरं १०. पंचें जिय जीवनो वध करें तो दश प्रकारनो पाप खागें. स्पर्श इं जियना सुखनो वि-योग कीयो १, इःखनो संयोग मेलीयो २, रसें धीयना मुखनो वियोग कीयो ३, इ-खनो संयोग मेलीयो ४, घाणेंड्यीयना सुखनो वियोग कीयो ५, इःखनो संयोग मे-र्खीयो ६, चक्कइं डियना सुलनो वियोग कीयो ७, इःलनो मंयोग मेलीयो ७, श्रो-तेंडियना सुलनो वियोग कीयो ए, इःलनो संयोग मेलीयो १०. १० दश बोटों एकांत इलम काल जाणीजें. श्रकालें वरसें १, कार्ले नही वरसें योनो वरसें २, श्रासाधरी पूजा हुवें २, साधरी पूजा नही हुवें ४, मोटे ठिकाणें मिध्यात हुवें ५, वमारो विनय न करें ६, अणागमता शब्द ७, रूप ए, गंध ए, रसस्पर्श. ५ए १० दश बोटों सुलमकाल जाणीजें. काटों वरसें श्रका ें नही वरसें १, साधुरी पूजा हुवें

\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*

२, स्राप्ताधुरी पूजा नही हुवें ३, मोटे ठिकाणे सम्यक्त घणी हुवें ४, वमांरो विनय \*\*\* घणो करें ५, मनगमतो शब्द ६, मनगमतो रूप ७, मनगमतो गंध ७, मनगमतो रस ए. मनगमतो फरस १०. \*\*\*\*\*\* दश विध यति धर्म. खंती क्रमा १, मदद मान त्याग २, श्राङ्काव सरखता कपटाइका त्याग, मुर्ता निर्लोज लोजका त्याग ४, तव तपस्या करे ४, संजमे संयम पाले ६. सर्च सत्य बोले ७, सोयं जनय सोच्य ७, श्राकिंचण द्रव्यका त्याग ए, बर्जच ब्रह्म-\* चर्य पाखे १०. १० देश कब्प. श्रेचेल कब्प १, जदेशिक कब्प २, सिफातर कब्प २, राजपिंम कब्प ध, कृतकर्म कब्प ४, चतुर्याम कब्प ६, जेष्ट कब्प ७, मासकब्प ७, पिकमणाकब्प ए, पद्धोसणा कब्प १०. दश बोल जदमस्य जाणे न देखे. धर्मास्तिकाय १, श्रधर्मास्तिकाय १, श्राकासास्ति-काय ३, शब्द ४, गंध ५, वायरो ६, श्रशरीरी जीव ७, परमाणु पुद्रख ७, ए कर्मक्य करसी के नहि ए, ए मोदा जासि के नही १०.

दश प्राण. श्रोतेंडि प्राण १, वक्त इंडी प्राण १, बार्णेदि प्राण ३, रसेंद्रि प्राण ४, फर्सें प्रिण ४, मनबल प्राण ६, वचनबल प्राण ७, कायबल प्राण ७, श्वासीश्वास प्राण ए. श्रान्ने प्राण १०. १० दश वेयावचे. श्रायरिय वेयावचे १, जवकाय वेयावचे २, श्रिवर वेयावचे २, तवसी वेयावचे ४, गिलाण वेयावचे ४, नव दिक्तीत वेयावच ६, गण वेयावच ७, संघ वेया-वच ए, साधर्मिनी वेयावच १०. १० दश गुरु प्रक्ति. गुरु श्राया उपो श्राये १, श्रासण श्रामंत्रे २, श्रासण बिजाय देवे र, कीर्ति गुणत्राम करे ४, हाथ जोमंके लमा रहे ४, सत्कार दे ६, सन्मान दे ५, खावतांकुं खेेण जाय U, रहियांरी सेवा करे ए, जाय तो पोचावण जाय १०. १० दश बोल करि जंबूहीप वरणव्योः लंमा कहिता जंबूहीपना १ए० लंम वा पत्ते सा-रिखा १, जोजन २ प्रमाण खंमवा कीजे तो जंबूहीपना ७ए० कोमि ए६ खाख ए४ हजार १५० जोजन १॥ गांज १५॥ धनुष फांफेरा खंमवा होय १ वासा जंबुद्धीपमें ए तथा १० हे ३ पद्मय-जंबुद्दीपमें १६ए पर्वत सासवता हे <sup>ध</sup> कूट जंबुद्दीपमें ४६७

不是 本文本文章本文章本文本

大学·米尔·米尔·米尔·米尔·米尔·米尔·米尔·米尔·米尔·米尔·米尔 तथा ५१५ कूट ने ५, तिर्थ जंबुद्दीपमें १०२ ने ६, सेढीए जंबुद्दीपमें १३६ श्रेणी ने प विजय जंबुद्दीपमें ३४ वे ७, ज्ह जंबुद्दीपमें १६ जह सासता वे ए, सिखला जंबुद्दी-老少米子子子子子子子子 पमें १४ लाख ४६ हजार नदी है १०. दश बोख प्रस्ताविक. एक बालके खाप्रजाग मांहि खाकास्तिकायकी खासंस्याती श्रेणि है १, एकेक श्रेणि मांहि असंख्याती प्रतर २, एकेक प्रतर मांहि असंख्याता गोला ३, एकेक गोलामांही असंख्याता शरीर ४, एकेक शरीर मांहि अनंता जीव थ, एकेक जीवमांहि असंख्याता प्रदेश ६, एकेक प्रदेश मांहि अनंती कर्म वर्गणा 9, एकेक कर्म वर्गांशामें अनंता परमाणु U, एकेक परमाणु मांहि अनंती वर्ण गंध रस फरसनी पर्याय ए, एकेक पुद्रख पर्यायमें ट्यनंती २ केवलज्ञानकी पर्याय १०. १० दस बोख साधुकी संगतछी पामे. सवणे १, नाणे २, विनाणे ३, पचकाणे ४, संयमे ए, ख्रापाह्य ६, तवे चेव ७, बोंदाणे ७, ख्राँकिरिया ए, सिद्धि १०. 泰老 १० दश बोख करी प्रव्यजीवसुं शोच करणो पमें. साधु ब्याया प्रष्न करें नही १, वसा-ण वाणी सुणें नही १, सामायक पिकमणो नही करें तो ३, खाहार पाणी ख्रसु-

फ्तो होय जाय तो <sup>ध</sup>, पढवैरी जोगवाइ हुवें पढें नही तो थ, साधर्मीकी खबर नही 秦子本意子子(中年)大学大学大学大学 खेवें तो ६, धर्मजागरण नही करें तो ७, साधुकी विनय प्रक्ति नही करें तो ७, सा-धु श्रायाकी सारसंजाल नहीं करें तो ए, साधु विहार करी जाय तो १०. १० दश वोख श्रनंता. नाम श्रनंते १, श्रापना श्रनंती २, ज्व्य श्रनंती २, गणित श्र-नंती ४, प्रदेश श्रनंता ४, एक श्रनंता ६, दोय श्रनंता ७, देशविस्तार श्रनंता ७, सर्व विस्तार अनंता ए, सासते अनंता १०. १० दश पर्वना. चोसरण पर्वनो १, गाया ६२ खातुर पचकाण पर्वनो २, गाया ए० महापचकाण पईन्नो ३, गाथा १३४ जत्तपचकाण पईन्नो ४, गाथा १७० तंडलवे-याखी पईन्नो ५, गाया ४०० गणिविज्ञा पईन्नो ६, गाया ६०० देव स्तवन पईन्नो 9, गाथा २०० चंदविजय पड्नो गाथा १९६ कहोवें गाथा 0, संथार पईनो ए, गाया १२१ मरण विजित्ति पईन्नो १० गाया ६६५. १० दश बोख जंबुस्वामी पत्ने जरतक्षेत्रोमें विह्नेद गया. मनपर्यवग्यान १, परमा व्यवधि २, पुखाकनियं हो ३, ख्राहारकखिंव ४, जपसमश्रेणि ४, क्रपकश्रेणी ६, जिनकख्पी ७,

秦安·东安安·东安安·安安安东安安泰 परिहारविशुद्धि ए, सुलमसंपराय ए, यथाकातचारित्र १०. १० दश बोल पावणा दुर्लिज. मनुष्य व्यवतार १, व्यार्थदेश २, जत्तमकुल ३, पांचईद्रिय संपूर्ण ४, निरोगीकाया ५, दीर्घत्राकलो ६, साधुमाधवीकी जोगवा इ ७, धर्मका सुणेणा ७, धर्मकी श्रद्धा ए, जद्ममका कर्णा १०. १० दशौकी संगति वरजवी. पासञ्चाकी १, जसनाकी २, कुसीखियाकी ३, संसताकी ४, आपहंदाकी ५, नीत्रवकी ६, कदाग्रहीकी ७, अन्य मारगीकी ७, अनीतियाकी ए, वमनगाकी १०. १० दश बोलं मोद्दगतिरा. सिष्ठप्रगवंतजीरो लीजै नाम १, सांप्रलीए साधुजीरो व्या-स्यान २, घरी**ए शुन्नध्यान ३, दि**जीये शुरुनावधी दान ४, पहेरिए सियख ६, **जंदीये ल**ज्या ५, मारीए मन ७, खाइए गम ७, दमीये देहनें ए, परमरस पीजीए. १० दश बोल महा पापीरा कहीजे. आपरे जीवरी घात करहीं महा पापी कहीजे १, विश्वास दे घात करेसुं महा पापी ४, कीनोमा गुण विसरेसुं महा पापी ३, सुंब खेने कुमी साल जरेसुं महा पापी ४, हिंसामें धर्म परुपेसुं महा पापी ५, जरी संजामें जुठ

(C.K++); (C.K++);

\*\*\*\*

₩ \* बोलेसुं महा पापी ६, रुइमें दाव लगावे महा पापी ७, वनस्पती कारेसुं महा पापी ए, तलावरी पाल काटेसुं महा पापी ए, गरन पमावसुं महा पापी ए दश मोटा पाप हो १०. दश बोल बद्धाया वंध घटाया घटे. कोध १, हास्य २, रमत २, खुराक ४, सोग ५, बुध ६, त्रय ७, निंडा ७, ब्यहंकार ए, पंचेंडी विषय सेवन १०. ज्ञानी पुरुषरो १० खदाण. अकोधी हुवे १, वैरागी हुवे २, जीतेंडी हुवे २, कमावान हुवे ४, दयावान होवे ६, सेवे जन प्रिय (सगलाने प्रिय लागे), निरलोजी हुवे ए, दातार हवे ए, जयरहित हुवे १० शोके चिंता रहित हुवे आनंदी हुवे. दश बोले असत्य जापाए. क्रोधरे वश बोले तो असत्य १, मानरे वश बोले तो अ-सत्य २, मायारे वश बोखे तो ख्रासत्य २, खोन्नरे वश बोखे तो ख्रासत्य ४, रागरे वश बोखे तो ख्रासत्य ५, हेपरे वश बोखे तो ख्रासत्य ६, हास्यरे वश बोखे तो ख्रासत्य ७, जयरे वंश बोले तो ख्रसत्य **ए**, मुखरी वचन बोले तो ख्रसत्य ए, विकथाकारी वचन बोद्धे तो श्रासत्य १०.

76.52 V6.52 V6.52

१० दश बोले करी देवतामें जपजे. श्राहप कपायी १, नष्ट वस्तुको सोच करे नही २,श्रा सुन ध्यान ध्यावे नहीं रे, ब्रत पचलाण करे ४, शुद्ध सम्यक्त पाखे ४, वैराग्य जाव लावे ६, दान देवे ७, धर्म ध्यान ध्यावे ७, बाल तपस्या त्र्यज्ञान जाव तप करे ते. महा कष्ट सेवे ए, देव गुरु धर्म जगती करे १०. 李子子安安本去 १० दश बोल देवगतिसे स्राया मनुष्यमें जपजे-तिणमे पावे. केत्र वास्तुक हिरण इपद चोपद पामे १, मित्र २, सज्जन ३, जचगोत्र ४, रूपसुंदर ४, शरीर नीरोग ६, पद्मी बुिक ७, विनय ७, जसवंत ए, बलवंत १०. 米米

११ इग्यारह श्रावककी पिन्मा. लोकिक लोकोत्तर मिथ्यात टालें शुरू सम्यक्त पालें १, व्रत पचकाण शुरू पालें दोय वखत सामायक पिनकमणा करें महीनेमें ६ पोसा करें न्हों नहीं घोवें नहीं घोतीकी लांग देवें नहीं १, रात्रीजोजन करें नहीं ३, दिनका बह्मचर्य पालें रातकी मर्यादा करें ४, काजसग्गध्यान करें ४, दिन रातका बह्मचर्य पालें ६, सिचत्त त्याग करें ७, ख्यारंज करें नहीं ए, ख्यारंज करावें नहीं ए, ख्यारंज करतेने छनुमोदे नहीं १०, साधुकी तरे विचेरं गोचरी करें माथे सिखा राखें

लोच करावें ११. विधि-पहिली पिनमामें १ मास तपस्या करें एकांतरे पारणो करें सम्यक्तवत निर्मला पालें इसीतरे जितनी पिनमा जतनीहि तपस्या करें जेसे इंग्यारमी पिनमामें ११ मास तक तपस्या करें ११ दिनांसुं पारना करें लिया वृत प- चकाण निर्मला पालें.

१ इंग्यारे श्री वीरना गणधर. इंडजूति १, खिमजूति २, वायुजूति २, व्यक्त ४, सुधर्मा

स्वामी ५, मंनितपुत्र ६, मोरीपुत्र ७, श्चकंपित ७, श्चचखत्राता, मेतार्य, प्रजास. ११ इग्यारे बोख जाणपणेका. धर्मका जाणपणा होय तो जीवदया पार्खे १, ग्यानका बख होय तो घोना बोलें १. बुद्धिवंत होय तो सना जीतें ३, साधुकी संग्रती होय तो संतोष उपजें ४, वैराग्य होय तो पांच इंडी दमें ४, सूत्र सिद्धांत सुणतां रहें तो धर्म विषे प्रणाम चढता रहें ६. प्राणी जीवकी रिक्का करें तो निर्भयपणी पामें ७, मोह मबरपणो बोमें तो देवताको पूजनीक हुवें ए, न्यायमार्गमें चार्खे तो शोजा पा वें ए, सर्व जीवकुं समत सामणा करें तो साता पामें १०, जगवानकी खाग्यासहित किया करें तो मोक्त पामें ११. ११ श्री जिनसासणमांही सम्यगदृष्टिने ११ बोख जाएया जोइजें. विधिवाद जे वीतराग इम कह्यो इमज करियो. एह विधिवाद १, चरितानुवाद अमुके इम कीधो नाम खे-इने कहिवो एह चित्तनुवाद २, स्थितवाद जगमांही जे पदार्थ जिम हैं तिम क-हिवो ते स्थितवाद ३, ज्ञेयवाद जाणिवा जोग ४, हेयवाद ग्रांमिवा जोग ४, जपा-देयवाद व्यादरवा जोग ६, धर्मपक् सम्यगदृष्टि श्रावक साधुनो मार्ग ते धर्मपक् ७,

श्रधमेपक् मिथ्यात्वी श्रधमी श्रावकपणो जांने तो श्रधमेपंक एं, मिश्रपक चारित्र आश्री विस्ती अविस्तीनो मार्ग आदरे ते मिश्रपद्य ए, व्यवहारपद्य जे बाह्य देखता लोक सहुने सुमता ते व्यवहारपद्म १०, निश्चेवाद केवलीगम्य ते निश्चयवाद ११. ४ पट इत्यना ११ द्वार हैं. गाथा-परिणामजीवजीवमुत्ती सपएसएगेदेते किरिया । नि-चं कारणे कत्ता छाईए एवं एकारसम् ॥ १॥ जीवडव्य पुद्रखडव्य ए वे प्रणामि वें धर्मास्ति अधर्मास्ति आकाश काल ए चार अप्रणामी हैं १, जीवडव्य तो जीव बा-की पांच द्रव्य त्र्यजीव २, पुद्गलद्रव्य तो मूर्त्ति बाकी पांच द्रव्य त्र्यमूर्त्ति ३, कालद्रव्य ख्यप्रदेशी बाकी द्रव्य सप्रदेशी ४, धर्मास्ति ख्राधर्मास्ति ख्राकाशास्ति ए त्रण एकेक वें सेष त्रण द्वय त्र्यनेक ७, त्र्याकाश देत्री शेष पांच त्र्यदेत्री ६, जीवदव्य पुद्धदंदव्य ए बे सिक्रिया शेष चार छिक्रिय छ, कालद्रव्य तो छिनित्य शेष पांच नित्य छ, जीव-द्रव्य तो श्रकारणी काम नही श्रावें शेष पांच कारणी काम श्रावें ए, जीवद्रव्य पु-द्रख कर्त्ता शेष ४ त्रकर्ता १०, त्र्याकाशद्रव्य तो सर्व गति शेष ५ द्रव्य त्र्यसर्वगति. ११ इंग्यारे बोल चोरेंद्रीरा. वित् १, ढंकण २, जमरा २, जमरी ४, टीम ५, मांखी ६,

李朱子子的子长的子来中华本的子来的子来的

秦光·朱①米·朱①米·朱①米·朱①米·朱①米·朱①米·朱①米·朱①米·朱 मांस ७, महर ७, पतंगीया ए, कसारी १०, खम्माकमी ११. ११ इग्यार बोख प्रस्तावीक. समिकतरूपी मूख १, धीरजकंद २, विनय वेदिका (चोकी) 🖣, जस ४, खंद पांच महावत ४, माओ जावना ६, त्वचा बाख ग्यान ध्यान ७, कु-पलपान त्र्यनेक गुण ए, फूल सील ए, सुगंध जपयोग १०, फल मोक ११, बीज ए ११ इग्यार बोले करी ग्यान वधें. जद्यम करतां १, निष्ठा तजें तो २, जणोदरी करें तो इ, श्रब्प बोटों तो ४, पंमितरो संग करें तो ४, विनय करें तो ६, कपटरहित तप करें तो 9, संसार व्यसार जाणें तो 0, चोलणा पचोलणा करें तो ए, ज्ञानवंतने पास जाएं तो १०, इंडीयोना विषय त्यागें तो ज्ञान वधे ११. 学の学 金米

साधुनो १२ पिनुमा. पहिली १ मासनी १ दान खन्नरी १ दात पाणीनी १. बीजी २ मासनी २ दात ऋत्ररी २ पाणीरी २. त्रीजी ३ मासनी ३ दात ऋत्ररी ३ दात पाणीरी ३ चोथी ४ मासनी ४ दात ऋत्ररी ४ दात पाणीनी ४. पांचमी ५ मासनी ५ दात श्यन ५ दात पाणी ५. ग्रेग ६ मासनी ६ दात श्रन्न ६ दात पाणी ६. सातमी ५ मा सकी 9 दात खन्नरी 9 दात पाणीकी 9. खाठमी ए नवमी ए दशमी १0 सात दि-नरी एकांतरे जपवास करे त्रिण आसण करे १० इग्यारमें उनक्त करे खहोरात काजसग्ग करे ११ वारमी पिनमा श्रष्टजक्त ३ करे मसाण चूिममे १ रात्रि काजसग्ग करे तिहां ३, जपसर्गा उत्पन्ने देवता १ मनुष्य २ तिर्थचनो ते सहे तो ३ गुण ज पजे व्यवधिक्वान १ मनपर्यव ग्यान १ केवलग्यान ३; जो नही सहे तो ३ व्योग्रण होय गहिलो १ गुंगा १ वावला ३ होयजाय १६ रोग माहिलो कोइ रोग जपजे धर्मधी ज्रष्ट होय.

大学·米田子·米田子·米田子·米田子·米田子·米田子·米田子·米田子

中人作的 水子子 人名英格兰 人名西班牙

李本本本《沙米·米巴米·米巴米·林本

साधु १२ कुलनी गोचरी करे. जत्र कुलाणिवा १, जोग कुलाणिवा २, राय कुला-णिवा ३, दात्री कुलाणिवा ४, इलाग कुलाणिवा ४, इसिवंस कुलाणिवा ६, एसीय कुलाणिवा ७, बैसीय कुलाणिवा ए, कोळाग कुलाणिवा ए, गंमाग कुलाणिवा १०, गांमरक कुलाणिवा ११ बोकसालिय कुलाणिवा १२. १२ बारे बोल करी परम कब्याण करे. सम्यकत्व निर्मल पाले तो श्रात्मा परम कब्याण करे श्रेणिक राजानी परे ?, नियाणा रहित करणी करे तो परम कब्याण करे ताम-खी तापसनी परे २, मन वचन कायाका जोग सुन वस्तावे तो खात्मा परम क**ख्या**-ण करे ३, गजसुकमालनी परे बती सक्ति कमा करे तो खात्मा परम कल्याण करे प्रदेशी राजानी परे ४, पांच इंडी दमे तो खात्मा परम कल्याण करे. धन्ना खाणगा-रनी परे ४, साधूनो श्राचार पाखे तो श्रात्मा परम कख्याण करे गोतमस्वामीनी परे ६, धर्म ऊपरि श्रद्धा परतीत ब्यावे तो खात्मा परम कब्याण करे. वारुणनामनतु-वाना मित्रनी परे ७, माया कपटाइ जांने तो ख्यात्मा परम कख्याण करे श्री मिल्ल-नायजीका न मित्रनी परे ए, रोग व्याया हायलंह न करे तो खात्मा परम कह्या-

ण करे ख्यनाथिनी परे ए, खाश्रवमें संवर निपजावे तो खात्मा परम कब्याण करे संजती राजानी परे १०, परिसह खाया समन्नाव वर्त्त तो खात्मा परम कब्याण करे मेतार्थजीनी परे ११ छाइ ममता पाढी खेवे तो छात्मा परम कब्याण करे कपिख १२ तपस्याना १२ त्रेद. छाणसण १, छणोदरी २, त्रिकाचरी २, रसपरीत्याग ४, काय-क्केश ५, पिनसंखिणता ६, प्रायित्त ७, विनय ७, वेयावच ए, सिखाय १०, ध्यान ११ कालसगा १२. बारे जावना. श्रनित्य जावना जरतजी जावी १, श्रासरण जावना श्रानाथिजीने जाइ २, संसार जावना शाखिजर्ज्जीने जाइ ३, एकत्व जावना निमराय ऋषि जाइ ४, श्चन्य जावना मृगापुत्रजी जाष्ट्र १, श्रशुची जावना सनंतकुमार चक्रवर्त्ति जाष्ट्र ६, श्राश्रव जावना समुद्रपाखजी जाइ ७, संवर जावना केसीकुमार गोतमजी जाइ **ए**, निर्जरा जावना खर्जुनमाली जाइ ए, लोकस्वरूप जावना सिवराज ऋषिश्वर जाइ १०, धर्म जावना धर्मरुचिजी जाइ ११, बोद्धिबीज द्वर्छिज जावना आदिश्वरना एए

李条举

पुत्रो नाइ १२. १२ बारे बोल श्रावकना. नव पदार्थ जाएा होय १, देवतादिकनो साहाय वांछे नही २, देवादिक धर्मसुं ििगावे तो िमगे नही ३, श्री जिन वचन ऊपर संका कंखा आणे नहीं ४, सम्यक्तमें हाम २ नी मिजी रंगाणी होय ५, पूछी २ ने निरणय करे ६, रिदय फिंटक सरिखो निर्मखो ७, प्रतितकारीया घरमे जाय ७, जीमतां घरका बारणा क्रघामा राखे ए, साधुंजीने १४ प्रकारनो प्रासुक दान देवे १०, ब्याठम चजदश पिक द्यमावास मिहनेमें ६ पोसा करे ११, उती शक्ति धर्म करणीमें द्यापणो बल गोपवे नही १२. १२ बार प्रकारनो खाहार पाणी परिद्वणो पिण जोगवे नही. खाधाकर्मि १, जद्देशीक २, सूतीकर्भ ३, मिश्र ४, सचित्त छाचित मिल्या ४, छाछोपरे ६, सिफातरनो ७, स-चित्त पाणीती बुंद पमे तो ए, खेताइ जाइ कंते ए, कालाइ कंते १०, मगाइ कंते ११, पमाणाइ कंते १२. १२ बारे संजोग, उपि वस्त्र पात्रनो लेवों १, सूत्र सिद्धांत लेवो वाचणी लेवी देवी

श्राहार पाणी खेवो ३, मांहोमांहि नमस्कारनो करवो ४, सिष्यादिकनो देवो ५, नि-मंत्रणा करवी ६, मांहोमांही लमा होणा ७, कीर्त्तिग्रणग्राम करेष्ट ७, वैयावच करणी ए, एकढा मिलबो १०, एक खासण बेसवो ११, कथा प्रबंधनो कहिवो १२. बारे जपयोग. ५ ज्ञान ३ ट्यज्ञान ५ दर्शन एवं १२. बारे बोल करी जन्य जीवकुं पिछतावणा पमे. उती जोगवाइ साधकुं दान नही देवे तो १, दान देइने पिंचतावे तो २, दान देता वर्जे तो ३, छती जोगवाइ समाइक न करे तो ४, सामायक करतांने वर्जे तो ५, बती शक्ति तपस्या न करे तो ६, करताने वर्जें तो 9, साध द्याया तेहनी वाणी न सुणे तो 0, साधुकी निंद्या करेतो ए, साधु कुं वंदणा नही करे तो १०, उती योगवाइ जणे नही तो ११, उती जोगवाइ पाट पाटला घानक नही देवे तो १२. १२ बारे मुक्तिनां नाम इसितिवा १. इसिपञ्चारातिवा २, तणुतिवा ३, तणुतणुतिवा सिद्धितिवा ए, सिद्धालएतिवा ६, मुत्तितिवा ७, मुत्तिलएतिवा ७, लोयग्रेतिवा खोयप्रेथुजोतिवा १०, खोयपेठिबुफणातिवा ११, संवपाणज्रूयजीवसत्वसुहातिवा.

श्यपसस्तमनविनयका बारे जेद. पापकारी मन प्रवर्तावे १, क्रियाकारी मन प्रवर्तावे १, कठोरकारी मन प्रवर्तावे ३, नठोरकारी मन प्रवर्तावें ४, करगसकारी मन प्रवर्तावे ५, 李次 कमवाकारी मन प्रवर्तावे ६, ब्याश्रवकारी मन प्रवर्तावे ७, बेदकारी मन प्रवर्तावे ७ जेदकारी मन प्रवर्त्तावे ए, जहेगकारी मन प्रवर्त्तावे १०, परतापनाकारी मन प्रवर्त्तावे ★安米安米安米·米安米·米安米·米安米 ११, सर्वजूतप्राणी जीवने घातकारी मन प्रवर्तावे १२, प्रसस्तमनका विनय बार जेद. निखद्यकारी मन प्रवर्त्तावे १, ख्रक्रियाकारी मन र्तावे २, श्रक्कोरकारी मन प्रवर्तावे २, श्रम्कोरकारी मन प्रवर्तावे ४, श्रकरगसकारी मन प्रवर्त्तावे ५, छाणकमवाकारी मन प्रवर्त्तावे ६, संवरकारी मन प्रवर्त्तावे ७, छाजेद-कारी मन प्रवर्तावे 0, खानेदकारी मन प्रवर्तावे ए, खाणान्हेग्कारी मन प्रवर्तावें १०, श्रापरतापनाकारी मन प्रवर्त्तावे ११, सर्बजूतकारी प्राणी जीवकुं साता उपजाव-एकारी मन प्रवर्तावे १२. निर्जरातत्त्वना बार जेद कहें हैं. प्रथम ह प्रकारे बाह्यतप. छानशनतप १, ऊणोदरी तप १, वृत्तिसंदोप तप ३, रसत्यागतप ४, कायक्नेशतप ४, संखीनता तप ६, छ प्र-

\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*

कारे ख्राज्यंतर तप. प्रायं जित तप ७, विनयतप ७, वैयावचतप ७, सिखायतप १०, ध्यानतंप ११, जंत्सर्गतप १२. कह्य याने खाचारवान देवता ते बारलोकना नेदे करी बार प्रकारे हें तेहनां सौधर्म देवलोक १, ईशानदेवलोक २, सनत्क्रमारदेवलोक ३, माहें द्वेवलोक ४, ब्रें: ह्यदेवलीक ५, लांतकदेवलीक ६, महाशुक्रदेवलीक ७, सहस्रारदेवलीक ७, श्रानितं-देवलोक ए, प्राणतदेवलोक १० खारणदेवलोक ११, छन्यतदेवलोक १२. १२ उपयोग बार प्रकारे हैं. मतिग्यान १, श्रुतिग्यान २, त्र्यविग्यान २, मनपर्यवग्यान ४, केवलग्यान ५, मतिद्याग्यान ६, श्रुतद्याग्यान ७, विनंगत्र्यज्ञान ७, चकुदंशीन ए, श्चनकुद्दीन १०, श्चवधिद्दीन ११, केवलद्दीन १२. बार बानां पामवा छर्छन हें. मनुष्यनव १, आर्थकेत्र २, मातापितानोपक शुद्ध ३, मार्गानुसारी ४, रूपवंतपणुं ४, नीरोगता ६, पूर्णव्याकलो ७, जलीबुद्धि धर्म सांज-लवो ए, धर्मनी रुचि १०, सदहणा ११, धर्मने विषे उद्यम १२. श्राय बारह वत श्रावकका तिणमें पांच श्राणवत उसका खरूप लिख्यते है.

श्राणुवतमे श्रावक चलते फिरते त्रस्य जीवकुं जानबुक्रके मारनेकी बुद्धि करके न मारे, घुणा ह्वा अन्नज़हीमें जुनावें नही जर घुणा अन्न पीसें पीसावें नही जर द-लें दलावें नहीं जर सिरका गेरे नहीं जर मखीका जाता तोमें नहीं जर गोबर स-मोर्वे नहीं जर विना अने पाणी पीवे नहीं जर रस चित पदार्थकों वर्त्ते नहीं श्र-र्थात् जिस खानें पीनेंकी चीजका अपनें वर्ण गंध रस स्पर्शसे प्रतिपक्ष अर्थात् मी-वेसें खड़ा जर खड़ेसें करुआ वर्ण गंथ रस होय गया जर जिस आदामें तथा मि-ष्टात्र पकान बुरा व्यादिमें खंट पम जाय तो जसे वस्तें नही अर्थात् बहुत कालकें लियें वस्तु संचय करके रक्षे नही जेसेकि चतुर्मासमें खाठ तथा पंद्रह दिनकें ज-परांत काल तक संचय करें नही जर श्रीष्मकाल गर्मीमें १५ दिन व एक महीनेसें जपरांत संचय करें नही जर शीत कालमें एक महीने तथा देढ महीनेसें जपरांत संचय करें नही जर शीत कालमें एक महीने तथा देढ महीनेसें जपरांत संचय करें नहीं जर चैतके महीनेसें लेकर खासोजक महीने तक रोटी दाल खारि के दिक दीली वस्तु रातवासी रखके खाय नहीं ऐसे पहले खानुवतके पांच खातिचार के कि दें हैं है प्रथम जैन्सको नहा पर प्रोप के कालको जन्म करें के स्थाप जैन्सको नहा पर प्राप्त के कालको जन्म करें के स्थाप जैन्सको नहा पर प्राप्त के कालको जन्म करें के स्थाप जैन्सको नहा पर प्राप्त के कालको जन्म करें के स्थाप जैन्सको नहा पर प्राप्त के कालको जन्म करें के स्थाप जैन्सको नहा पर प्राप्त के कालको जन्म करें के स्थाप जैन्सको नहा स्थाप स्थाप के स्थाप जैन कालको जन्म करें के स्थाप जैन्सको नहा स्थाप स्थाप के स्थाप जैन्सको नहा स्थाप स्थाप के स्थाप स्थाप पर प्राप्त के स्थाप स्थाप स्थाप के स्थाप स्याप स्थाप स्याप स्थाप कहें हैं. १ प्रथम नौकरको तथा पशु घोमा बैख आदिकको तथा पद्मी काग सूख्या

दिकको रीस करकें पिंजरेमें तथा रस्सी खादिकसें बांघे नही २ दूसरे नोकर खादि-कको तथा पशु बेख घोना आदिकको क्रोध करीने गाढा घाव मारें नही ३, कुत्तेकें तथा वेल श्रादिकके श्रंग (श्रवयव) कान पूछ श्रादि छेदन करें नहीं, प्र जंद घोमे बेल गधे तथा गामी खादिमें सामर्थ प्रमाणके जपरांत जार धेरें नही, ए नों-करकें तथा पशु गाय घोमे व्यादिककें घास लानेकें समय खंतर दे नही व्यर्थात जूखें रखें नहीं।। इति प्रथमानुव्रतम्।। १।। ॥ श्रय थूल मुषावाद स्वरूप ॥ दूसरे श्रनुव्रतमें विना मर्यादा मोटा जूठ नही यथा सूत्र कन्नाली गोव्याली त्रुव्याली व्यापणमोसा कूमी साख इत्यादि बोर्ले नही जब तक जीवे तो फीर ऐसे कजी न करें १, किसीकुं जूंठा कलंक श्र-र्थात् तहोम्त लगावें नही २, किसीके बीपे हुवें ख्रपराधको प्रगट करें नहीं क्योंकी कोई चाहें कैसाहीहो न जाने अपनी बुराई सुनकर कुछ आपघात आदि अकार्य करतें इत्र्यर्थ ३, जूंठा उपदेश करें नहीं जैसेंकी मेंने तो जूठ बोखता नही तुमने श्रमुक कार्यमें श्रमुक जूठ बोल देना ऐसं कहें नही ४, स्रीका मर्म श्रनाचार बिल-

本书记本 等记录表

कुल प्रगट करें नहीं क्योंकी स्त्री चंचल स्त्रजाव होती है सो पहिले तो बुराई कर 李安安安安 खेती है जर पीठें बुराईको सुनकर जखदीहि कुएमें कुद पमती हैं इत्यर्थः स्त्रीका मर्भ प्रकाशित न करें श्रयवा किसीकीनी चुगली न करें, ए जुठी बही चीढी लिखें नही ॥ इति दितीयानुव्रतम् ॥ २ ॥ ।। ख्रय तृतीय खरुवत प्रारंज ।। तीसरे खरुवतमें ताला तोमना १, धरी वस्तु ज्ञा खेनी २, कुंची खगानी ३, राहिगर बुट खेने ४, पर्नी वस्तु धनीकी जानकें घ-रंनी ५, इत्यादिक मोटी चोरी करें नहीं जब तक जीवें तो फिर ऐसा व्यकार्य कजी 李本本本中一年本中本 न करें १, कोई चीज चोरकी चुराई जानकर फिर सस्ती समक कर खोजके होकर खेरें नहीं २ चोरको सहारा देवें नही जैसेकी जावो तुम चोरी कर खावों में खें खंगा जर तेरेंपै कष्ट परेंगा तो में सहारा छंगा ३ राजाकी जगात मारे नही कम तोख कम माप करें कही ए नयी वस्तुकी वान्नकी दिखाकर फिर जसमें पुरानी वस्तु मिलाकें देवें नही ॥ इति तृतीय अनुवतम् ॥ ३ ॥ ।। श्रय चतुर्थ श्रानुवत प्रारंजः ॥ चोथे श्रानुवतमें स्व परणीत स्त्रीपें संतोष करें

\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*

李本学

李华李

परस्रीसें कामसंवनका त्याग करें यावज्जीवतक फिरजी कजी ऐसा न करें १ अपनी मागी हुई स्त्री जैसैकी जसी सहरगें सगाई होय रही होय तो जस मांगी हुई स्त्री सें काम सेवें नहीं क्योंके वहविवाहीता नहीं १ छापनी व्याही हुई स्त्री बोटी जमस्की हो तो जसकें साथ काम सेवें नहीं क्योंकी जसे कामकी रुचि नही हुई है ३ पर-स्त्री कुमारी व व्याही अविधवा तथा वेक्या हो तिसके संग कुचमर्दन आदि कामकी मा करें नही जेर शीखवान माता तथा प्रगिनी खादिकके पखंगादिक एक खास-नमें वैठें नही जर व वर्षके जपरांतकी बेटी हो तो जसे ख्रपनी शस्यामें निजागत करें नही खर्थात् सुलावें नही जर ऐसेही स्त्रीकु चाहीयेकी खपने पतिके सिवाय चर कोई बहनोई तथा ननदोई तथा कोई चर प्राहुणा प्रथा नोकर वा पमोसी हो तिसके सामने कटाक्तनेत्रेसें देखें नही तथा दंतपंक्ती प्रकटायके हंसे नही विना कार्य बोटों नही जर पूर्वोक्त मनुष्योंके साथ खकेत्री रस्तेमें बार चटें नही तथा एकांतस्थानमें श्रकेखी रहें नहीं जर विधवास्त्रीको तो विशेषही पूर्वोक्त कार्य वर्जित है अर विधवास्त्रीको शृंगार न करना चाहीयें क्योंकी जब मैथुन त्यागा गया

तो फिर शुंगार करनेकी क्या जरुरत है जर छाउ वर्षके जपरांत पुत्रादिकको छापने **张沙 光光光 光光光 光色米 光泽 光泽 光色米 光色米 光色** साथ पल्नापर सुत्रावे नहीं छर पिता बाता श्वसुर जेठ देवर खादिकके बरावर एक आसन बेसे नहीं. क्योंकि आभि घृत के दृष्टांत ख्यकार्य मैथुनके प्रसंगसे खोक व्यव-हारमें खपयश होता है खौर गर्जादि कारण होनेसे खापघात बालघातादि इषण होता है. जर दूषणके प्रजावसे परलोकमें नरक प्राप्त होकर (व्यमि प्रज्वालन)ता-त्ते यंत्र वंधन मारन तामन जम पराजवरूप इःखोंका जागी होता है तिणे कारणसे काम क्रीमा हास्य विलास करे नहीं भ चोंधें पराये नाते रिस्ते सगाइ ज्याह जोमें नही ए कामजोगपर तीब व्यजिखाषा करे नही ॥ इति चतुर्थ व्यनुवर्त ॥ ४ ॥ ।। ख्यथ पंचम व्यनुवत प्रारंजः ॥ पंचम व्यनुवतमें तृष्णांका प्रमाण करे सो पिर-श्रह व्यर्थात सोना चांदी जरं रत्नादिक तथा मकानात खेत माख गाय जेंस जर घोमा आदिककी मर्यादा करे जैसेकी में इतना पदार्थ रखेंगा और इतने जपरांत नही रखुंगा उर फिरनी एसे न करे पूर्वे करी मर्यादा उंदांघे. जैसे कि मेने ५००० हजार रुपीया रखाया तर याब ज्यादा रुपीया होय गया तो खाब मकानादि बनवा हूंगा १६

अपितु ज्यादा होय जाय तो अजयदानादि धर्मीपकारमें लगाय देवे ॥ इति पंचम् 李长色学 长代学 朱代学 朱代学 朱代学 朱色学 朱色学 श्रनुवतम् ॥ ए॥ ा अथ सात शिक्तावत खिखते हैं सो इन 9 सिक्तावतोंमेंसे प्रथम तीन गुण-त्रत कहते हैं. इन तीन गुणत्रतोंके द्यंगीकार करनेसे पूर्व पांच द्यानुवतोको संवररूप गुणकी पुष्टि होती है।। अय प्रथम गुणवत भारंतः प्रथम गुणवतमें दिशाकी म-र्यादा करे जेसेकी जंची नीची दिशा पर्वत महल ध्वजादिक जैर नीचि दिशा कुछा ग्रिम गृह द्यादिक और तिर्ज़ि दिशा पूर्व १ दिक्तण १ पश्चिम ३ जत्तर ४ इत्यादि-क दिशालकी मर्यादा करे. जैसे कि में इतने कोस जपरांत स्वेहा काया करी आरंज व्यापारादिके निमित्त जालंगा नही क्योंकि जतने कोस जपरांत बाहिरखे केत्रके बकायके हिंसारूप वैरकी निवृत्ति रहेगी. फिर ऐसे न करेकि पूर्वे जो उंची नीची ति-ं बि ३ दिशाका जितना प्रमाण करा हो जस विसरा देवे, क्योंकि जो विसारेगा तो शायद जादा जाना पम जाय जर ध बोशे एसे न करेकि मैने पूर्वकी दिशाको ५० जोजन जाना रला है सो पश्चिमको जानेका तो काम कम पमता है श्चीर पूर्वको

बहुत दूर तक जाना पनता है तो पश्चिमका १५ योजन जानगा लुर पूर्वकुं ७५ जो जन चला जानगा एसे करे नहीं ५ पांचवें एसे प्रम पन गया होकि मैने न जाने पश्चिमको ५० योजन रखाद्या लुर पूर्वको १०० योजन रखाद्याः न जाने पश्चिमको 李本李本本 १०० रखायाः तो पूर्व छर पश्चिमको ५० योजन ऊपरांत जाय नही ॥ इति प्रथम गुणवतम् ॥ ६॥ । ख्रिय हितीय गुणवत प्रारंजः हितीय गुणवतमें जपनोग परिनोग पदार्थकाः यथाशक्ति प्रमाण करे खर्थात जपनोग्य पदार्थः जसको कहते है कि जो पदार्थ वार १ जोगा जाय जैसेकी फूल कपना स्त्री मकान खादि सोएसे पदार्थोंकी मर्यादा कर लेवे क्योंकि संसारमें खानेक पदार्थमें जर सर्व पदार्थ पांच प्रकारके खारंजसे सनीके वास्ते बनते है सो मर्यादा करे. विना पदार्थोकी पैदायशका आरंतरूप पाप हिस्से बमुजिम ह्याता है क्योंकि इन्नांक प्रमाण करे विना न जाने कोनसा शुप्ता शुप्त पदार्थ प्रागनेमें ह्या जाय जिएसे एसे मर्यादा कर क्षेत्र कि जैसे २४ चोवीस जातिका घान्य हे ह्यर्थात ह्यन्न हे, तिस्की मर्यादा करे की इतने जातिक ह्यन निह

खाऊंगा जैसेकी मरुव्या चोलाइ कंगनी स्वाक इत्यादि धान्यका बिलकुल त्याग करे श्रीर फलोंकी मर्यादा करे. परंतु जो जमीनमें फल जलक होता है जैसेकी ल-शन गाजर मुखी इत्यादि खाखोंकि सम है और जो त्रस जीव अर्थात चलतिकरते जीवसहित फलफूल सागहो जैसेकी गुलरफल पीपलफल बमफल व्यादि खोर फूल कचनार फुलसिबल फुलगोजी व्यादि खौर सागनूणी सागचणा इत्यादि तो बिल-कुलही त्यागने चाहिये श्रीर श्रकात फलजी न खाना चाहिये श्रीर ऐसेही ए प्रका-रकी विगय सूत्र समाचारीमें कही है. इग्ध १ दही २ मकन नोणी ३ घृत ४ तेख ए मीठा गुम खादि ६ मधु शहद 9 मद्य मदिरा U मांस ए इति सो इनकी मर्या-दा करे परंत मद्य १ मांस २ ये विगय सर्व आर्य पुरुषोने अज्ञक्त कही है सो इन-को विखकुलही त्याग श्रीर ऐसेही चर्मजाल सण उंन रेशम श्रीर कपासके वस्नकी मयीदा करे परंतु चर्मके वस्रतो विखकुख त्याग दे और रांत्रि जोजनकाजी त्याग करे रात्रिजोजनमें महा दोष है स्वमत परमत सजीमें त्याग है इससे श्रवस्य त्याग ध्यौर चवदह नेमजी इसी ब्रतमें गर्जित है सो चवदे बोखसे जाएाना. फेर जोग परि-

जोग्यकी मर्यादावान ऐसे करेकि १ मर्यादा जपरांत सचित्त वस्तु फलादिक शुन्य चित्त द्यर्थात गाफिल होकर खाँवे नही ख्रीर १ सचित्त वस्तुको स्पर्श कर मर्यादा जपरांतकी श्रिचित्त वस्तुनी खाय नहीं जैसे बृद्धारे गुंद तोमके खाय तो गुंद श्रिचत्त \*要秦李亮李 है और बृक्त सचित्त है इत्यादि छर रे अधपका लाय नही और ४ कुरोतपकाया जैसे हीतें पूर्वात्यादिक लाय नही और ५ पूल य्यनिवास्क जिस यौषि यर्थात जिस फलसे जूल न मिटं जसे लाय नही जैसे जिस फलका योमा लाना और ब-द्भत गेरनेका स्वेत्राव हे, यथा ईख सीताफल व्यनार सिंघोमा जामन जमोया कैत विद्व इत्यादि साय नही, ख्यथ दूसरे गुणवतमें खशुद्ध कर्त्तव्यकाजी त्याग करे जै-李林 次回光 水回光 本京 सेकी १५ कमादान सो पनरमें बोलसे जाणना ॥ इति सप्तम वतम्॥ ।। श्रष्टम गुणवत प्रारंजः ॥ श्रमर्थदंम श्रशीत् नाह्क कर्मबंधका विकाना तिस-का त्याग करें वह अनर्थदंम च्यार प्रकारका है. १ प्रथम अवज्ञाणचरियं सो आः र्तिध्यान द्यार्थात् १ मनोगम पदार्थके न मिलनेकी चिंता १ द्यामनोगम पदार्थ मि-खनेकी चिंता ३ शोगोंके न मिखनेकी चिंता और <sup>18</sup> रोगोंके मिखनेकी चिंताका क-

रना १ दूसरा रौडध्यान व्यर्थात् १ प्रथम हिंसानंद सो हिंसाकर कर्मके विचारमें ध्यान होता जैसेकि मेरी सोकन तथा सोकनका पूत किस जपायसे मारा श्रीर कब मरेगा तथा मेरी स्त्री रोगी है वा कुरूपा कखहकारी हे सो कब श्रीर यह बुढाबुढी कब मरेंगे तथा मेरे वैरीका नास कब होयगा श्रीर वेरीके कब पर्नेगा तथा वेरीके घरमें तथा खेतमें खाग कब लगेंगी इत्यादि खीर दूसरे मु-पानंद सो जूठ बोलने के तथा जूठा कलंक देनेक उपाय विचार रूप और ३ ची-र्यानंद सो चोरीके उलके विश्वासमें देनेके प्रसंग उगी करनेके जपाय विचाररूप श्रीर चोघ्रे ४ संरक्तणानंद सोधन धान्यके पैदा करनेके तथा धन धान्यकी रक्ता क-रनेके हिंसाकारी जपाय विचाररूप ऋर्थात् चूहे घी खाते है तो बिह्वी रखें इत्या-दि सोचे. आर्तध्यान उर रौद्धध्यान, ध्यानमें अनिध अर्थात् नाहक कर्मबंध हो जा-तें है अय दूसरा अनर्थदंन प्रमादाचरण सो प्रमाद ५ पांच प्रकारका है तिसका श्चाच्रण सो प्रमादश्चाचरण होता है सो १ प्रथम निद्धा प्रमाद सोचें मर्यादा व-खत बेबखत मो रहना यथा निद्धा चार प्रकारकी है ? खहपनिद्धा ? सामान्यनि-

\*\*\*

डा ३ विशेषनिज्य ४ महानिज्या. स्वस्पनिज्या सो सात प्रहंर जागना ख्यार 本本本本本本本本本 पहर सोना तिसकुं उत्तम पुरुष कहते हैं. और दूसरा सामान्यनिका सो पांच पहर जागना खोर त्रण पहर सोना तिसको मध्यम पुरुष कहेते है. खोर तीसरे विशेष-निद्धा सो चार पहर जागना श्रीर चार पहर सोना तिसको जघन्य नर नीच नर कहतें है. और महानिद्धा सो तीन पहर जागना और पांच पहर 'सोना तिसको अधम नर कहतें है. परंतु रोगादिक कारणकी वात न्यारी हे. और ? रा विक-थाप्रमाद सो स्त्रीके रूप छादिककी कथा करनी छौर देशोंके लाने पंकान व्यंजन श्रादिककी कथा श्रीर देशोंके चाल चलन श्रादि चोरोंकी जारोंकी राजाश्रोंकी क-\*\*\*\*\*\* था श्रीर तेरी मेरी वार्त करनी श्रीर ३ तीसरे विषयप्रमाद सो बाग बगीचा चेटक राग रंग देखनेको जाना छोर पराये वर्ण गंध रस स्पर्श देखके जुलसना छोर फांसीश्रादिक लगते हुए पीनित पुरुपको देखना क्योंकि वहां एसे परिणाम होणें-का कारण है कि कब फांसी लगें कब घरकुं जाये इत्यादि. और ४ बोधे कषायप माद कोधमें नाहक जलना और मानमें नमेवना और माया श्रश्रीत दंगाबाजी

याने जलसें बात घननी और लोज संज्ञामें प्रवर्त्तना जैसे कोई अकलका अंधा छोर गांठका पूरा छाय जाय इत्यादि छोर ए पांचवे छालस्यप्रमाद सो गुरु दर्शन करनेका ख्रीर व्याख्यान सुणनेका ख्रालस्य जैसेंकी धूप पमती है ख्रब कौन जाय. श्रीर सामायिक करनेका श्रावस्य कि श्रावतो गर्मी पमती है तथा शीत पमती है कौन सामायिक करें. श्रीर साध्को श्राहार श्रशीत जिह्ना देनेका श्रालस्य करेंकी श्चरे श्रमुक तुही देदे, मैं तो लेटाहुं. इत्यादि तथा घी तेल तथा श्राचारका वर्तन गुम तथा सहतका वर्त्तन इत्यादिक उघामा आखस्य करकें रखें तो नाहक कर्म बंध जाते है. क्योंकि त्र्यनेक जंतु स्थूल सूक्ष पूर्वीक्त जाजनोमें गिर गिरके दूव दूवके मरजाते है इति द्वितीय खनर्धदंम २. खय ३ रा खनर्थदंम. पापकर्मीपदेश सो खन पने मतलव विना हरएक पास पनोसी छादिकको ऐसे कहनािक छारे तेरे बढ़ेने वमे होय गये है इनकु विया कराखे तथा तेरी गाय घोमी सुनी होय गई है इ-नकु गर्नन कराखें तथा तेरी बेटी सुनी हो गई है इसको ब्याह दे तथा आम आमले आदिक बहुत विकने आये है सो तुम बेठे क्या करते हो,जाड़ ले आड़ा,

\*\*\*\*\*

श्राचार गेर खो श्रवतो सस्ते मिखते है तथा श्ररे तेरे खेतमें जामिये बोहोत<sup>.</sup> हो गई है तथा बाम पुरानी होय गई है सो इनको फ़ुंक दे इत्यादि. इति तृतिय छा-नर्धदं रे. अथ १ चोथा अनर्थदं रे. हिंसापदान सो इल मुसल चकी चर्ला दांती क्रहामा घीयांकस कांटा मोल निकालनेका कोहल इत्यादि तथा शस्त्रकी जाती त-था टोकना कमाहा श्रासमाना इत्यादि जपकरण श्रपने वर्त्तनेसे ज्यादा रखने सो विवेकवान रके नहीं. क्योंकि ज्यादा रखेगा तो हरएक माग खेजायगा तो वहखेजा नेवाला उस उपकरणसें परकाय हिंसारूप आरंत्र करेगा. तव उसको आरंत्रका हि-स्सा श्रावनेसें नाहक कर्मबंध होंगे. इस च्यार प्रकारके श्रावर्थदंमका बुद्धिवान पुरुष त्याग करें यावज्जीवतक तो फिर ऐसें न करें. १ प्रथम कंदर्ण सो हांसी विलास ठ ा (मक्करी) कामविकारके दिपानेवाले गीत राग रागनी दोहा बंद इत्यादिक निर्र्धक चित्त मलीन करनेंके श्रीर सोग पैदा करणेंकें कारण है. सो न करे श्रीर श दूसरा कुकच सो जंमचेष्टा जैसेकी काणेकी खंधेकी खंगमेकी ग्रंगेकी खाज खादि रोगीकी नकख न करनी याने वैसे वनके दिखाना फिर इमहम करके इंसना

\*

रोको हंसाना श्रोर तिलस्मात् इंडजाल करके कुतुहल करना तथा स्याल तमा सांग् नाटकका देखना तथा चोपम् गंजीफा गोली कौमीसं खेलना इत्यादि नि र्धक कालका ख्रीर काजका विगोवना है क्योंकि इसमें कुन लाजका कारण निह है इसीसे जेन चेष्टा न करें. और ३ तीसरे मुखारिसो नाहक गाछी देना याने गा-ली बिना बातका न करना तथा मातापिता खोर शाहका छर विद्या गुरुका ना करुया बोलना खोर निंदा करना तथा देवगुरु धर्मकी कसम खानी खोर तुं तुं क्या है इत्यादि निर्स्थक कलहका करना सो न चाहिये और ४ चोथे संयुक्त अ धिकरणसोपायकारी जपकरण पूर्वोक्त ठाज ठाननी हल मूसल व्यादिक ने. सो रखें नहीं. और ए में जपनोग्य अतिरिक्त सो खानेकी पीनेकी पहरनेकी वस्त पै बहुत मोह करना श्रोर श्रानहुई वस्तुकी चाह करनी. जैसेकी मेरी पनोसीकी इ-कान हवेली स्री श्रादिक क्या श्राही है, श्राह मेरे ऐसी ऐसी क्यों न हुई मुफेनी ऐसी चाहीये. इत्यादि तीव श्राजिलापा करनी न चाहीये इति तृतीय गुणवृतम् ए ।। ख्रिय, प्रथम शिकावत प्रारंजः ॥ प्रथम शिकावतमें सामायक करें सो सामा-

安米·米米·米米·米米·米米

华(5)米米(5)米米(5)米 यिक ज्यार प्रकारकी. इञ्यथकी १ केत्रथकी २ काल्यकी ३ जावथकी ४ ते इञ्य यकी सामायिक १ तथा १ खेत्रथकी खोक प्रमाणकाखथकी १ घनी तथा ४ घनी ३ नावथकी शान्ति प्रणाम खाँर सर्वजूत खात्मकल्प राष्ट्र मित्रसम ४ इत्यादि खायवा ४ प्रकारकी सामायिककी शुद्धता सो १ द्रव्यथकी १ खेत्रथकी ३ काल्यकी ४ जाव-की. सो ज्व्यथकी सामायिक शुद्ध सामायिकका जपगरण शुद्ध अर्थात् आसन \*\*\* शुद्ध रके जैसेकी बहुत करमा तप्पम आदिकका न रक्षे क्योंकी कोई मकोमी आ-दिक जीव मसला न जाय छौर बहुत नर्म नमदादिककानी न रके क्योंकि कोई 米 पूर्वोक्त जीव फसके न मर जाय. सोलोइ तथा कंगलं तथा बनात तथा खीर सामा-न्य वस्त्रका श्रासन रके जर पञ्चर श्रादिककी नारी माला न रके. सूतकी तथा \*\*\* काष्टकी माला सोजी इलकी होय तो रके और पूजन आनुपूर्वी पोधी शुद्ध रकें १ केत्रथकी सामायिक शुद्ध सो पूर्वोक्त एकांत स्थानक सामायिक करें ख्रिपित नाटक \*\* चेटकके स्थान तथा चुल्ले चक्कीके पास न करें. क्योंकी नाटक चेटक रागादिक देखने सुननेसं शायद श्रुति सामायिकसं निकल जाय ख्रीर चुह्ने चक्कि पास सचित्तका

\*\*\*\*

\*\*\*\*

FOX \*\*

संघट्ट होय जाय तथा बालबचेके खावजावसें चित्त जंग होय जाय इत्यर्थः र खीर लामायिक शुद्ध सो लघुनीति वमीनीतिकी बाधाका काल न होय तथा राजादिक के खुलानेका यानि कचहरी जानेका काल न होय क्योंकी चित्त व्याकुल होय जा यगाकि कब सामायिक पूरी होय खीर कब जाऊं इत्यर्थः र जावशुद्ध सो पूर्वोक्त जावका शुद्ध रखना ॥ इति प्रथम शिक्तावतम् ॥ ए ॥

恭幸奉奉

।। ख्रय हितीय शिक्तावतम् प्रारंज ।। हितीय शिक्तावत दिशावकासी सो उठं ख्रीर सातवें वतमें दिशाका ख्रीर उपजोग परिजोगका विस्तारसहित ख्रीर यावज्जी वतक प्रमाण कियाथा सो उसमेंसे दसवें दिशावकाशीवतमें दो घमीसें लेकर चार ज मास लगकी बहुत मर्यादा कर लेवें यथा सूत्रम् ।।इति हितीय शिक्तावतम् ।।१०।।

॥ ख्रथ तृतीय शिक्ताव्रत प्रारंजः ॥ तृतीय शिकाव्रत पोसोपवास सो हितीया पंचमी ख्रष्टमी एकादशी चतुर्दशी तथा पक्तीके दिन वा जिस दिन वन ख्रावें उसी-दिन पोषधसाख ख्रथीत एकांत मकानमें चारों ख्राहार मैथुन ख्रीर सावद्य ज्यापारका परित्याग करके सूर्योदयसें ख्रगखे सूर्योदय तक बेठा रहें यथा सूत्र पोसा करें

देवगुरु धर्मकी महिमारूप खाध्याय करें श्रीर पमना पमाना सिखना सिखाना श्रा-दिक धर्मकार्य करता रहें छौर जो पूर्वोक्त तिथियोंको पोषावत न बन छावें तो प-दीको जरूर करें छर जो पद्मीको न बन आवें तो चोमासीको करें और जो चो-मासीकोत्री न बन आवें तो ठमठरीको तो जरूरही पोपा करें क्युंकी वर्षदिनमें एक दिन तो सफल होय जाय इत्यर्थ ॥ इति तृतीय शिक्तावतम् ॥ ११ ॥ ॥ श्रथ चतुर्थ शिकावत प्रारंपः ॥ चतुर्थ शिकावत श्रातिश्यसंविपाग सो तथा रूप श्रमण साधु त्यागी पुरुपको निर्दोप प्रासुक ब्यन पाणी देवें परंतु ऐसें न करेंकी १ प्रथम जो पासूक व्यर्थात् व्यविद्यादिकसे तथा पीसन कूटन प्रमुखसे निर्जीव पदा-र्थ हो चूका हो तो फिर उसको मिचत्त फल फूल बीज आदिक उपर रखना नही श्रीर २ दूसरे सचित्त वस्तु करके पासूक वस्तु को दक्षे नही क्योंकी जो ऐसे रखेंतो उसको साधु महापुरुपके पिन्छाजनेकी दान छाटिन कसे होगी छोर जनकी जाव-ना बिनतीनी निष्फल होय जायगी छोर र तीसरी साधुकी निकाकी वस्त बीते पी-बे जावना जावनी सो कालाइकम्म दोष है क्योंकि समयपर जावना जावें तो ज्ञा-१७

\*\*\*\*\*

\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*

यद सुफलजी होय जाय खोर विना समय तो छाकालमें मेघ मागनेवत है छोर ध चोछे जो गृहस्थी छाप एकांत बेठा हो तो प्रमादके वस होके दूसरेको छाहारपानी देनेका काम न सोंपे छपितु छापही देवे क्योंकी छार्यदेश कुल छादिकी सामग्री बिना सुपात्रदानकी योगवाइ कहां घरी है इत्यर्थः ख्रीर ५ पांचवे ख्राहारपाणी दे-नेक पहिलो वा पीठे छाहंकार न करे जैसेकी में बना दाता हुं मेरे तुख्य छोर यहां कौन दाता है हे नाथ जो आपको चाहिये सो यहांसे खे जाया करो अथवा मै दान इंगा तो लोक मेरी वनाइ करेगे खपित निर्जरा मोकार्थ जत्साह सहित दान देवे सो इस रीतीसे जैन धर्मकी प्रजावना होती है।। इति चतुर्थ शिदा त्रतम्।। इति बारह वत संपूर्णम् १२.

\*\*\*

李朱宗本李泰

बारे जावना. १ व्यनित्य जावना. यह हमारा शरीर वैजव खर्झी जैर कुटुंब परिवार ए सर्ब विनाशी है हुं आप अविनाशी हुं तो नश्वर वस्तुमें नाहक मूर्ज करके बुव्ध हुवा हुं. १ अशरण जावना. मृत्यु समय मैरा एश्वर्य खर्झी जैर कुटुंब परिवार मेरेकुं बचावेगा नही जैर सायजी कोइ करेगा नही अशरण ऐसा मुजकुं एक धर्मकाही

शरणा हे ३ संसार जावना. में (हमारी श्रात्मानें) यह संसार समुद्धमें जमतां श्रनं-ता जब कर्या हे अब में जस बंधनसे कब ब्रुटुंगा ४ एकत्व जावना. यह मेरी आत्मा एकखी हे एकखी आइ हे परनव एकखीही जावेगी जर किया अशुन कर्म्मफल थापही जोगेगी ए अन्यत्व जावना. हुं किसीका नही हुर नही कोइ मेरा है ६ अशु-चि जावना. यह जदारीक शारीर व्यपवित्र हे मलमूत्रकी लान हे रोग जर जराका घर है में तिएसे जुदा हुं 9 ह्याश्रव जावना. मिथ्यात्व द्यावत प्रमाद ह्यागुज योग र्जर कंषाय यह पांच पापकुं प्रवेश करणेका रस्ता है खर्थात खाश्रव है ए संवर जा-वना. समिकत त्रत पचलाण व्यप्रमाद शुन्न योग उर व्यक्षाय यह पांच व्यावतां कर्मकुं रोकणैका दरवाजा हे अर्थात संवर हे ए, निर्क्तरा प्रावना खनशन जुनोदरी वृत्ति संदोप रस त्याग कायके क्षेष इंडिय पिनसंखीनता प्रायश्चित विनय वैयावच शास्त्र पठन ध्यान उर काउसग ये वारह जो पूर्व बंधे हुवे पापोक्कं बालनें वाले श्रमिसमान निर्झिरा है १०, लोकस्वरूप जावना. मे श्रमुक घरमें हुं याने क्रवाके में-मकवत श्रहंकारमें रह्या हुं परंतु चवदह राज ओकके श्रामी में जर मेरा रहिणेका

स्थान किस गिणतमे जिना हुवा मनुष्यका खाकारे रह्या चवदह राजलोकमे नीचे खुवनपति व्यंतर जेर सात नरक हे त्रिजीमे खढाइ दीप हे जंचे बारे देवलोक नव श्रेवेक पांच खानुत्तर विमान जेर जपर खनंत सुखमइ पित्र सिष्ठगतिकी नजीक शिष्ठशिला हे ११ धर्मी जावना जव २ में जमण करतां २ सम्यक ज्ञानकी प्रसादी मेलणी खिति इर्लिज हे १२ बाधिइर्लिज जावना धर्मके जपदेशक तथा शुष्ट शास्त्रका बोधक एसे गुरु जेर श्रवण मिलना खित किन है ।। इति जावना ।।

米の米米の米

来

## ॥ श्रथ तेरें बोख खिख्यते ॥

条条条条条条<br/>

治学本会会

米京本東京

१३ तेरे १३ किया. खाठा दंमे १, खाणाठा दंमे २, हिंस्या दंमे ३, खाकस्मात दंमे १, दि-दिविपर्यास दंमे ७, मोसवतीए ६, खदिन्नादाणवतिए ७, खन्नज्ञवत्तिए ए माणवतिए ए, मितरदोसवत्तिए १०, मायावत्तिए ११, खोजवत्तिए १२, इरियावही १३. १३ तेरे बोल हुवे जिहां साधू चोमासो करे बेरिंडियादिक जीव घोमा होय १, कीचम कादो श्रोमी होय १ जन्मार पासवणकी जायगा निरवद्य होय ३, श्रानक साताकारी हुवे ४, दिह दूध घृत गोरस घणो होय ४, बस्ती घणी होय ६, राजवैद्य होय ७, खौषधनेषध चाहिजे सो मिले ए, श्रावक कोठे धान घणो होय ए, गामरो ठाकुर रागी होय १०, पाखंमीयोंका जोर थोमा होय ११, आहार पाणीनी साता होय १२, सिद्याय करऐोकी जायगा जुदी होय १३. १३ तेरे तिण्गा जन्मरूपणी रूई मरणरूपणी तिण्गा १, संयोगरूपणी रूई वियोगरू-पीया तिएागा ३, साता रूपणी रूई छासाता रूपीया तिएागा ३, संपदा रूपणी रूई

张·朱安子·朱安子·朱安子·朱安子·朱安子·朱安子·朱安子

**ट्यापदा रू**पीया तिएागा <sup>ध</sup>, इरख रूपएी रूई सोच रूपीया तिएागा ८, सिलरूई कुशील रूपीया तिएागा ६, ग्यानरूपी रूई छाग्यानरूपी तिएागा ७, सम्यत्क रूई मिथ्यात्वरूप तिणगा ए, संयमरूप रूई असंयमरूपी तिणगा ए, तपस्यारूपी रूई क्रोधरूपी तिएागा १०. विवेकरूपी रूई ख्रानिमानरूपी तिएागा ११, सनेहरूपी रूई मायारूपी तिणागा १२, संतोष रूपणी रूई लोज रूपीया तिणागा १३. १३ तेरे वोख. विद्यामें बुद्धिवंत नही .१, धर्मका प्यारा नही २, धनवंत नही २, जातका निर्मेख नही ४, दानको दातार नही ५, शूखीर नही ६, रूपवंत नही ७, पंमित नही ए, बहुश्रुति नही ए, सो जागवंत नही १०, मिथ्यात्व गया नही ११, सदा-काल जली मनमें खावें नही १२, तपसी नही १३. १३ तेरे काठीया. दहा. जूवा १, त्यालस २, सोग २, जय ४, कुकथा ५, कौतिक ६, कोह ७, ऋपण बुद्ध ७, श्रज्ञान ए, ज्रम १०, निद्धा ११, जर मद १६, मोह १३. १३ वेवढ पाम वाटमे, करे खपडव जोर, जैसे देश गुजरातमें कहे काठीया चोर. २ आ-खस कर्म काठीयो १, मोइ कर्म काठीयो २, श्राजस (लगण) कर्म काठीयो ३,

秦本本的本本色本本本 \*\*\*\* 未決 来来

प्रमाद कर्म काठीयो ४, कषाय कर्म काठीयो ५, रोग कर्म काठीयो ६, ख्रविनय कर्म काठीयो ७, मान पूजा कर्म काठीयो ७, जय कर्म काठीयो ७, ख्रंतराय कर्म काठीयो उपदेश नही लागे १०, ख्रपजोग कर्म ११, निद्या कर्म काठीयो १२, सम-दाणी कर्म काठीयो १३.

赤谷や赤谷

(本本の字本の字本)

श्रजीवतत्त्वना १४ बोटा कहें हें. धर्मास्तिकाय स्कंध १, धर्मास्तिकायदेश २, धर्मा-स्तिकाय प्रदेश 🐧 द्याधर्मास्तिकाय स्कंध ४, द्याधर्मास्तिकाय देश ४, व्याधर्मास्तिकाय प्रदेश ६, श्राकाशास्तिकाय स्कंध ७, श्राकाशास्तिकाय देश ७, श्राकाशास्तिकाय प्रदेश ए, कालवृत्तीना लक्षण १०, पुद्रलास्तिकाय स्कंध ११, पुद्रलास्तिकाय देश ११ पुद्गलास्तिकाय प्रदेश १२, पुद्गलास्तिकाय परमाणु १४. काल प्रमाण १५ जेद. प्रथम द्यति सूक्ष कालने एक समय किह्यें १, तेवा ट्यसं-ख्याता समये एक ख्राविद्यका थाय २, तेवी १६९९९२१६ ख्राविद्ये एक मुहूर्त था-य ३, त्रीस मुहूर्त्ते दिवस एटले एक घ्यहोरात्रि थाय ४, पंदर ध्यहोरात्रे एक पख-वाम्युं थाय ए, वे पखवामीये एक महीनो थाय ६, बार महीने एक वर्ष थाय ७, तेवा ७०५६०००००००० वर्ष एक पूर्व थाय ए, तेवा द्यसंख्याता पूर्व एक पद्योप-म थाय ते खावी रीते च्यार गांज जंमों छाने च्यार गांज पहोलों गोंल खाकारेती

京学 朱宗 李宗

李本本李

\*\*\*\*

\*\*\*\*\*\*\*

\*\*\*

न योजन जांजेरी परिधिवास्तो एक पट्य कटपवो ते माहि उत्तर कुरुकेत्र संबंधी यु-本本本学 李本文本文学 本文本本文本本文本本文本本 गलीयानो रोमं एहवा सूक्ष वे के ते ४०ए६ रोम एकवा करीये तिवारे क्मेजूमि मनुष्यनो एक बाल थाय एहवा ते युगलीयाना सूक्ष रोम हे ते रोम लंबाइये एक तसुनो लेइने तेना सात वसत छा। छा। कटका करीये तेवारे २०ए७१५२ कटका थाय तेवा कटके करी पूर्वोक्त पालो जरीजे पढ़ी ते एकक कटको सो सो वर्षने आं-तरे काढतां जेवारे ते पट्य खाखी थाय तेवारे संख्याता वर्ष थाय तेने बादर पट्योपम कहींयें अने ते पूर्वोक्त एकेका रोम खंमना छासंख्याता खंम करीने तेवा खंमे ते पू-वैक्ति कृप एवी रीते ठांसीने नरवों के तेना जपरथी चक्रवर्त्तनी सेना चाद्धी जाय तो पण ते दबाय नहीं पत्नी ते एकेको सूक्ष लंभ सो सो वर्ष काढतां आसंस्थाता व्यतिक्रमे उते ते पट्य खाली थाय तेवारे एक पट्योपम थाय है ए, दश कोमाको-大学大学大学 मी पृंद्योपमे एक सागरोपम थाय ११, दश कोमाकोमी सागरोपमे एक णी थाय ११, दश कोमाकोमी सागरोपमे एक जत्सार्पिणी थाय १२, जत्सिपिणी था वसार्पिणी मिली एक कालचक्र थाय १३, श्रानंता कालचक्रे एक पुद्रल परावत्ते थाय

एवा श्वनंता पुद्रख परावर्त्त संसारमें परिज्ञमण करतां जीवे व्यतिक्रम्या १४. संघपट्टा नाम ग्रंथ तथा गुणप्राप्त नाम ग्रंथमें सम्यक्तने लायक मनुष्यमें चवदे बोल पांचें. पहिले श्रापणी श्रात्मारो कब्याण करनेकी दृढ इहा होय १, गुणश्राही होय २, जूठने निंदवे २, विनयवंत होय ४, निष्कपटी होय ४, सत्यवादी होय ६, पांचुं इंडियाने दमणहार होय 9, कोमल हृदयरो धणी होय 0, नीतिवान होय ए, थिर वित्तनो धणी होय १०, हिमतबाहाक्टर होय ११, खरे धर्मरो श्रास्थी होय १२, बुध-वान होय १३, विवेकवान १४. शिक्ताके १६ बोख. १ मातापिता गुरु तथा मोटा पुरुषनो विनय करवो क्रेशने थानके मौनपणुं धारण करवुं, ३ इंडीयो सर्वथा वश राखवी, ४ एक छाद्वर शीखवनारने पण गुरु करी मानवो, ए पोताना ख्रवगुण शोधी काढवा, ३ महोटा पुरुष घेर ख्रावें तो जना थह सन्मान देवुं, 9 दोस्तदारी मित्राचारी पंनितो साथे राखवी, ए नवांनवां शास्त्र वांचवानो व्यन्यास राखवो, ए जे व्यापणी सगी थती नथी तेनी साथे बा व्य-थवा बेन वा माता कहीने बोखवानो रीवाज राखवो १०, पुत्र पुत्रीने नानपणमांथीज

सार्। संगत राखवी सदविद्या तथा धर्मना मुखतत्त्व शिखावना ११ जवान व्यवस्थामां पांचे इंद्योंने वहा करवी तथा रागहेप विषय छाने कपायादिक जीतवा, १२ हुं मृ-खुना मुखमां रह्या हुं मारुं छायुष्य क्षणमात्र नथी एम मानी यथेष्टदान धर्म छाच-रवा, १३ सर्व वस्तुनो नाश थतो होय तोपण पोतानुं वचन ख्रवस्य पाखनुं, १४ क-रवुं होय ते बनते प्रयत्ने ज्ञाननी अने ज्ञानीनी विनय प्रक्ति करो अने खबुनीति वर्मीनीति स्नान मैथुन त्यने जोजन करती वखते शब्द जन्नारण न करो. १४ जीवका नेद १४. एकेंड्नीका ४ नेद. सुक्ष एकेंद्री व्यपर्याप्ता १, पर्याप्ता १, बादर ए-केंद्री खपर्याप्ता ३, पर्याप्ता ४, बेरेंद्री खपर्याप्ता ४, पर्याप्ता ६, तेरेंद्री खपर्याप्ता ७, पर्याप्ता ए, चोरेंडी व्यपर्याप्ता ए, पर्याप्ता १०, क्यमन्नीपंचेंड्ी व्यपर्याप्ता ११, पर्याप्ता १२. सन्नी पंचेंड्यी व्यपर्याप्ता १३, पर्याप्ता १४. \*\*\*\*\*\*\* ग्रणगंणा १४. मिथ्यात्व ग्रणगंणो १, मास्त्रादन ग्रणगंणो १, मिश्रग्रणगंणो ३, खारति सम्यग्दष्टि <sup>ध</sup>, देशरति गुणठांणो <sup>५</sup>, प्रमत्त गुणठांणो <sup>६</sup>, खाप्रमत्त गुणठां-णो ७, नियट्विदर गुणठांणो ७, श्वनियद्विवदर गुणठांणो ७, मुझ संपराय गु-

णगंणो १०, जपशांत मोहनी गुणगंणो ११, क्विणमोहनी गुणगंणो १२, संयोगी केवली गुणगणो १३, स्रयोगी केवली गुणगंणो १४. बमुर्विम मनुष्य १४ विकाणे जपजें. जचारेसुवा वमीनितिमें १, पासवणेसुवा मूत्रमें २, खेलेसुवा खंखारमें ३, संघाणेसुवा नाककें मेलमें ४, वातेसुवा जलटीमें ४, सुवा पीत्तमें ६, सोणिए सुवा खूनमें ७, पोयणीसुवा परुपासमां ७, सुके सुवा वीर्यमें ए, सुक पुग्गलपिसामे सुवा वीर्य सुका हुता फेर गिला हुवें उसमें १०, नगर नि धमणे सुवा शहरकी लालमें ११, स्त्री पुरुष संयोगे सुवा १३, सबे असुङ ठाणेसुवा. पूर्व १४ ना नाम. उत्पात पूर्व १ हायी प्रमाण मसी लिखता लागे १, अप्रणी पूर्व र हाथी प्रमाण मसी खिलता खागे २, वीर्य प्रवाद पूर्व ४ हाथी प्रमाणे मसी खि-खता खागे ३, त्र्यास्ती नास्ती पूर्व ए हायी प्रमाणे मसी खिखता खागे ४, ज्ञानप्र-वाद पूर्व १६ हाथी प्रमाण मसी खिलता खागे ५, सत्यप्रवाद पूर्व ३९ हाथी प्रमाण मसी लिखता लागे ६, श्रात्माप्रवाद पूर्व, ६५ हाथी प्रमाणे मसी लिखता लागे ७, कर्मप्रवाद १२० हाथी प्रमाणे मसी खिलता खागे ए, प्रत्याख्यान पूर्व १५६ हाथी

\*\*\*

\*\*\*

प्रमाणे मसी खिलता खागे ए, विद्यापवाद पूर्व ५१२ हाछी प्रमाणे मसी खिलता लागे १०, श्रविद्या पूर्व १०२४ हाथी प्रमाणे मसी लिखता लागे ११, प्राण पूर्व २०४० हायो प्रमाणे मसी लिखता लागे १२, किया विशाल पूर्व ४०ए६ हायी पे माणे मसी लिखता लागे १३, लोकविंडसार पूर्व ७१ए२ हाथी प्रमाणे मसी लिखता खागे १<sup>४</sup>, सर्व हाछीनी संख्यां १६३७३ हुवा. १४ जंबुद्दीपमें १४ मोटी नदी. गंगा १, सिंधू २, रोहिता २, रोहिसा ४, हरिकंता ५, हरि सिंखें ६, सीतोदा ७, सिता ७, नरकंता ए, नारीकंता १०, सोवन्नकुंखा ११, रूप-कुंला १२, रत्ता १३, रत्तवङ् १४, ए सर्वने १४ लाख ४६ हजार ए॰ नदीलनो \*\*\* परिवार है. १४ श्रीरहंतनी माता १४ सुपना देखे. हाथी १, रूपन २, सिंह ३, लक्षीदेवता ४, फूल-未茶學亦 माला ५, चंध्नमा ६, सूर्य ७, धजा ७, कुंत्र ए, पद्म सरोवर १०, खीर समुद्ध ११. देवविमान १२, रत्नराशि १३, ट्यमिशिखा १४. १४ देक्तामांहि १४ वोल जपजवाना. श्यसंजय प्रवियद्वदेवा जघन्य तो प्रवनपति ज-१८

स्कृष्टो जपरली नव प्रैवेयकमे १, व्यविराधक साधु जघन्य पहिले देवलोक जल्रुष्टो १६ देवलोकमें २, विराधक साधु जघन्य जवनपति जल्हरो पहिले देवलोकमें २, श्रविराधक श्रावक जघन्य पहिले देवलोकमें जल्हरो बारमें देवलोकमें ४, विराधक श्रावक जघन्य जवनपति जल्रुष्टो ज्योतिषी ५, त्र्यसन्नी तिर्यच जघन्य जवनपति ज-त्कृष्टो वाण्वयंतर ६, बाखतपसी जघन्य प्रवनपति जत्कृष्टो जोतिषी ७, कुतुह्छीयो साधु जघन्य जवनपति जुरुष्टो पहिले देवलोक ए, प्रवार्थक त्रिदंमीया जघन्य ज-वनपति खकुष्टो पांचमे देवलोक ए, निन्हवजमाली जघन्य प्रवनपति उदे देवलोक हेंठेकिलमेषी १०, सन्नीतिर्येच जघन्य जवनपति जत्कृष्टो व्याठमे देवलोक ११, व्या-जीवकामति गोसालो जघन्य सौधर्म जुरुष्टो। बारमे देवलोक १२, श्राजियोगी साधु जघन्य जवनपति ज्रुत्रष्टो वारमे देवलोक १३, स्वलिंग साधु दर्शणविवनगा जघन्य प्रवनपति जल्हरो जपरली ग्रीवेकमां १४. श्यवनीतके १४ बोल बार बार कोध करें ते श्यवनीत १, प्रतिबंधका कोध करें ते श्य-वनीत २, मित्रकी मित्राई ग्रांमे तो अवनीत ३, सूत्र जणी मद करें तो अवनीत ४

多茶茶茶家 激荣 \*  आपके जगुण पारके माथे देवें तो अवनीत ए, मित्र जपरी कोप करें तो अवनीत ६. मित्रकी पूठ पांचे निंद्या करें तो व्यवनीत ७, निश्चयकारी प्राषा बोंलें तो व्यव-नीत ए, जोही होय तो खननीत ए, छाहंकारी होय तो खननीत १०, संविजागी कीसीकुं नहीं हुवें तो व्यवनीत ११, व्यपितीकारीयों होय तो व्यवनीत १२, खोजी होय तो खवनीत १३, इंड्रीयो मोकली मेले-विषय लालची ते खवनीत १४. १२ सातावेदनी १४ बोख करी बांघे. दयावंत होय तो १, हर्षसुं दान देवें तो २, क्मा करें तो र, व्रतपचकाण शुद्ध पालें तो ४, पांच इंड्वी वश करें तो ४, व्रकायरी र-का करें तो ६, शुद्ध मन शीख पाखें तो ७, ग्यानवंत होय तो ७, साधुको वंदणा नमस्कार करें तो ए, सूत्र सिद्धांत जाएं तो १०, तीर्धिकरजीने वंदणा नमस्कार करें तो ११, ट्यनुकंपा करें तो १२, धर्मापदेश देवें तो १२, सत्यवचन बोटों तो १४. चक्रवर्त्तिके १५ रत्न. गाया सेणावेष्ट सेन्यापती १, गाहायश्र गायापती २, पुरोहिया पुरोहित ३, वढेइ सुधार ४, चियनाकरे ज्ञिरयणराष्ट्रकुटों स्त्रीरत्न ४, वयद्वतले करी 本条件本 हस्ति रत्न ६, तुरीयी अश्वरत्न ७, चका चकरत्न ७, असि खकरत्न ए, उत्र हत्ता

१०, दंमेय दंमरत्न ११, श्राज्यह सालाहवंति चत्तारी चम्म चर्मरत्न ११, मणी मणी रत १३, कांगणी कांगणीरत १४. निही सिरीगेहे चिकणो हुंती. चवदे ग्यानका श्रातिचार. गाथा जंवाइदं श्राघा पाठा सूत्र श्रर्थ प्राप्या १, वचा में छीयं जपयोगरहित प्रएया २ हिए। खिरां हिए। अहर प्रएया ३, अचलियं धिक श्राह्मर प्राप्या ४, पयहिएां पद छो। प्राप्यो ४, विनयहीएं। विनयरहित प्रापे ६, जोगहीणं तीन जोग ठाम राख्या विना प्रणे ७, घोसहीणं शुद्ध ज्वारहीणं ७, सुद्धितं नेलो ज्ञान खिवनीतने दीघो ए, इद्य पिनिवयं खिवनीतपणे ग्यान लीघो १०, श्रकाले कर्च सिन्नार्च श्रकालमें सन्नाय कीनी ११, काले न कर्च सिन्नार्च खरे वखते पेंढे नही १२, व्यसिक्षाए सिक्षायं व्यसिक्षाइमें जएया होय १२, सिक्षाएन ●米米(本・米米米 सिन्नायं सिन्नाय करवा योग्य जायगामें सिन्नाय नही करी होय १४. उत्तम पुरुषके १४ खदाण. सुमतिवंत १, शीखवंत २, संतोषी ३, सत्संगी ४, स्वजन ४, साचाबोला ६, सत्पुरुष ७, समेला ७, सुलक्कण ए, सुलक्का १०, सुकुलीन ११, गंजीर १२, गुणवंत १३, गुणक १४.

१४ वर्मी चोवदह विद्याका नाम. नजोगाजिनी १, परकाय प्रवेशनी २, रूप परावर्तनी ३, स्तंजनी ध, मोहनी ५, सुवर्णसिक्दि ६, रजतसिक्दि ७, रससिक्दि ७, वंधयोजिनी ए, शक पराजयनी १०, वशीकरणी ११, जूतादि दमनी १२, सर्व संपत् करी १३, शिवपद्ध प्रापणी १४. वक्ताना चवदह गुण लिखतें है. प्रश्रव्याकरणोक्त शोल बोलनो जाण पंमित होय १, शास्त्रधी विचार जाणे २, वाणीमांहे मीठाश होय ३, प्रस्ताव व्यवसर जेलंबें ४, सूत्य बोर्ले १, सांजलने वालाका संशय दूर करें ६, छानेक शास्त्रवेत्ता गीतार्थ जप-योगी होय ७, द्यक्षिने विस्तारी तथा संवरी जाणे ७, व्याकरणरहित बतां कंठनी पापामें पिए। अपराब्द न बोटों ए, वचनसें सपाजनने हर्ष करें १०, प्रसार्थ ग्राहक श्रुजिमानरहित १२, धर्मवंत १३, संतोपवंत १४. ए चवदे वोखका जाणकार होय सो वका जाएना. 30 श्रोताका १४ गुण. प्रक्तिवंत १, मीठाबोखा २, गर्वरहित २, सांप्रखवा उपर रुचि ४, चंचखतारहित एकात्रवित्ते सुणे उर धारे ४, जैसा सुणे वेसा प्रगट व्यद्वर कहे ६,

प्रभुका जाण ७, घणा शास्त्र सुएया तिएके रहरय जाएँ ७, धर्मके कार्य आखस्य न करें ए, धर्म सुणतां निद्धा न करें १०, बुद्धिवंत होय ११, दाताररूप गुण होय १२, जिसके पास धर्म सुणे जसका पिठामी गुण वर्णवें १३, कोइनी निंदा न करें किसीके साथ वादिववाद न करें १४. १४ श्राय चवदह नियम दिन प्रति प्रमाण श्रावक करें सो विचार खिखतें है. गाथा-स-चित्त १ दब २ विगई २, वाणिहि ४ तंबोख ५ वज्ञ ६ कुसुमेसु ७ । वाहण ए सयण ए विलेवण १०, बंज ११ दिशि १२ न्हाण १३ जत्तेसु १४ ॥ १ ॥ व्यर्थ-श्रावक नि त प्रति नियम संजाद्धं दिनमें जो चीज अपणे अंग खाते खंगे उसका प्रमाण इस तरेंसें करें. मट्टी सर्व जाती पाणी सर्व जाती जख खाश वायु वनस्पतिका बेदन जे-दन तरकारी फल परवल नींमी तोरी केला मतीरा ककमी लखुज निंखु आंब नारं-गी जामुण इत्यादिक जो चाहीयें सो रखें बाकीका त्याग करें १, दूसरा ख्व्य प्र-माण तहां धातु बस्तुकी शाली तेसे व्यपणी श्रंगुली विगर जो चीज मुमें मालणेमें श्रावें सो सब ज्व्यकी गिणतीमें श्राता है नामांतर स्वादांतर स्वरूपांतर परिणामां-

11

\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\* तर इन्यांतर होणेसें इन्य जुदा गिणनेमें आतें है जेसें गहुं एक इन्य जसकी प-तां रोटी फीणा रोटी वेढवारोरी वाटी यह सब जुदा इज्य कहां वाता है इसतरे जात दाल रोटी कढी मांमीया कट्ट तरकारी सब जात पापम खीचीया सब तरेके फीणी घेबर लाजा इत्यादिक सर्व डब्यमेंसे जो चाहीयें सो रखें बाकी नियम करें जलहर-पणे एक ज्ञ्यका नाम लेकर रखें सो एकही ज्ञ्य कहलावें जैसेकी मेवेकी बीच-मी तो वह व्यनेक ध्वय सेवणी हैं तोजी एकही ध्वय कहीयें इति ध्वय प्रमाण २, तीसरा विगय प्रमाण तिहां दश विगयोंभेंसे श्रावककुं च्यार महाविगयका तो त्यागही होता है जेसे मदिरा १, मांस २, मकण ३, उत्सहत ४. प्रक्विगय ६. घृत १, तैल २, मीठा ६, दूध ४, दही ५, कढाईकी तली चीज ६. यह धारणा प्र-माण रकें इति विगय नियम ३, पाद त्राण नियम तहां जूती लमानं मौजा छप-ना इतना विराणा ऐसे नित्य धारणा प्रमाणे मोकला राखें इति पानिह नियम ४, ष्यय पांचमा तंबोल नियम. पान बीमा सुपारी लोंग इलायची बोटी चर बमी जा यफल जावंत्री प्रमुख सर्व खादिम वस्तु किरियाणेकी चीज घारणा प्रमाणे रके इ-

\*\*\*

तथा सात मोक्खा राखें, पोसाक एकमें पंचनी १ जामा २ कमरबंध ३ धोती ४ इक पट्टा जत्तरासण ए यह पांच वस्नकी एक पोसाक कहोजें एसेही स्त्रीके स्त्री मुजब स्त्री एसा नहीं कर शंके तो ४० तथा ए० कपना दिनमें मोकला राखें पराया वस्न जुलचूकमें खावें तो जयणा इति वस्र नियम ६. खात्र सातमा फूल नियम. गुलाव चंपेली बेला केवना केतकी कुंद मचकुंद सेवती चंपा मालती आदिक सब फुलका थारणा प्रमाण राखें इति फूल नियम ७. अय आठमा वाहन नियम. रथगामी व हुली इका बग्धी कोच पालेखी घोमा हाथी ऊंट नामजाम म्याना इत्यादिक सब श्रेंख वाहन पाणीमें चलनेवाले मोर्पेखी बंतक घुम दोम लचकार मगर प्नसोध प-खवार वजरा नाव बोट इत्यादि संब तरहका तिरता फिरता चरता रेख वगेरे सब प्र-कारके आसवारीकी धारणा करें इति वाहन नियम ए. श्रय शय्या नियम. पलंग खाट तखत चोकी पट्टा गद्दी कुरसी बनात सूजनी से ग्रुंजी दूखीचा चांनणी शीतख-पट्टी चटाई सफदर खतकी जालका चममेका कामला मुखमल व्यतलस कारचोपी

ति तंबोख नियम ५. श्रय उठा वस्त्र नियम. पोसाक वे तथा च्यार बढ़ा वस्त्र पांच

李子 朱安子 朱代子 朱代子子 李子子 朱安子 生代的

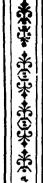
#9:X++KOX++KOX++K+3X++K+\*)X++K+3X++K+3X++K+3

秦安子也不是不安全 秦京李子也不是一 इत्यादिक धारणा प्रमाणे शय्याका प्रमाण करें इति शय्या नियम ए. ख्रय दशमा विखेपन नियम. सरसुंका राईका त्याटेका तेल फुलेल सब जातिका केसर चंदन क-पूर कस्तुरी कुंकुं इत्यादिक शरीरके सुल वास्ते तथा रोगादि कारणे शौषधादिकका विद्येपन फोर्ने परिमल प्रमुख आंखोमें छंजन इत्यादि छंगोपांगमें लगाणा सो वि-खेपन धारणा प्रमाणे प्रमाण करें इति विखेपन नियम १०. ख्रष्टा ब्रह्मचर्य नियम. रातको तथा दिनको सुई मोरेके दृष्टांत जोगादिकका प्रमाण करें स्वप्नेकी मनकी वचनकी जयणा इति ब्रह्मचर्य नियम ११. छाष्ट्रा दिशि नियम. पूरव १, पश्चिम २, दिकाण ३, जत्तर ४, श्रामकुण ४, नैऋतकुण ६, वायवकुण ७, ईशानकुण ७, श्र-धोदिशि ए, ऊईदिशि १०, यह दश दिशिका अपणे जाणें आणेंका प्रमाण करें चिंदी खिलणी आदमी नेजणा देशांतरकी चिद्धी वाचणी उसकी जयणा इति दि-शि नियम १२, ख्रेष्ट्र तरमा स्नान नियम. तहां ख्राजदिनमें स्नान २ वार ख्रेयवा ४ वार मोकेट्या परंतु पाणीका तोख रकें घमे प्रमुखकका प्रमाण करें एक खानमे इत-ना पाणी सरच करं ज्यादा नही गटाऊं इति स्नान करण नियम १३. ख्रिय चौद-

米米米米米米

मा जात नियम दिनमें जात २ सेर तथा २ वेर जीमूंगा ख्रथवा च्यार वेर जपरांत इविहार या चौविहार धारणा प्रमाणे राखें तथा दिनमें जख पीणेंमें खावें जसका प्रमाण राखें तोखरें या मापसें इति चवदे नियम विचार संपूर्णम् १४. एही नियम

चोतीसमें बोखमें जी विस्तारपूर्वक है.



李本

## ॥ अथ पनरे बोख खिल्यते ॥

余华李荣

१५ मनुष्य समजावणी १५ बोले. १ रूप क्रोध उक छांध न वहीं जें, २ जांग तमाखुं छा मल तजीजें, ३ बुरी गाररो संग न कीजें, ४ वेर बुराई कदे न लीजें, ४ न्यात जा-तमें फंद न पानीजें, ६ सात व्यसनसुं ऋखगा रहीजें, ७ चोरी जारी जूठ तजीजें, ए खोट दगारा वणज न कीजें, ए मोह मायामें निपट न कलिजें, १० छाथिर संसार सुं विरक्त रहीजें, ११ गृहस्य धर्म बारे व्रत कीजें, १२ इकमें चाख खरो जस खीजें, १३ इसा सूर किणसुं गंजीजें, १४ निरखोजी निर्भय गुरु कीजें, १५ साचा सुख मो-क्रा छीजें. १५ पनरे योग. १ सत्य मन योग, १ ड्यसत्य मनयोग, ३ सत्य मृषा मनोयोग, ४ ड्यस-त्य मुषा मनोयोग, ५ सत्य वचन योग, ६ व्यसत्य वचन योग, ७ सत्य मुषा वचन

《学术》学术学术学来《学术学术学术学 योग, 🛭 श्रासत्य मृषा वचन योग, 😃 श्रीदास्कि काय योग, १० श्रीदास्कि मिश्र काययोग, ११ वैकिय काययोग, १२ वैकिय मिश्र काययोग, १३ खाहारक काय-

योग, १४ श्राहारक मिश्र काययोग, १५ कार्मण काययोग. १५ सिद्धना जीव पन्नरे जेदे हैं तेहनां नाम. १ जिनसिद्ध. ऋषजादि तीर्श्वकर जाणवा, २ श्रजिनसिद्ध ते पुंनरिकादि गणधर जाणवा, ३ तीर्थसिद्ध ते प्रसन्नचंद्रादिक तथा गणधरादिक, ध श्रातीर्थिसिक ते मरुदेवादि जाणवा, ५ ग्रहस्यां धिंगसिक ते जरतच-क्रवत्त्यीदि जाणवा, ६ अन्यालिंगसिष्ठ ते तापसादि वेसे वहकलिवरी, ७ स्वालिंग सिद्ध ते साधु वेसे जंबुस्वामी प्रमुख, ए स्त्रीिंगसिद्ध ते राजीमत्यादि, ए पुरुषिंग सिद्ध ते गुणाब्यराजादि, १० नपुंसकिंग सिद्ध ते करित्रम नपुंसक गांगेयादि, १३ बुधबोधित सिद्ध ते पनरेसेंतीन तापसादि, १५ एक सिद्ध ते गजसुकुमालादि, १५ श्चनेक सिद्ध ते जस्तपुत्रादिक. १५ परमाधामी १५ जातका. गाथा-छांबे १ छांबरसे २ चेव, सामे ३ सबखे ४ तियावरे । रूदे ५ विरुदे ६ काले ७ महाकाले ए तियावरे ॥ ए ॥ व्यसीपत्ते १० धार्ष ११ कंने

वाद्ध १२ वेयरणो १३ । खरसरे १४ महाघोसे १५ ए ए पन्नरस परमाहामिया ॥शा ४ १५ पंड्य कमीदान नाम मात्र स्वरूप लिखतें है. कमीदान उसकुं कहते है जिस क-

※の水水の水水の水水の水

र्त्तव्यके करनेसं महा पापकर्मनी घ्यामदानी होय. इत्यर्थः प्रथम इंगालकर्म सो को-यखे करके वेचने ख्यार काचन्नि पजावें खगावें खर नाट फोकना इत्यादि कर्म करें नही १, छौर दूसरे वनकर्म. सो वन कटावें नही वन कटानेका ठेका खेवें नही १, सामीकर्म. सो गामी बहल पहिये बेमा हल चर्ला कोव्हु चुहा घीस पकमने पिंज-रा इत्यादि बनवाके वेचें नहीं ३, चोष्टा जामीकर्म. सो ऊंट बैख घोमा गद्धा गामी रथं किराची इनका जामा लावें नही ध, पांचवां फोमीकर्म. सो खोहेकी खानं वा बूण यादिककी खान खुदांवें फुमांवें नहीं तथा पञ्चकी खान फुमांवें खुदांवें ये पांच कुकर्म कहें है. व्यव पांच कुवाणिज्य कहतें है. प्रथम दांत कुवाणिज्य. सो हाथीके दांत जब्बुके नल गायका चमर मुगके सींग चममा जूता इत्यादिक वा-णिज्य करें नही १, दूसरा खास कुवाणिज्य. सो खास नीख सज्जी शोरा सुहागा मनिशिख इत्यादिकका वाणिज्य करें नही २, तीसरा रस कुवाणिज्य सो मृदिस मां-स चरबी घी राख मधु (शहत) लांम इत्यादिक ढीखी वस्तुका वाणिज्य करें नहीं ३ चोथा केशवाणिज्य. सो दिपद खनका खनकी सरीद कर जन्हें पाख कर नका कर

おのなると

वेचें तथा पंखी तोता मैना तीतर वटर मुर्ग प्रमुख छोकर वेचने तथा चोपदा गाय र्शेस बेल घोमा प्रमुख खरीदके पालने नका लेकर वेचना इत्यादिक वाणिज्य करें नही ४. पांत्रवा विष वाणिज्य. सो संखिया वहानाग व्यकीम हरताल प्रमुख तथा शस्त्र इत्यादि कुवाणिज्य कहें है. य्यव पांच सामान्यकर्म कहते है. प्र-थम यंत्र पीमन कर्म सो सरसों तिख इक्क आदिक पीखोंचे नही १, निखींबन कर्म सो बैख घोमा सस्सी करना तथा ऊंट बैखको दाग देना तथा कूत्ता खादिकके का-न पूंछ काटने तथा चोर खादिकको बेंत खगानें फांसी खादिक देनेका हुकम चढा-ना पर्ने ऐसा नोकरी सो इत्यादिक कर्म करें नही २, तीसरा दावामि दानकर्म. वनमें आग लगानी तथा खेतकी वाम फूकनी इत्यादि करें नही र, चौथा कर्म. सो कूवा तलाव आदिकका पाणी सुकावें खेतमें देनेको तथा नया पाणी पैदा करनेको इत्यादि करें नही ४, पांचवा व्यसति जन पोषणकर्म सो शौकके तीतर बटेर कबुतर कूत्ता बिख्ली प्रमुख पालणे पोषणे तथा जर इष्ट शिकारी पोषण इत्यादिक कर्म करें नहीं. इति पन्नरे कर्मादान १५.

李华泰

सुविनीतका १५ वोख. नीचा प्रवर्त्ते १, चपखपणारिहत २, मायारिहत ३, कतुहखप-泰安泰泰泰泰 णारहित ४, कर्कश वचनरहित ५, दीर्घ रोप न करें ६, मित्रसुं मित्राइपणो सेवें ७, सूत्र लिह मद न करे 0, ब्याचार्यादिकरी निंदा न करें ए, मित्रके जपर कोप न क-रे १०, मित्रके पूठ पाढें गुण करें ११, कखह ममतरहित १२, ग्यानतत्त्व जाणे १३, व्यनिजात विनेवंत १४, खज्यावंत इंडीग्रुप्ति १५. १५ बोख १५. समुद्रनी जपमाए संसाखर्णव. पूज्य जगवान समुद्रमें पाणी हैं, संसारह-李子子 米回米 米回米 泰本 पोये समुद्रमें कीसो पाणी हैं, जन्म जरा मरणरूपीयो पाणी हैं १, पूज्य जगवान समुद्धमें कादो हैं, संसाररूपीये समुद्धमें कीसो कादो हैं, कामजोग रूपीयो कादो हैं २, पूज्य नगवान समुद्धमेंतो फेण उठें हें, संसाररूपी समुद्रमें छाहंकाररूपी फिण \*①\*\*①\*\*\*①\*\* **उ**ठें हैं ३, पूज्य जगवान समुद्रमें तो दरमां हैं, संसाररूपी समुद्रमें त्रसनारूपी दरमा हैं ४. पूज्य जगवान समुद्रमें तो कखस हैं जबके हैं, संसाररूपी समुद्रमें नारकी ती-र्थंच मनुष्य देवतारूपी कलस जनके हें ५, पूज्य समुद्धमें मगरमह हैं संसाररूपी स मुद्रमें सबला निरबला मारें हें तीक मगरमह सरीखा जाणवा ७, पूज्य जगवान

समुद्रमें तो छुंगर हैं संसार्रूपी समुद्रमें आह करमरूपीया छुंगर हैं ए, पूज्य नग वान समुद्रमेंतो जबरीया पमे हे, संसाररुपी समुद्रमें दगाबाजी कपटरुपी जबरीया पमे है ए, पूज्य नगवान समुद्रमेंतों तीरे है संसाररुपी समुद्रमें खालोनरुपी तीरणो है १०, पूज्य जगवान समुद्रमेंतो सीगोटीया वे संसाररुपीसमुद्रमें तीनसें तेसव पालंमरुपी या सीगोटा है ११, पूज्य जगवान समुद्रमेंतो मोती माणक हीरा रत्न नीकछे है संसाररपी समुद्रमें सांधु साधवी श्रावक श्राविकारुपीया रत्न पदार्थ है १२, पूज्य जगवान समुद्रमें कल्लोखा हे संसाररुपी समुद्रमें खोजरुपी कल्लोखा हे १३, पूज्य ज गवान समुद्रमेंतो अिन हे संसार समुद्धमें क्रोधरुपि अिन है १४, पूज्य जगवान समुद्रमें काठो हे संसाररपी समुद्रमें मोक्तरपीयो कांठो हे १५.

张·朱〇米·朱〇米·朱

秦子子中一大小子子一大大子子一大大子子一大大子子一大大子

## ॥ श्रय सोखे बोख खिख्यते ॥

सूत्र सुयगर्नागका १६ श्रध्ययन. स्वसमय परसमय श्रध्ययन १, बेताली श्रध्ययन

李朱朱朱

१, जपसर्ग परीज्ञा अध्ययन ३, इहिपरिज्ञा अध्ययन ४, नरक विज्ञति अध्ययन ४, वीरश्रृष्ट र्याययन ६, क्वरील परिनासिया र्याययन ७. सकाम र्यकामवीर्य ख्राध्ययन 0, धर्म अध्ययनं ए, संगाधि अध्ययन १०, मोक्त मार्ग अध्ययन ११, समोसरण श्राध्ययन १२, जयातय श्राध्ययन १३, श्रंथ श्राध्ययन १४, जमित श्राध्ययन १५, गाहा ख्रध्ययन १६. १६ सोल वचन एक वचन घट पट वृक्त १, दिवचन घटो पटो वृक्ती २, बहुवचन घटा वृद्धा ३, स्त्री लिंग वचन कुमारी नगरी नदी ४, पुरुष लिंग वचन देव नर व्यस्हिंत साध ५, नपुंसकलिंग वचन कुम कमल नैए। ६, खतीतकाल वचन खकरोत् खजूत 9, श्रानागतकाल वचन करिष्यति प्रविष्यति पितस्यति U, वर्त्तमानकाल वचन क-रोति जवंति पर्वति ए, परोक् वचन ए कार्य इरो कियो १०, प्रत्यक वचन इमज है

\*\*\*\*

११, जपनीत वचन ए पुरुष रूपवंत १२, छपनित वचन जिम ए पुरुष कुरुपवंत १३, जपनित अपनित वचन जिम ए रूपवंत परं कुसी ियो १४, अपनित जपनीत व-चन जिम ए पुरुष कुशी दियो परं रुपवंत है १५, अध्यात्म वचन अग्न बोद्धे रुई वाणीयानि परे १६. १६ सोल सुल. पहिलो सुल काया निरोग १, बीजो सुल घरमे नही सोग २, तीजो सुल गुणवंता साथ ३, चोथो सुल जे स्त्री हाथ ४, पांचमो सुल जे रिण नही देणो ए, बढ़ो सुल जो धरमी तणो ६, सातमो सुल जो निर्ज़ वाम ७, ब्यावमो सुल च-खणो नहीं गाम ए, नवमो सुख जे मीठो नीर ए, दशमो सुख जे पंमित सीर १०, इग्यारमो सुल जो पौषधसाख ११, बारमो सुल जो चित विशाख १२, तेरमो सुल जो पुत सपुत १३, चवदमो सुख जो घरे विज्ञुत १४, पनरमो सुख जे केवलज्ञान १५, सोखगो सुल पोहचे निर्वाण १६. चंड्या राजाना १६ सुपना. कल्पवृक्तनी तुटी माल संयम् लेसे नही जूपाल १, सूर्य श्वकां आध्यमेरो जाण जाया पंचमकाखना तिणने न होसी केवखङ्गान २, तीजे

चंद्रमा चालणी समाचारी जोई? ३, जूत जुतणी नाचता दीठा ते पाखंमीयानो 本本·朱色本·朱色、朱色、朱色、朱色、 जोर होसी ध, बारा फणरो नाग दीठो तिएरो फल बारा बरसी काल पमसी ध, दे-वतारो विमान पांं किरीयो देख्यो तिएरो फल विद्यालिक विद्येद जासी ६, ज-करमी जपर कमख जग्यो देख्यो तिणरो , फख चार वरणा मांहि वाणीया के जिन धर्म रहसी ७, आगीयानो दीठो उद्योत बहु मिथ्यात अव्यं धर्मरी जोत ७, समुख सुको तीन दिस दिक्कणकानी थोमो पाणी दिक्कणमे जगवंतरो धर्म जाणी ए, हेम थालीमे श्वान साइ सीर सांम जंचकी लक्षी नीचके घर मांम १०, हाथी जपर चढयो वंदरो नीच कुलको राजा सुंदरो ११, समुद्ध मर्यादा लोपी तिवार सिख खोपी गुरु मावीतनी कार १२, महारथ जूता वार्जना धर्म करसी बहू तेज रहित रत्नज देस गरमा धर्ममे कुलंस विशेष १४, राजपुत्र बेल चढयो देस राजा मिथ्या धर्म संवेख १५, विगर मावत हाथी खनता मही बहु वर्षा आरे पां-चमे नही १६. १६ सोखे शीखका गुण. शुद्ध शीख पाखे तो कखंक खागे नही १, शुद्ध शीख पाखे तो

李条学条学 李安子 संसार समुद्ध रहित हुने २, शुद्ध शीख पाले तो साचो धर्म पाने ३, शुद्ध शीख पाले तो लोकमें जस होय ४, शुद्ध शील पाले तो देवता होय ५, शुद्ध शील पाले तो देवताका पूजनीक होय ६, शुद्ध शीख पाखे तो रूपवंत संपदा पावे ७, शुद्ध शीख पाले तो सर्प फूलकी माला होंय 0, शुद्ध शील पाले तो अमि शीतल होय ए, शुद्ध शीख पार्खे तो विष श्रमत होय १०, शुद्ध शीख पाखे तो सिंह मृग होय ११, शुद्ध शीख पाखे तो गज बकरी होय १२, शुद्ध शीख पाखे तो आपदासुं संपदा पामे १३, शुद्ध शीख पाखे तो दुणो दुमण खागे नही १४, शुद्ध शीख पाखे तो स-मुद्ध थाग देवे १५, शुद्ध शीख पाखे तो मेरू पर्वत टींबे सरीलो थावे १६. १६ सोले बोल देख्यारे चेला वना पांख सूवा देख्यारे चेला विना मोत मुवा देख्यारे वि-ना पान तरवर देख्यारे वेला विना पाल सरवर. जत्तर-देख्या गुरुजी विना पांल सु-वा देख्या गुरुजी विना मोत मुवा देख्या गुरुजी विना पान तस्वर देख्पा गुरुजी वि-ना पाल सरवर. प्रश्न-क्याहेरे चेला विना पांल सूवा क्याहेरे चेला विना मोत मुवा क्याहेरे चेला विना पात तस्वर क्याहेरे चेला विना पाल सरवर, उत्तर-मनहै गुरू-

जीविना पांल सुवा १, निद्धा है गुरुजी विना मोत मूवा १, हिंसा है गुरूजी विना पान तरवर २, त्रसना है गुरूजी विना पाल सरवर ४, क्रोध है विना स्थित जलतें ६, पाप है गुरुजी विना खार खार 9, धर्म है गुरुजी विना प्यार प्यारा 0, वादल है गु रुजी विना वृद्ध लाया ए, विद्या है गुरुजी विना द्रव्य माया १०, राग है गुरुजी विना बंध बंधण ११, निंद है गुरुजी विना मंम मंमं १२, परिग्रह है गुरुजी विना नरक इःख १३, संतोष है गुरुजी विना सुख सुखं १४, साधु है गुरुजी विना दान दानं १५, सिंह है गुरुजी विना मान मानं १६. १६ सोले इःख. पहले इःख घर श्यांगण कृतो १, दूजो इःख वैटो जूवो २, तीजो इःख घर आगख जाम ३, चोथे इःख पामोसी चाम ४, पांचवे इःख वेठ्यां घणी ५, बढें इःख निरधन धणी ६, सातमो इःख कुल क्वेश ७, ब्याठमो इःख कमाणी परदेश ए नवमो इः ब क्वो ब्या बोख ए, दशमो इः ब बहु बेटी रंमोख १०, इग्यारमो इः ब यान्याई राजा ११ बारमो इःख शरीरे नही ताजा १२ तेरमो इःख खंपटसुं काज १३ चवदमो दूख घर स्त्री दगाबाज १४ पनरमो इःख जे माथे रिणी १५ सोखमो इःख जे फोजा घणी.9

## ॥ त्र्यथ सतरह बोख खिख्यते ॥

१९ श्रासंयमका १९ जेद. पृथ्वीकाय श्रासंयमे १, श्रापकाय श्रासंयमे २, तेजकाय श्रासंयमे २, वाजकाय श्रासंयमे ४, वनस्पतिकाय श्रासंयमे ४, वरंड्री श्रासंयमे ६, तेरेंड्री श्रासंयमे ७, चोरेंड्री श्रासंयमे ७, चोरेंड्री श्रासंयमे ७, पेहिया श्रासंयमे ११, जजीव श्रासंयमे १०, पेहिया श्रासंयमे ११, जपेहिया श्रासंयमे ११, परमार्जणा श्रासंयमे १३, परिठावणीया श्रासंयमे १४, मन श्रासंयमे १४, वचन श्रासंयमे १६, काय श्रासंयमे १९.

१९ सतरे जेदे संयम. पृथ्वीकाय संयमे १, छापकाय संयमे २, तेजकाय संयमे ३, वाजकाय संयमे ४, वनस्पतिकाय संयमे ४, बेद्री संयमे ६, तेंद्री संयमे ७, चोरेंद्री संयमे ७, पेचेंद्री संयमे ७, छाजीव संयमे १०, पेहिया संयमे ११, जपेहिया संयमे १२, पर्जाव संयमे १४, पन संयमे १४, वचन संयमे १६, काय संयमे १९.

९७ सतरे मरण. श्रवीची मर्ण ते समय समय श्रायु घटें १, श्रवधीमर्ण ते नारकी देवता

京本大学 大学 大学 大学 大学 大学 大学 大学 大学 大学 मरकर पिठा देवता नारकीमें न ऊपजें २, श्रायंतिय मर्ण मनुष्य मर कर मनुष्यमें जपजें तिर्येच मर कर तीर्यचमें जपजें २, बखमर्ण वत जागीने मेरे <sup>४</sup>, वसञ्चमर्ण इंजीयाके बल मेरे ५, खंतोलमर्ण पाप विना खालोयण मेरे ६, तदलवमर्ण ७, प्र-बालमणी ख्रव्रतीमणी 0, पंनितमणी चोराशी लाख जीवायोनीके साथ खामणा करकें मरें ए, बाल पंक्तित मर्ण मिश्रवणे मर्ण १०, उद्मस्थ मर्ण ११, केंवली मर्ण १२, बे-हास मर्ण फांक्री लगा कर मेरं १३, गिद्धपिट मर्ण जनावरके कलेवरमांहे प्रवेश ★6%~☆0%~☆6%~☆6%~☆ होय कर मेरें १४, जत्त पचकाण मर्ण आहारत्याग कर मेरें १५, छंगीतमर्ण च्यार श्राहार त्याग कर मेरं १६, पाइगमनमर्ण संथाराका मणी १७. १९ तेंद्रियना १९ जेद. कानलजुरा १, मांकम २, जू ३, कीमीयो ४, जदेही ५, मकोमा ६, इल ७, घीमेल ए, सावा ए, गोकीमा १०, गदहीया ११, विष्टाना कीमा १२, गोबरना कीमा १३, धनेरिया १४, कुंथुट्या १५, गोपालीक १६, इंडगोप १५. १९ सत्तरे बोल प्रस्ताविक. जो तुमकुं इःखोका जय होय छोर सुखनी छिजिलाषा होय तो धर्मरूपी कल्परहत्त सेवो १, धर्मकी जम विनय और पापकी जम व्यसन यह को

मं ग्रंथका सार है है, जिसके पास कमारूपी खमग नित्य पास है उसकें कोधरूपी वैरी कुछ नही कर संका २, शोकरूपी वैरीकुं ज्यादा पास खोंगे तो तुम्हारी बुद्धि हिम्मत और धर्म ए तीनका जनसे नाश हो जावेगा ४, जैसे पुत्र विगर पाछणा श्रीर वींद विगर जान शोजती नहीं तैसें धर्म विगर श्रात्मा शोजती नहीं ५, जिके मनुष्य परस्रीकुं मात तथा बेनके सदश समजता है और सर्व जीवोकुं अपणी आ-त्मा समान गिएता है वह इः बी नही होता यह वात शास्त्रदारा सिंद है ६, शा-स्रका श्रवण शमशानजूमि खोर रोग पीना ए तीन स्थान वैराग्य जपजणेका मु-ख्य कारण है 9, बेसमजका व्यर्थ करणेवालेकुं शास्त्रजी शस्त्रकी तरे हो जाता है ए, बुद्धि बढनेका जर नया तर्क जलक होणेका मुख्य कारण मनकी शुद्धि है ए, तुम्हको इः व परें उस वक्त चिंता त्याग कर धैर्य राखो क्युंकि चिंता कुछ इः ख हरणेकी दवाई नही चिंतासें चतुराइ घेटेंगी जर चतुराइके अजावे तप जप जर नियम किसकें व्याधारे रहेंगे सम दम जर समाधि किसकुं व्यवखंबन करेंगे जस वक्त धैर्य राख कर धर्म सेवण करना एहीज जत्तम है १०, जो तुमको सर्व

秦兴秦 张春安东秦 秦 秦 秦安秦 张帝秦 秦安秦

米米(米米

张老子长子长子 米田米 米中米

秦安 未包华来。李 秦 安 来 表 李 来 来 इनियोंको वश्य करणी होय तो पराया लुगुणमें प्रवेश न कर गुण ब्रहण करो मी-ठा **ड**र हितकारी वचन बोलो डर डदारता गुणकी वृद्धि करो ११, द्यपणे इसते १ कहते है कि क्या तुम्हारा हाथ दुंट गया क्या तुं छांधा होय गया ऐसे ऐसे कद्रक वाक्य कहकर चीकण कर्म बांधते है वो जब कर्म जदय ख्रावेंगे तब रोय रोय कर-प्ती जोमतां मुश्किल होयगा वास्ते वचन निकालती वस्त खुब शोच कर बोलना क्युंकी ब्रीका तथा तखारादि शस्त्रका घाव दवाईसें अजा होय जावें परं वचन-का घाव मिलना किन है इसे हरेक वक्त विचार पूर्वक बोलना १२, सामायिक करती वसत जिसका प्रणाम स्वजनोके जपर जर परजनोके जपर जर निंदा तथा प्रशंसामें समजाव रखेंगे जसीहीका सामायिक मोद्यदायक होवेगा १३, जैसे राजाकी व्याज्ञाका जंग करणेसे इसलोकमें मनुष्यको धन वगरेका दंम होता है तैसेही स-र्वज्ञ जगवानकी खाज्ञा जंग करऐसे जीवको पर नवमें खनंता जवज्रमणरूप दंन होता है १४, जो तुम्ह तुम्हारे प्रियमित्र छौर सगा तथा संबंधीके साथ प्रेम रखणा चाहते हो तो जिस बखत ते कोध करें तब तुम दामा धारण करो १५, जो तुम्ह

को धर्मकी जब्दो जत्पत्ति करणी होय तो शास्त्रका बहुमान करो और खा खा-चरण राखो १६, कमवा वचन कटुक मती कृपणपणा खाँर कुटिख स्वजाव ए च्यार डुर्गण त्यागोगें तबही निश्चे धर्मकी प्राप्ति होवेगी १७.

क्ञानावरणी कर्म बांधवाना हेतु १७. क्ञानरी खासातना करें १, क्ञानी साधु प्रमुखरी श्रासातना करें चूंमो श्राचरें २, ज्ञानरो कारण पुस्तक प्रमुखरी श्रासातना करें ३, नटजाय में जुण पासें न जुएयो ४, जुपघात करें ज्ञान ख्रियवा ज्ञानीरो मूलसुं वि-नाश करें ५, प्रदेष ज्ञान ख्रधवा मतिज्ञानी प्रमुख्युं ख्रप्रीति राखें ६, मतिज्ञानी प्रमुखरे जात पाणी कपना प्रमुखरो खंतराय करें खब्बा ज्ञान जणतां खंतराय करें 9, मतिग्यानी श्रथवा मतिकान प्रमुख ज्वामे 0, श्रथवा कानरो श्रवर्णवाद बोटें ए, ख्राचार्य जपाध्याय प्रमुखरो ख्राविनय करें १०, ख्रकाले सिञ्चाय करें ११, कालें सिन्नाय न करें १२, जीविहेंसा करें १२, जूठ बोटों १४, चोरी करें १५, कुशील सेवें १६, परित्रहको त्याग करें १७, रात्रीजोजन इत्यादि हेतु करी ज्ञानावरणी कर्म बांधे.

本来记录·米①米·米①米·米②米·米②米·米②米·米②米·米②米·米 ॥ यथ यदारे बोल लिख्यते॥ 茶茶茶茶茶茶 ख्यवहाचर्यना १० जेद. जदारीक मैथुन सेवन खाश्री मने करी १, वचन करी १, कायाये करी र, सेवावण आश्री मन करी ध, वचन करी ध, कायाये करी ६, अ नुमोदन खाश्री मन ७, वचन ७, काया ए, वैकिय मैथुन खाश्री इमहीज करण २, करावण २ ट्यनुमोदन २, एवं १ए. पोषध तथा सामायिकमें रहे हुवे के १ए दोप. असामायिकवंतकी वेयावच करतो दोष १, पोष निमित्ते सरस ब्याहार करे तो २, संयोग मिलावे तो ३, केश नख स मरावे तो ४, पहिले दिन वस्त्र धोवरावे तो ५, शरीरकी शुश्रुषा करे तो ६, त्यानर्ण पहिरे तो ७, मयल खतारे तो ७, निंडा लेवे तो ए, विण पुंजे साज सणे तो १०, विकथा करे तो ११, पारकी निंदा करे तो १२, छानेरी संसारकी चरचा करे तो १३, जय करे तो १४, छांग जपांग स्त्रीना निरखे तो १५, संसारको नातो करे तो १६ खुखे मुख बोखे तो १७, संसारकी वात करे तो १०.

· 我也不是也不是也不是也不是也不是我的 सिलामण १० रे. त्यावसग्ग करे तो पचकाण जपयोग हुवे १, मनमें संदेह होय सो पूंजने टाखे २, साधर्मिकुं दोष खाग्या हुवे तो एकांत सिखामण दे ३, सांज सवेरे व्रत पचलाण चितारे संजाखे ४, जेसा प्रायिहत्त खाग्या होय तेसा दंम खेवे ४, साधर्मिसं चरचा करतां विचमे वाद न करे ६, न्नगवंतका मार्गमें खेंचातांण न करे 9, एकखी स्त्रीसुं खालाप संलाप न करे ए. पकी चोमासे नको टाटो विचारे ए, विनयसंहित श्रक्तर पढे विनयसहित पढावे १०, तीर्धिकरनी श्राग्या सहित को इसि सामण देवे तो संत माने ११, कोइ साधर्मि धर्म करणी करतो हुवे तो विचमें मिले नही १२, धर्मके ठिकाणे आयके संसारी वात न करे १३, धर्मि २ आपसमे कलह राम न करे १४, धर्मि धर्मके ठिकाणे बोमके छर विकाणे जाय नही १५, स्वध-र्मिकुं िनगतेकुं थिर करे १७, रोगी गिलाणीकी वेयावच करे १०. १० साधु १० स्थानके जतरे. देहरा १, सन्ना २, पाणी स्थानक ३, प्रवाजक मठ ४, रहाँ नीचे ५, वन ६, गुफा ७, लोहारसाला ७, पर्वतनी गुफा ए, जूना श्रानक १०, बाग फल फूल करी सहित ११, रथशाला १२, कूपशाला १३, यग्यादिक मंमप १४

李条本

\*\*\*\*\*

\*\*\*\*\*

梁

\*

सुना घर १५, मसाण १६, पर्वत मांहि कोखा घर १७, हाट १०. खठारे कब्प. खाहिंसा १, खमुषा २, खदत्त ३, ब्रह्मचर्य ४, खपरिग्रह ५, पृथ्वी ६, 茶茶茶茶 ख्यप ७, तें छ ७, वायु ए, वनस्पति १०, त्रस ११, रात्रीनोजन त्याग १२, ख्रकट्प-नीय टाले १३, गृहस्थनो जोजन तजे १४, गृहस्थने गृह न वसे १५, पलंग तजे १६, स्नान न करे १७, सिएागार न करे १७. खादारे ध्वय दिसि. पूर्व १, पिंडम २, दिक्तण २, जत्तर ४, इशाण कूण ४, छा-ग्नि कूण ६, नैऋत क्ण ७, वायव कूण **ए**, विदिशिना आठ आंतरा एवं उंची १७, नीची १७. শ্ৰুতাरे **সাব दि**शी. पृथ्वी १, প্ৰাণ ২, तेक ३, वाक ४, স্থান্য । ধ, ६, पोरिबया ७, खंधिबया ७, बेंद्री ए, तेरेंद्री १०, चौरेंद्री ११, पंचेंद्री १२, तिर्यच १३, कर्मचूमी १४, खकर्मचूमी १५, जपन खंतरहीपा १६, देवता १७, नारकी १७. १० श्री ऋषप्रदेवजी १० लिपी प्रगट किवी. इंस लिपी १, जूत लिपी २, जद्दा लिपी ३ राक्स लिपी ४, जमी लिपी ४, पवनि ६, कुरकी, ७, वामी ७, माधवी ए, माखवी

१०, नमी ११, नागरी १२, खाटी १३, पारसी १४, छानमित १५, चाराणी १६, प्रदेश १९, मूल देश १ए. १० श्रुटारे वर्ण नाम. कंदोइ १, पटेख २, कुंजार २, सोनार ४, माखी ५, तंबोखी गंधर्व ७, वैद्य ७, सुष्टार ७, नारू १०, घांची ११, मोची, १२, गांठी १३, पीठी **ठंठारा** १५, ग्वाख १६, दरजी १७, कैवर्तक जिल्ल १०. ट्यठारे बोल १०० बोला मांहिसुं धर्मि पुरुषके योग्य. बनोके बीचमें न बोले १, म-र्मको वचन नही बोखे २, माया कपटाइना वचन नही बोखे ३, विचारीनें बोखे ४, हिंस्याकारक वचन बाना या जघामा नहीं बोखे ५, ५ इष्ट वचन ते नहीं बोखे६, सूंमा नाम गोत्रका वचन नही बोखे ७, तुंकारा देकर नही बोखे ७, व्यणसुहाता नही बोले ए, मारकूट पमे कोध नही करे दूसरेकी साखीमें शुप्त मन वरतावे १०, द्वर्वचन बोले तो क्रोध न करे ११, कोलाहल शब्द उपर क्रोध न करे १२, गुरुके आज्ञामें चले आपरे जंदे नही चाले १३, गुरुरी सेवा करतो थको गुरुरे पास रहे १४, गुरुरी सेवा करे जली प्रकारो धणी जलो तपस्वी श्रूखीर कहीये १५, धीरजवंत १६, सरल

李宗宗李

मनुष्य विचारीनें धर्म परुषे १७, गृद्धी नही आणे पांच इंद्रियोंके विषयपर आरंज विषे १ए. श्रावकको ख्रद्धारे पापस्थान त्यागना, प्राणातीपात जीवकें प्राणोकी हिंसा १, मृषा-वाद श्यसत्य जूठ बोखवुं २, श्रदत्तादान चोरी करवी २, मैथुन कुकर्म सेवणा ४, पर रिग्रह इञ्य धन राखणो ५, कोध कोप करणो ६, मान छाहंकार करणो ७, माया कपट करणो ए, खोज तृषा जादा रखणी ए, राग सनेह प्रीति करणी १०, देष देष श्रमीति करणी ११, कलह कलेश करणो १२, श्राज्याख्यान जुठा कलंक देणा १३, पैशुन्य चूगली करणी, १४, परपरिवाद दूसरेका व्यवर्णवाद कहणा १५, रङ् व्यरङ् रती ख्रस्ती खुसी नाराजी राखणी १६, मायामोसो कपट कर जूठा बोखणा १७, मि-थ्यादंसण शब्य जूठी श्रद्धाको शब्य राखणो १ए. ए छाढारे पापरथानक श्रावक वर्जे १0 श्रदारे बोखे करी साधु श्रपणा मन चलायमान हुवें को श्रीर करें. प्रथम इःखमा श्रारामें श्राजीविकाका कष्ट १, दूजें कामजोग विषय मधुविंड समान २, तीजें काम नोगमें रोगका नय ज्यादातर है ३, चोथे इह इःख सामान्य है खहप समय रहेंगा

李 米 多 米 米 多 米 米 多 米 米 李洪安兴安

४, पांचमें लोकमें हांसी करेंगे ४, उठ वमन कीया विषय फेर श्रहण करुंगा ६, सा-तमे कुगती बंधन संग्रह हुवेगा ७, ब्याठमें सम्यक्तरूपी शुद्ध धर्म हाथ ब्यावेंगा नही U, नवमे रोग आणेसे क्या करंगा ए, दशमे गृहस्थाश्रममें मन सदा चिंतातुर र-हेंगा १०, इग्यारमे कप्टरहित दिक्ता है कप्टसहित गृहस्थावास ११, बारमे बंधण गृ-हस्थाश्रम मुक्त प्रवर्ज्या ने चारित्र १२, तेरमे सावद्य गृहवास निखद्य चारित्र चवदमे सामान्य कामजोग्य १४, पनरमे परतख पुण्य पाप १५, सोलमे मनुष्यका **ट्यायु ट्यनित्य है जैसें मान उपरी जलविं**डवत् वा बीजलीका चमत्कार समान १६, सत्तरमे पापकर्म करेंगा १७, छाढारमे विना जोगव्या बूटेंगा नही १७.

条件を १ए ज्ञातासूत्रका १ए अध्यन. मृगापुत्र अध्यन १, धनासार्थवाह अध्यन २, मोरमीके इंमेका अध्यन ३, काह्यबाका अध्यन ४, शाक्चापुत्रका अध्यन ४, तुंबमीका अध्य-न ६, रोहणीका ऋष्यन ७, मिल्लिनाथका ऋष्यन ७, जिन ऋषिजिनपालका ध्यन ए, चंज्रमाका छाध्यन १०, दबदब ऋषिकी दवदंत ऋषिका छाध्यन ११, सुबु-क्रिप्रधान अध्यनं १२, नंदन मण्यारका अध्यन १२, तेतली प्रधानका अध्यन १४, नंदी वनफलका अध्यन १५, द्रौपदीका अध्यन १६, काली दीपक घोमेगा १७, सुसमादारीयाका छाध्यन १०, पुंमरीकका छाध्यन १ए. कावसंग्गरा १ए दोष. गोमा जपर पग राखें १, काया छाछी पाठी मोलावे २, ज-ठंगण क्षेवें २, माथो नमाय लात्रो रहें ४, दोनुं हाथ लंचा राखें ४, धुंघरो काढें ६, पग जपर पग राखें 9, वांको ब्यामो रहें 0, साधुनी बरोबर रहें ए, गामीनी जिच णनी परे रहें १०, लमो वांको रहें ११, रजोहरण ऊंचो राखें १२, एक आसण न

रहें १३, छांख एक ठाम न राखें १४, माघो हलावें १५, कुकुकार करें १६, चलावें १७, व्यालस मोमे १०, सुन्य चित्त करें १ए. १ए जीवनी जाति देहमान खायु. पृथिवीकाय छांगुलनो छासंख्य जाग ११००० वर्ष श्चायु १, त्र्यपकाय श्रंगुलनो असंख्य जाग १००० वर्ष श्चायु २, श्रमिकाय श्रंगुल-नो द्यसंख्य जाग तीन दिनका त्यायु ३, वायुकाय द्यंगुखनो त्यसंख्य जाग ३००० वर्षे आयु ४, साधारण वनस्पतिकाय अंगुल असंख्य जाग आयु अंतरमुहत्ते ४, प्र-त्येकवनस्पति हजार योजन फाजेरा १०००० वर्ष छायु ६, बेंड्रिय जीव बारे योजन बारे वर्ष आयु ७, तें क्षिय जीव तीन कोस ४ए दिन आयु ७, चैरिंकि जीव चार कोस व महिना आयु ए, समृर्विम मतस्यादि हजार योजन कोमपूर्व १०, संमूर्विम चतुष्पदादि दोयसेंखे नव कोस ए४००० हजार वर्ष आयु ११, समूर्जिम खेचर दोय-सेटों नव धृनुष ५२००० हजार वर्ष छायु १२, समूर्जिम जरपिसर्पे दोयसेटों नव योजन ए२००० हजार वर्ष छायु १३, समूर्जिम छुजपिसर्प्य दोयसेटी नव धनुष ४२००० हजार वर्ष छायु १४, समूर्जिम जरपिसर्प्य दोयसे नव योजन ए३००० ह-

CAN ACK HOK TO WAR TO KNOW HOW HOW HOW जार वर्ष छायु १५, सम्किंग जुजपिसर्प दोयसेंखें नव धनुप ४२००० हजार वर्ष छा। यु १६, गर्जज मत्स्यादि हजार योजन कोमपूर्व छायु १७, गर्जज छलचर ज कोस तीन पट्योपम गर्जज लेचर पंली दोसेंखें नव धनुप पट्योपमासंख्य. १०, गर्जज जर-पिसर्प हजार योजन कोम पूर्व गर्जज जुजपिसर्प दोसेंखें नव कोस कोम पूर्व. ३ 李本宗 茶茶 赤の本本の本 +}{(0}}(+ \*\*\*

## ।। श्रथ वीस बोख खिल्यते ॥

वीस बोख, बर्नोंकी सीख. १ जलो चावें तिएारी सीख मानीजें, २ गुए। माने तिएाने प्रणाञ्जे, ३ कृतव्रने खौगणग्राही जाणीजे, ४ खति तृसा खोप न कीजें, ५ वांको वरते तोही देव न कीजें, ६ खोटे हाण खरेबरकत जाणीजें, 9 पापश्री इःख ने ध-र्मथी सुख जाणीजें, ए जेंगे वचन बोलें तिणने हलको आदमी जाणीजें, ए मान ता पिता गुरु देवरी प्रक्ति कीजें खाग्यामें रहीजें, १० वमेरांरो हुकम मानीजें पाओ उत्तर न दीजें, ११ आपरो धर्म हुवें तिण मारग चालीजें सील पालीजें पारकी स्त्री सुं राखो कीजें, १३ व्यापरा कुलरा व्याचारमें चालीजें कूम न प्राखीजें, १४ डु:खी होवें तिएारो जपगार कीजें, १५ गांव चालीजें तो सखरा सुकन देख चालीजें, १६ नाणो परलने खीजें, १९ फाटो कपमो सीवीजें, १० रूठाने मनाइजें, १८ छापरो धन सुमारग खरचीजें, २० थ्रखीरा गांवमें वसीजें तो ख्रगनरो जतन कीजें. २० वीस ख्रसमाधिया. दव दब करतो चार्खे तो १, विना पूछे चार्खे तो २, पूंजे

THE PROPERTY AND THE PR \*\*

पग घरें कहां तो ३, मर्यादासुं ख्रिधिका पाटला जोगवें तो ४, गुरुके सामो बोलें तो ए, बहुश्चितिजीकी घात चिंतवें तो ६, बमोंके सामो बोट्टों तो 9, वारवार कोध करें तो ए, पीठ पूठे गुणवंतका व्यवगुणवाद बोलें तो ए, निश्चेकारीनाषा बोलें तो नवो कलह करें तो ११, कलहकुं कमाया हुवें फिर फिर जदीरे तो १२, अकाले सिन्नाय करें तो १३, सचित्त रजधुं खरड्यो होय विना पूंजे उठे बेठे चखे तो १४, पहर रात्री जपरांत गाढे शब्दे बोटों तो १५, वारवार च्यार तीर्थमें कछह करें तो त-था सर्व प्राणीजूतनी घात चिंतवें तो १६, रेतुं बोलें तो १७, छकायके जीवांकुं अ-समाधि खपजावें तो १७, सवरेका खाहार लावं स्यामतांघ प्रोगवें तो १७, एषणा कुमती खाहार जोगवें तो १०. २० वीस विहरमान नाम. सीमंधरजी १, जुगमंधरजी २, बाहुजी ३, सुबाहुजी ४, सुजात-जी ५, स्वयंप्रजाजी ६, ऋषजानंदजी ७, छानंतवीर्थजी ७, सूरप्रयुजी ७, विशासजी १०, वज्रघरजी ११, चंडानंदजी १२, चंडबाहुजी १३, छुजंगजी १४, इश्वरजी १५, नेमप्रज़जी १६ वीरसेनजी १९ महाज़ुड्जी १० देवजमाजी १ए ख्रजितविर्यस्वामीजी ર્શ

वीस बोटों करी जीव तीर्थंकर गोत्र कर्म बांधे. खरिहंतजीरो जाप करें तो जीव कर्म-री कोमी लपावें जल्रुष्टी जावना आवें तो तीर्श्वकर गोत्र बांधे १, सिद्धारां गुस्रप्राम करें तो तीर्धंकर गोत्र बांधे २, सूत्रसिद्धांतरा गुणप्राम करें तो तीर्धंकर गोत्र बांधे ३, युरुना युणश्राम करें तो तीर्थिकर गोत्र बांधे ध, श्रिवरना युणश्राम करें तो तीर्थिकर गोत्र बांधे ५, बहुश्रुतीना गुणश्राम करें तो तीर्धिकर गोत्र बांधे ६, तपस्वीना गुणश्रा-म करें तो तीर्धकर गोत्र बांधे 9, ग्यान जपर जपयोग देतोयको तीर्धकर गोत्र बांधे U, सम्यक्त पाख़तो थको तीर्थिकर गोत्र बांघे ए, विनय करतो थको जीव तीर्थिकर गोत्र बांधे १०, दोय वेला खावसग्ग करतो श्रको जीव तीर्श्वकर गोत्र बांधे. ११, वत पचकाण चोला पालतो श्रको जीव तीर्श्वकर गोत्र बांवे १२, धर्मध्यान शुक्कध्यान ध्या-गोत्र बांधे १४, सुपात्रने दान देवतो छको जीव तीर्धिकर गोत्र बांधे १४, वेयावच करतो थको जीव तीर्थकर गोत्र बांधे १६, सर्व जीवांने सुल जपजावतो थको जीव तीर्थंकर गोत्र बांधे १७, ट्यपूर्वग्यान पढतो छको जीव तीर्थंकर गोत्र बांधे १०, सूत्र-

नी जिक्त करतो थको जीव तीर्थंकर गोत्र बांघे १ए, तीर्थंकरनो मार्ग दीपावतो थ-को जीव तीर्धिकर गोत्र बांधे १०. २० दर्शनावरणी कर्म बांधवाना हेतु कहें हैं. १ वक्कदर्शन प्रमुखरो छूंमो करें, २ दर्शनी साध प्रमुखरो चूंमो करें, ३ दर्शनरो कारण कान आंख्या नाक प्रमुखरो चूंमो करें कान प्रमुख होदें, ध पुस्तकरी खाशातना करें, ए में छए। पासे नहीं नएयो इम नट जाय, ६ दर्शन व्यथवा दर्शनीको मूलसुं विनाश करें, ७ दर्शन व्यथवा दर्शनी प्रमु-लसुं व्यमीति रालें, ए दर्शन व्यव्यवा दर्शनी प्रमुलरे जात पाणी वस्त्र जपाश्रयरो श्रं-तराय करें अथवा जणतां अंतराय करें, ए दर्शन अथवा दर्शनीकी घणी आशा तना करें जाति प्रमुख उघोंने, १० दर्शन द्यायवा दर्शनीमांही दूषण कांदें, ११ कान कातरे, १२ व्यांख्या उघामें, १३ नाक बेंदें, १४ जिह्ना प्रमुख कतरें, १५ जीवरी हिं-सा करें, १६ जूठ बोटों, १९ चोरी करें, १० क़शीख सेवें, १० पिग्रिहको वत नही हु-वे, १० रात्रीजोजनको त्याग न करें. इत्यादि हेतु करी दर्शनावरणी कर्म बांधे.

\*\*\*\*\*

#### ।। घ्यघ्र इकवीस बोख खिरुषते ॥

李本本本文本本文本本文本本本

११ इकवीस सबला दोष. हस्तकर्म करें तो सबलो १, मैश्रुन सेवें तो २, रात्रीजोजन जोगवें तो ३, श्राधाकमी श्राहार जोगवं तो ४, राजपिंम श्राहार जोगवं तो ४, जदेशी १, क्रीय २ पामीचे ३ छाजिजे ४ छाणुसिक्षे ५ छान्नायरे ६ ए ज दोष छाहार जोगवें तो ६, वारवार पचकाण लेवें जोमें तो ७, ज महीनामांही नवो टोलो वदले तो ७, एक मासमें ३ नदीके पाणीरो खेप खगावें तो ए, एक मासमें ३ माया थानक सेवें तो १०, सिन्नातरनो छाहार जोगवें तो ११, जाणपुढने प्राणा तपात सेवें तो १२, जाणपुर मृषावाद बोटों तो १३, जाण पुर श्रद्तादान ट्रोवें तो १४, सचित्त उपरे **डों** बेंगे तो १५, सिचत्त संनिग्ध माटी उपर उठें बेंगें तो हवें चलें तो १६, इंना जालासहित पार्ट पारला जोगेंवें तो १९ मूल १ कंद २ खंध ३ देवचा ४ शाला ५ प-खब ६ फूल ९ फल ए बीज ए हरी १० ए दश प्रकारनी हरीकाय जोगेंवें तो १ए,

एक साखमें दश नदीरो खेप खगावें तो १ए, एक वर्ष मध्ये दश दशमाया धानक 李本本本本本 सेवें तो २०, सचित्त सेती हाय पग लरड्या होय जिसके हायसुं आहार पाणी वे-हरावे साधु खेवें तो सबलो दोप लागें ११. २१ इकवीस जातरो पाणी धोवण. हांमीनो १, कठोतीनो २, चावखनो ३, तिखनो ४, तुसनो ५, जवनो ६, जसावण ७, कांजीनो ७, जन्हो पाणी ए, खंबामनो १०, छांवानो ११, कविद्वनो १२, विजोरानो १३, ज्ञाखनो १४, दामिमनो १५, खजुरनो \* १६, नालेरनो १७, कयरनो १७, बोरनो १७, छामलानो २०, छामलीनो घोवण. १ 学の学士の学 ११ श्रावकना इकत्रीस ग्रुण. श्राकुद १, जसवंत २, सोम प्रकृति ३, लोकप्रिय ४, আक-रो स्वनाव नही ५, पापसें मरें ६, श्रद्धावंत ७, खद्धखद्ध ७, खन्यावंत ए, दयावंत १०, मध्यस्य ११, गंजीर १२, सोमदृष्टि १३, गुणरागी १४, धर्मकथी १५, साचो प-क्त करें १६, शुद्ध विचारी १७, बृद्धोकी रीत चाटों १०, विनयवंत १ए, किया गुण <sup>ं</sup> मानें २०, परहितकारी २१.

श्रावकके इकवीश गुण. नवतत्त्वका स्वरूप जाणें १, धर्मकरणीमें सहाय वंजे नही २ धर्मथकी चलाया किसीका चलें नही ३, जिनधर्ममें शंकादि आएं नही ४, जे सू-त्ररो अर्थ ग्यान धारें तिएरो निर्णय करें प्रमाद करें नही ए, श्रावकरी हाम जर हामरी मीजी धर्ममें रंगायमान रेवे ६, म्हारा खानलो खिछार हें, जिनधर्म सार हें इसी चिंतवणा करें 9, श्रावकजी फिटकरत्न जैसा निर्मेखा होय कूम कपट राखें न-ही ए, श्रावक घरका द्वार सवा पोहर दिन चढें तांई दान सारु ज्ञामा राखें ए, श्रावक एक मासमें व पोसा करें १०, श्रावक राजाके छांते उर जंमार शाहुकारकी इकानमें जार्वे तो अप्रीति ऊपजें नही ११, लिया वत पचकाण निर्मला पालें १२ चवदे प्रकारे दान सुफतो सुनिने देवें १३, धर्मको जपदेश देवें १४, तीन मनोरय सदा चिंतवें १५, च्यार तीर्थरा गुणप्राम करें ख्यन्याय करें नही १६, नया नया सूत्र सिद्धांत सुर्णे १७, कोइ नयो खादमी धर्म पायो हुवें जिएने साहाज्य देवें य्यान सिखों १०, दो वलत कालोकाल पिकमणा करें १ए, सर्व जीवसुं हितपणो राखें वैरजाव राखें नही ४०, उत्ती ठाक्ति तपस्या करें ग्यान शिखणको उद्यम करें २१. ४

इकवीस बोल. चुगलं १, चोर २, छली ३, छाधर्मि ४, छाधम ४, छाविनीत ६, 未来来来 थिक बोला ७, श्रानाचारी ७, श्रान्यायी ए, श्राधीरा १०, श्राधूरा ११, निःस्नेही १२, कुलकुण १३, कुबोला १४, कुपात्र १५, कुमाबोला १६, कुशीलिया १७, कुशासनी १७, कुलबंपण १ए, तूंमा २०, ग्रंब २१. 米のおおのおおのま 条件条件 \*\*\*

### ॥ श्रय बाइस बोख खिल्यते ॥

परिसह २२. दिगंडा कुधा परिसह १. पिपासा तिरषा २, सीत ३, जन्ण ४, श्राचेख कपनाका परिसद्ध ५, मांस महर परिसद्ध ६, खार्रि खारति पीना ७, इही स्त्री परि-सह ए, चरिया विद्वार परिसद्ध ए, निसिया श्रानकका परिसद्ध १०, सेजा संश्रासका परिसह ११, श्राकोश रीस परिसह १२, वह वधबंधण परिसह १३, जायणा जिख्या-का परिसह १४, द्यालाज नही मिखणेका परिसह १५, रोगका परिसह १६, तृणकास माज प्रमुख फरस परिसद्द १७, जल मल पतीना मेलका परिसद्द १०, सकार ब्याद बहुमान परिसद्द १ए, पन्ना बुद्धिका परिसद्द २०, त्र्यज्ञान परिसद्द २१, दशिए। परि सह संका नहीं करें ११. बोल १२. श्रानंता सुक्षा परमाण मिले १, बादर परमाण होय १, श्रानंता बादर पर-माणु मिले तो १ उष्ण सेनिया रज होय २, ब्याउ उष्ण सेनीया रज मिले तो १ शीतसेनिया रज होय ३, ब्याउ शीतसेनिया रज मिले तो १ उर्६ रेणु रज होय ४,

李子子的朱子的朱子的朱子子的

छा। जर्द रेण मिले १ तसरेण रज होय ५, छा। तसरेण रज १ रथरेण रज होय ६, स्राठ रथरेण रज मिले १ देवकुरू उत्तरकुरूना मनुष्यनो वाल होय ७, स्राठ देवकुरू उत्तरकुरूरा मनुष्यारो बाल लिजे तो १ हरिवास रम्यक वासना मनुष्यानो बाल होय 0, श्रीं हिसवास रम्यकरा मनुष्यारा बाल लीजे तो हेमवय एरणवं-यना मनुष्यरो १ बाख होय ए, छाउ हेमवय एरणवयना मनुष्यारा बाख खीजे तो १ महाविदेहना मनुष्यनो बाख होय १०, आ महाविदेह मनुष्यारा बाख खीजे तो १ जर्न एखर्ननां मनुष्यारो बाटा होय ११, छाठ जरत एखर्न मनुष्यारा बाटा लीजे तो १ लील होवे १२, ब्याठ लीले १ जू १३, जुवे ब्याठ जव मध्य एक १४, ब्याठ जव मध्ये १ आंगुल १५, श्राठार आंगुले १ पांव पग १६ दोय पग १ विहन्न विलस्त १७, दोय विहरू १ हाथ १७, दोय हस्ते १ कृल १ए, दोय कूले १ धनुष २०, दोय हं-जार धनुष १ गांज २१ चार गांजए १ जोजन २१. बोल ११ सुराम १, सुगाम १, सुजात ४, सुत्रात ४, सुतात ६, सुमात ७, सुवात 0, सुकुल ए, सुबल १०, सुस्री ११, सुपुत्र १४, सुपात्र १३, सुदोत्र १४, सुदान १५

光本字 

京学·李学·李学·宗学 सुमान १६, सुरुप १७, सुविद्या १०, सुदेव १७, सुगुरु २०, सुधर्म २१, सुवेश २२, रसदेश ए सर्व पुन्यसे मिलती हे. १२ वाद १२ सुं न करणा. १ धनवंत सेती वाद न करीजे, १ बखवंत सेती वाद न कीजे ३ घणे परिवाररे धणीसुं वाद न कीजे, ४ तपस्वीसुं वाद न कीजे, ४ नीचसुं वाद न कीजे, ६ श्रहंकारीसुं वाद न कीजे 9, गुरांसुं वाद न कीजे, 0 श्रिवरासुं वाद न कीजे, ए चोरसुं वाद न कीजे, १० जुवारीसुं वाद न कीजे, ११ रोगीसुं वाद न कीजे, १२ क्रोधीसं वाद न कीजे, १३ जुठा बोले तेसं वाद न कीजे, १४ कुसंगती-सं वाद न कीजे, १५ राजा सेती वाद न कीजे, १६ शीतल लेक्यारे धणीसं वाद न कीजे, १७ तेज खेरयारे धणीखं वाद न कीजे, १० मुंने मीठा पेटे दगो तेसुं वाद न कीजे, १ए दानेसरीसुं वाद न कीजे, २० ज्ञानीसुं वाद न कीजे, २१ गणिकासुं वाद न कीजे, १२ वासक्युं वाद न कीजे. बोल १२ सिष्टांतरा. जे कोइ साधु राते उपाय सनिधि राखे रखावे तो व्यापाचारी प्रही समान जाणवो दश वैकालिकमें कह्यो है १, जे कोइ-साध गृहस्य कने चं

子子子子子子子子子子子子子子子子子子子子子子子 पावे ते स्थनाचारी जाएवो स्थाचारांग मांहे कह्यो है २, जे कोइ साध प्रहस्य कने \*\* वस्तु छोढण वास्ते खेवे ते छानाचारी जाणवो सुगमांग मांहे कह्यो वे छाध्ययन ए मे रे, जे कोष्ट साधु कारूमी लखुज तथा छोरही फल इजी वनस्पतिना फल बोली 李本本中于京东京等 李本本 बीन काचरी काढी हुवे खेवे ते व्यनाचारी पनवणा तथा दशाश्चत स्कंधमां हे कह्यों है ध जे कोइ साधु साधवी एकठो विहार करे ते आग्या वाहर ठाणांगमें कह्यो है ए, जे कोइ साधु साधवीनो आएयो आहार करे ते अनाचारी जाएवो आचारांगमें कह्यो है ६, जे कोष्ट साधु गोचरी प्रमुख बाहार जातो थको जार जपगरण फलक पीठ पार्टीया ग्रहस्थने जोलावीने जाय ते छाग्या बाहिर दश विकालिक 9 छाध्ययनमें कह्यों हे, 9 जे कोइ साधु प्रहस्थ माथे चीही तथा पोथी मेखे ते खनाचारी जाणवा दश विकालिक 9 में अध्ययनमें कह्यों हे ए, जे कोइ साधु पुरुष विना स्त्रीने जप-देश देवे ते स्थनाचारी जाणवो जगवती सूत्रमें कह्यो है ए, जे कोश्र साधु दोय तथा श्रदाइ कोस जपरांत श्राहार पाणी लेवा जाय ते श्रानाचारी जगवती तथा जत-राध्यन सूत्रमें कह्यो है १0, जे कोइ साधु ध्वब्य धातु राखे ते श्रानाचारी ब्रह्म व्या-

करणमें कह्यों ने ११, जे कोइ साधु ह्यगमा धोवे धोवावे स्नान करे ते चारित्रश्री इराचारी जाएवो सुगनांग अध्यन 9 मेमें कह्यो है १२, जे कोइ साधु होय मोर पांसनी पीछी रासे ते व्यनाचारी प्रश्न व्याकरणमे कह्यो है १३, जे साधु होय सुगंध श्चत्तर प्रमुख लगावे सुगंध लेवे माथो धोवे ते श्चनाचारी दस विकालिक ६ वे श्च-ध्यनमे कह्यो है १४. जे साधु नित्य पिंम खेवे ते पासहो। त्यावश्यक चूर्णिमें बे १५, सिफातररो पिंम दोवे ते पासची आवश्यक चूर्णिमें कह्यो है १६, जे कोइ साधू एकखो विहार करे ते पासचो जपदेशमाखामे कह्यो है १७, जे साधू होय च-वदे जपगरणसुं अधिको राखे तो पासचो निसीयचूर्णिमें कह्यो है १०, जे कोइ साधू पुस्तक लिखावे ते पासचो प्रवचन सारोद्धारमें कह्यों ने १ए, जे कोइ साधू शेषकाले मास १ जपरांत रहे तो पासचो कर्णिकाया तथा छात्रारांगमे कह्यो हे २०, जे कोइ साधू पुस्तक जपगरण पात्रा प्रमुख घणा करे ते पासहो २१, जे साधूके चेला चेली श्रावक श्राविका साधवी परिग्रह घणों ते पासजो उपदेशमालामें कह्यों है १२. १ जीवना ज़ेद २ कोम ९४ लाख २ गुणठाणा ३ कोम १२ लाख ३ जोग ५ कोम

李安子安安安安 李杂杂杂杂杂杂 ४४ लाख. ४ जपयोग ४ कोम ६४ लाख. ५ लेक्या ३ कोम ४२ लाख. ६ शरीर ३ कोम ए शाल. 9 वेद १ कोम २४ खाल. ए दीष्ट १ कोम ४२ खाल. ए संग ३ कोम ३६ खाल. १० कषाय ३ कोम ३६ खाल. ११ प्राण ५ कोम १० खाल. १२ रूपीना <sup>१६</sup> कोम ए॰ लाख. १३ जावविषे ११ कोम १० लाख. १४ इच्यविषे १३ कोम एए लाख. १५ संघेण १ कोम ६६ खाल. १६ संठाण १ कोम ७५ खाल. १७ समोसरणना बोल १६ कोम ७० लाख. १० निमतीना बोल ५० कोम ए लाख. १ए करणना बोल ३१ कोम ६० लास. २० हेतु ३ए कोम ४४ लास. २१ इंड्री १ कोम कही. २२ मनुष्यरी पर्याय १ कोम ११ खाल.

℀ᅇ℁

**未参**本

\*\*\*\*\*\*

\*\*\*

\*\*\*

વર

#### ॥ अथ तेवीसमा बोख खिख्यते ॥

१३ सुगमांगजीके श्रव्ययन तेवीस. पहिले श्रुत स्कंधका १६ श्रव्ययन स्वसमयादिक क-ह्या श्रमे इजे श्रुत स्कंधनां ७ श्रध्ययन जाख्या श्राणगार पोलरणी ते बाचमीका १ किया श्रध्ययन २, श्राहार परिज्ञा ३ पचकाण परिज्ञा ५ श्राणगारि ५ श्राज्ञकु-मारका ६ जुद्केपेलाद पुत्रका ७ एवं तेवीस श्रध्ययन.

२३ पदवी तेवीस. रत्न चौद. चक्र १, उत्र २, चामर ३, दंम ४, ख्रसी ४, मणी ६, कांग्णी ७, सेनापित ७, गाद्यापित ए, बहुइ १०, प्रोहित ११, स्त्रो १२, ख्रश्व १३, गजरत्न १४, नव उत्तम पुरुषकी तिर्धिकरकी १४, चक्रवित्तकी १६, वलदेव १७ वासुवित १७, केवली १ए, साधु २०, श्रावक ११, सम्यग्दृष्टि २२, मंसलीक राजाकी २३

पांच इंडिकि तेवीस विषय. श्रोतेंडिकि तीन विषय. जीव शब्द १, श्रजीव शब्द १, मिश्रशब्द ३, चक्कइंडिके पांच विषय. कालो ४, पीलो ४, नीलो ६, रातो ७, घोलो ७, घाणेंडि वे विषय. सुगंध ए, डुर्गध १०, फरसेंडी स्राठ विषय खरखरो ११, सुंवालो

光色学 米色光

१२, इंखको १३, नारी १४, जीत १५, जम १६, द्धलो १७, चीकणो १७, जीह्वा ई-डीके पांच विषय. तीलो १ए, कमवो २०, कसायलो २१, खाटो २२, मीलो २३. ३ चोवीस तीर्धकरोका तेवीस आंतरा. ११२ तिर्धकर विचाखे ५० खास कोम सागरको श्रांतरो, ११३ तिर्श्वकर विचाले ३० लाख कोमि सागरको श्रांतरो, ३।४ तिर्श्वकर वि-चांखे १० खाल कोम सागरको द्यांतरो, ४।५ तिर्थिकर विचाखे ए खाल कोम सा-गरको ख्रांतरो ४।६ तिर्थंकर विचाले ए० हजार कोम सागरको ख्रातरो, ६।५ तिर्थ-कर विचाले ए हजार कोन सागरको आंतरो, अप तिर्शंकर विचाले ए सय कोन सागरको द्यांतरो, णाए तिर्धंकर विचाले ए० कोम सागरको द्यांतरो, ए।१० तिर्ध-कर विचाले ए कीम सागरका द्यांतरी, १०।११ तिर्श्वकर विचाले १ कोम सागर ६६ खांस <sup>२६</sup> हजार वर्ष जणा, ११।१२ तिर्धकर विचाखे ५४ सागरको द्यांतरो, १२।१३ तिर्धंकर विचाले ३० सागरको द्यांतरो, १३।१५ तिर्धंकर विचाले ए सागरको द्यांत-रो, १४।१५ तिर्धकर विचाले ४ सागरको आंतरो, १५।१६ तिर्धकर विचाले पन्नण-पंढ्यं उपा ३ सागरको द्यांतरो, १६।९७ तिर्श्वकर विचाले खाघे पल्यको द्यांतरो,

表示·米①米·米①米·米①米·米①米·米①米·米·泰·泰 १९।१ए तिर्थेकर विचाले पब्यको चोथो जाग एक हजार कोम वर्ष छणो, १०।१ए तिर्धकर विचाले एक हजार कोम वर्षनुं, १ए।२० तिर्थकर विचाले ५४ लाख वर्षरो, २०।२१ तिर्थंकर विचाखे ६ खाख वर्षनुं, २१।२२ तिर्थंकर विचाखे १५ खाख वर्षनुं, २२।२३ तिर्थंकर विचाले ए३ हजार २९५० वर्षनुं, २३।२४ तिर्थंकर विचाले २५० व र्षनुं एक कोम सागरोपमरा धरे हजार वर्ष जणा २३. २३ तेवीस बोल जलदी मोद्दा जाणेका. १ श्याकरो (कठिन) तप करें ते जीव । मुक्ति जावें, २ मोद्दारी प्रज्ञा राखें तो जीव वेगे मोद्दा जावें, ३ शुद्ध प्रणामसें सिद्धांत सुणें तो जीव मोदा जावें, ४ शुद्ध मनसुं सूत्र ग्यान प्रणें तो जीव मोदा जावें, ५ पांच इंद्यीना विषय त्यागे तो जीव मोक् जावें, ६ वकाय जीवारी दया पा-खें तो जीव मोद्य जावें, 9 प्राएया हुवा ग्यान वार वार विचारें तो जीव मोद्य जावें, ए साधु साधवीरी प्रक्तिपाव राखें तो जीव मोद्य जावें, ए तीन जोगसें करण क रावण ष्ट्रानुमोदन यह नव कोटी शुद्ध पचलाण करें तो जीव मोद्ध जावें, १० धर्म-का संबंध सईहतो जीव मोद्ध जावें, ११ कषायका त्याग करें तो जीव मोद्ध जावें,

\*\*\*\*

\*\*\*\*\*

本来多类

\*\*

来来

大小子大学大学大学大学 \*\*\*

१२ क्मा करें तो जीव मोक्त जावें, १३ खग्या छः पणका प्रायश्चित होवें तो जीव मोक्त जावें, १४ छीये हुवे व्रत पचकाण निर्मख पाछें तो जीव मोक्त जावें, १५ शु-द्ध प्रणामसं शीख पार्खें तो जीव मोक्त जावें, १६ च्यार तीर्थको साता ऊपजावें तो जीव मोद्दा जावें, १७ निखद्य प्रापा बोलें तो जीव मोद्दा जावें, १० संजम लेकर छं-ततक शुद्ध पार्टों तो जीव मोक्त जावें, १ए धर्मध्यान शुक्कध्यान ध्यावें तो जीव मो-क् जावें, २० महीनेमें नव पोसा करें तो जीव मोक्त जावें, २१ पाउछी रात्री धर्म जागरणा करें तो जीव मोद्दा जावें, १२ जन्नय टंक काले प्रतिक्रमण करें सामाइक करें तो जीव मोक्त जावें, २३ ब्याखोयण खेइ संथारो करी पंनित मरण हुवें तो जी-व मोक्त जावें. २३ बोल तेवीस जावपूजाका. न्हवण करूणाजाव १, जिन गुण जल २, जयणा

रे, खंगों ब्रिक्यात् नम्रता खंग सुकाइनें ४, केशर प्रक्ति कीनें ४, श्रद्धारूप वंद-णा ६, ध्यान रंगरोल ७, तीलक ते शुद्ध जाव ७, निरमल समाधि ते प्रसाल ए, धर्म ते खंगह्यहणो १०, संज्ञाव खाजरण पहिरावे ११, नववामी शुद्ध ब्रह्मचर्य नव

खंग पूजा १२, पंचाचार विशुद्ध ते फूल पगर १३, ज्ञानरूप दीपक १४, नयाचितन व्यतपूर १५, तत्त्व पात्र विशाल १६, धूप संवर जाव १७, कृशागर गुरु जोग १०, खं- चुजव ते शुद्ध वास १ए, मद्य ख्रष्ट त्याग ते ख्रष्टमंमक्षीक २०, सत्य ते घंटा २१, TO COOK THE COUNT मुधर्म ते मंगल दीवो २२, नीसहप ते टीको २३.

# ॥ श्रय चोवीस वोख खिख्यते ॥

नणन गुणनका व्यालस करें तो ग्यानका टोटा वहुसूत्री व्यध्ययनकी साल १, साधु साधवीके दर्शन न करें तो सम्यक्तमें टोटा सोमख बाह्यणकी साख २, काले पिनक-

मणो न करें तो वत पचकासमें टोटा उत्तराध्यन सूत्रकी साख २ए मे अध्ययने ३,

साधु साधवी मांहोमांही वेयावच न करें तो तीर्थमें टोटा ठाणांगसूत्रकी साख ४,त-तपस्या आचार जावनाका चोर हुवें तो देवताकी जंबी पदवीका टोटा पांचमा अध्य-यन जगवतीका इजे उदेशाकी साख ए, किन कुबुष्य जाव राखें तो शितखताप-णानो टोटो समवायांगसूत्रनी साख ७, व्यजयणासुं चालें तो जीवदयाका टोटा त्तराध्ययनसूत्र व्यध्ययन २४ मानी साल ए, तन धन जोवन रूपको मद करें सो शु-जनमेका टोटा पत्रवणासूत्रकी साल ए, बमानो विनय न करें तो तीर्धिकरकी आज्ञानी टोटो विवहारसूत्रकी साख १०, माया कपटाइ कुम करें तो जस कीर्त्तिनो टोटो चारागसूत्रकी साख ११, पांजली रात धर्म जागरणा नहीं करें तो धर्मध्यानको दोदो

李帝李宗宗李帝李宗宗李宗李李宗

नसी हमूत्रकी साल १२, कोघ कछोश कषाय करें तो हेत खेह जावका दोटा कोणि-क चेमानी परे सूत्र जगवतीनी साख १३, चिंता जचाट माया सोग संकटप विकटप मन करें तो बुद्धि श्रकलका टोटा जगुप्रोहितनी शॉख १४, स्त्रीनो लालची होय तथा तान राग सांजले तो ब्रह्मचर्यनो टोटो उत्तराध्ययन सूत्रनी साख १५, साधु साधवी श्रावक श्राविका मांहोमांही हेत मिलाप न राखें तो जैनमार्गनो टोटो संखजी पोख-खजीनी पेरं जगवतीसूत्रनी साख १६, सुपात्रने जखटजावसें दान नही देवें तो पुन्य प्रकृतीनो टोटो पर्ने कपीलादासीनी साल १७, साधु गामाणुगामे विहार न करें तो धर्मकथानो टोटो पर्ने सेलक राजऋषीसरनी परे १०, धर्म करें नही ग्यान जाणें, नही इंद्यां जीतें नही तो जिनसासननो टोटो पमें समाचारीनी साख १ए, व्रत पचकाण-में दोष लगावें खालोवे नही नंदे नही प्रायित लेवें नही तपस्या करें नही. संले-षणा करें नही तो मोदाना सुखनो टोटो परें श्री पार्श्वनायजीनी दोयसें उपन सा-धवीनी परे २०, श्रारहंतजीका तथा श्रारहंत जाष्या धर्मका तथा च्यार तीर्थना श्र-वर्णवाद बोर्ले तो सत्यधर्म पामणेको दोदो पर्ने ठाणांगसूत्र पांचमे ठाणेनी साख २१

संद्वरनो वचन नही मानें तो जंबी गतिनो टोटो पर्ने बहादत्त चक्रवर्त्तिनी साख २२, 条条 साधु साधवी गुरु गुरुणीनी खाङ्गा जलंघे तो खाराधकपणानो टोटो पमे सकमाला खंधकजीनी साख २३, जगवानरा वचन जपरांत तर्क जठायने कहे तो शुद्ध मार्ग-\*\*\*\*\* नो टोटो पमे जमालीजीनी साख २४. १४ चोवीस जातीना देवता. १० ज्रवनपति च्यसुर कुमार १, नाग कुमार १, सोवन कु-मार ३, विद्युत कुमार ४, छात्रि कुमार ४, दीप कुमार ६, जदिंध कुमार ७, दि-शा कुमार ए, पवन कुमार ए, श्रणीय कुमार १०. श्राठ वाणव्यंतर पिशाच १ ग्रत 本学·朱〇子·朱〇子·朱子 २, जक्त ३, राक्स ४, किंनर ५, किंपुरुष ६, महोरग ७, गंधर्व ७, पांच ज्योतिष चं-ख्मा १, सूर्य २, ग्रह ३, नक्तत्र ४, तारा ४, एक वेमाणीक २४. १४ श्वतीत कालकी चोवीसीका नाम. केवलङ्गानी १, निर्वाणी २, सागरजी २, महाय-सजी ४, विमखजी ४, सर्वानु जितजी ६, श्रीधरजी ७, दत्तजी ७, दामोदरजी ७, सुत्तेजंजी १०, स्वामीजी ११, मुनिसुवतजी १२, सुमतीजी १३, शिवगतिजी १४, श्चास्तागजी १५, निमस्वरजी १६, श्चिनिखजी १७, यशोधरजी १०, कृतार्थजी १७,

\*\*\*\*\*\*\* जिनेश्वरजी २०, शुद्धमतीजी २१, शिवंकरजी २२, स्वंदनजी २२, संप्रतिजी २४. ३ श्यनागतकालकी चोवीसीका नाम. पद्मनाजजी १, सुरदेवजी २, सुपार्श्वजी २, स्व-यंप्रप्रजी ध, सर्वानुञ्चतिजी ध, देवश्चतजी ६, ভবयजी ७, पेढाखजी ए, पोटिखजी ए. सतकीर्त्तिजी १०, सुव्रतजी ११, द्यममजी १२, निष्कृषायजी १३, निष्पुलाकजी १४, निर्ममजी १५, चित्रगुप्तिजी १६, समाधिजी १७, संवरजी १७, यशोधरजी १७, वि-जयजी २०, मिल्लजी २१, देवजी २२, छानंतवीर्यजी २३, प्रदंकरजी २४. 李宗子、安子、李 李宗李 १४ श्रवगाहना १४ तीर्धकरनी. पहेलाकी ५०० धनुषरी श्रवगाहना १, दूर्जोकी ४५० धनुषरी ख्रवगाहना २, तीजाकी ४०० धनुषरी ख्रवगाहना २, चोष्ठाकी ३५० धनु-षरी श्रवगाहना ४, पांचमाकी ३०० धनुषरी श्रवगाहना ५, उठारी १५० धनुषरी श्र-वगाहना ६, सातमारी २०० धनुषरी व्यवगाहना ७, व्याठमारी १५० धनुषरी व्यवगा-ह्ना ए, नवमानी १०० धनुषरी व्यवगाहना ए, दसमानी ए० धनुषरी व्यवगाहना १०, इग्यारमानी ए० धनुषरी श्रवगाहना १२, बारमानी ७० धनुषरी श्रवगाहना १२, तेरमानी ६० धनुषरी ख्रवगाहना १३, चवदमानी ५० धनुषरी ख्रवगाहना १४, पन-

光の子子である。

学来学

李宗李

张·米①朱·米①朱·朱·沃·朱·米·沃·朱·米·②朱·米①朱·米① रमानी ४५ घनुषरी व्यवगाहना १५, सोखमानी ४० धनुषरी व्यवगाहना १६, सत्त-रमानी ३५ धनुषरी श्रवगाहना १७, श्रदारमानी ३० धनुषरी श्रवगाहना १७, जग-णीसमानी २५ धनुषरी व्यवगाहना १ए, वीसमानी २० धनुषरी व्यवगाहना २०, इ-李华色本学 कवीसमानी १५ धनुषरी व्यवगाहना ११, वावीसमानी १० धनुषरी व्यवगाहना ११, तेवीसमानी ए हाथरी व्यवगाहना २३, चोवीसमानी ७ हाथरी व्यवगाहना २४. ५ तिर्थिकर नाम. जन्मनगरी. पितानांनाम मातानांनाम आयुर्गान. दिशा. केवछ. चवन. जन्म. मोक्ष 朱安子本作 ऋषभदेवजी. वनीतानगरी नाभीराजा. मरुदेशा टि अक्षपूर्व अ.व.४ चि.व. ७चि.व. ८का. व. माहव. अजितनाथजी अयोध्यानगरी जितशत्रुरा सिद्धार्थरा ७२ वि सु.१३ मा.सु.८ माहसु.९ पो. सु. संभवनाथजी. सावथीनगरी जितारीरा सेनाराणी ६० 大学本会学 फा.सु.८मा. सु. मि. सु. का.च.५चै.सु.५ अभिनंदनजीः अयोध्यानगरी संवरराजा सिद्धार्थरा ५० वै.स.४ मा.स २ माह सद्यो. सद् वे.स.८

4	छमतिनाथजी.	अयोध्यानगरी	मेघरथरा.	मंगछाराणी	४०लक्षपू	र्व श्रा.सु.२	वै सु. ८	बै.सु.९	<b>ਬੈ. ਸ਼ੁ.</b>	चै.सु.'	٤
Ę	पद्ममञ्जी.	कोशंवीनगरी	श्रीधरराजा	म्रुसीमारा.	₹° "	माहव.	का. व.		३१ वै. सु.	मि. व	
ø	स्रुपार्श्वनाथजी.	वणारसीनगः	मतिष्टराजा.	पृथ्वीमाता	२० "	भा व	१२ जे. <b>म्र</b> १२	१३ जे. सु.	१५ का.व.६	११ फा.व.	و
6	चंद्रमञ्जी	चंद्रपूरीनगरी	महासेनरा.	<b>लक्ष्मणारा</b> .	१० ,,	1_	पो.व.१२	१३	į	•	- 1
<b>'</b> ९	स्रविधिनाथजी	काकंदीनगरी	स्रग्रीवराजा	रामाराणी	٦,,	फा.व.९	मा. व.	१४ मि.व.६	का सुर	भा .सु	٩
ξo	शीतळनाथजी.	भदिछपुर.	द्रहरथराजा	नंदाराणी	۹ "	चै.व.६	१२ मा. व.		पो. व.	वै.व.	२
११	श्रेयांसजी.	सिंहपुरी	विष्णुराजा	विष्णुराणी	८४ लक्ष व	र्षजे.व.६	११ फा. व.		१४ माहव.३	सा.व.	3
१२	वासपूज्यजी.	चंपापुरी	वस्रपूज्यरा.	जयाराणी	હ <b>ર</b> ,,	जे. मु.९	१२ फा. व.	१३ फा.व.३	मा.सु.२		
१३	विमलनायजी	कंपिलपुर.	क्रतवर्भरा.	स्वामाराणी	ξo ,,	वै सु १२	१४ मा•सु•३	मा.सु.४	णे.सु.६	१४ अ.व.५	ا و
१४	अनंतनाथजी.	अयोध्यानगरी	सिंहसेनरा.	स्रयशाराणी	₹∘ "	  सा.व.७	वै.व.१४	वै.व.१४	वै. व.	चै.व.ध	,

*************************************	१५	वर्मनाथजी.	रत्नधुरीनगरी.	भानुराना	सुत्रत्ताराणी	<sup>'</sup> १०लक्ष	वर्ष	बै.मु. ७	मा सु.३	मा. सु.		जे.सु.५	泰华
楽	१६	श्चांतिनाथ.	गजपुर.	विश्वसेनरा.	अचिरारा.	१,	,	भा.मु.७	जे. व.	जे. व.	१५ गो.्झ.९	जे.व.	
<b>X</b>	१७	, कुंथुनाथजी.	गजपुर.	सुरराजा	श्रीराणी	९५हजा	रव	सा.व.९	्रे १४ वे •व •१४	्रश्च वे∙व १४	बै.मु.३	13 13.13. ?	*0%
**	१८	अरनाथजी.	गजपुर	म्रदर्शनरा.	देवीराणी	૮૪ ,	,,	फा.सु∙२	મિ. સુ.	मि. सु.	का. सु.	मि• सु•	*0*
	१९	। मङ्घीनाथजी	मिथिछानगरी	कुंभराजा	मभावतीरा.	પ્ષથ,	,,	फा <b>.</b> सु.४	११ मि. सु.	११ मि. सु.		१० फा. सु	李泰
<b>米沙美沙米</b>	२०	<b>ग्र</b> निस्त्रत्रतजी.	राजगृहीनग <b>री</b>	सुमित्रराजा	पद्मावतीरा	<b>3</b> 0	"	सा. सु	११ जे.व. ८	११ फा. सु.	११ फा. व.	् १ <b>२</b> ज. व ९	多名
	२१	नमीनाथजी.	मथुरानगरी	विजयराजा	विमाराणी	ę۰ ,	,,	१५ आ. सु.	ओ.ब. ८	१२ अ.व. ९	१२ मि. सु.	वै.व.१०	****
朱荣 朱沃 朱珠	२२	नेमिनाथजी.	सौरीपुर.	समुद्रविजय	शिवादेवी			४५ का ०व ०	सा.सु.५	सा.सु.६	११ आ.व. ३	अ.मु.८	*
<b>X</b>	२३	पार्श्वनाथजी	। वणारसीनगरी	अश्वसेनरा.	वामादेवी वामादेवी	१०0 ,	,	્ १२ चै.व. ४	પો. <b>વ</b> .	पो. व.	चै.व. ४	सा.सु.८	**
*	રય	  महावीरजी	 क्षत्रियकुंड न	 सिद्धार्थरा.	<b>त्रिशलादेवी</b>	৩২ ,,			80	११ मि. व.	वै सु.१०	का.व.९	来来
李		}	1	}				-	83	१०		आ.द्य.१३ गर्भागहार	
*		२३						•	•	'	•	}	\$

चोवीस दंमकना नाम. सात नास्कीरो एक दंमक १, दश जवनप्रतीरा दश दंमक ११, पांच थावररा पांच दंमक १६, तीन विकलेंद्रीरा त्रण दंमक १ए, तिर्यंच पंचेंद्री दंमक १०, मनुष्यनो २१, वाणव्यंतरनो २२, जोतपीनो २३, वैमानीकनो २४. ७

\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*

#### ॥ स्रय पचीसमा बोल लिख्यते ॥

茶茶茶茶

\*\*\*\*

张兴·朱色朱朱色朱朱统张

महावतनी पचीशः जावना. पहिले महावतकी पांच जावना. इर्याजावना १, मन-भावना १, वचनभावना १, एषणाभावना ४, ख्यायाणर्जममत निखेवणाभावना ४, इजे महावतरी पांच पावना. जुठ न बोलें ६, क्रोध करी न बोलें ७, लोज करी न बोंद्धें ए, त्रय करी न बोट्धें ए, हास करी न बोट्धें १०, तीजे महाव्रतनी पांच जा-वना. खढार प्रकारना थानक न जोगवें ११, तृण मात्र पण जाचीने खेवें १२, थानक घटारे मठारे नही १३, साधर्मीका वस्त्र त्याङ्गा विना खेवें नही १४, साधरी वेयावच करें १५, चोथे महावतरी पांच जावना. स्त्री पशु पंमगरहित थानक जोगवें १६, स्त्री की कथा न कहें १७, स्त्रीका छंग ज्यांग न निरखें १७, पूर्वें कीमा जोग न सं-जारे १ए, सरस छाहार नित प्रते न करें २०, पांचमा महावतनी पांच जावना. शब्द ११, रुप १२, गंध १३, रस १४, फरस १५. मनोगम जपर राग न करें अमनोगम जपरे हेष न करें.

赤姿泰 पिनेखेहणा पचीस. नव श्रालोमा ए, नव पलोमा १७, व पिममा २४, एक दृष्टि. १ बोल पचीस अप्तंख्याता. पांच धावरका जीव. पृथ्वी १, अप २, तेल २, वाल ४, प्रत्येक वनस्पतिका जीव ५, बेरंड्री ६, तेरंड्री ७, चोरंड्री ए, समुर्जिम मनुष्य ए, 本学来学 समुर्जिम तिर्यंच १०, जलचर सनी ११, श्रलचर सनी १२, खेचर सनी १३, नारकी १४, जवनपति १५, वाणव्यंतर १६, वैमानीक १७, जोतपी १०, हीप १ए, समुख् २० धर्मास्ति २१, श्रधर्मास्ति २२, श्राकाशास्ति २३, एक जीवरा प्रदेश २४, साधारण वन-李本学年中年 李本本 स्पतिरा शरीर १५. १५ पिन्छोहणा पचीरा. समिकतमोहनी १, मिथ्यातमोहनी १, मिश्रमोहनी ३, कामराग ४, स्नेहराग ४, दृष्टिराग ६, सुदेव ७, सुगुरु ए सुधर्मकी सरदहणा ए, तीन अग्या-न डोमें १२ शुज्यमन १३, शुज्जवचन १४, शुज्जकाया १५, ख्रशुज्ज मन, वचन, काया १७, कुदेव १७, कुगुरु २०, कुधर्म २१, तीन ग्यान २४, दिष्टि २५. २५ पर्चीस पिनलेहणा. हास्य १, रित २, छारति २, ज्ञय ४, सोग ५, छुगंजा ६, कृषा-क्षेत्रया ७, नीललेक्या ७, कापोतलेक्या ७, ऋद्धिगारव १०, रसगारव ११, सातागा-

本兴兴·朱①米·朱①米·朱①米·朱 रव १२, मायाशब्य १३ नियाणाशब्य १५ मिथ्यादर्शणशब्य १५ कोध १६ मान १७, माया १० लोज १ए पृथ्वी २० छाप २१ तेज २२ वाज २३ वनस्पति, त्रसकाय. ५ २५ मिथ्यात्व पचीस प्रकारनो. धम्मे छाधम्म सन्ना १, छाधम्मे धम्म सन्ना २, मग्गे जम-ग्ग सन्ना ३, जमग्गे मग्ग सन्ना ४, जीवे याजीव सन्ना ४, याजीवे जीव सन्ना ६, साधु व्यसाधु सन्ना ७, व्यसाधु साधु सन्ना ७, मुत्ते व्यमुत्त सन्ना ७, व्यमुत्ते मुत्त स-ना १०, छानिश्रहीक मिथ्यात ११, छाणानिशृहीक मिथ्यात १५, छानिनिवेसिक मि-श्यात १३, छाणाजपयोग मिथ्यात १४, संसयिक मिथ्यात १५, खोकिक मिथ्यात १६ लोकोत्तर १७, कुपरावचन मिथ्यात १०, जणारित १७, छाइरित २०, छाकरिया मि-老家學 थ्यात ४१, विपरीत मि॰ २२, छाविनय २३, छापमान २४, छासातना मि॰ २५. ४५ पचीस किया. काइया १, छाहिगरीणीया २, पालसिया ३, परितावणिया ४, पाणा-इत्राया ८, व्यारंत्रिया ६, परिगहिया ७, माया वित्तया ७, मिहादंसण वित्तया ७, श्चपचलाण वत्तिया १०, दिलिया ११, पुंठीया १२, पाइंचीया १३, सामंतोवणिया 泰本泰 १४, साहजिया १५, निसीजीया १६, व्यापवणीया १७, विदारणिया १७, व्याणाजी-

学来学来来 李春春 李春春 गवत्तिया १ए, ऋणवकंखवत्तिया २०, ऋणजपयोग २१, समुदाणी २२, पेज २३ दोस २४ इरियावहीकियां २५. २५ साढा २५ ऋार्य देश. मगध देश राजग्रही नगरी १ कोमी ६६ खाल गाम १, छंग देश चंपानगरी ५ खाख गाम २, बंग देश तामखीक नगरी १० खाख गाम ३. किंद्रंग देश कंचणपूर नगर २० लाख गाम ४, काशी देश वाणारसी नगरी १ खाल ए॰ हजार गाम ऐ, कोसख देश अजोध्या नगरी एए हजार गाम ६, कुरू देश गजपूर नगरी ए स्राठ खांख २३ तेवीस हजार ४१५ गाम ७, कुशावर्त देश सोरीपुर नगर १ एक खाल ४३ हजार गाम ७, पंचाख देश कंपिखपुर नगर तीन खाल तेसन ६३ हजार गाम ए, जंगल देश ऋहिनत्रानगरी ७ खाल ४५ पेतालीस हजार गाम १०, कह देश कोशंबी नगरी १० हजार गाम ११ सांभिख देश नंदीपुर नगरी २१ हजार गाम १२, माखव देश प्रदिखपुर नगरी ७० हजार गाम १३, वह देश वेशेट नगरी २ लाख ७० श्रव्यासी हजार गाम १४, दशार्ण देश मृगावती नगरी १० इजार गाम १५, वरण देश इंडापुर नगरी चोवीस <sup>२४</sup> इजार गाम १६,

本条条条

विदेह देश सिवावती नगरी ४२ हजार गाम १७, सिंधू देश वीतन्नयपाटण नगरी ६ खाल ७० छोंसी हजार पांचसो गाम १०, सोवीर देश मथुरा नगरी ए हजार गाम १ए, विदेह देश मथुरा नगरी ए हजार गाम ४०, शुरसेन देश पावापुरी नगरी ३६ उतीस हजार गाम २१, जंग देश मासपुर नगर ५२ हजार चारसो पचास गाम २२, खाटण देश कादावती नगरी ७० लाख १३ हजार गाम २३, कुणाल देश सांबर्छी नगरी ६३ तेसठ हजार गाम २४, सोरठ देश हारा नगरी ६० अमसठ हजार ५ पांचसे १६ जवीस गाम १५, केकर्फ देश सेतांक्का नगरी १ खाल १ए हजार आर्थ 泰安 流水 देश १ लाख १ए हजार द्यानार्य देश ७ हजार खालसे. १५ पचीस स्थान. प्रासाद १, विहार १, हुम्म ३, हस्तिशाला ४, श्रश्वशाला ५, प्रांमा-गारं ६, कोष्टागारं ७, ज्रुमिगृहं ७, धर्मशाखा ए, दानशाखा १०, संजाशाखा ११, आर्युषशांखा १२, स्नानगृह १३, अलंकारसन्ना १४, नायकगृह १५, शत्रुकार १६, 安泰泰 पानीयशांखां १९ व्याश्रम कीमा गृह १० महानस जोजनशांखा १ए शांतिगृह २० 泰豪泰 चंदन द्यंपवरकवंद्य २१, स्तिकागृह २२, गोशाला २३,पाकपूटिगतिका तपनी श्र-

ख्यशाखा २४, गंजापकण घोषनिषद्या मतश्चविस्थानम् २५. पचीस किया द्यर्थ:-कायाये करी किया कींजें ते कायकीकिया १, इल मुसल कसी कुदालादि श्रम्मसुं क्रपजे ते अधिकरणकी २, रीससुं खपजें ते प्रदेषकी ३, परने पी-मा जपजावें ते पारितापनकी ध, प्राणी वध कीजें ते प्राणातिपातकी ५, श्रारंत्र की-जें करसाणादिक ते श्रारंजकी ६, धन धान्यादि खाजे ते परिग्रहकी ७, मायाये क री लागें ते मायाप्रत्ययिकी ए, मिथ्यात्वे करी लागें ते मिथ्यादर्शनकी ए, श्रविरती-ने लागें ते श्रपचलाणकी १० नाटक प्रमुखने जोयवै लागें ते दृष्टिकी ११, सुकमा-खने फरसें ते पृष्टिकी १२, बाहिरखी वस्तु कांइ देखी ते वस्तु करवा वांबें ते प्राती-ति १३, घृतादिक जाजन न ढांके ते सामंतोपनिकी १४, इंग्रीयार घमावें ख्रयवा ती ला करावें शस्त्रकी १५, खापणे हाथे हणें ते स्वहस्तीकी १६, वस्तु खणावे मेब्हिवे ते खाङ्गापतिकी १७, फल काष्टादि विदार ते विदारणकी १७, खजाणतां कीजें ते श्यनाजोगीकी १ए, इहलोक परलोक विरोधी ते श्रनवकांल प्रत्ययकी २०, श्रन्य पास कार्य करावें ते ख्रान्य प्रयोगकी २१, ख्राठ कर्मना बंध द्याय ते समुदानकी २२,

· 大学大学大学大学

स्नेहे करी लागें ते प्रेमको १३, कोध माने करी लागें ने हेपकी १४, केवलीने लागें न इरज्यापथिकी १५. 机工作 \*E633\* A. 3.3.4.

# ॥ स्थय उवीस बोख खिख्यते ॥

१६ बोल उवीस प्रश्नोत्तर, १ कहो पुजजी कहो स्वामीजी इयां घणा जीवांरी जलित की सै पापरे जदेसुं. सुण सिष्य पुरवले जब घणा कल महरो छाहार कीनो तिण पापरे **उ**देसुं, २ कहो पुजजी इए। जीवने जणणां गुणणो नही खावें सुं किए। पापरे ज-देसुं पुरवले जब ख्याप जणीयो नही पेलैने जणतां छातराय दीनी तिण पापरे उदे मुं, ३ कहो पूज्य जीव कालो कुदरसण कीण पापरे जदेमुं. पूरवले जब रूपरो अ-हंकार कीनो तिण पापरे उदेशुं, ध कहो पूज्य इण जीवने ख्रजस खकीरती खावेशुं किए पापरे जदेसुं सासु ससरेसुं इसका कीना तिए पापरे जदेसुं, ए कहो पूज्य इ-ण जीवने कुमो कलंक त्र्यावेंसुं. किण पापरे जदेसुं पुरव जवे वारंवार कलह कीनो तिण पापरे जदेसुं. ६ कहो पूज्य इण जीवरो बोलायो चालीयो सुहावें नहीसुं कि-ण पापरे जदेसुं. पुरवले जब व्यापरो कियो व्यापीयो पेलैरो कियो जवापीयो तिण पापरे जदेसुं, 9 कहो पूज्य छण जीवने शाबाशी जस मीखें नही सुं किए। पापरे

泰安泰學

杂华杂

100米 米①米 米①米 米①米 米①米 米①米 米①米 米①米 米仑米 जदेसुं. पूर्व जव जातरो श्रहंकार किनो तिए। पापरे जदेसुं, ए कही पूज्य इए। जी-वने घणों कोध आवें सुंकिण पापरे खदेसुं. पुरवले जब घणो लोज कीनो तिण पा-परे जैदेसुं, ए कहो पूज्य इण जीवर संसारत्रमण मिट्यो नही सुंकिण पापरे जदै-सुं. पुरव अवे पोसा पिनकमणेमं विराधना कीनी तिण पापरे जुदैसुं १०, कहो पूज्य इए। जीवने देस परदेस जावे पिए। लाज हुवे नही सुं किए। पापरे जदैसुं. पुरवले जब पोते दान दियो नही पैछोने देतां छांतराय दीनी तिए। पापरे जदैसुं ११, कहो पूज्य इण जीव पांचे इंडी हीण पाइसुं किसे पापरे जैदेसुं. पूरवले जब गाज्र मूला कांदा जिमकंदरी आहार कीनो तिए पापरे जैदेसुं १२, कही पूज्य इए। जीवे पुरुष पणो पायने स्त्री सरीखो हुवे सुं किसे पापरे जदैसुं पुरवले त्रवे मायारी कपटाइ कीनी तिण पापरे उदेसुं १३, कहो पूज्य इण जीवे पांच इंडिरो विजोग पायो सुं किण पापरे जदैसुं पूरव जवे वनस्पतिनी जेदन जेदन घणी कीनी तिण पापरे जदैसुं १४, कहो पूज्य इण जीवने घणी निंद आवे सुं किण पापरे उदेसुं. पुरव जब दारु जागरो निसो घणो कीनो तिण पापरे उदै सुं १५, कहो। पूज्य इण जीवरो शरीर

निरोग नहीं रहे सुं किए। पापरे जदैसुं. पुरव जवे घए। जीव मोसीया तिए। पापरे जदे सुं १६, कहो पूज्य ह्या जीव बुलो पांगलो गूंगों कीसे पापरे जदैसुं. पुरवले प्रव जागसीमे घालने कुटीया पीटीया तिए। पापरे उदै सुं १७, कहो पूज्य इए जीवने रोज घणो आवे सं किसे पापरे जदै सं पुरबंदों जब काची कुंपद्यां तोमी तिण पापरे जदै सुं १०, कहो पूज्य इण जीवसुं तपस्या नही हुवे सुं किण पापरे जदै सुं पूरवाले जब ख्याप तपस्या किंधी नहीं ने पेले करताने खंतराय दीनी तिण पापरे जुदैसुं १ए, कहो पूज्य इण जीवने खुगाइ बेटा घर सुहावे नही सुं किण जदैसुं पुरवले प्रव दान सील तप प्रावना पानी नहीं तिए। पापरे जदै सुं कहो पूज्य इए जीवने सीख सीखामण वाहाखी खागे नही सुं किए पापरे उदै सुं पूख प्रवे खार्त ध्यान रुड ध्यान ध्यायो तिण पापरे उदै सुं. २१, कहो पूज्य इण जीवने प्ररजोबनमे दयापणो श्रावे नही सुं किण पापरे उदै सुं पूरव प्रवे घणा मैला मंत्र कीना तिण पापरे उदै सुं <sup>२२</sup>, कहो पूज्य इण जीवने परजोबनपणामे रंनापो श्रावे सुं कीण पापरे उदै सुं. पुरव प्रवे जमां सुं रुंख उपानिया तिण पापरे

老女子 朱田子 朱田子 朱田子 朱田子 朱田子 朱田子 朱田子

李崇崇 李崇崇 李

李本章 朱色本本色本本

多条条

जदयसुं २३, कहो पूज्य इण जीवने कुटंब घररो सुल देवे नही सुं किण पापरे जदै सुं. पुरव जवे टागमा टोगमीने इध् बोमीयो नहीं ने ख्रांतराय दीनी तिण पापरे जदै मुं २४, कहो पूज्य ह्या जीव कांणो हुवो सुं किसे पापरे उदैसुं ? पुरव जवे बोरकाचर फल फूल सूरुसुं विंधीया ने माला किनी तिण पापरे उदैसुं २५, कहो पूज्य जीव छांघो हुवेसुं किए। पापरे उदैसुं. पुरवछो जव दीसता जीव घानमें पीसीया तिण पापरे उदेसुं १६, कहो पूज्य छो जीव छापुत्रीयो छुलीयो हुवे सुं किण पापरे जदैसुं. पुरवले जब घणी बुराइ कीनी छाणदिकी छाणसुणी वातो कीघी तिण

\*\*

李本本本本

१६ बोल ३६ श्रावकरी मयीदारा. छंगोजा जल्लिणया विहं १, दंतण विहं २, बृद्धना फल फल विहं ३, तेलादि छानंगण विहं ४, मईन जवट्टण विहं ५, स्नानपाणी मज्जण विहं ६, वस्न वह विहं ७, चंदनादि विलेवण विहं ०, फुल पुष्फ विहं ए, प्रहणा छान्नरण विहं १०, घूप विहं ११, पीणकीचिज पेफ विहं १२, सुलमी वगेरे जलण विहं १३, चावल जदन विहं १४, दाल सूप विहं १५, विगय विहं १६, साग विहं

ૠ

秦安子等一次 安安安 安京 经上班 大 १७, वेखरा फल माहुर विहं १०, जिमण विहं १७, पाणी विहं २०, मुखवास विहं २१, पगरिण वाहनि विहं २२, श्रमवारी वाहन विहं २३, सिजा सपण विहं २४, सचित्त विहं १५, दब विहं १६. गुणावाणा १४ जपर १६ बोल. १४ गुणावाणा मांहि १ सावद १।३,११ निर्वद १, १४ गुणठाणामे २ व्यथिम ११३, बाकी १२ धिम २, गुणठाणा १४ मांहि २ परमत्ती ११३, १२ समत्ति ३, गुणठाणा १४ मांहि २ विराधक १।२,१२ खाराधक ४, गुणठाणा १४ में २ आग्या बाहिर ११३, १२ आग्या मांहि ५, १४ गुणठाणामें २ मिथ्यादृष्टि ११३। १२ सम्यगदृष्टि ६, १५ गुणठाणे २ व्यग्यानि ११३, १२ ग्यानि ७, १५ गुणठाणे ४ व्यवित्त पांचमो १ वृत्ति ए सर्ववृत्ति ए में गुणठाणा १४।४ व्यसंवरी पहिलो १ पांचमो संवरासंवरी ए संवरी. गुणठाणा १४ में ४ असंजती १ पांचमो संयता संयती ए संयमी १०, १४ गुणावाणे १२ व्यक्तेवाती २ केवाती १३।१४ मो ११, १४ गुणावाणे १० सरागी पहिला ४ वितरागी ११, १२, १३. १४।१२. १४ गुणागाणे ए सवेदी १ अवेदी १० ११, १२, १३, १४ मो १३. १४ गुणावाणे ३ गुणावाणामे काल न करे ३।१२।१३ मे

बाकी ११ गुणठाणा काल करे १४, गुणठाणा १४ में ५ सास्वता १।४।५।६।१३ मो ए श्यसासता १५, तीर्श्वकरदेव ५ गुणठाणा नही फरसे १११५।११ मो ए फरसे १६. १४ गुणठाणे ६ प्रमादी प्रथम ए व्यपमादी १७, १४ गुणठाणे १० सकपाइ प्रथम <sup>ध</sup> ख्यकषाइ १७, १४ गुणाताणे १३ संयोगी १ ख्योगी १४ मो १ए, १४ गुणाताणे संबेसी १३ द्यांबेसी १४ मो २०, १४ गुणवाणे १३ जासक १ द्याजासक १४ मो २१, १४ गुणठाणे १३ ब्याहारी १ ब्याणाहारीक १४ मो २२, पहिले गुणठाणे जन्य ब्य-प्रन्य दोनुं वाकी १३ गुणठाणे प्रन्य १३, गुणठाणा ३ जीवरे परप्रव साथे जावे 会が未完か ११९१४ बाकी ११ न जावे २४, १४ गुणठाणे ११ सइंदिया १३।१४ मो छाणेंदीया 李本 २५, १४ गुणठाणा ४ व्यपचलाणी प्रथम १० पचलाणी २६. देवलोक १६. बारे १२ कट्प ए ग्रैवेक ए छाणुत्तर विमाण एवं १६. \*\*\* 泰泰 泰泰泰

#### ॥ श्रय सत्तावीस बोख खिल्यते ॥

於安本①安本①宋·朱章

सत्तावीस गुण साधुके. पांच महावत पाखें, पांच इंड्री वश करें, च्यार कषाय टाखें एवं १४. दामावंत १५, वैराग्यवंत १६, जावसचे १७, करणसचे १७, योगसचे १ए, मन समधारणीया २०, वयसमधारणीया २१, कायसमधारणीया ४२, नाणसंपन्ने २३, दर्शनसंपन्ने २४, चरित्रसंपन्ने २५, सितादिकवेदनी सहे २६, मरणांत जपसर्ग सहे. १ श्राकाशना सत्तावीश बोल. श्रागासे तिवा १, श्राकाश बकाए तीवा २, गगणेति-वा ३, जसेतिवा ४, समेतिवा ४, विसमेतिवा ६, खहेतिवा ७, तिहेतिवा ७, वाता-तिवा ए, विवरेतिवा १०, ख्राप्रोरेतिवा ११, ख्रांबरेतिवा १२, ढामेतिवा १३, गुसिरेतिवा १४, मगेतिवा १५, विमुहेतिवा १६, श्रादेतिवा १७, वियदेतिवा १७, श्राधारेतिवा १ए वोमेतिवा २०, जायणितवा २१, छातिरिखेतिवा २२, सामेतिवा २३, उवासंतरितवा २४, श्रागमेतिवा २५, फिलिहेतिवा २६, श्राणंतेतिवा २७. पृथ्वीकायना जेद सत्तावीश. १ स्फटिकरतन, २ मणिरतन, ३ रत्ननी सर्व जाति ४, प-

安全李宗宗李宗亲 \*\* 本文本 安田本 宋田本

खाला, ५ हिंगलो, ६ हरताल, ७ मणशिल, ७ पारो, ए सोनुं, १० रूपुं, ११ त्रांबु १२ लोहूं, १३ जसत, १४ सीसुं, १५ कथिर, १६ खमीमाटी, १७ हरमजीवानी १० व्य रणेटोपाषाण, १ए पहोबोपाषाण २०, ऋबरल २१, तुरीमाटीनी जाति २२, खारी मा-टीनी जाति, १३ माटीनी सर्व जाति, १४ पाषाणनी सर्व जाति, १५ सुरमानी जाति, १६ छांजननी जाति, ५७ बूएानी जाति. २९ शिलामणके सत्तावीश बोटा. १ मित्रसें कपट खणा नही, २ खेहवान स्त्रीका विश्वास न करणा, ३ ब्यन्याय मार्गसेंती इब्य पेदा न करणां, ४ बर्मोंके साध वैर करणा नही, ए नीच पुरूपके संग विवाद करणा नहीं, ६ वैरीके जपर पण निर्दयी न होणा, 9 समर्थ होकर इसरेकी खाशा जंग नहीं करणी, ए किसीकुं जुठा क-खंक न देना, ए किसीकुं खराब माह्यम होय एसा वत्तीव नही करणा, १०, जिस ठिकाणे इस्मन ज्यादा होय वहां जोवें नहीं, ११ ट्यपणी बनाइ मुलसें करणा न-ही, १२ चोरीकी चीज मोख खेणी नही, १३ कार्य तथा सत्कार विगर किसीके घर जाणा नही, १४ मातापितानी छाग्या खोपवी नही, १५ सगां साछे कदापि विरोध

\* 李老金米老金米多

करवो नही, १६ कपटीका छानंबरको विश्वास न करणो, १९ शूरवीर होकर निर्वेखने इःख देणां नही, १० श्रित कष्ट पमें पण श्रात्मघात करणा नही, १ए हांसी क-रतां किसीपर क्रोध करणो नही, २० कोइ क्रोधने वशे करी कमवा वचन आय कर कहै तथापि न्यायमार्ग डोमें नही, २१ माता पिता गुरु रोठ स्वामी और राजा इ-णोंके व्यवगुण वोलणा नही २२, स्नेहराग समान इसरा जत्कृष्टा वंधन नही जर प्राणीकी हिंसा समान मोटा पाप नहीं, २३, माता बेन छर पुत्री साथे एक आसने बेठणा नही, २४ कोधी कृपण श्रालसु श्रौर व्यसनीकी संगत करणी नही, २५ ध-नसें बहोत प्यार होय परंतु अन्याय करी उपार्जन नही करणा कारण सोनेरी ब्री कोइ पेटमां मारता नथी, २६ कदापी सत्य जोमना नही, २७ जिस घरमें कोइ म-नुष्य न होय जसमें चोकस विना जाणा नही.

## ॥ ख्रय खढावीस बोख खिरूयते ॥

条本

米米

杂华

我会 本心本 本田本 中海

赤字赤珠 20 व्यादावीस त्याचार कब्प. याचारांगसूत्रना पचीश व्यथ्ययन.स्रीपरिज्ञा व्यथ्ययन १, खोकविजीया २, सीतोसनीया २, समक्त ४, खोकसार ४, युता ६, विमोखा ७, छ-पादान ए, महाप्रज्ञा ए, पिंमेपणा १०, सेज्या ११, इर्या १२, जापा १३, वस्त्र एषणा १४, पात्र एपणा १५, द्यवग्रहपिमा १६, सात सतकीया २३, न्नावना २४, विमुक्ता १५, उसीतना त्रणा. खाष्ट्रमासादिक प्रायित २६, गुरुमासादिक प्रायित २७, व्रत आरोपण प्रायनित २०. शिलामणका व्यठावीस बोख. सुधी सरदहणासुं सुणेवेका जद्यम करें १, जो जो म-रियादा वमाने करी तेहनो निखाह करवो २, इसमनसेंती काम पमें तो विचारीने पामित्रो ३, घणी लटपट करें तिणने आपणो मन नही दीनें ४, लोक खुगाइ जना रहेने वात न करवी ५, वमा सीख देवें तो प्रमाण करवी ६, जिसके वोलीये वंध न-ही तिण्रेंती न बोखीये 9, सीख समिकतमें परिसह उत्पर्जे तो पिण निह गणो ए

李条李

李本学来北京本本京本本京中北京本本本本本本本 नीचकी संगती न करवी ए, बनासुं मित्रसुं हेत वधारवी १०. सात कुव्यसनरो संग न करवो ११, वमेरा चूका हुवे वाद न करवो १२, छाणविवेकीने सीख न देणी, माने वा न माने १३ वमेरानी विनय करवी १४, आपरा गुण आपरे मुंदेसुं न प्रकासवा १५, पारका जगुण जाणतो हुवें ते किणही आगल न कहेवा १६, घरमें सुल इन्ल छानेक है पिए धर्मरी मर्यादा न मुके १७, नीच पुरुषने न हेम्बो हेमे तो रैकारा तुकारा बोटों १ए, पीठ पांचे किएारी निंदा न करवी जो सांजले तो वेर बंधे सील संयमे दिढ रहेवा २०, क्रोधीने न बेमवा २१, दीय जणा वात करता होय ती तीजाने जनो न रहणो १२, श्रापरें घररा जिंद्य तथा सुख इःख किंपाहीसुं न क-हणो २१, जो कोध छावें तो जिम तिम न बोटों बोटों तो पी उतावणो परें २४, विवहार निश्चे दोष्ट्र साचववा ज्यम ते व्यव्हार निश्चे कर्त्वो ते मोद्द १ए, वनरा ताणता होय तो जोराने दील देणी २६, घरमें काम छानेक जै पिण दोय घर्मी ध-मेरो काम करवो २७, छागे पार्च जोइने चतुराइसुं बोखवो २०. २० छाठावीसवार फलातां गिणवी. पुर्वगे १, पुर्व २, त्रिमयंगे ३, तुमीए ४, छाममंगे ५, \*\*

华林林林林林林林林林林 ष्यममे ६, ष्यवंगे ७, ष्यवं ०, हुहुश्रंगे ए, हुहुए १०, जपलंगे ११, जपले ११, प्रमुमंसे १२, पन्नगे, १४, निल्पों १५, निल्पों १६, श्रामणीनर १७, व्यां खंगे १ए, व्यां ३०, नक्यंगे २१, नं ३२, पक्यंगे २३, पदा २४, चुिख्यंगे २५, चुली २६, ससीपहेली खंगे २७, सीसपहेली २०. व्यवाइस लब्धी. व्यामोसही १, विप्पोसही २, खेलोसही ३, जलोसही ४, सवोसही श्ट <sup>ए</sup>, सिनशोता ६, श्रविभिज्ञान ७, रूजुमित छ, विपुलमित छ, चारणलिब्ध १०, द्यसिविष ११, केवललिब १२, गणधर लिब १३, पूर्वधरलिब १४, द्यस्हितलिब १५, चक्रवर्त्ति लिब्ध १६, वासुदेवं लिब्ध १७, बलदेव लिब्ध १०, वीरमधुसपिया १ए पदानुसारी २०, काष्ट्रबुद्धी २१, बाह्यबुद्धी २२, तेजु खेरया २३, ब्याह्यस्क सरीर खिं १४, सीतल लेक्या १५, वैक्रिय लिब्ध १६, छाखीण माहाणसीया लिब्ध १७, पुलाक लिब्ध १ ।. श्री वीरनी १० जपमा. सूर्यनी जपमा १, व्यमिनि जपमा २, समुद्धनी जपमा ३, देवतामांहि इंद्य मोटो ४, जंचामांहि समेर पर्वत मोटो ४, लांबा पर्वतमांहि निषध श्र

पर्वत ६, चुिम त्याकारे पर्वतमाहि रुचिक पर्वत ७, रूखमांहि सामिल वृद्ध ७, वनां 李本本本 मांहि नंदन वन ए, शब्दामांहि गाजनो शब्द १०, श्रह नक्तत्र मांहि चंद्रमा ११, सुगंधमां हि बावनाचंदन १२, समुद्धमां हि स्वयं तूरमण समुद्ध १३, नागकुमार मां हि घरणिंड १४, रसामांहि सेलमी रस १५, हाथीया मांहि ऐरावण हाथी १६, सिंह मांहि केसरीसिंह १७, नदीया मांहि गंगानदी १०, पंखीया मांहि गरूम पंखी १ए, युधमें वासुदेव २०, फूला मांहि व्यरविंद कमल २१, दानमांहि व्यजयदान २२, रा-जामांहि चक्रवर्त्ति २३, सतनाषामांहि निखद्य न्नाषा २४, तपस्यामांहि सिख तपस्या १५, देवताकी थितिमांहि खवसतिमया २६, सन्नामांहि सुधर्मा सन्ना मोटी तिम न-ग्वंत मोटा २७, धर्ममांहि मुक्ति मोटी तिम नगवंत मोटा २०. चोथा मोहनीय कर्मनी उत्तर प्रकृति २०. १ सम्यक्त मोहनीय, २ मिश्र मोहनीय, ३ मिथ्यात्व मोहनीय, ४ द्यनंतानुबंधी क्रोध, ५ द्यप्रत्याख्यानी क्रोध, ६ प्रत्याख्यानी क्रोध, 9 संज्वलन क्रोध, ए अनंतानुबंधी मान, ए अप्रत्याख्यानी मान, १० प्रत्या-ख्यानी मानी, ११ संज्वलन मान, १२ स्रानंतानुवंधी माया, १३ स्प्रात्याख्यानी माया

१४ प्रत्याख्यानी माया, १५ संज्वलन माया, १६ श्वनंतानुबंधी लोज, १९ श्वप्रत्याः 北京 ख्यानी लोज, १० प्रत्याख्यानी लोज, १९ संज्वलन लोज, २० हास्यनोक्षाय, २१ रतिनोकपाय, १२ व्यरतिनोकपाय, १३ शोकनोकपाय, १४ प्रयनोकपाय, १५ जुगुप्तानोकपाय, १६ पुरुष वेदनोकपाय, १७ स्त्री वेदनोकपाय, १० नपुंसक वेदनो-杂类 कपाय. · ( ) ( ) ( ) ( ) ( ) ( ) 45000 交谈

#### ।। श्रय श्रोगुणतीस बोख खिख्यते ॥

श्ए पापसूत्र श्ए. त्रूमिकंप विचार शास्त्र १, दिशा खाख फख विचार शास्त्र २, सुपनका विचार शास्त्र २, उद्यक्तपात घरती घूने ४, खंग फूरणेका ५, सुरचलणेका ६, ति लेमिसेका ७, स्त्री पुरुष लक्तण ७, खर्थ १६, खर्थ पाठ दोनो २४, विकथा करणेका २५, जोतिषशास्त्र २६, वेदक शास्त्र २७, जोगमिलावणेका २० जर खनेरा वसीकरणादिक २ए.

茶安泰等泰安泰

张·朱·尔·朱·朱·尔·朱·朱·

साकरणादिक रिए.

श्रेष्ट मूर्लिका श्रेष्ट बोल. १ विना चूल लाय सो मूरल, २ ट्राजीण्यकां लाय सो मूरल ३ चिला सूवे सो मूरल ४, घणो चले सो मूरल ५, घणी देर पग जपर जार देइने बे ले ते सो मूरल ६, वमीनीत छोटीनीतकी हाजत छोमें सो मूरल ७, निचकुं शिर ज्ञापर कुं पग करके सुवे सो मूरल ७, सारी रात स्त्री संग विषय सेवें सो मूरल ए, सोले वरसकी जमर होय विना मैथुन सेवें सो मूरल १०, बुढापेमें ज्याह सो मूरल ११, जोजन तथा जजन करतां वात करें तथा हसें सो मूरल १२ चिंता मिठता बाद करें

सो मुरल १३, हजामत करावतां वात करें सो मूरल १४, विना पहिचाने आदमीके साथ चले सो मूरल १५, पचकाण लेके याद न करें सो मूरल १६, माता पिता छौर गुरुकी प्रक्ति नहीं करें सो मूरल १७, धनवानसें छौर पंिनतसें वाद करें सो मूरख १0, तपस्त्रीसें वाद करें सो मूरख १९, पराया बल धन रूप विद्या देखके हर्ष या ईर्षा करे सो मूर्ख २०, हकीमके मिछि ऐसे रोगकी हकीकत सुनायके छी। पत्र न खाय सो मूर्ख २१, पंभितके मिखे पर मनका संसा न मिटावे सो मूर्ख २२, सतपुरुप त्यागी साधूकी संगत पायके त्याग पचलाण सेवा जिक्त न करे सो मूर्ख २३, सुपा-त्रके जोग मिले पर दान नहीं देवे सो मूर्ष २४, पाणी पीतो इसे सो मूर्ष दारिष्ट छावे छागछी कमाइनी इहा राखे सो मूर्ख २६, छापरा गुण छापरे मुख-सुं वलाणे सो मूर्ल १७, माथे देणों करके धर्म करें सो मूर्ल १०, जधारो धन देके पांं नहीं मार्गे सो मूर्ख २९, सजन साथे विरोध करें खीर पार हा खोको साथे मीति करे सो मूर्ख. १९ १९ श्रक्तरना जेत्कृष्टा मनुष. 9 कोमाकोम कोम कोम ९२ खाल कोमाकोम २५

¥ 本法、安全 था हजार कोम कोमाकोम १ सो कोम कोमाकोम ६२ कोम कोमाकोम । <sup>ए२</sup> खाख कोनाकोन ४२ हजार कोना होन ६४३ सो कोनाकोन ३७ लाख कोन ५ए हजार ३९।५ए।३५४।।३ए।५०।३३६. 本学·朱·安子子①宋子公子·朱·李本 \*<del>£</del>6)}\*

तीस बोख करी जीव महा मोहनी कर्म बांधे. त्रस जीवने पाणी मांहि मबोयने मारे कर्म बांधे २, मार्थे घाव घाछीने मारे ते जीव महा मोहनी कर्म बांधे ४, आखा

张宗本朱本本朱子 张宗 हना बुरा चिंतवे थन खंनावे साहको स्त्रीने जोगवे ते महा मोहनी कर्म बांघे १३, श्यने इश्वर हुवो पंचाने इश्वर करी श्राप्यों है ते पंचान बुरा चिंतवे ते महा मो-हनी कर्म बांघे १४, चाकर ठाकुरने प्रधान राजाने स्त्री जरतारने मारे सापण आपणे इंमाने गीखे ते महा मोहनी कर्म बांधे १५, पृथ्वीपति राजाकी घात चिंतवे ते महा मोहनी कर्म बांधे १६, एक देशनो राजा तथा साध साधवीकी घात चिंतवे ते महा मोहनी कर्म बाधे १७, धर्मि पुरुषने धर्म करता निगावे ते महा मोहनी कर्म बांधे १० तिर्धिकर देवके व्यवगुण वाद वोले ते महा मोहनी कर्म वांधे १ए, चतुर्विध संघका श्चवृश्वाद बोखे ते महा मोह्नी कर्म बांधे २०, श्चाचार्य जपाध्यायजीके श्चवंशिवाद बोले ते महा मोहनी कर्म बांधे २१, आचार्य जपाध्ययजीके समान बैठे ते महा मोहनी कर्म बांधे २२, बहु सूत्री नहीं अरु कहावे ते महा मोहनी कर्म बांधे २३, तपस्वी नही तपसी कहावें ते महा मोहनी कर्म बांघे २४, रोगी गीलाएकी वेयावच न करे ते महा मोहनी कर्म बांधे २५, टोला मांहि जेद पाने ते महा मोहनी कर्म बांधे १६, हिंस्थाकारी शास्त्र परूपे ते महा मोहनी कर्म बांधे १७, देवता मनुष्यके

खाउते काम जोगकी वंडा करे ते महा मोहनी कर्म वांचे २०, ब्रह्मचर्य पाछी तपस्या करी खाखोइ निंदि देवता थ्या है तहनी निंदा करे ते महा मोहनी कर्म बांघे १ए 光学学学学 देवता आवे नही आरु कहे मेरे पास देवता आवे हे इम कहे ते महा मोहनी कर्म बांधे ३०. २० इषमा कालके २० लक्कण. नगर ते गाम सरीला १, गाम ते मसाण सरीला २, क्रु-टंब ते दास सरीला ३, पुरुष प्रधान लालच ग्राही ४, राजा जम सरीला ४, सुसी जन निर्दीज ६, केताएक कुलनी स्त्री वेश्या सरीखी ७, पुत्र स्वढंदे चृालसी ७, सि-本文学·米①米·米①米·米·米· ष्य ते गुरूना प्रत्यनीक होसी ए, इर्जन सुखी घणी ऋष्टिना घणी होसी १०, स-जान इसी ख्रह्म ऋद्धिना धणी होसी ११, देशमें परचक्रना ख्रामंबर कंतार घणी होसी १२, प्रथवी डिर्जिकादि खाती पीमा १३, ब्राह्मण खर्धना खोजी १४, समण महात्मा कुलवास त्यागी १५, मोटा धर्ममे कवाय कुलख चित्त होसी १६, सम्यदृष्टि देवता मनुष्य श्रोमा १७, मिथ्यादृष्टि देवता मनुष्य प्रचुर घणा १०, मनुष्यने देव-तानो दरसण इर्लिज १ए, विद्या मंत्रनो प्रजाव उन्हों २०, गोरसमें रस थोमो २१,

\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*

\*\*\*

बद्ध धन खांडलो थोंमो २२, मासकब्प सरीला लेंत्र थोंमा २३, साधु श्रावकरी प-मिमा विजेद जासी २४, खाचार्य ते शिष्यने सूत्र थोंमो जणासी २५, शिष्य ते क-खह असमाधिना कारण होसी २६, समण थोना अने मुंन घणा २७, आप आ<sup>-</sup> पणी समाचारी गहरी जुदी जुदी होसी १०, मलेब राजा बलवंत होसी १ए. हिंड राजा श्रब्प होसी ३०. साधकी त्रीस उपमा. कासीके जाजनकी १, संबकी २, काउबेकी ३, सोखमे सोने-की ४, कमलरे फूलरी ५, चंड्माकी ६, सूर्यकी ७, पृथ्वीकी ७, मेरुपर्वतकी ए, स्व-यंजूरमणसमुद्धकी १०, अभिकी ११, चंदणकी १२, द्धहके पाणीकी १३, वृषज्ञकी १४, हाथीको १५, आसोजकातिके पाणीको १६, सिंघको १७, गेमेकी १०, जारमप-李李 खीकी १ए, सुनाघरकी २०, पाउणोकी २१, त्याकाहाकी २२, सर्पकी २३, चकोरपंखी-की २४ वायरेकी २५ जीवकी २६ वृक्की २९ प्रमरेकी २० मृगकी २ए पारेवाकी. इ \*\* ३० बोख त्रीस परम कब्याणा. १ तपस्या करीने नीयाणो न करें तो जीवरो परम कब्या-ण हुवें किणनी परे तामखीतापसनी परे, २ समिकत नीरमखों पाखें तो जीवरों परम

कब्याण होवे किणनी परे श्रेणिक राजानी परे ३, मन वचन कायानो जोग सुन \*\*\* प्रवरतावे तो जीवरो परम कब्याण होवे किणनी परे गजसुलमालनी परे ४, उत्ती मकती कमा करे तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी पर परदेशी राजानी पर ए पांच महावत निरमखा पाखे तो जीवरी परम कब्याण होवे किणनी परे गौतमस्वा-मीनी परे ६, कायरपणो डोमे सुरपणो ब्यादरे तो जीवरो परम कब्याण होवे किण-नी परे सेखक मुनीराजनी परे 9, पांच इंड्वीने वस करे तो जीवरो परम कंट्याण होवे किएानी परे हरिकेसी मुनिराजनी परे ए, माया कपटाई डांमे तो जीवरो परम कब्याण होवे किएानी परे मल्लीनाथजीना उए मित्रनी परे ए, खरे धर्मनी श्रास्ता राखे तो जीवरो परम कब्याण होवे किणनी परे वर्ण नामे नटनी परे १०, चरचा वारता करीने सरदहणा सुद्ध करे तो जीवरो परम कल्याण होवे किएानी परे केंसी गोतमस्वामीनी परे ११, इखी देखीने करुणा करे तो जीवरो परम कट्याण किणनी परे मेघरथ राजा मेघ कुमाररे पाउछो हाथीरे प्रवनी परे १२, खरे वैचनरी श्रासता राखें तो जीवरो परम कब्याण होवे किणनी परे श्राणंदजी कॉमदेवनी परे

१३, श्रदत्तादान त्यागे तो जीवरो परम कल्याण होवे किएानी परे श्रमरजीरा सार्त-से सिष्यनी परे १४, शुद्ध मन सीख पाखे तो जीवरो परम कब्याण होवे किणनी परे सुदरसण रोठनी परे १५, ममता डोमीने समता खादरे तो जीवरो परम कख्या-ण होवे किणनी परे कपील बाह्मण कपिल केवलीनी परे १६, सुपात्रने दान देवे तो जीवरो परम कब्याण होवे किणनो परे रेवतीजी गाथापतणीनी परे १७, चर्छाये चीतने श्रिर करावे तो जीवरों परम कख्याण होवे किणनी परे राजिमतीनी परे १ए छ-रकृष्टो तप करे तो जीवरो परमकब्याणीक हुवे धनाजी **अण्गारको परे. १ए ज**ःकृ-ष्टी वैयावच करे तो जीवरो परमकख्याणीक हुवे कीणनी परे पंथकजीनीपरे. २० खंतजावना जावे तो जीवरो परमकख्याणीक हुवे कीणनी परे जर्ज्महाराजानी परे. ११ चलीवै चीत्तने श्रीर करे तो जीवरो पररमकल्याणीक हुवे रहेनेमीजीनी परे. २१, जिल्हुष्ट कमा करे तो जीवरो परम कह्याण होवे किणनी परे व्यरजनमालीनी परे २३, जिन धर्मरी व्यासता राखे तो जीवरो परम कह्याण होवे किणनी परे व्यर-णीकजीनी परे २४, चार तीर्थने साता जपजावे तो जीवरो परम कह्याण होवे कि-

णुनी परे तीजे देवलोकरे इंध्वरे पानले जवनी परे २५, जतकृष्ट वीनो करे तो जीवरो परम कंट्याण होवे किणनी परे बाहुबदाजीनी परे २६, जलुष्टि दलाखी करे तो जी वरो परम कल्याण होवे किएानी परे कुश्न महाराजनी परे २७, जत्कृष्टो व्याप्तिग्रह करे तो जीवरो परम कब्याण होवे किएानी परे ढंढण मुनिराजनी परे २0, शत्रु मित्र जपर सरिला जाव राले तो जीवरो परम कब्याण होवे किणनी परे जदाइ राजानी परे २ए, य्यनर्थरो हेतु जाणीने दया पाक्षे तो जीवरो परम कब्याण होवे किणनी परे धर्मरुची छाणगारनी परे ३०, कष्ट पड्या सिखमें दृढ रहे तो जीवरो परम कल्या-ण होवे किणनी परे चंदनबाद्या वा जणकी मातानी परे. २० कमीवेपाक प्रकरणमेंसे २० सामान्य कर्मबंध फल कहतें है. यथा १ प्रम निर्धन कि-स कर्मसें होवे, जत्तर पराया धन हरणेसें. १ प्रम दरिन्दी किस कर्मसें होवे, जत्तर दान देतेको वर्जनेसें, ३ प्रम धन तो पावें परंतु जोगना नही मिखें किस कर्मसें, उत्तर दान देकें पञ्चतावनेसें, ध प्रण टाकुली टार्थात् जिस पुरुषके पुत्र पुत्री न हों-य किस कर्मसे होंवें, उत्तर जो वृद्ध रस्तेक उपरहो जिनसें ध्यनेक पशु ध्यौर मनु-

ष्य फल फूल खावें खार गया करकें सुख पावें एसें बद्दोको कटावें तो, ५ प्रभ वं-ध्या किस कर्मसें होय, जत्तर गर्ज गलावें तथा गर्ज गलाने जिष्धि देवें तथा गर्ज-बती मृगीका वध करें तो, ६ प्रस मृत वंध्या किस कर्मसें होय, जत्तर वैगण दिका उर्घा करें तथा होलें करें तथा कंदमूल खाय तथा मुर्गा आदिक अंमे मार खाय तो, ७ प्रम अधूरे गर्ज गल गल जायें किस कर्मसे, जत्तर प्रचर मार मा रके रहाके कचे फल फूल पत्ते तोनें तथा पंखीयोंके मालेने तोनें तथा पकनीके ज खे जतारें तो, ए प्रम गर्जमें ही मर मर जाय तथा योनिहारमें आके मेरे किस क-र्मसें जत्तर महा आरंज जीवहिंसा करें मोटा जूठ बोलें तथारूप साधुको अस्फता श्राहार पानी देवें तो, ए प्रम छंथा किस कमेसें होय जत्तर मदयाखय तोंककें स-हद निकाजे (जिंमत तक्या दांटीया) महरको धूट्यां देके त्याग लगाके मारे तथा कुड जीवोको मबोके मारें तो, १० प्रस काणा किस कर्मसें होय जत्तर हिर वनस्प-तिका चुर्ण करें तथा फलफूल फूल वा बीज वींघे तो, ११ प्राप्त गुंगा किस कर्मसें होय उत्तर देवधर्मकी निंदा करें तथा निर्प्रथ गुरुकी निंदा करें तथा गुरुके गुंहम-

大学 大田木 七日子 大

\*\*\*

\*\*\*\*\*\*

\*\*\*\*\*

\*

चुकोमके बिद्ध देखें तो, १२ प्रण बहरा बोला किस कमेसे होय, उत्तर पराया जेद छेनेको द्धक हिपके वात सुनने तथा निंदा सुगनेका स्वन्नाव होय तो, १३ प्रा रो-गी किस कर्मसें होय जत्तर गृंखर जड़ंबर ब्यादि फल खाय तथा चूहे घीस पकम-नेके पिंजरे वेचें तो, १४ प्रमा बहुत'मोटी स्थूल देह पार्वे किस कर्मसें, जत्तर शाह होके चोरी करें तथा शाहका धन चुरावें तो, १५ प्रमा कोढी किस कर्मसें होय ज-त्तर व नमें घ्याग लगावें तथा सर्वको मारें तो, १६ प्रम दाह ज्वर किस कर्मसें होय उत्तर ऊंट वेल गधे घोमेके उपर ज्यादा बोज लादे तथा शीत वा गर्मिमे राखें तो १९ प्रम सिरसाम ष्यर्थीत् चित्तत्रम किस कर्मसें होय जत्तर कुंची जाति व गोत्रका मान करें तथा जाना जाना व्यनाचार मद्यमांसादि ज्वाण करके मुकरे तो, १० प्रम्/ 张华华华 पथरी रोग किस कमेंसें होय जत्तर कन्या तथा बहन बेटी माता स्थान स्त्रीसे विषय सेवें तथा वज कंद जून जून खाय तो, १ए प्रम स्त्री पुरुष छोर शिष्य कुपात्र वैरी समान कीस कर्मसें होय पिंजले जन्ममें जनसे निष्कारण विरोध किया होय तो, २० प्रा पुत्र पाढ्यापोसा मर जाय किस कर्भसें जत्तर धरोम मारी होय तो, २१ प्र-

स पेट्रों कोइ न कोइ रोग चला रहें होताही रहें किस कमेंसे जत्तर बचा खुचा खापाके श्रासारनिसार जोजन साधूको देवें तो, <sup>२२</sup> प्रस बाखाविधवा किस कर्मसें हो-य उत्तर अपने पतिका अपमान करके परपतिके साथ रमें तथा कुशीखनी होयकें सती कहावें तो, २३ प्रम वैश्या किस कर्मसे होय जत्तर जत्तम कु अकी वहु बेटी वि-धवा हुए पी हे इ लकी लाजसें कोइ छाक्तिव्यतो न करने पावें परंतु सत्संगके छ-प्रावसें जोगोगी वांग्रा खें तो, १४ जो जो स्त्री व्याहे सो मेरे जिम पुरुषकी स्त्री न जीवे किस कर्मसें होय जत्तर साधु कहाके स्त्री सेवें तथा त्यागी हुइ वस्तुको फिर ब्रहे तथा खेतमें चरती हुइ गोको त्रासें, १५ प्रम नपुंसक किस कर्मसें उत्तर श्रात कूट महा इलकपट करें तो, १६ प्रमा नर्कगतिमें जाय किस कर्मसें होय उत्तर सात कुव्यसन सेवें तो, २९ प्रम धनाव्य किस कर्मसे होय जत्तर सुपात्रको दान देकें ष्ट्यानंद पावें तो, १० प्रम मनोवां जित जोग मिलें किस कमें से होय जत्तर परोपकार करें तथा वमीकी टहल करें तो, १ए प्रम रूपवान किस कमेंसे होय जत्तर तपस्या करें तो, ३० प्रम स्वर्गमें जाय किस कमेंसे होय जत्तर दामा दया तप संयम करें तो.

本学·东安本·东安本·东 李本子子子子子

बोख २० सिखामण. बोखीका बंध नही तिणरो संग न कीजे १, वीटलसुं प्रीत न कीजे २, सज्जन मित्रने बेह न दीजे ३, चुकाने वार वार न पुर्वीजे ४, जलटी बु-िक्रने वार वार शिख न दीजे ५, घणों मान वधीयों तोही वीनी न ठोमीजे ६, सुख 大学·朱色朱子色朱子色光子大色米子子 इलमे पिण जली मरजादा न बोमीजे ७, आपरा गुण आपरे मुंने न बलाणीजे ७, पुंठ पाढे व्यवग्रण न बोलीजे ए, बुरीगारने ढेमीजे नही १०, हीयारी गत जिए तिणने कहीजे नही ११, विण विचार्या दाय छावे जिम न बोलीजे १२, कीयो ज-पगार छलीजे नही १३, निर्गुण गुरु देव धर्म मानीजे नही १४, जाणी गाणीने वाद न कीजें १५, गुरांसुं वमांसुं सामो न बोर्खीजें १६, धर्मरे ठिकाणे जुठ न बोर्खीजें १७, कुमानी पल नही वांचीजें १०, धर्मरी वात जघामे मुख न बोलीजें १ए, छाव-नीतरो पक्त न वांजीजें २०, कपटीरो वेसास न कीजें २१, कीणही वस्तुरो गर्व न कीजें २२, कीणसुं मंख राखीजें नही इःख न दीजें २३. पारकी चामी न खाइजें२४ प्रजपगार करतां ढीख न कीजें १५, कमवो कठोर निर्छज न बोलीजें १६, वृत्त प-२६

चकाणमें दोष न लगाइजें २७, पांच इंड्वीने विषे रसमें न पानीजें २०, पाखंनी लोजी गुरुरी संगत न कीजें २ए, सातुंइ ज्यसन सेवीजें नही २०. ६

### ॥ इकतीस बोख खिख्यते ॥

\*\*\*\*

वार्टे वहतां जीवरा प्रश्न ३१. १ वार्टे वेहता जीवमे समिकत ४ पावे वेदक सम्यक्त टली, २ वाटें वहता जीवमे सरीर २ पावे तेजस १ कारमण, ३ वाटे वेहता जीवमें गुणठाणा ३ पावै १।१।४। ४ वार्ट वहता जीवमें जोग १ पावें कारमण, ५ वार्ट वह-ता जीवमें जपयोग १० पावै मनपर्यव १ चक्कदर्शन २ टब्या, ६ वाटे वहता जीवमें इंड्री ५ उदमस्थमें केवलीमें नही, ७ वाटे वहता जीवमें खेरया ६ तथा केवली श्राश्री श्रव्येसी, ए वाटे वहता जीवमें दृष्टि दोय लाने सम्यगदृष्टि १ मिथ्यादृष्टि १ ए वाटे वहता जीवमें खाजान ३ खाजे, १० वाटे वहता जीवमें समुद्गात १ पहली खाजे, ११ वाटे वहता जीवमें ग्यान <sup>ध</sup> खाजे मनपर्यव ज्ञान टब्यो, <sup>१२</sup> वाटे वहता जीवमें दर्शण ३ चक्कदर्शन टब्यो, १३ वाटे वेहता जीवमें वेद ३ लाजे ख्रावेदी पिण हुवे, १४ वाटे वेहता जीवमें पर्याप्ति ६ माहिखी नही, १५ वाटे वेहता जीवमें स्थित जघन्य १ समय जल्रुष्टा ४ समयरी, १६ वाटे वहता जीवमें कषाय ४, १७ वाटे वहता

जीवमें इंजीया सहित तथा रहित, १० वाटे वहता जीवरा नेद ७ खाने व्यप्यासा, १ए वाटे वहता जीवमें समिकती मिथ्यात्वी, २० वाटे वहता जीवमें प्राण १ आज-खो, २१ वाटे वहता जीवमें सन्नी श्रासनीवि, २२ वाटे वहता जीवमें तसवि श्रावरिव २३ वाटे वहता जीवमें खात्मा <sup>9</sup> पावे चारित्र खात्मा टखी, <sup>२४</sup> वाटे वहता जीवमें संग्या ४, २५ वाटे वहता जीवमें ख्रानासक, २६ वाटे वहता जीवमें करण २०। २९ वाटे वहता जीवमें हेतु ३३, १० वाटे वहता जीवमें सुक्ष बादर दोनु, १ए वाटे वह-ता जीवमें व्यणाहारीक, ३० वाटे वहता जीवमें किरिया सहित तथा रहित, ३१ वाटे वहता जीवमें जोग ? कायारो. सिंद्रके ३१ गुण. ५ वर्ण नही, ५ रस नही, ५ संठाण नही ए फरस नही, २ गंध 38 नही ३ वेद नही २० कर्म नहो २७ काया नही ३० संसारको संग्रह नही ३१. सिद्धोका २१ व्यतिसय. ५ ग्यानावरणी कर्म दाय कीया ए दर्शणावरणी कर्म दाय कीया २, वेदनी कर्म २ मोहनी कर्म ४ खाजला कर्म क्य कीया २ नाम कर्म क्य कीया श्रेगोत्र कर्म क्वय कीया ए छातराय कर्म क्वय कीया एवं ३१.

RANGE HON-NEW WOX-NON-NEW

医学 张子 朱子子 朱子子 朱子子 朱子子 朱子子

本の本本の本本の本本では、本本本本の本本の本本の本本の本本の本本 बोल ३१ जिहाज इन्य तथा जावका. १ इन्यजीहाज लकमीके पाटीयाकी होय तिम संयमरूपी जावजिहाजमें १७ जेदे संयमरूपी पाटीया हुवें, २ ५ व्यव्य जिहाज़ेमें सांकल होय तिम संयमरूपी जाव जिहाजमें धीरजरूपी सांकल होवें, ३ डब्य जि-हाजमें खींखा होवे तिम संयमरूपी जावमें पचकाणरूपीया खीखा होवे, ४ ड्याजि-हाजमें चादु होय तिम संयमरूपी जावमें गुरु जपदेशरूपीया चादु होवे, ए इंब्य जिहाजमें जात होय तिम संयमरूपी जावमें संवररूपी जात होवे, ६ इंब्यजिहाजमें यांजा होय तिम संयमरूपी जावमें चढता वैरागरूपी यांजा होय, ७ डव्यजिहाजमें धजा होय तिम संयमरूपी जावमें निर्मख ज्ञानरूपी धजा होय, ए ख्व्यजिहाजमें सेवटीया होय तिम संयमरूपी जावमें समकितरूपी सेवटीया, ए इव्यजिहाजमें मोरी होय तिम संयमरूपी जावमें धीरजरूपी मोरी होय, १० ज्व्यजिहाजमें कांम करने-वाखा होय तिम संयमरूपी जावमें वेयावच करनेवाखा होय, ११ द्रव्यजिहाजमें खा-णेरों माल जरी होय तिम संयमरूपी जावमें किया शीलरूपी खाणेरो माल होय, १२ द्रव्यजिहाजमें वायु चलें तिम संयमरूपी जावमें शुज जावे धर्मध्यान

तथा बारे जेदे तपस्या करणरूप वायरो होय, १३ द्रव्यजिहाजने वायरेसुं बांको होय तेने रोके तिम संयमरूपी जावमें आखसरो त्याग कर ज्ञानको उपदेश रोके, १४ द्रव्यजिहाजमें क्रियाणो जरे तिम संयमरूपी जावमें पांच महावत तथा बारवत खौर नाना प्रकारको ज्ञान प्रोरे, १५ द्रव्यजिहाजमें रस्तो किताबसुं देखावें तिम संयमरूपी प्रावमें सूत्र सिद्धांतसुं साधु मुनिराज रस्तो बतावें, १६ द्रव्य जिहाज समुद्रमार्गे चा-क्षें तिम संयमरूपी जावमें संजमरूपी मारगे चालें श्रक्कलाइसें सीधे सरल मारगे, १९ द्धव्यजिहाजमें पुरपाटण पहोंचे तिम संयमरूपी जावमें मोदारूपी पाटण पहोंचे, १0 द्रव्यजिहाजमें व्यापारी होय तिम संयमरूपी जावमें साधुरूपीया व्यापारी होय, १ए द्रव्यजिहाजमें धनरा चरू है तिम संयमरूपी जावमें ख्रागीखार खंग बार जपांग रूपीया चरु हैं, १० द्रव्य जिहाजमें व्यापारी जली जाषा बोलें तिम संयमरूपी जा-वमें सुमितसहित विचारने बोखें, २१ द्रव्य जिहाजमें रत्न हें तिम संयमरूपी जावमें प्राप्तरूपी रत्न हैं, २२ द्वव्य जिहाजमें जला नफेरी वांहा करें तिम संयमरूपी जावमें मोक्तरी वांहा करें, २३ द्रव्य जिहाजमें व्यापारी वासो करें तिम संयमरूपी जावमें

条等条 मुनिराज गाम गाम एक रात नगरां नगरां पांच रात वास करें, १४ द्रव्य जिहाजमें चोर प्रमुखनो जयरिहत होय तिम संयमरूपी जावमें पांच इंडीने जीतें सात जयर-हित होय, १५ द्रव्यजिहाजमें व्यापारी वस्तुनी ममता करी पीछी न खे जाय तिम \*\*\*\* संयमरूपी जावमें साधु सचित्त श्राचित्त मिश्र परित्रहनी ममता न करें, १६ द्रव्य जि-\*\*\* हाजमें व्यापारी टोटेनो व्यापार न करें तिम संयमरूपी जावमें हिंसादिकथी निवरते, २९ द्रव्यजिहाजमें माखरी गांठ खोटों तिम संयमरूपी जावमें पापसुं निवस्ते आठ कर्मरूपी गांठ खोखें, १० द्रव्य जिहाजमें माल वेची हलको होय तिम संयमरूपी जावमें क्रोध मान माया लोज राग देष पतला पानेंसुं हलको होय, १ए द्रव्य जि हाजमें व्यापारी विना चखती चीजरी इहा नहीं करें तिम संयम्रूपी जावमें व्यापारी थ्यसंजमरी इहा निह करें, ३० ध्वय जिहाजमें व्यापारी लोज वास्ते व्यापार करें तिम संयमरूपी जावमें व्यापारी १० जतीधर्मसहित क्षमारो व्यापार करें, ३१ ध्वब्य जिह्नाजमें व्यापारी नाना प्रकारनो व्यापार करें तिम संयमरूपी जावमें व्यापारी वि-विध प्रकारे धर्म करें.

३१ बोर्ख ३१ वृद्धोकी सीख. राजारी कृपा देखने व्यासंगो न कीजें मित्र करीने न जाणी-जे विनयादि करने ख्रारज विनती सावधान शंकी कींजे १, ख्रापणी परणी स्त्रीने पुत्र न दीजे जणरो जरण पोषण कीजे घणो खादर सन्मान प्यार राखीजे पिण मरम वातरो जेद न दीजे २, परस्रीरो दासीनों वेक्यानो संग न कीजे ३, नीखा रुंख नीचे धर्म ष्टानक रावल देवल कुंम न जालीजें ४, जूवे न रमीजे सात व्यसन न सी-खीजे ४, जिएरे वास वसे तिएसुं वाद न कीजे ६, जिए जायगा सुखसुं रहीजे तठे बुराइ न करीजे ७, पुत्रने खाणे पीणे कपेन गहणे सोरो राखीजे पिण खानको न कीजे विद्यारो उद्यम कराइजे रीस करने माथामे न दीजे टाबर थकांनेहीज त्रा-समें राखीजे जां सुधरे ए. सनेहरी जायगा हुवे तठे खेवा देवा वेपार न कीजे ए, पारको बुरो न विचारीजे निंदा न कीजे १०, सांजरा मारग न चार्खीजे ११, मारगमें श्रमंदा श्रादमीरो विश्वास न कीजे १२, कुवा जपर जन्ना न कांबीजे १३, पंचारो कहा। ज्ञापीजे नही १४, पाणी ज्ञाव घाट न पीवीजे १५, काम जाते हुवे तो लारे हेलो न दीजे १६, कांम जातां पाणी न पीवीजे १७, पाणी पीने घर न

बूजीजे १०, लोक चहरे तिको वात न कीजे १ए, कुमारग धन खरचने न गुमाइ-李泰学 जे २०, सगा सोयाने जाचीजे नही २१, व्रत जंग न कीजे २२, श्रासण पगसुं खे सने बेठोजे २३, मार्गमें तरुण हुगाइरो साथ न कीजे २४, बारे नीकले तो गाफल न रहीजे चोकी पोरो दीजे २५, तीरसां श्रकां पाणी घणो न पीजे २६, जंकरं घणुं न बेसीजे २७, दिनरी घणी निंडा न लीजे ४०, घरमें बावल रंख न राखीजे ट्यां-बलीरी ग्राया न बसीजे १ए, ख्रजाएयो उत्तव न लाइजे ३०, पाणीरो ख्रासंगो न कीजे ३१.

米の本来の本来の本 

#### ॥ श्रथ बत्तीस बोख खिख्यते ॥

बत्तीस श्चनंतकायः सर्वे कंदनी जाति १, सूरण कंद २, वज्र कंद २, लीली इलदी ४, सीब्रं श्राष्ट्र ४, लीलो कचूर ६, सतावरी वेली ७, विराली वेली ७, कुंश्रारी ए, घोहरि कंद १०, गलोइ ११, लसण कली १२, वासना कारेला १३, गाजर १४, बूणो साजी वृक्त १५, लोढो पद्मनी कंद १६, गिरिकर्णिका सर्व वनस्पतिना नवा जगता कूंपल पान १७, खरसुष्ट्या कंद १०, श्रेग कंद १७, निली'मोश्र २०, बुण वृद्धानी ठाल श्रानंतकाय जाणवी परंतु एना विजा श्रावयव श्रानंतकाय नही २१, खिद्धुमा कंद् विशेष २२, श्रमृतवेखि २३, मूखानी पाम २४, सूमिफोमा जे व-षीकाले उत्राकारे जगे ते १५, विरुहा छांकूर्यी धान्य १६, टंकवथुल शाक ते वन-स्पति पहेबुं जग्यो तेहज बिजुं नहीं २७, सूत्र्यर बेखी २०. पहुंक शाक विशेष २ए, कुवली आंबली ३०, आबु कंद ३१, पिंमाबु कंद ३५. वांदणाके ३२ दोष. गुरुने वंदणा देइने वांदे १, जकर बेठो वांदे १, नाचतो वांदे

३, सगलाने एकजा वांदे <sup>४</sup>, रजोहरण **छांकुस जिम राखे ४, गृही कपमा ऊंचा क**-李朱本本 रीने वांदे ६, चपखपणे वांदे ७, माजलानी परे जलट पलट होय वांदे ए, मनमें गुण बोमी व्यवग्रणही वांदे ए, कपट जीवसुं वांदे १०, मरतो वांदे ११, जे मुफने को मान देसे १२, साख करी वांदे १३, गर्व करी वांदे १४, इस खोकने हितकारी \*\* वांदे १५, चोरनी परे वांदे १६, प्रतिका हेते वांदे १७, सासता वांदे १७, विस्वास ज-पजावा हेते वांदे १ए, वचन हिखतो वांदे २०, विकथा करतो वांदे २१, दृष्टि तिर्जि राखतो वांदे २२, कोझ साधु देखे कोझ न देखे २३, क्या करीए वांद्या विना बुटका नही २४, छापसमें घाट बाध वांदे २४, गुरुने उंचे स्थानक बेठा वांदे २६, वेठा हुवा वांदे २७, हस्तो वांदे २०, रजोहरण आघो पाठो करतो वांदे २ए, असमाधिया होयने वांदे ३०, कानुसम्ममें वांदे ३१, पने समाधि पूने वांदे ३२, ए दोष ३२ टाली-ने वांदे ते मुक्ति जावे. \*\*\*\*\* सामायकके ३२ दोष. १० मनका. ट्यवसर विना करे १, जसकी तिंके ट्यार्टी करे १, इह खोकनी वांंं करे २, गर्व ट्यहंकारे करे ४, फख प्रते संदेह करे ५, बिहितो ३२

大学 光色学 木色学 大学 大学 木色学 大色学

भूजतो करें ६, संसेसहित करें ७, मनमांही रीस करें ७, विनयहीण करें ए, वेगारी-री परे करें १०, दश वचनके. कुमा वचन बोट्सें ११, ख्रणविमास्यो बोट्सें १२, रागां करी गीत गावें १३, घणो बोलें १४, कज़ह करें १५, विकथा करें १६, हांसी करें १९, र्जतावली जतावली जेएँ। १ए, श्रयुक्ति जाषा बोलें १ए, श्रवृतिने श्रावी पथी-रों कहें २०, बार कायांके. पालठी वाली बेठे २१, श्रिष्टिंगसण बेठे २२, विषयसहिर त दृष्टि जोवें २३, सावज कार्य करें २४, घरनुं काम करें २५ जुठंगणो खेइ बेठें २६ शरीर संकोचीने बेठें २७, विना कारण छांग जपांग मोमें २०, करमका मोमें २ए; शरीरनो मेल जतारे ३०, विन पूंज्या खाज खुं लो ३१, जंघ लेवें ३२. पुरुषके बत्तीस गुण. सीखवंत १, कुलवंत २, सनवंत ३, विद्यावंत ४, श्राहणश्राहारी प, जंचा चित्त ६, तेजवंत ७, प्रमोदसहित ए, वचन ख्यचल ए, दयावंत १०, नरम प्रणाम ११, धर्मनीत १२, जत्तम १३, ज्ञानवंत १४, अज्यावंत १५, गुणगंजीर १६, सूरमा १७, इब्यविंत १०, चतुर १७, दानमें चित्त छदार २०, जोगध्यानी २१, जा-ग्यवंत २२, सुजांण २३, परक्रपगारी २४, देवपूजा २५, मातापिताकी सेवा २६, गु-

रकी सेवा २७, मातिपतानी सेवा २०, गुरुनी सेवा १ए बुद्धिवंत ३०, निर्जय होय \* ३१, तेजवंत ३२. **杰等** 张安杰 श्चागम बत्तीसके नाम. श्वाचारांग १, सुगमांग १, वाणांग ३, समवायांग ४, जगवती ५, ग्याता ६, जपासकदशा ७, श्रांतगम ७, श्राणुत्तरोववाइ ए, प्रस्वाकरण १०, वि-पाक ११, बार जपांग. जववाह १२, रायपसेणी १३, जीवाजिगम १४, पन्नवणा १५, जंब्रहीपपन्नत्ती १६, चंदपन्नत्ती १७, सूरपन्नत्ती १०, पुफिया १ए, पुफचुलिया २०, किपया २१, कपवमंसीया २२, विह्नदशा २३, चार छेद. नसीत २४, दशाश्चतस्कंध १५ वेदकब्प १६, विवहार १७, पांच मूल. दसविकाल १०, जत्तराध्ययन १७, नंदी २०, ख्राणुयोग हार २१, ख्रावंसक ३२. ३१ योग संग्रह. श्राखोय निंदके निशस्य होय १, श्राखोया निंद्या प्रकासे नहीं २, दृढ धर्मी होय रे, इहंखोक परलोकनी वांग्रारहित तप करें ४, आसेवणा शिकाश्रहण सिद्धा सेवें ए, शरीरकी सुसरखा न करें ६, बानी तपस्या करें आग्यात कुलनी गो-चरी करें 9, निर्खोजी होय 0, सरख स्वजावी होय ए, परोसहसुं मरे नहीं जपसम

5

वंत होय १०, निर्मेख मनसुं संयम पाखें ११, सम्यक्त शुद्ध पाखें १२, विच एक ठा-म राखें १३, मायारहित व्याचार पाटें १४, विनयवंत होय १५, संतोष धैर्यवंत होय १६, वैराग्यवंत १७, धर्मध्यान ब्युडी तरा राखें १७, रुमीकिया करें १७, संवर्क करें २०, श्रापणी श्रात्माके श्रवगुण श्रद्धगा करें २१, श्रग्यानीका संग निवारे मूल गुण जत्तरगुण व्याराधे २३, एक ठाम चित्त राखीने का उस्तरग करें २४, प्र-मादरहित करणी करें २५, किण प्रते रूमी करणी करें २६, धर्मध्यान शुक्रध्यान ध्यावें २७, मन वचन कायाका योग धर्ममें प्रवर्तावें २०, संसारसुं विरक्ति जाव ख्रा-र्णे <sup>१</sup>८८, गुराने प्रायबित दिया सो वहे ३०, ह्याखोइने निशब्य व्याय ३१, ह्याखोइ निंदीने संघारो करें ३२. शिलकी ३२ जेपमा. यह नदात्र तारा मांहि चंडमा मोटो तिम सर्व वत मांहि सी-खबत मोटो १, मणी मोती सीप प्रवाखादिक मांहि जिम रत्नाकर समुद्ध मोटो तिम सीख़बत मोटो १, सर्व रत्न मांहे वैद्धर्य रत्न मोटो तिम सीख़बत मोटो ३, सर्व छान जर्ण मांहि माथेरो मुक्कर मोटो तिम सीखनत मोटो <sup>ध</sup>, सर्व वस्न मांहि सेमयुग्ख

米条米 कपास वस्त्र मोटो तिम सीखन्नत मोटो ५, सर्व कमख मांहि श्रारविंद कमखनो फूख मोटो तिम सीखन्नत मोटो ६, सर्व चंदनोमांहि बावना चंदन मोटो तिम सीखन्नत मोटो ७, सर्व पर्वत मांहि जिषधी करकें चूल हेमवंत पर्वत मोटो तिम शीलवत मोटो 大学·米亚米·米亚米·米亚米·米亚米·米亚米·米亚米 ए, सर्व नदी मांहि सीता सीतोदा नदी मोटी तिम सीखनत मोटों ए, सर्व समुद्र मांहि स्वयंत्रूरमण समुद्र मोटो तिम सीखनत मोटो १०, गोख पर्वत मांहि रूचिक पर्वत चूनी खाकार मोटो तिम सीखवत मोटो ११, सर्व हाथीया मांहि इंज्नो ए-रावण हार्थी मोटो तिम सीखबत मोटो १२, सर्व चोपदा मांहि केसरी सिंह मोटो तिम सीखनत मोटो १३, नागकुमारमांहि धरणें ५ जी मोटा तिम सीखनत मोटो १४, सोनसकुमा-रना देवता मांहि वेणुकुमार मोटो तिम सीखन्नत मोटो १५, सर्व देवखोक मांहि पांच-मो बहा देवलोक मोटो तिम सीलवत मोटो १६, सर्व सञा माहि सुधर्मा सञा मोटी तिम सीखन्नत मोटो १७, स्थितिमांहि खनसत्मा देवताकी स्थिति मोटी तिम सीखनत मोटो १७, रंग मांहि किरमची रंग मोटो तिम सीखबत मोटो १७, दान मांहि ख-जयदान मोटो तिम सीखबत मोटो २०, संघयणमांही वज्रनाराचसंघयण मोटो तिम

सीखवत मोटो २१, संढाणमांही समचोरस संठाण मोटो तिम सीखवत मोटो २२, ग्यानमांहि केवलग्यान मोटो तिम सीखवत मोटो २३, ध्यानमांहि शुक्र्घ्यान मोटो तिम सीखवत मोटो २४, खेरुयामांहि शुक्कखेरुया मोटी तिम सीखवत मोटो २५, साः धुमांहि तिर्धकरदेव मोटा तिम सीखनत मोटो १६, क्त्रमांहि महाविदेहकेत्र मोटो तिम सीखनत मोटो १९, पर्वतमांहि जंचपणे सुमेरुपर्वत मोटो तिम सीखनत मोटो २०, वनामांहि नंदणवन मोटो तिम सीखनत मोटो २ए, वृद्योमांहि जंबुसुदर्शण वृद्य मोटो तिम सीखबत मोटो ३०, सेनामांहि चक्रवर्त्तिकी सेना मोटी तिम सीखबत मो-टो ३१, रष्टांमांहि वासुदेवको संग्रामीक रष्टा मोटो तिम सीखनत मोटो ३२. ३२ सूत्र बत्तीस. १ व्याचारांगसूत्र व्यध्ययन २५ मूल श्लोक २५०० शीलांगाचार्यकृत टी-का १२००० चूर्णी ए२०० तथा जदबाहुस्वामी कृत निर्युक्तिनी गाथा २६ए श्लोक ४५० जाष्य (तथा लघुवृत्ति नथी) सरवाले श्लोक २३१५०, २ श्रीसुयगमांगसूत्र श्रम्य-यन २३ पालंममत निर्देखनरूप मूखश्लोक २१०० शीखांगाचार्यकृत टीका १२०५० तथा चूर्णी १०००० श्लोक हे स्थन श्रीजद्रवाहुस्वामीकृत निर्युक्तिनी गाथा २०७ श्लो

**然外长色等来作业等长色等条件** क १५० हें (जाष्य नहीं) सरवाले श्लोक १५६०० तथा १५७३ नी सालमां श्राधुनिक श्री हेमविमलसूरिये ७००० श्लोकने श्रासरे दीपिका करेली हैं पण ते ' जुनी टीपो-मां पूर्वाचार्योनी गणतीमां नथी, ३ श्रीठाणांगसूत्र एना दश अध्ययन हें एना मूख श्लोक ३९५० हें तेनी टीका संवत ११५० मां श्रीट्यानयदेवसू स्कृत १५१५० श्लोकनी बे सरवाखे १ए०२० श्लोक हें, ४ श्रीसमवायांगसूत्र एना मूख श्लोक १६६७ हें तेनी टीका श्राप्य देवस् रिकृत ३९९६ श्लोकनी हैं एनी चूर्णी पूवाचार्यकृत ४०० श्लोक हैं सखाद्धे ५०४३ संख्या थ्रञ्, ५ श्रीविवहापन्नित नगवती सूत्र शतक ४१ वे एमां व-त्रीश सहस्र प्रम गौतमना हैं मूख श्लोक १५७५२ टीका संवत ११२० मां श्री ख्रान-यदेव सुरिनी करेखी खोणाचार्य शोधेखी १ए६१६ इखोकनी ने एनी चूर्णि ४००० रखोक पूर्वीचार्य कृत है सरवाखे ३०३६० नी संख्या तथा एनी खु हैित संवत १५६७ ना वर्षमां दानशेखर जपाध्यायनी करेखी १२००० रखोकनी संख्या है ६, श्री क्वाता धर्म कथांग सूत्र श्रध्ययन १ए, कथा जगणीश सांप्रत देखाय ने प्रथम सामी त्रण कोटि कथान प्रसिद्ध है एनी इल्लोक संख्या ५५०० तेनी टिका श्री खा-

जयदेव सूरि कृत ४२५२ इलोक है ७, श्री जपास दर्शांग सूत्र दश श्राध्ययन मूल इस्रोक Uरेश एनी टिका श्री व्यानयदेव सूरि कृत ए०० इस्रोक वे सरवासे १९१श 0, श्री श्रंतगमदशांग सूत्र ए० श्रध्ययन हे मूल श्लोक ए०० तथा श्रजयदेवसूरि कृत टिका १०० श्लोक है सर्व संख्या १२००. ए, श्री खणुत्तरोववाइ सूत्र तेत्रीश श्राध्ययन मुख श्लोक शए२ तथा श्राप्यदेव सूरि कृत टिका १०० श्लोक है सर्व सं-ख्या ३ए२. १०, श्री प्रश्न व्याकरण सूत्र दश श्रध्ययन रूप मुख श्लोक १२५० श्री ख्यान्यदेव सूरि कृत टिका <sup>ध६००</sup> सर्व संख्या ५०५०. ११ श्री विपाक सूत्र वीश श्राप्ययन ने मुल रलोक १२१६ श्री श्राप्तयदेव सूरि कृत टिका ए०० रलोक ने सर्व मखी इग्यारे खंगनी मुख संख्यां ३५६५ए तथा टिका ७३५४४ छाने चूर्णि २२७०० तथा निर्युक्ति ७०० मखी १३१६०३ तथा सूयगमांगनी दिपीकानी संख्या जुदी हे एमां ख्याचारांग तथा सूयगमांगनी टिका श्री शीखांगाचार्य कृत है नाकी नव खंग-नी टीका श्राजयदेव सूरि कृत ने माटे श्री श्राजयदेव सूरि नवांगी वृत्तिकारने नामे जेखलाय है, हवे बार ज्यांगनी संख्या खिले हे १२, श्री जेववाइ ज्यांग श्राचा-

大学 大大学 大学 大学 大学 大学 大学 大学 大学 大学

\*\*\*

· 米米田米米田米米米

रांग प्रतिबद्ध एनी मुख संस्था १२०० तथा श्री व्यापयदेव सूरि कृत टिका संस्था ३१२५ सर्व संख्या ४३२५. १३, श्री रायण्यसेणी जपांग सूयगमांग प्रतिबद्ध एनी मुख संख्या २०९७ तथा श्री मखयगिरी कृत टिका ३९०० सर्व संख्या ५९९७. १४ श्री जि वाजिगम उपांग ठाणांग प्रतिबद्ध एनी मुख संख्या <sup>४९००</sup> तथा श्री मखयगिरिकृत टिका १४००० तथा खघुवृत्ति ११०० तथा चुिर्शिक्लोक १५०० हे सर्व संख्या ११३०० १५ श्रीपन्नवणां ज्यांग शीस्याचार्यकृत समवायांग प्रतिबद्धनी संख्या ७७०७;मखयगिरि 表演 光色学 光色学 朱宗 महीराजनी करेखी टीका १६००० तथा हरिजदसूरिकृत खघुवृत्ति ३९२० इंखोक हैं सर्व संख्या २९५१५, १६ श्रीजंबुद्दीपन्नत्ति ज्यांग जगवति प्रतिबद्ध एनी मूल सं-ख्या ४१४६ मलयगिरिकृत टीका १२००० तथा चूर्णि १७६० हें सर्व संख्या १७००६ १७ चंद्रपन्नत्तिसूत्र ज्ञातांप्रतिबद्ध मूख संख्या २२०० तथा मखयगिरिकृत टीका ए४११ तथा लघुवृत्ति १००० इलाकं वें ए सर्व संख्या १२६११, १० सूरपन्नति ज्यांग पूर्वी-क्त चंदपन्नित्त तथा ए बेहु मखी ज्ञाताप्रतिवद्ध हैं एनी मूख संख्या २१०० तथा श्रीमंखयंगिरिकृत टीका ए००० छाने चूर्णी १००० सर्व संख्या १२२०० १ए,

李朱来

\*\*\*

रयावितका सूत्र श्रध्यवा नामांतरे एक किष्या श्रध्ययन १०, बीजं कष्पविनिसया श्राध्ययन १२, त्रीजुं पुष्पिया श्राध्ययन १०, चोथुं पुष्पचूलिया श्राध्ययन १० श्राने पांचमुं विह्निदिसा ए पांच छपांगनुं नाम निरयाविका कहेवाय हें ए किपया प्रमु स पांच जपांगनी श्रध्ययन संख्या ५२ हैं ते श्रानुक्रमे सातमा जपासकदशांगादिक पांच श्रंग प्रतिबद्ध हें ए पांचेनी मली इलोक संख्या ११०ए हें ए पांचेनी वृत्ति ७०० रखोंक प्रमाण श्री चंड्सूरिकृत नें सर्व संख्या १००ए एम बारे ज्यांगनी सर्व मखी'मूख संस्था १५४१० तथा टीकानी संख्या ६९ए३६ खने खघु'टीकानी संख्या ६०२० तथा चूर्णीनी संस्या ३३६० एकंदर सरवाले संख्या १०३५४४, २४ नशिय बेदसूत्र श्रध्ययन २० मूल जुनी टीपमां ७१५ इलोक वें एतुं लघु जाष्य ७५०० रंखोक हैं तथा चूर्णी १००० खोक हैं महोदुं जाष्य १२००० खोक हैं ते टीकाने नामें पण कहेवाय है सर्व संख्या ४०२१५ हे, २५ बृहत्कब्प हेदसूत्र आध्ययन २४ एनी जुनी टीपमां संख्या ४७३ नी हें एनी वृत्ति संवत १३३२ ना वर्षमां बृह्हािखय श्री देमकीत्तिसंस्कृत ४२००० संख्यानी वे तथा एनं जाष्य जुनी टीपमां रे१२०००

秦華春季秦李本子来的李春西

संख्यानुं हैं खने एनी चूर्णी १४३२५ इस्रोकनी है सर्व संख्या ७६५ए० है ३ व्यव-हारदशाकब्पजेदसूत्र एना दश श्राध्ययन जे एनी मूख संस्था जुनी टीपमां ६००० नी जे एनी टीका श्री मखयगिरिस्र्रिकृत खोक ३३६२५ नी जे तथा चूर्णी १०३६१ इलोकनी ने एनुं जाष्य जुनी टीपमां ६००० इलोकनुं लख्युंने सखाले संख्या ए०एए६ थ्रञ्च ४ दशाश्चतस्कंध बेदसूत्र जेनुं ख्रावमुं ख्रध्ययन क्रष्टपसूत्र बे तेनी सू∙ ल संख्या १०३५ जे तथा चूर्णी १९४५ खोकनी जे खने निर्युक्ति संख्या १६० स्योक ने सर्व संख्या ४२४0 यह १ दशवैकालिक सूत्र श्री सिखंजवसूरिकृत <u>मू</u>ख ख्लोक ७०० संख्या ने एनी वृत्ति तिलकाचार्यकृत ख्लोक ७००० प्रमाण ने तथा बीजी बृत्ति श्री हरिज्ञ स्त्र्रिकत ६०२० ख्लोक हे तथा श्री मखयगिरि महाराजकृत वृत्ति ७९०० ख्लोक वे लघुवृत्ति ३९०० ख्लोक वे तथा निर्युक्तिनी गाथा ४५० वे तेम श्राधनिक श्री सोमचंडस्रिकृत खघु टीका ४२०० तथा समयसुंदर जपाध्याय कृत लघु टीका १६०० ने २ जत्तराध्ययनसूत्र एना नतीस ख्रध्ययन वैराग्यमय ने एनी मूख संख्या २००० हे तथा बृहद्वृत्ति वादिवेत्ताख श्री शान्तिसूरिकृत १०००

हे प्रत्यंतरे १९६४५ पण हे तथा खघुवृत्ति संवत ११२ए मां श्री नेमिचं**ड्सुरिकृ**त १३६०० खोकनी वे एनी निर्युक्ति श्री प्रद्याहूस्वामिकृत गाथा ६०७ दखोक तथा एनी चूर्णि ६००० खोकनी वे सरवाखे संख्या ४०३०० वे ३ नंदीसूत्र श्री देवर्ष्ट-गणि दामाश्रमणकृत मूल इलोक ७०० हे एनी वृत्ति ९९३५ इलोक प्रमाण श्री म-खयगिरिकृत ने एनी चूर्णि संवत ७३३ मां करेखी २०० खोकनी ने एनी खद्य टी-का श्री हरिज़िक्स् रिकृत इलोक ३३१२ वे सरवाले संख्या १२९५७ वे तथा एनी टी-पाणी श्री चंद्रसूरिकृत ३०० इलोकनी हे ४ ट्यानुयोगद्रारसूत्र गाधा १६०० स्लोक १००० हे तथा मेख्रधारी श्री हेमचंध्यस्रिकृत वृत्ति संख्या ६००० हे तथा श्री जि-नदास महत्तरकृत चूर्णि २००० रखोकनी ने तथा श्री हरिनडसूरिकृत खघु वृत्ति संख्या ३५०० है सर्व संख्या १४३०० स्वावस्यकसूत्र मूख १३५ गाया है एनी टीका श्री हरिनदस्रिकृत १२००० रखेक है तथा एनी निर्युक्ति श्री नदबाहुस्वामिकृत

३१०० खोक है तथा चूर्णि १०००० खोक है.

U T

# ।। श्रय तेतीस बोख खिल्यते ।।

\*\*\*

गुरुकी खासातना तेतीस. तीन चालपोकी गुरुके खागे चाले १, गुरुके बरोबंर चाले २, पाछे ब्यमतो चाखे २, इम तिन ब्यासातना खमे रहणेकी ६, इम तिन बेसणकी ए, दिशा गए गुरुसुं पहला हाथ धोवे १०, गुरुके पहली इरियावही पिकमे तो ११, गुरु प्रश्न करता होयं विचमें बोखे तो १२, गुरुके पास सुता होयं गुरु बोखावे जागता न बोले तो १३, ब्याहार पाणी व्यायकर गुरु धकी पहली बोटा जितकुं देखावे तो १४, गुरु पहली बोटा जित कने खालावे तो १५, गुरु पहली बोटा य-तिकुं आमंत्रे तो १६, गुरुकी आग्याविना बोटा यति तथा अनेरा साधुकुं आहार पाणी देवे तो १७, गुरु शिष्य आहार पाणी करता होय सरस २ गुरुकुं देवे तो १०, गुरु बुलावे बोले नही तो १ए, गुरु बुलावे व्यासण बेठा जवाब देवे तो १०, गुरु बुलावे तो कहे तुं क्या कहैतो २१, गुरुने तुंकारा देवे तो २१, गुरुने तो तुं अवचन बोलावे तो २३, गुरुने जत्तर परुत्तर देवे तो २४, गुरु खर्ध करता होवे तिवारे जरी

स्प्रामें कहे इस ने इस निह ने २५, गुरु सूत्र पाठ कहेता हुने तिवारे जरी सप्रामें कहे इस निह इस ने तो २६, गुरु कथा कहेता हुने चेखो खुशी न हुने तो २५, गुरु कथा कहेता हुने खेशी न हुने तो २५, गुरु कथा कहेता हुने शिष्य कहे श्रीहारकी वेला श्रद्ध ने वलाण चेना दो क्युं नहीं इम कहे तो १ए, ग्रुरु कथा कही वाही कथा वणाय २ करे श्राजीतरेसुं कहेतो तो २०, गुरुके श्रासणसुं जंचा श्रांसण बेठे तो ३१, गुरुके बरोबर श्रांसण करे तो ३२, गुरुके श्रांसणकुं पग लगावे संघठ करे विना लगाया जाय तो ३३. श्राब्याबहुत्व ३३. १ सबसुं थोमा चोष्टी नारकीना निकल्या सिष्ट जगवंत होय २, तीजी नारकीना निकट्या सिद्ध संस्थातगुणा ३, बीजी नारकीना निकट्या सिद्ध संख्यातग्रणा ४, वनस्पतिना निकब्या संख्यातग्रणा ५, पृथ्विकायना निकब्या सं-स्यातगुणा ६, व्यपकायना निकब्या संख्यातगुणा ७, जुवणपति देवतारी देविरा निकब्या संस्यात गुणा ए, जुवनपति देवताना निकब्या संस्थात गुणा ए, वाण-व्यंतर देवतारी देवीरा निकृद्या संख्यात गुणा १०, वाणव्यंतर देवतारा निकृद्या सं-

ख्यात गुणा ११, जोतषी देवतारी देवीरा निकल्या संख्यात गुणा १२, जोतषी देव-तारा निकब्या संख्यात गुणा १३, मनुष्यणी स्त्रीना निकब्या संख्यात गुणा १४, म-नुष्यना निकब्या संख्यात गुणा १५, पेहली नारकीना निकब्या संख्यात गुणा १६, तिर्येचणीना निकब्या संख्यात गुणा १७, तिर्यचना निकब्या संख्यात गुणा १७, पांच व्यनुत्तर विमानरा निकल्या संख्यात गुणा १ए, नव श्रेवेयकना निकल्या सं ख्यात गुणा २०, बारमा देवलोकना निकब्या संख्यात गुणा २१, इग्यारमें देवलो-करा निकब्या संख्यात गुणा १२, दशमें देवलोकरा निकब्या संख्यात गुणा २३, नवमा देवलोकरा निकल्या संख्यात ग्रणा <sup>२४</sup>, श्राठमा देवलोकरा निकल्या संख्या त गुणा १५, सातमा देवलोकरा निकल्या संख्यात गुणा १६, जढा देवलोकरा नि-कब्या संख्यात गुणा २७, पांचमा देवलोकरा निकब्या संख्यात गुणा २०, चोत्रा देवलोकरा निकल्या संख्यात गुणा, १ए तीजा देवलोकरा निकल्या संख्यात गुणा, २० इजे देवलोकरा देवतारी देवीरा संख्यात गुणा, २१ इजे देवलोकरा देवतारा नि

朱米米

(本)

कह्या संख्यात गुणा, ३२ पेहला देवलोकरी देवीरा निकह्या संख्यात गुणा, ३३ प-हेला देवलोकरा देवताना निकह्या संख्यात गुणा.

\*\*\*\*\*\*\*\*

李华 李本本

## ॥ यथ चोतीस बोल लिस्यते॥

\*\*\*

३४ चोतीस तीर्धिकरदेवजीरा छातिराय. रोमराय केरा नख सोजनीक वधे पिण छासोज-नीक निह वधे १, जगवंतजीरे गांत्रें खेप लागें निह २, गायरो दूध जजलो निर्म-ल साकर घालीयें मीठो तिसो जगवंतजीरो रुधिर मांस मीठो ३, पद्म कमल सुगंध सुहामणो वासें तिसो जगवंतजीरो श्वासोश्वास सुगंध सुहामणो वासे ४, चरमचक्-रों घणी छाहार निहार करतां देखें निह ए, श्री नगवंत देव विचरे जिठें तीन छ-त्र होय ६, जगवंतजी विचरे जिठें तीन चमर होय ७, फिटक रत्नमयी सिंहासण फांखे 0, विहारमें सहस्र ध्वज खागें चालें ए, धर्मचक खागल चालें १०, खशोक वृक्त फब्यो फूब्यो मार्गमें जाया करें ११, पूठें जामंमख प्रजा करें १२, विचरें जिठें रमणीक ग्रुमि सुहामणी लागें १३, विचरें जिठें कांटारा मुंढा छंघा होय १४, बहुत रुत सुहामणी लागें १५, घोमो सुहामणो सुहामणो वायरो वार्जे १६, नाहनी ना-हनी बुंद मेह वरसें तिणासुं रज होय ते जपसम जावें १७, दिंचण परिमाणे श्राचि- 米の米米の米米の米米の米 त्त फूलांरी दिगला देवता करें १ए, श्रमनोक्त गंध रस शब्द रूप कदेही न १ए, मनोक्त गंध रस फरस शब्द रूप सदा काख होय २०, प्रगवंतरी वाणी जोज-न तांच्र सुणीजें २१, छाई मागधी नाषा सांन्रलीजें २२, नाहर बकरी पशु जनरा वैरनाव जागें निह जागें तो जपशम जावें नेला बैठें २३, देवादिकनी जातना पूर्व बद्ध वैर कृत्रिम त्यकृत्रिम सर्व वैरनाव दूर जायें २४, त्यन्यतीर्थि पिण नगवंतने न मस्कार करें २५, ष्टान्यतीर्थि मत पद्मधारीने बोटें खिष्ट होय ते जावें २६, जगवंत 李安子 朱金子 李子子 विचेरं जठें सो कोसतांइ ईत निह होय २७, सो कोसमें मारी मिरगी न होय २०, स्वचक्रनो मर प्रय न होय १ए. परचक्रनो प्रय सो कोस तांइ न होय ३०, वर्षा न होय ३१, थोमी वर्षा न होय ३२, काल इकाल पमें नहि ३३, रोग सोग फोमी फुंपागल नही होय कदाच होय तो जपशर्मे ३४. श्वसिद्याप्ट ३४. जकाचाए १, गजीए २, बिजीए ३, दिसीदाहे ४, निघाए ५, जुवए ६, जलाखीतए ७, धूमीए ७, महीया ए, रजघाए १०, खठी ११, मंस १२, सोणी १३, श्रमुद्भांमंते १४, चंदोखराए १५ सुसाण सामंते १६, सूरोवराए ९७, पिनणीए

\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*

李本本本本本本本 १७, रायबुगहे १ए, जवसथल श्राजो जरालियरा सलियर सरीरमें २०, चैद सुदि पुनिम २१, वैशाख विद वीज २२, ख्यसाढ शुदि पुनिम २३, श्रावण विद एकम २४ जादरवा सुदि पुनिम १५, श्रासोज वदि एकम १६, श्रासोज सुदि पुनिम १७, का तिक वदि एकम २0, कातिक सुदि पुनिम २७, मिगसर वदि एकम २०, प्रजात २१, मध्याद्व ३२, सिंका ३३, खर्दरात्रि ३४. ३४ श्वसिद्याइरो सबैयो. तारो द्वेर १, रातिदिशा २, ध्यकाले मेह गाजें ३, वीज ४, क-मके आपार ४, और जुमी कंपा जारी है ६, बालचंड ७, जलचेन ७, आकासे आ गनकाय ए, काली घोली धुंध १०, उर रजुघात न्यारी हे ११, हाम १२, मांस १३ लोही १४, राध १५, ठंमले मसाण बले १६, चंध्व १७, सूर्य ग्रहण १०, जर राज्य मृत्यु राखी हे १ए, यानकमें पड्यो मनाकी पंचेंड्री कखेवर २०. ए वीस बोख टाख कर ग्यानी आग्या पाखी हे १, असाद २१ जाद आसु काती चैत्ती पुनम जाए। इएाधी लगती टालीये, परुवा पांच वलाए।। पमवा पांच वलाए सांज सवेर न ज र्णीये । आधी रात दोष हर सर्व मिख चौतीस गिणिये ॥ चौतीस व्यसफाइ टालके

秦安子子子子子子子子子子子子子子子子子子子子子子子子子 सूत्र जणसी सोय । ऋषि लालचंद इणपिर कहे ताके विघन न व्यापे कोय ३४१ नियम धारण बोख. ? सचित्त जो जीवसहित होय कचा जख हरीवनस्पती पान साकहरा दातण निमक जपरसे खेणा काचो कोरो धान इंडा माफक राखे श्रीर त्याग करें, १ द्रव्य जितनी वस्तु मुखमें गेरे जतने द्रव्य जल मंजन रोटी दाल जात शाक कढी मिठाई पुनी पापन पान सुपारी इलायची चुरण दही दूध घी तेल मीजो मलाइ रबमी दवाइ चाय प्रमुख विगय दूध दही २ घृत ३ तेल ध मीठो ए मीठाइनी जात पकवान जो कमाहीमें घी तेलमां तलीया जावें महावी-गय, ३ मधु १ मालण २ सहत ३ मांस ४, ४ पानीही जुता चटी मोजा लमान व-गेरे, ५ तंबोल पान सुपारी इलायची लोंग पानकी त्रुकी चूर्ण खाटेरी पोली पीप-खादि, ६ वज्ञ वस्त्र पगमी टोपी खंगोंं इमाख कपमा पहेरणे तथा उढणेका कपमा सर्व च्यार प्रकारना जनी सूवी रेसमी सणीका इणकी मर्यादा रखे, 9 कुसुमेसु जे वस्तुना नाकसें सुंघणेमें छावे सो फूल फूलोका हार गजरा तुर्रा वगेरे छत्तर सुंघ-णी वगेरे मर्यादा राखें, ए वहाण सवारी गामी फेटण हाथी घोमा उंठ रथ वैखी

सहेज गामी एका तांगा पालखी मोली रेखगामी तथा त्रामवे न्याव जहाज स्टी-

李本本

\*\*\*

मर चेब्रून हवाई जहाज मोटर साइकल छादि चढणेका प्रमाण राखें, ए सयण सोनेवैठऐंरी सिक्षा खुरसी पारा पखंग तखत बाजोठ मैच गखीचा सतरंजी जाजम गादि मकान इकान छादि इलोंका इहा मुजंब प्रमाण राखें, १० विलेवण याने सरीरपर लगाने तथा मलनेका पदार्थ केसर कुंकु चंदन तेल पीठी लेप दवाई ह-जामत सुरमो काजल वुरह्व कंधी दरपण सावन प्रमुखका प्रमाण करें, ११ बंज ब्र-ह्यचर्य स्त्रीका संजोग वेख्या तथा परस्त्रीका त्याग करें तथा स्वस्त्रीका पिण सुई मो-रा दृष्टांते प्रमाण करें दिनका कुशीख त्यागे हांसी ठठाकीतोख नाता सगाइ पर-विवाहका त्याग वा प्रमाण राखें, १२ दिशि सरीरसें जत्तर दिक्कण पूर्व पश्चिम जंचा नीचा जाना तथा खाना संदेशा चिटि तार तथा काशीद जेजना माख जेजना **जसका प्रमाण राखें, १३ न्हाण स्नान बोरी** स्नान दोनुं हाथ घोना मध्य स्नान मुंह पग तथा लाखी खीखा छांगोजा शरीरपर फेरणा मोरी स्नान सारे शरीर-का स्नान कपमा धोना तथा घोलानारी मर्यादा करें नदी तलाव कुवा वावमीमें

न्हाणेंका त्याग वा प्रमाण करें, १४ जत्तेसु च्यार प्रकारना श्राहार श्रशन के॰ श्रन सर्व जातिरो पान के॰ पाणी सर्व प्रकाररो खादिम बिदाम पिस्ता छाख ख्रादि सा-दिम के॰ लारो सोपारी चूर्ण खादि वजनरो प्रमाण करें, १५ पृथ्वीकाय गेरु मुरम खरी माटी श्रादि वापरणेका प्रमाण करें, १६ ख्रपकाय क्वानो पाणी नदी नख त-खाव करणेरो तथा पाको पाणी आपरे तथा दूजेरे पद्यीमेरो पीणो वापरणेरो न्हाणे धोणे काममें छावें तेहनी वजनकी मर्यादा राखें उपयोगसहित विना ग्राएयो पाणी पीणो वापरणो नहि, १७ तेजकाय आरंज करणो करावणो चूला सिगमी जिलीमें विना देखें बाणा लकमी वगेरे वापरणा निह दाहा लगाणेका चराग दियासलाई विजलीरी चरागरी मर्यादा करें समककी रोसनीकी जयणा, १० वाजकाय पंखो त-था विजलीरो पंखी पंखी तथा रुमाल कागदसें हवा लेपोरी मर्यादा करें फूंक तथा हिंमे हींमणेरी उपयोग सहित त्याग इसरे जागारे पंलेरी जयणा, १ए वनस्पतिकाय हरो साग रह तथा वेखका फल पान खाणेकी मर्यादा तथा हाथसें तोमनेरा त्याग

हरे दातणरा त्याग तथा सूकी वनस्पति विना देख्या धान वापरणो निह

\*\*\*\* \*\* 张子米O米米O米米米

काष्ट धान बीज खेणे वेचणेरी मर्यादा या त्याग, जम। कंदमुख मुखेरी जम गाजर **ब्राह्य मुंगफली कादा लसण ब्रादि लीलोतरीरा त्याग, लीलोती सुकाणी ब्राध्यवा** सुकवानीरा त्याग, १० त्रसकाय हाखतो चाखतो व्यपराधी कुबुद्धि करीने हणने तः था हणानेरा त्याग, गाय कंठ घोमा बेख इपद चोपद वेपार अर्थ कैणा वेचणेरा त्याग, गामी घोमा ख्यसवारी जामे फेरनेरी त्याग, मागी देणेरी मर्यादा, विना देखें चाल्णो नहि बेठणो नहि ज्ञाम। ठाम रखणा नहि गोबर समावें नहि क्रोध करी पशुको बांघे निह जीवरी जयणा पार्छे विना चुएया धान वापरणो निह जाखा फ लण खायो खाहार विन गण्यो पाणी त्यांगें, २१ ख्रसी शस्त्र डंजार तरवार बंडक तमंचा जाला बरढी वगेरे चलाऐारा त्याग चक् केची सरोटो चिमटो तालाकुंची 金米米米米 तण ठाकमी कांटो वाटरी मर्यादा, १२ मस्सी खिल्लणा पढणा दवात कखम पेनशी-ख टाइप ग्रापा वही किताब खाता वगेराकी मर्यादा, २३ कृषी किरसानी कर्म खाण जाटा वन कटाणा घाणी कढाणी तलाव वावमी कुवा कुंम टांका जवरा ज-मीन खोदावणी तथा बागबगेचा वगेरा करसानी कर्मका त्याग, २४ व्याराकेता व्या-

रंज चुलेरा जठीरा छारंज बगेरे करणे कराणेका त्यांग या मर्यादा, १५ गारा कमं-**वाणों चेजो मकान मरमत चुनो ईट गारो गोबरको छारंज, १६ सोनारा चांदी सो**-नो कांसी तांबो पीतल लोहा वगेरेकी जनस घर तथा जाई परसंगीरे खरशे करा-णी लेणी वेचणेरी मर्यादा घरमें सोनार लोहार कखारा वगेराने राखीने काम करा-णेरा त्याग, २७ गिणनारी मर्यादा, २० परलणा रुपीया तथा जुहारात वगेरे, तोखा तोखरी मर्यादा वजन हाथसुं तोखणा इसरेसुं तोखाणा, ३० मापा हाथसुं पायखीसुं तथा गजसुं हाते या इसरेसुं, ३१ क्रा घर इकान संबंधी जिनस खरीद-णेरी मर्यादा, ३२ विकरो घर इकान संबंधी जिनस वेचणेरी मर्यादा उपरांत त्याग, ३३ छापरे घररी तथा इसरेरे घरसुं छाईहुई तथा मोलरी चीजरी मर्यादा, ३४ छा-परे घररी जोगणेमें खाइ तेहनी मर्यादा. ॥ विधि संदोपमें खिला है विस्तार जितना व्यधिक करें याने लोख लोख

未来

\*\*\*

।। विधि संदेपमें लिखा है विस्तार जितना ख्रिधिक करें याने खोल खोल कर रखें जतनाही जादा फायदा है परंतु जितना रखें जसमें दोष न लगावें ज्ञूलचुकसें ख्रितचार लग जाय तो कमसुं कम दस नवकार मंम्ले ख्रीर राख्या तिकेसुं जादा खग जाय तो इसरे दिन कमती रखें. संवेरेसुं सामतक च्यार पोहरका पचकाण करें तथा रात्रिकी च्यार पोहरके पचकाण देवगुरु धर्माचार्यकी खाङ्गा खे या गुरु पासे पचकाण करें रोज नेम रखणा गिणती तथा वजन मर्यादा उपरांतरा त्याग जितने तक त्रण नवकार कही निह पारु जतनी तकरा च्यार पोहर तथा खाठ पोहरका त्याग संघटेरी जयणा पनहीरी समकरी चिरागरी स्त्रीके संगटेरी सचित्तरे संगटेरी याने संगटो होय जाय तो दोष नहि॥ चितारना दिनन्नरमें जोजो न्नोग जपन्नोगमें ख्याया हुवे जसको याद् करना रा-ख्या उससें कमती लागा सो निरजराखाते व्यजाएमें जास्ति लागा होय उसका

मन वचन कायाए करी मिन्नामि छक्कमं ।।
।। पारनेकी विधिः ।। फासियं पालीयंरी पारी गुण कर त्रण नवकार गुण लेना
फेर नेम कर लेणा याने धारलेणा ।। ए चवदे नियम कहे हे. जो मर्यादा करें जिल्हि रसाण आवें तो तिर्श्वकरगोत्र कर्म बांधे नरक तिर्यचनी गतिने बंध करें साल
सूत्र आवश्यकनी इति ।।

### ॥ श्रय पैत्रीस बोख खिख्यते ॥

वाणीरा गुण पैत्रीस. समकितसहित वाणी बोटें १, उचै खरे बोटें २, सार् बोर्खे निरसो वचन कार्ढे निह ३, पंमताइनो वचन प्राखें ४, गंप्रीर उंमें स्वरे बोर्खे शब्द तुरें निह ५, पमंजदी उठें वाणीरा च्यार कोस तांइ सांप्रखें ६, रागसिहत बोलें 5, सूत्र थोमो खर्थ घणा विस्तारसें जाषे 0, मैंयीदामांहि रहे पूर्व वचनसें वि-रुष्ट निह ए, पदे पदनो ष्टार्थ जुदोजुदो कहें १०, सांजलाएहारनो संदेह टार्ले ११, श्चन्यतीर्थीना वचन दोष हरें १२, सुणतांने रीफोवें पिण मन इजी जायगा न जावें १३, देशकालवाची शुद्ध वचन कहें १४, श्राणिमलतो वचन न नाखें १५, जीवादि-क वस्तु प्रकाशतां मिलतो वचन कहें १६, पद ख्यागलें पद जोइने खर्थ उपदेशें १७, वातरूप बाद्यक समजे तिम समजावें १०, स्राति मधुरी मीठी वाणी बोर्दे १ए, प्रजुजी देशना देवें पिण मरम किएरो प्रकाशें निह २०, खर्छ धर्मसहित वाणी प्र-काशें २१, जीवादिक वस्तु प्रकाशतां विस्तार जारी करें २२, मध्य स्वजावें कहें खा-

秦·安东安东安本。秦·

130+3013++2103+464+46+46+4603++6103+46430+464 पणी स्तुति प्रकी निंदा न करें २३, मधुर वाणी सनस निह राखें २४, शब्द लिं-गादि शुद्ध कहें १५, सांजलणहारने चिंते चमत्कार ऊपजें १६, जगवंत देवें देशना पिण घणी सुस्ती निह घणी छतावळथी निह २७, सांजलणहारने रोगादिक इःख पीने निह १०, जरमणा विना वचन जाखें सुणनहारने संदेह निह रहें १ए, जे पदार्थ वर्णवें ते संपूर्ण कहें ३०, जगवंत देशनामांहि सापेक वचन जालें ३१, अर्थ पद जुदो जुदो कहें ३४, च्यार जापामांहि सत्य विवहार वचन जालें ३३, खज्जास-हित जत्साहसहित वचन जालें ३४, जीवादिक वस्तु प्रकाशतां निशंक परूपें परं शंकावें नहि ३५.

\*EX\* \*Ex\* \*\*Ex\* \*\*Ex\* \*\*Ex\* \*\*Ex\*

#### ॥ अथ बत्तीस बोख खिख्यते ॥

जत्तराध्ययनजीके बत्तीस अध्ययन. विनय अध्ययन १. परिसह अध्ययन २, चर्जरं-गी छाध्ययन ३, छासंस्याय छाध्ययन ४, छाकाम सकाम मर्ण ५, खुनाग नियं िठयं ६, एसए ७, कविलियं ७, नमीरायरीसी ए, ज्ञमपत्तय १०, बहुसुए ११, इस्यिसियं १२, चित्तसंजूए १३, श्रसुयास्टिं द्य० १४, सजिक्ष १५, बंजचेरसेमाही १६, पावसः मण्य १७, संजितिरो छा॰ १०. मियापुत्तस्स १ए महानियिद्धयं २०, समुख्याखिए २१, रहनेमि २२, केसीगोतम २३, खंढयपवयणा २४, जयघोस विजयघोस २५. स-मायारी १६, रक्कलं १७, मोलमग्ग १०, सत्तपिकम्म १७, तवमगाइयं ३० चरण विहनाम ३१, पमांयठाणं ३२, छाठकम्मपगमील ३३, लेक्या ३४, छाणागारमग्गं ३५, जीवाजीव प्रत्ती ३६.

学院 李子子 光色光 李子子 光色光 光色光 光光光

३६ श्राचार्यके उत्तीस गुण. पांच महोतत पार्खे ४, पांच इंद्यि निम्नह करें १०, च्यार कंपाय निवोरं १४, पांच श्राचार पार्खे १ए, श्राठ मवचन माताको श्राराधे २७, नव 大大大小的水大的水大了。 水大的水大的水大了。 水大的水大 वानि ब्रह्मचर्य पालें एवं ३६. पन्नवणासूत्रके बत्तीस पद. पदपरूपणा १, पदस्थान २, बहुवक्तव्यता ३, स्थित ४, विशेष थे, बक्तंती ६, सासोसास ७, सत्या ७, जोणी ए, चर्म १०, नाषा ११, शरीर १२, प्रमाण १२, कषाय १४, इंड्री १५, प्रयोग १६, लेक्या १७, कायथित १७, स-म्यक्त १ए, छंतिकया २०, लगाहण २१, संठाण २२, किया २२, कर्मबंध २४, कर्म बेदना १५, बेदतांबंधका १६, बेदत्ता वेदका १७, खाहार १०, जपयोग १७, पास-णीया ३०, सन्या ३१, संयम ३२, जपध ३३, पश्चिरणा ३४, बेदना ३५, समुद्धात. न्नाव संग्राम उत्तीस. जीवरूपीयो राजा १, सम्यक्तरूपीयो प्रधान १, पांच महावत रूप जमराव ३, ग्यानरूपी जंमारी ४, घीर्यरूपी हाछी ४, खाजव महवरूपी होदा खंबामी ६, संतोषरूप महावत ७, मनरूप घोमो ए, परजपगाररूपी पद्धाण ए, जा-षासमितिरूपी पाखर १०, चारित्ररूपी लगाम ११, जिनधर्मरूपी चाचक १२, सीलरूपी रथ १३, नेदे संयमरूपी दल फोज १४, विवेकरूपी निशाण १५, धर्मध्यान शुक्क-老家老 ध्यानरूपी धजा १६, पंच प्रकारे सिक्षायरूप चारित्र १७, जेदे तपरूपी शस्त्र १७, सं-

茶学来

\*\*\*\*\*

本大公本

李米安米安米安米安米安米安米米安米米安米米安米米安米

वररूपी वगत्र १ए, सीलरूपी वोपर २०, क्मारूपी ढाल २१, दयारूपी बरबी २२, क्रियारूपी कवाण २३, ग्यानरूपी तरकस २४, संयमरूपी तीर २५, श्रानित्रहरूपी त-खार १६, शुक्कलेक्यारूपी बंडुक २७, पचकाणरूपी शांवाल २०. सांचरूपी दारु १ए जावनारूप गोला ३०, रागद्वेषरूपी जामग्री ३१, च्यार चोकमीरूपी जाला ३२, का-यारूपी जुरज ३३, खाठ कर्मरूपी वैरी जीत्या ३४, मोद्यरूपी गढ खीघो ३५, ठकाय रूपी प्रजारे तेनी रिका करवी ३६. ३६ जपदेशी उत्तीस बोल. सर्दहणा शुष्ट हुवे जिएारो जपदेश सुणीजें १, वत मर्यादा कीधी हुवें तिणासुं प्यार कीजें २, पखस पमीया सीख हढ राखीजें २, समिकत शी

ल दृढ राखोजें ४, रीस चढ़े तोही कमा कीजें ४, धर्माचार्यरा हुकमसें चादीजें ६, जिए गुरु कने सूत्र वाच्या जणीया तिएने कष्ट करें तिएने पापश्रमण महा मोह-नीरों बंधनहार जाएवो ७, साचे मन गुरूकी जिक्त कीजें ७, गुएवंत देवगुरु धर्म मानीजें ७, संसय जपजे तो सत्गुरुने पूजीजें १०, दोष ख्यालोइने शुरू होइजें ११ गुरारो कारज हर्षसुं कीजें १२, जकाया बचे जठे धर्म जाएीजें १३, सत्यवादीनी प्र-

★本本の米·米の米·朱承承 तित व्याणीजें १४, व्यम्तसुं मीठो निखद्य बोद्यीजें १५, पांच सुमति तीन गुप्ति शु-क चोली पाद्यीजें १६, संसाररो सगपण काचो जाणीजें १७, खाँणो जोग कर्म बंध-णरो कारण जाणीजें १०, धर्मरो सगपण साचो जाणीजें १ए, निर्लोजी सतगुरांरी संगत कीजें २०, पाप ब्यठारे परिहरीजें ४१, गुरांसुं वांको वस्ते तिणरो वमो ब्यनाग जाणीजें २२, गुरांसुं सवी वस्ते तिणरो बमा जाग जाणीजें ३३, गुरांरी सीख जंधी मानें तो हीण पुनीयो जाणीजें २४, गुरांरी सीख सुधी मानें तो पुण्यवंत जाणीजें १५, चूकमें चालें तो चोर कहीजें १६, सुध चालें तो शाह कहीजें १७, जिले वच-न नहि बोखे तिणने गंजीर आदमी जाणीजें १०, घणी हांसी खबखब करें ते गु 李米泰华泰安泰 णने खोवें १ए, सूर श्रद्ध संशारों करें तो वीतराग सरिखो जाणीजें २०, सुवतां सा-गारी व्यणसण कीजें ३१, पाछली रातरी सिद्याय धर्म चिंतणा कीजें ३२, ब्यह्मयां उघामे दील न सूड़जें ३३, तीन काल ट्यशुज वात न कीजें ३४, संसाररो कार्य ज तावखसुं न कीजें ३५, नम नागा न सूझ्जें ३६. ३६ ब्यायुखारा बत्तीस बोल. १ जीव जाति ब्यायु वर्ष १२०, २ हस्ति ब्यायु वर्ष १२०, ३

李子子来回宋本宗子子子 大学 大学 大学

मनुष्य आयु वर्ष १२०, ४ अश्व आयु वर्ष ३२ अग्रवा ४०, ५ व्याघ आयु वर्ष ६४ ६ काग आयु वर्ष १००, ७ गर्दनायु वर्ष ६४, ० ग्राखी छायु १६, .ए श्वान आयु वर्ष १२, १० शियाल ह्यायु वर्ष १०, ११ हरण ह्यायु वर्ष ४४, १२ हंस ह्यायु वर्ष १००, १३ मांजारी खायु वर्षे १२, १४ सुमा छायु वर्षे १३, १५ गेमा खायु वर्षे २०, १६ सारस खायु ५०. १५ कौंच छायु ६०, १० बगला छायु ६०, १७ सर्पायु १०० श्रयवा १२०, २० कीमी श्राय ४ए, २१ **उंदर** श्रायु १–२०, २२ ससला श्रायु १० -१४, २३ देवी <u>आयु ५०, २४ सुवर आयु ५०, २५</u> वागोल आयु ५०, २६ बंपैया श्रायु ३०, २९ सिंह श्रायु १०००, १० मांजला श्रायु १०००, १ए **लं**ट श्रायु २५, २० जैंस खायु २५, ३१ गाय खायु २०, ३२ घेटा खायु १६, ३३ जु खायु मास ३, ३४ कंसारी आयु मास ३, ३५ वीं बी आयु मास ६, ६६ चौरिंडी आयु मास ६. ५ ३६ वंश बत्तीश. १ सूर्यवंश, २ सोमवंश, ३ यादववंश, ४ कंदबवंश, ४ परमाखंश, ६ इ दवाकुवंश, ७ चहुआणवंश, ए चौखुकवंश, ए मौरिकवंश, १० शोखाखंश, ११ सें-धववंश, १२ जिंदकवंश, १३ चापोत्कटवंश, १४ प्रतिहाखंश, १५ खुमकवंश, १६ राष्ट

क्रदंश, १९ करटकवंश, १० घरटपालवंश, १ए विरुद्कवंश, २० गुहिलवंश, २१ गु-हिलपुत्तवंश, २२ पौतिकवंश, २३ चहुट्याणवंश, २४ धान्यपालकवंश, २५ राजपा-शकवंश, १६ द्यामंगलवंश, १७ निकुंजवंश, २० दहिकखंश, १ए केलातुखंश, ३० हूणवंश, ३१ हरिवंश, ३९ ढोढाखंश, ३३ शकवंश, ३४ चंदे अवंश, ३५ शोखंकीवंश, ३६ माखवंदा. विनोद उत्तीश. १ दर्शनिवनोद, १ श्रवणिवनोद, ३ गीतिवनोद, ४ नृत्यविनोद, ५ लिखितविनोद, ६ वक्ततृत्वविनोद, ७ शास्त्रविनोद, ए शस्त्रविनोद, ए करविनोद, १० बुद्धिविनोद, ११ विद्याविनोद, १२ गणितविनोद, १३ तुरंगमविनोद, १४ गजिव-张华 茶茶 茶茶 茶茶 नोद, १५ रयविनोद, १६ पद्मीविनोद, १७ त्याखेटकविनोद, १० जलविनोद, १७ यं-त्रविनोद, २० मंत्रविनोद, २१ महोत्सविनोद, २२ फलविनोद, २३ पुष्पविनोद, २४ चित्रविनोद, १५ पतितविनोद, १६ यात्राविनोद, २९ कखत्रविनोद, २० कथा विनो-द, १ए युद्धविनोद, ३० कखाविनोद, ३१ खमस्या विनोद, ३१ विज्ञानविनोद, ३३ वात्तीविनोद, ३४ क्रीमाविनोद, ३५ तत्वविनोद, ३६ कवित्वविनोद.

\*

वासी वीकानेररा, सुश्रावक श्रितिक्ञान। लेशवंश घर सेविया, श्राप्यंद पैरदान ॥१॥ प्रित्त दूगी तास घर, वांचित निर्मल बुद्ध । बहु सिद्धांत संचय करे, मुनिजन कीजो सुद्ध ॥२॥ केवलक्षानीकुं सदा, बंडु बे कर जोन । गुरु मुखतें धारण करो, श्र्यपणे जिद्दकुं ओम ॥२॥ जिनवचन तहमेव सच, समजाव निह ताण । जतनासुं वाचो सही, एह प्रदुनी वाण ॥॥ सूत्र श्रार्थ श्र्यरुन्य वचन, तिनके जेद श्रापार। श्राह्य बुद्धि श्राप्यान हुं, कविजन लेहुं सुधार ॥ श्राह्य खुद्ध दिख्यो होय तहनो, मिह्याइक्षम तह।। श्राह्य श्राह्य स्वरुक्त स्वरुक्त स्वरुक्त स्वरुक्त स्वरुक्त स्वरुक्त स्वरुक्त सहनो, मिह्याइक्षम तह।। श्राह्य



李光学 नवोन खुश खबर. म्हारे त्या जैनधर्मनां, तत्वज्ञाननां, ष्रध्यात्मना ष्र्यने दरेक जातनां पुस्तको जथ्या-बंध धणाज फायदेथी मळे हे. माटे ख्यमारे त्यांथी मंगाववुं जलता निह. ख्यमारो पुस्तको 李本李泰 प्रसिद्ध करवानो तथा वेचवानो वहीवट लगजग ४७ वरसधी चाले हे तो स्प्रमारो वहीवट घणो जुनामां जुनो खने प्रसिद्ध है. श्यमारे त्यांथी खायबेरी इ. जैनशाळा इने सारु घणाज फायदेथी पुस्तको मोकखवामां श्रावे हे. वधु विगत सारु ए० पानाचुं मोटुं सूचीपत्र श्रर्था श्रानानी टीकीट बीमी मंगाववुं. एट हुं तो निर्विवाद हे के, जेनां खड़ानरूपी पमळ खुद्धां खवानां होय, देशनो को-मनो छने खपरनो जदय ए जलनो जहेश होय, जंची स्थितिए चमी कांइपण कीर्त्तिनां कामो करवानुं जेना नशीवमां होय, संतानोने देशना वीरो बनाववाने जेनुं निशान होय श्चने वेवटे श्चा श्चसार संसारने वोमी मुक्ति मेळवी जीवन साफव्य करनार होय तेनेज ज-त्तम पुस्तको वांचवानुं मन थाय है. **खी. बाखाजाइ उगनखाख शाह.** हे. कीकाभटनी पोळ, मु. श्रमदावाद.

#### श्चाचारांगसूत्र. (श्चावृत्ति बीजी.)

अमृतना सुस्वाद माटे खात्री आपवानी जरुर नथी. वीरपरमात्माना जीवनचरित्र अने अणगार महा-त्माओना आचार विचारथी वाकेफ थइ संसारमां श्रावक तरीकेनुं शुद्ध वर्तन राखवा आ पवित्र पुस्तक दरेक जैने बांचबुं जोइए आजकाल शास्त्रार्थना जे झगडा थाय छे ते आवां पुस्तकना वांचनथी आपोआप, वंध थइ ज-शे. सर्व देशना लोको लाभ लइ शके माटे द्वीतियाद्यति मोटा नागरी वालवोध टाइपथी सहेलुं भाषान्तर अने मुळ पाटसहित मोटा खर्चे प्रसिद्ध करेल छे. मुल्य चिपया चार पोष्टेज खर्च वी. पी. साथे पांच आना.

----

#### श्री संघपट्टक.

संघे शी रीते वर्तवुं जोइए ते संवंधी नियमोना फरमाननो सर्वोत्तम ग्रंथ.

आ ग्रंथ अद्युत काव्योगां रचायेल छे अने ते नवांगी दृत्ति करनार श्री अभयदेवसूरिना शिष्य श्री जिनवल्लभसूरिए न्यायशैलीथी भरपुर घणीज उपयोगी अने विस्तारवाली मोटी टोका रची छे. आ ग्रंथ मोटा जैनी टाइपोथी लगभग पानां (७००) नो तैयार छे ने तेने पाका पुंठाथी वंधाएल छे आ ग्रंथनी फक्त थोढीज नकलो शीलीक छे. आ ग्रंथनी रु. ३-८-० छे. जोइए तेमणे ताकीदथी मंगावबं पाछळथी पस्तावो यशे. टपाल सर्च वी. पो. साथे आट आना.

**--**\*£<del>⊙</del>3;+-

未添

# सामायिक प्रतिक्रमण सूत्रार्थ. गहंतम्रनि तिलोकरीलजीकृत.

आ सामायिक प्रतिक्रमणसूत्रने अमोए अमाराथी वनती महेनते वे त्रण प्रतो एकठी करीने शुद्ध करीने छपांवी वहार पांडेल छे. आ पुस्तक सारु मारवाड, मेवाड, पंजाव, दक्षिण विगेरे आदि स्थ डोना. भाइओने उन पयोगी थायं तेवी वनती गोठवण करी छे. आ पुस्तकनी अंश्र सत्मायिक प्रतिक्रमण वर्ध साथे. दश पचल्ला-णो, चत्तारी मंगळ, चार शरणां, श्रावकने चितववाना त्रण मनोधी, श्रतिक्रमणनी सज्जाय, जोवरा रानि सज्जाय, उपदेशक पदो, महावीरस्वामीनु चोढालीयुं, गौतमस्वामीनी सज्जाय, महावीरस्वामीना वे छंदो विगरे विपयो आ-वेला छे. किम्मत आठ आना टपालसर्च वी. पी. साथे त्रण आना.



#### नित्य नियमनी पोछी. ( श्रावृत्ति चौदमी.)

आ पोथीमां आनुपूर्वि, भनानुपूर्वि, वार भावना, शियलनो नववादो, शियलनुं चोढाळीयुं, नानी तथा मोटी साधु वंदणी, शिखामणना अंहावीश वोळ, समिकतना ६७ वोल, श्रावकने चित्रवाना त्रण मनोर्थ, स-ज्जायों तथा वैरागी पदो निगेरे घणा निषयो आवेळा छे. आ पोथीना उपये गांपणा निपे आ पोथीनी चौदमी आरहित छपाइ वहार पडी छे तेज तेनी साबोती छे. जोइए तेमणे मंगाववी. किम्नत नेआना टपालखर्च ।।आनो



本の大学の大学



जिनधर्मना व्यवस्य खरीद करवा खायक पुस्तको. (शास्त्री खीपीमां ग्रापेखां .) प्रस्तकोना नाम. प्रस्तकोनां नामः रु. आ. पंचपदानुपूर्वि आहत्ती त्रीजी अ**ोवारांग सूत्र सू**ळ साथे भाषांतरः 8-0 सामायिकसूत्र आहुत्ती १० मी नंग १००) ना २-० उतराध्ययन सूत्र मुळ साथे पाकु पुंटुं. **६-८** श्री सामायिक प्रतिक्रमणसूत्र आहत्ती छही. पाटलीवाळं. जैनस्तुति पाका पूंठानी बांधेली. मोरबीवाळातुं 光学 华华 朱 华 朱 华 朱 华 श्री बृहदाङ्घोयणा. धनाञ्चाळीभद्रनो रासः 8-8 नारकीना चीत्रनी मोटी बुक. वैराग्य रवाकर भाग १ लो आहत्ती पांचमी. **?-8 保护** 杂②米·杂②米·杂③米 नित्य नियमनी पोथी आदृत्ति चोथी दस्वैकालीकसूत्र. आदृत्ती त्रीजी. २~४ 0-3 जैनपाठमाळा. भाग १ लो. थावृत्ती त्रीजी. छटक अध्ययनो. उपरनां पुस्तको त्रिवाय भी नश्चीं माणेकना छपावेलां तथा तमाम जातनां पुस्तको मळे छे. वधु विगत साथे सुचीपत्र तैयार छे. ्रालाजाञ्च नगनलाल शाहः चैनबुकसेकर एन्ड पब्लीवर्सः वे. कीकाभटनी पोळ-मु० अमदावाद.